CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि भारती-कुसुमाञ्जलिः

४:३

कवि भारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

सम्पादकाः—
डा. प्रेमलता शर्मा
श्री शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी
डा. ज्योतिर्मित्र शास्त्री
श्री रतिनाथ झा
श्री बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते
डा. कमलेशदत्त त्रिपाठी
डा. रेवाप्रसाद द्विवेदी

कवि भारती
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक—

कवि भारती

वाराणसी

सन् १९७६ ई०

मूल्य २१.००

मुद्रक,

गायत्री प्रेस,

अस्सी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

PREFACE

Poetry needs neither justification nor recommendation. There is something intrinsic which draws a man towards it and this is true in relation to even the most rational and matter-of-fact of them. The reason of this powerful influence of poetry is not far to seek. The Upanisads define the 'Soul' as 'Kavi', a discerning poet, and so it is but natural that man, however engrossed in wordly accounts of profit and loss, should turn to poetry which represents the essence of his being, his Soul. As such, in appreciating poetry, one gets the rare chance of realising the intrinsic nature of man's self and the accomplishments it can achieve.

The present work is a collection of typical Sanskrit poetry. Sanskrit poetry, apart from its well-known varieties, such as Mahakavya etc., has an interesting variety known as Samasya-Purti wherein a poet is expected to compose verses on a given theme. The theme is presented as a problem in the form of a quarter (pada), a phrase or a word and the poet is called upon to compose verses using the same. The poet thus solves the poetic problem posed, and so this variety of composition is known as Samasya-Purti or Solution of the problem. The entire exercise calls forth the ingeniousness of the poet, and his mastery over the poet's craft. Though this type of poetry is really poetry made to order, it displays unmistakable

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

impress of poetic imagination, and in the hands of gifted poets it succeeds in suggesting profound ideas, even Sentiments (Rasa).

The collection abounds in many such poems in which the given theme has attained unique depth of feeling and so deserve to be considered as Dhvani-Kavya or Suggestive Poetry, the best specimen of Sanskrit poetry.

Keeping in view the unique character of poetry in general and perfection of form, variety of expression and depth of feeling exhibited in these verses, I wholeheartedly welcome the present collection of poems, a rich harvest of the Kavi-Bharati over the last six years,

Kavi-Bharati is a club of Sanskrit poets of Varanasi, and through its monthly sessions it has become too well-konwn to require any introduction. The reader will find in this collection the poetic voice of all eminent Sanskritists of Varanasi, and the collection, I am sure, will fully justify the significance of the name, **Kavi-Bharati**, 'The Poet's Voice' by its excellence.

Biśwanath Bhattacharya
Head of the DEPARTMENT OF SANSKRIT & PALI
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI.

January 7, 1976.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रास्ताविक

संस्कृत जगत् में काशी काशी का स्थान सर्वोपरि है, यह सुविदित तथ्य है। चाहे अध्ययन हो या अध्यापन, चाहे न्याय, मीमांसा, वेदान्त हो, चाहे व्याकरण साहित्य, ज्योतिष, अधिक क्या, संस्कृत की कोई भी ऐसी ज्ञानधारा नहीं है, जो किसी न किसी रूप में यहाँ सतत प्रवाहित न होती हो। ज्ञान की नूतन धाराओं का प्रकाश भी यहाँ से निरन्तर फैलता आ रहा है।

संस्कृत की काव्यमयी धारा भी काशी में उद्दाम गति से प्रवहमान रही है। विगत आठ वर्षों से काशी के काव्य जगत् के मनीषियों ने 'कवि-भारती' की स्थापना कर इस संस्था को काव्य-प्रवाह का माध्यम बनाया है।

'कवि-भारती' में नियमित गोष्ठियों में नूतन रचनाओं के प्रस्तुतीकरण के साथ ही उनका प्रतिवर्ष संकलित मुद्रण भी होता आ रहा है। अद्यावधि ६ वर्षों के संकलन प्रकाश में आ चुके हैं, जिनका प्रस्तुत-स्वरूप में एकत्रीकरण किया जा रहा है। स्पष्ट है कि इस प्रकार विभिन्न वर्षों के संकलनों का ही समन्वित स्वरूप यहाँ उपलब्ध है। इस समग्र संकलन की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका आदरणीय डॉ० विश्वनाथ भट्टाचार्य जी, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय; ने लिखने की कृपा की है।

एतदर्थ उन्हें अनेक साधुवाद ! कवि-भारती के दो वर्षों के अवशिष्ट संकलन भी शीघ्र प्रकाशित होंगे, ऐसी आशा है।

निवेदक

शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी

मंत्री—कवि-भारती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

कविभारतीसदस्यानां साहाय्येन

शर्मोपाह्वप्रेमलतया

सम्पादिता

शरद् प्रकाशन

बी. १/४३ अस्सी, वाराणसी—५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक :
शब्द प्रकाशन
अस्सी, वाराणसी

प्रथम संस्करण
विक्रमाब्द: २०२४
खीष्टाब्द: १९६८

मूल्य २-००

मुद्रक :
राष्ट्रीय प्रेस
सेनपुरा, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मितञ्च सारञ्च

अस्ति वाराणसीयं सुरसरस्वत्याश्चिरन्तनं लीलानिकेतनम् । अद्यत्वेऽपि सर्वतः पतत्प्रकर्षे युगे प्रायेण सर्वशास्त्राणां तत्त्वज्ञा विपश्चितः सुदुर्लभा न सन्ति । सहृदयहृदयहारिणः कवयोऽपि समुल्लसन्ति । किन्तु सम्प्रति प्रधानतया सङ्घटनसूत्रे पिनद्धा जनाः सम्भूय किमपि चेष्टन्ते । तथा नासीत् किमपि सङ्घटनं संस्कृतकवीनाम् । यदा तदा समायोजितेषु कविसम्मेलनेषु समुपस्थितानां कवीनां काव्यनिर्माणप्रतिभां दर्शंदर्शं विस्मयस्मेरमनसां सुमनसां मनसि कस्यापि सङ्घटनस्य बीजवपनमिव जातम् । तद् बीजमङ्कुरितं चित्रकवीनां श्रीरामरूपपाठक-महोदयानां "चित्रकाव्यकौतुकम्" नाम्नो ग्रन्थस्य महता श्रमेण धनव्ययेन च सम्पादिकायाः सुश्रीप्रेमलतादेव्या अधिसदनं तयैवायोजितायां तदुद्घाटनगोष्ठ्याम् । तत्रास्मत्प्रार्थनामङ्गीकृत्य सुमेरुपीठाधीश्वरा महाकवयो जगद्गुरवोऽनन्तश्रीवि-भूषिताः शङ्कराचार्या श्री १००८ माहेश्वरानन्दसरस्वतीपादा अपि कृपामृत-प्रवर्षिणीं स्वोपस्थितिमङ्गीकृत्यास्मान् भृशमुत्साहितवन्तः । एवमेव वैदिक-धुरीणानां पण्डितश्रीगोपालचन्द्रमिश्रमहोदयानामपि गृहे कापि गोष्ठी सङ्घटिता । तदनन्तरं डॉ० गजाननशास्त्रिणो मुसलगाँवकर महोदयस्य गृहे निमन्त्रिताऽनामिकेयं गोष्ठी द्रव्यदानोत्साहेन सम्मानिताऽभवत् । श्रीदरवारीलालकोठियामहोदयस्य प्रथमकोपाध्यक्षस्य सदने समाहूताः परिषत्-सदस्याः सम्भूय सुविचार्य चास्या नाम 'कविभारती'तिनिरधारयन् । प्रतिमाससमस्या आवेशनक्रमोऽपि सञ्चालितः । वर्तमानानां कवीनां निर्माणशक्ति प्रोत्साहयितुं नवीनानां च कवीनां शिक्षाभ्यास-पद्धतिं प्रवर्तयितुं समये समये च गोष्ठीषु पठितानां काव्यानां प्रकाशनं मुद्रणञ्च विधातुं कृतनिश्चयेयं परिषत् कविभारती वर्षद्वयात् प्राक् स्वजनिं प्रापत् । तत्रैव च श्रीरामरूपपाठकोऽध्यक्षः, श्रीरामकुवेरमालवीय उपाध्यक्षः, श्रीशिवदत्तशर्मा-चतुर्वेदः मन्त्री, श्रीलीलाधरपन्तः उपमन्त्री, श्रीदरवारीलालकोठियामहोदयः कोषाध्यक्षो निर्वाचितः । कार्यकारिण्याञ्च—

(१) डॉ० प्रेमलता शर्मा (२) श्रीवटुकनाथशास्त्री खिस्ते, (३) श्रीकृष्णमोहन-ठक्कुरः, (४) श्रीकपिलदेव त्रिपाठी 'जटिलः', (५) श्रीमती कमलाचुनेकरमहोदया, (६) श्रीरतिनाथ झा, इमेऽपि निर्वाचिताः । एवं मिलित्वा एकादश सदस्यानां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्यकारिणी सङ्घटिता। सर्वं नियमं सम्यङ् निभालयन्ती कविभारती स्वीयं प्रथमं वार्षिकोत्सवं महामहोपाध्याय डॉ० उमेश मिश्र महोदयानामाध्यक्ष्ये महता समुत्साहेन फाल्गुनशुक्ल पञ्चम्यां २०२३ वै० समपादयत्।

द्वितीयेऽस्मिन् प्रवर्तमाने संवत्सरे नवीनाः पदाधिकारिणः सञ्चालयन्ति गोष्ठीमिमाम्। तत्र अध्यक्षः (१) श्री बटुकनाथशास्त्री खिस्ते महोदयः, (२) उपाध्यक्षः श्री कृष्णमोहनठक्कुरः, (३) उपाध्यक्षा डा० प्रेमलता शर्मा, (४) मन्त्री श्री रतिनाथझा, (५) उपमन्त्री श्री कपिलदेवत्रिपाठी 'जटिलः', (६) उपमन्त्रिणी श्रीमती कमलाचुनेकरमहोदया, (७) कोषाध्यक्षः श्रीजनार्दनस्वरूपशास्त्री कार्यकारिणीसदस्याश्च (१) श्री शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः, श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयः, (३) श्री वासुदेवद्विवेदी, (४) सुश्रीविमलादेवधरमहोदया, (५) डॉ० गजाननशास्त्रीमुसलगाँवकरः, (६) श्री जगन्नाथपाठकश्च।

संस्थायाः पञ्जीकरणाय कृत्स्नोऽपि क्रियाकलापः सम्पन्नः।

गोष्ठीषु पठितानां काव्यानां मुद्रणार्थं केन्द्रीयं शासनमभ्यर्थितम्। इदानीं प्रतिनिधिरचनारूपं कविभारतीकुसुमाञ्जलिं संक्षिप्य प्रकाशयामः। अत्र मङ्गलम्, समस्यापूर्त्तयः, गीतानि, विषयमनुरुध्य रचिताः कविताः, प्रकीर्णकानि चेति खण्डपञ्चकेषु कालक्रमेण श्रावितानि काव्यानि सङ्कलितानि सन्ति।

एतस्य पुस्तकस्य प्रकाशनभारमङ्गीकृत्य समुत्साहसम्पन्नो व्रजवासिमुद्रणालयाधिपतिः श्रीहरस्वरूपचौबेमहोदयः कविभारतीसदस्यः सर्वथाभिनन्दनीय इत्येतदर्थं तस्मै परःसहस्रं धन्यवादानर्पयामः।

काव्यानां सञ्चयने प्रकाशनार्हताप्रापणे च कृतभूरिपरिश्रमाः खिस्तेमहाभागाः, श्रीमती कमलाचुनेकरमहोदया, सुश्रीविमलादेवधरमहाशया, कुमाराऊर्मिला शर्मा श्री जगन्नथापाठकमहाशयाः डॉ० प्रेमलताशर्मा, डॉ० गजाननशास्त्री मुसलगाँवकरमहोदयाश्च सादरमभिवाद्यन्ते। संस्कृतकाव्यप्रेमिणः सहृदया स्वीकरिष्यन्ति संकलनसमुत्थमिमं प्रयासमिति नूनमाशास्महे।

चैत्रकृष्ण —　　　　　　　　रतिनाथ झा

२०२४ वि०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकीय

भारतीय संस्कृति एवं प्राचीन आर्य साहित्य के अमूल्य रत्नों को यथाशक्ति प्रकाश में लाने के उद्देश्य से कुछ वर्षों से 'शरद प्रकाशन' का शुभारंभ हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक "कविभारती कुसुमाञ्जलिः" शरद् प्रकाशन की तीसरी भेंट है। इससे पूर्व मूलर की विख्यात कृति "पाली ग्रामर" जो अप्राप्त थी प्रकाशित हुई तथा स्वर्गीय महामहोपाध्याय श्री गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी जी की "आत्मकथा और संस्मरण" प्रकाशित होकर साहित्य जगत् में आदर प्राप्त कर चुकी है।

हमें विश्वास है कि वाराणसी की अपूर्व संस्था "कविभारती" द्वारा प्रस्तुत यह रचना भी पर्याप्त आदर प्राप्त करेगी। "कविभारती" के संचालक विद्वानों ने हमें इसके प्रकाशन का कार्य देकर अनुगृहीत किया, इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

विनीत :

हरस्वरूप चौबे

संचालक :

२२ मार्च '६८ — शरद् प्रकाशन, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगृहीतपद्यरचयितृनामसूची

१—श्रीवटुकनाथशास्त्रिखिस्ते
२—,, रतिनाथझा
३—,, रामरूपपाठकः
४—,, जगन्नाथपाठकः
५—,, लीलाधरपन्तः
६—,, कृष्णमोहनठक्कुरः
७—,, शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः
८—,, गजाननशास्त्रिमुसलगाँवकरः
९—,, वासुदेवद्विवेदः
१०—,, श्रीनारायणमिश्रः
११—,, गोपालचन्द्रमिश्रः
१२—,, माहेश्वरझा
१३—,, रामकुबेरमालवीयः
१४—,, रामनारायणदत्तपाण्डेयः
१५—,, ब्रह्मानन्दत्रिपाठी
१६—,, राजारामशुक्लः
१७—,, रेवाप्रसादद्विवेदः
१८—,, रामायणद्विवेदः
१९—,, राधाकान्त-ओझा
२०—,, पद्मनाभनिरौला
२१—श्रीरामचन्द्रपाण्डेयः
२२—,, गोविन्दपाण्डेयः
२३—,, शिवजो-उपाध्यायः
२४—,, चन्द्रवलिशर्मोपाध्यायः
२५—,, धर्मपालसिंहः
२६—,, जनार्दनस्वरूपशास्त्री
२७—,, प्रियव्रतशर्मा
२८—,, नरेशझा
२९—,, कपिलदेवत्रिपाठी 'जटिलः'
३०—,, गङ्गाधरसूनुर्जनार्दनरटाटे
३१—,, महेशचन्द्रजोशी
३२—चुनेकरोपाह्वा श्रीमतीकमला
३३—देवधरोपाह्वा विमला
३४—मुखोपाध्यायोपाह्वा भक्तिसुधा
३५—शर्मोपाह्वा प्रेमलता
३६—मुसलगाँवकरोपाह्वा श्रीमती विमला
३७—वन्द्योपाध्यायोपाह्वा कृष्णा
३८—शर्मोपाह्वा-ऊर्मिला
३९—चुनेकरोपाह्वा मृदुला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयानुक्रमणी

मङ्गलाचरणम्	पृष्ठ संख्या
(क) समस्यापूर्तयः (श्लोकमय्यो गीतमय्यश्च)	
१—कालस्य लीलायितम् ...	२
२—मेघमाला ...	८
३—समुज्जृम्भते ...	११
४—लाभो महान् ...	१४
५—नामापि न ज्ञायते	१६
६—न जानीमहे ...	१९
७—नीले सुवर्णायते ...	२३
८—शल्यानि मे ...	२७
९—कलाविलासः ...	३१
१०—शिखण्डिनस्ते ...	३६
११—भारो भुवः ...	३८
१२—परिवर्तनीयम् ...	४२
१३—गणयति ...	५०
१४—कालिदासः ...	५४
(ख) प्रकीर्णगीतसंग्रहः	
१—जलधरावाहनम् ...	६०
२—जयोद्घोषः	६१
३—कालिदासप्रशस्तिः ...	६१
४—हिमालय-वन्दना	६३
(ग) विविधविषयाश्रितश्लोकाः	
१—शरद्वर्णनम् ...	६५
२—प्रावृड्वर्णनम् ...	६८
३—एकाकिता	६८
४—कालिदासः ...	७१
५—काकप्रशस्तिः ...	७३
(घ) प्रकीर्णश्लोकाः ...	७५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मङ्गलश्लोकाः

नानादृशां सुमनसां स्रजमावहन्ती
संप्रश्ननूत्नसुभगश्रुतिभिर्विपञ्चीम् ।
सर्वेश्वराक्वणितकोणमियं रणन्ती
स्यान्नः प्रसन्नवरदा वचसामधीशा ॥ १ ॥

स्वामिश्रीमहेश्वरानन्दसरस्वतीपादानाम्

वीणामुद्यत्सरिगमपदालापिनीं वामभागे
दक्षे कीरं कमपि च करे कोविदं लालयन्ती ।
लीलोन्मीलन्नयनमुकुला बालचन्द्रावतंसा
श्यामा कामान् दिशतु नमतां कामधेनुः कवीनाम् ॥ १ ॥

सानन्दमन्दहसितां ससितांशुखण्डां
भण्डासुरप्रशमनीं नमनीयपादाम् ।
पादान्तलग्न-सुरवृन्दकिरीटरत्नां
प्रत्नागमार्थकलितां ललितां नमामि ॥ २ ॥

सजलजलदाकारं स्फारं वपुर्दधतो हरे-
र्भिनवकिटेर्द्रंष्ट्रा चन्द्रे कलङ्ककलोपमाम् ।
जलधिकुहरादुद्गच्छन्तीं चराचरमान्तरं
भरतवसुधामृत्स्नां कृत्स्नां वचोभिरुपास्महे ॥ ३ ॥

श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

करैः सहस्रैर्न सहस्रदीधितिः शिखी शिखाभिर्न सुधांशुरंशुभिः ।
पदेन तज्जाड्यमपाकरोति यत् तदाविरास्तां हृदि शारदं महः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्याङ्कमङ्कोऽध्वति शैलपुत्री भालस्थले क्रीडति बालकेन्दुः।
जटाजिरे नृत्यति जह्नुकन्या स मानसे मे नटतान् नटेशः ॥ २॥

चक्री चक्रेण चक्रं-जननमरणयोश्चापि चकर्तुं चूर्णं
कौमोदक्या कुमोहोन्मथनकृतमतिः कौमुदं संविधत्ताम्।
आत्मानन्दं न मन्दं जनयतु नितरां नन्दिना नन्दकेन
शङ्खेनासंख्यसौख्यं वितरतु भगवान् भूतये सर्वदा नः ॥ ३॥

श्रीलीलाधरपन्तस्य

क० समस्यापूर्त्तयः

१. कालस्य लीलायितम्

पूर्वस्यां दिशि पद्मरागरुचिरं संवीक्ष्यते मण्डलं
चण्डांशोर्नवनीतपिण्डमिव यत् सायं वपुश्चैन्दवम्।
तन्मासतु मुखैर्निजैः प्रियसुहृद्वृन्दैर्मुहुः कन्दुक-
द्वन्द्वं निक्षिपतः परस्परमिदं कालस्य लीलायितम् ॥१॥

येनोन्मूलिततुङ्गपादपमदाध्मातेभकुम्भस्थल-
च्छेदोड्डामरविक्रमेण हरिणा भ्रान्तं वनाभ्यन्तरे।
तस्याद्य स्थविरस्य शीर्णवपुषः कर्षन्त्यमी केशरान्
काकाः केचन कानने कटुतरं कालस्य लीलायितम् ॥ ॥

यत्तातः किल बाहुदण्डविलसत्कुद्दालकः काष्ठभिद्
ग्रामेष्वाप परिश्रमेण महता मुष्टिद्वयीपारणाम्।
दैवात्तत्तनयो नयोन्नतमतिः सम्प्राप्य तुङ्गं पदं
शास्त्रज्ञानपि धिक्करोति यदि तत् कालस्य लीलायितम् ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशो यस्य नवीननीतिरचनाचातुर्यचारुक्रमाद्
आश्वस्तः परचक्रभञ्जनविधौ धत्ते स्म धैर्यं महत् ।
सोऽयं सत्यसुधाम्बुधिः शितमतिर्यत्ताशकन्दे लयं
प्राप्तो लालबहादुरस्तदखिलं कालस्य लीलायितम् ॥ ५॥

क्रमसंख्या १—४ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

या धातुर्वदनाम्बुजात् प्रकटिता व्यासादिभिर्लालिता
दिव्यामोदकरम्बितैः सुमनसां स्तोमैश्च सम्पूजिता ।
सेयं कल्पलतेव देवभणितिर्मुग्धैर्द्विजैरुज्झिता
म्लानत्वं भजतेऽद्य हन्त तदिदं कालस्य लीलायितम् ॥१॥

नाज्यं, नैव पयो, न वा दधि, फलं न स्वादु भोज्यं समै-
राहर्तुं सुलभं, कयापि शतकैरस्तंगतैतादृशी ।
यत्पूर्वं पणकेन लभ्यमधुना तद्रूप्यकेणापि न
प्राप्यं वस्तु यदस्ति तत्तदखिलं कालस्य लीलायितम् ॥२॥

गोपालभूपालकुलस्य बालो
गोपालिकाकेलिकलासलीलः ।
नीलोऽपि शुक्लात्मभिरर्च्यते तत्
कालस्य लीलायितमेव मन्ये ॥३॥

क्रमसंख्या ५—७ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

मस्ते 'कौस्तुभ'मेवमेव रमणं कण्ठे बृहद् 'भूषणम्'
आदायापि 'मनोरमा'मिव रमां रत्नाभिरामां प्रियाम् ।
आर्तो याति महापणं प्रतिदिनं विक्रेतुकामः परं
कष्टम् ! नेष्टमिदं जनस्य धिगिदं कालस्य लीलायितम् ॥१॥

क्रमसंख्या ८ श्रीश्रीनारायणमिश्रस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राचीनं सुविशीर्णतीर्थघटनं दूरे स्थितं त्वां जना-
स्त्यक्त्वा साम्प्रमुत्तमा अपि कृशं संयान्त्यमी पल्वलम् ।
ग्रीष्मे पल्वलशोषके सति कुतो यास्यन्ति, तद् हे सरो
दैन्यं मा भज चिन्तयैकमधुना कालस्य लीलायितम् ॥१॥

बाल्यं प्रौढमतस्तथा गमयतः प्रौढं जराजीर्णतां
जीर्णं मारयतो मृतं कलयतो भस्म श्मशानानले ।
सर्वं मृत्प्रकृतौ विनीय हसतः क्रीडाजुषः प्राणिभि-
र्बालस्यास्य धिगस्तु जीर्णजरितं कालस्य लीलायितम् ॥२॥

येनोद्यानकपालकेन सुचिरं ग्रीष्मेषु पूर्णैर्घटै-
राहृत्याम्बु निषेवितोऽद्य महतीं शोभां भजस्याम्र ! हे ।
दष्टः कोटरशायिना स तव तत् सर्पेण शेते मृतस्-
त्वल्लीलायितमस्ति वैतदथवा कालस्य लीलायितम् ॥३॥

यत्पूर्णे विधुमण्डले नयनयोर्दिव्यं समाकर्षणं
यत्स्निग्धस्फटिकाभकान्तिवदने गण्डैकदेशोद्गतम् ।
यद् वा भागवती कथा दिवि लसत्कादम्बिनीडम्बरं
तत्सर्वं ननु भाग्यलभ्यमुदितं कालस्य लीलायितम् ॥४॥

क्रमसंख्या ९—१२ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

लक्ष्मीकेशवयोः सितासितरुचोः क्षीराम्बुधौ क्रीडनं
राधामाधवयोः सखीगणयुजोर्वृन्दावने नर्तनम् ।
वैदेहीरघुनाथयोः सुवसतिः श्रीचित्रकूटे गिरौ
धावल्येन समन्वितं विजयते कालस्य लीलायितम् ॥१॥

हेम्नः पर्वतमस्तके मृगमदो जम्बूफलं सुन्दरं
कौशिल्योरसि राजते रघुवरः कृष्णो यशोदोरसि ।
शम्भोः कण्ठतले च नीलगरलं गौरीक्षणे कज्जलं
धावल्येन समन्वितं विजयते कालस्य लीलायितम् ॥२॥

क्रमसंख्या १३, १४ श्रीरामरूपपाठकस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्नादाम्बुदमालिकासु विलसच्छम्पासहस्राव्रतं
शैत्योद्दामविधूतगात्रविभवानालम्ब्य नीराजितम् ।
चण्डोद्दण्डमरीचिजालविगलल्लावण्यसन्तापकं
पश्यामः सततं विमुग्धमनसा कालस्य लीलायितम् ॥१॥

नन्दप्राङ्गणमागतेन विभुना क्रीडारसं तन्वता
यद्यच्चेष्टितमस्ति तत्कविधियामक्षय्यभाण्डायितम् ।
पादांगुष्ठमपीह योजयति यत् स्वीये मुखाम्भोरुहे
भ्रान्त्या योजितमेव किं न्वसमये कालस्य लीलायितम् ॥२॥

शक्तिः क्षीणतमा कफप्रचुरता कम्पस्य सर्वाङ्गता
मन्दत्वं नयनद्वये श्रवणयोः शब्दग्रहापाटवम् ।
अस्थ्नां सञ्चय एव देहपदभाक् वृद्धौ प्रमादो महान्
हंहो वार्धक ! पूर्णतां त्वयि गतं कालस्य लीलायितम् ॥३॥

क्रमसंख्या १५-१७ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

येषां नैव मनोबलं सुविपुलं नो वा ज्वलन्ती स्पृहा
चास्था नो निजपौरुषे बलवती नैवाऽत्मनि प्रत्ययः ।
वार्तालापकथासु पेशलधियो ये स्वल्पतुष्टाः सदा
मन्यन्ते निखिलं सदैव भुवि ते कालस्य लीलायितम् ॥१॥

क्रमसंख्या १८ कस्यचिदाधुनिकस्य

कीलालं तुहिनं हसत्यतितरां शैलेयशृङ्गाण्यहो
सूक्ष्मं तज्जलदाकृतिं हि कलयत्याकाशकुक्षिङ्गतम् ।
आसारेण ससारवाहितटिनीस्रोतः परावर्तय-
त्येकः प्रस्तर एव शैलघटकः कालस्य लीलायितम् ॥१॥

क्रमसंख्या १९ मुसलगाँवकरोपाह्वविमलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वारंवारमगाक्कृतोऽपि सहसा कर्णान्तिकं सञ्चरन्
गायं गायमसौ भ्रमत्यविरतो निःशंकमक्ष्णोः पुरः ।
गानंताललयं विनैव किमहो नापेक्षते वादनं
सङ्गीताभ्यसनं खलस्य विरसं कालस्य लीलायितम् ॥१॥

'मा मा मा क्षिप कुंकुमस्य सलिलं शाटो महार्घा मम
नो कच्चित्स्मृतिरागता तव पुरा वासांसि शुभ्राणि मे ।'
इत्यालापसमाकुले सहचरे हा किं मुखे लेपितं
चूर्णं पुष्पपरागसौरभयुतं कालस्य लीलायितम् ॥२॥

देवेन्द्रस्य दिगङ्गना रविसुतं प्रासोष्ट काले शुभे
तत्काले नलिनोदरादनुपतन् रुद्धालिनो ये चिरात् ।
मुक्ता साऽपि वधूः प्रियस्य भुजयोराश्लेषबन्धे स्थिता
राज्ञः पुत्रमहोत्सवे द्वयमभूत् कालस्य लीलायितम् ॥३॥

क्रमसंख्या २०-२२ श्रीगजाननशास्त्रिमुसलगाँवकरस्य

प्राच्यैः कूटविशारदैरथ पुनर्भूपैः प्रतीच्यैरपि
सञ्चिन्त्यैव हि यत्कृतं तदपि यैर्मत्कर्णधारैः सुखम् ।
'पाकिस्तान'—विभाजनञ्च बहुभिः स्वीकृत्य सम्पादितं
तस्यैवाद्य फलं भुनक्ति जनता कालस्य लीलायितम् ॥१॥

क्रमसंख्या २३ श्रीमाहेश्वरप्रकाशमणेः

यत्रासन्नृषयः सदैव विमला ज्ञानाब्धिपारंगता
वेदाचारविचारचारुमतयः स्वस्थास्तथा निस्पृहाः ।
तत्रैवाद्य तदीयवंशजगणाश्चेतस्ततो व्याकुला
धावन्ता, परिलक्ष्यते नु सुतरां कालस्य लीलायितम् ॥१॥

क्रमसंख्या २४ श्रीकृष्णमोहनठक्कुरस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोका वेदविधिं विहाय निरता भक्तोक्तिसंसाधने
वेदाभ्यासविधिं जहुर्बुधवराः शास्त्रान्तरे सन्नताः ।
दैवीं पण्डितभूसुरा गिरमहो नाध्यापयन्ते सुतान्
छात्रा वृत्तिमुषोऽधुना च तदहो कालस्य लीलायितम् ॥१॥

आसीत् प्रागिह नस्तपस्विनि जने श्रद्धा ततोऽध्येतरि
स्वाचार्येण समन्विते किमु पुनर्जात्या कुलेनान्विते ।
पश्चात् कर्मठवृन्दसंस्तुतगुणे सम्प्रत्यहो दृश्यते
मिथ्यावञ्चनहिंसनार्जितधने कालस्य लीलायितम् ॥२॥

क्रमसंख्या २५, २६ श्रीगोपालचन्द्रमिश्रस्य

प्रावृट्पङ्किलतोयवाहितटिनीस्पर्शो न मे रोचते
नीरे निर्मलतां गते सपदि सा तृष्णाशमे सुक्षमा ।
नैवास्त्यत्र हि कापि विस्मयकथा शुष्का पुनः सोज्झिता
दोषं मा गणयात्र कस्यचिदहो कालस्य लीलायितम् ॥१॥

बीजेभ्यस्तरवः पुनस्तरुगणाद् बीजोद्भवो दृश्यते
ह्येतस्मात् क्रमतो न निष्कृतिरहो कुत्रापि दृष्टिं गता ।
जायन्ते कुत आद्यबीजनिवहाः केयं नु पृच्छा मृषा-
ऽनादित्वे यदिहादिमत्त्वकलनं कालस्य लीलायितम् ॥२॥

उत्पन्नस्य विवर्धनं पुनरहो वृद्धस्य चापक्षयः
क्षीणस्यापि मृतिर्ध्रुवा यदि भवेन्नो तत्र कष्टं क्वचित् ।
किन्त्वत्रैव विपर्ययोऽपि घटते वृद्धिं विना क्षीणता
रे रे मूढ ! किमत्र दोषकलनं कालस्य लीलायितम् ॥३॥

कः कालो ? यदनादिचित्रफलके पूर्वापराभासनं
का लीला ? न हि यत्र हेतुकलनं सर्वत्र याऽबाधिता ।
दृष्टादृष्टफलेषु का नु गणना ? हेतोश्च का कल्पना ?
यच्चाचिन्त्यमिहास्ति तद् वद सखे कालस्य लीलायितम् ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यातं यत्पुनरेति नो यदपि चेच्चक्रस्य चाह्नं महद्
यच्चाप्यस्ति चरिष्णु सन्ततमहो यच्चैव चेत् सुध्रुवम् ।
पौर्वापर्यविधान-कामरचनं नित्यत्वबोधक्षमं
द्वन्द्वानां रचनं पुनश्च हरणं कालस्य लीलायितम् ॥५॥

क्रमसंख्या २७–३१ शर्मोपाह्व-प्रेमलतायाः

ज्ञानाब्धावतिकालमग्नहृदयान्नद्वैतसारे रतान्
शौष्क्यात्स्तब्धमतींस्तनोति सरसान्नाह्लादिनीमाश्रितः ।
क्रीतांश्चैव गुणैः स्वकैः पुनरयं सन्त्यज्य यातो मुदा
ज्ञानं पाठयतीह चोद्धवमुखात् कालस्य लीलायितम् ॥
(कालशब्देनात्र श्रीकृष्णोऽभिप्रेतः)

क्रमसंख्या ३२ शर्मोपाह्वोर्मिलायाः

२. मेघमाला

परं दुस्सहोदग्रकंसादिचण्डप्रतापार्कतेजोऽपहा मेघमाला ।
चिरं देवकीदीव्यदङ्काम्बरे विद्युदुल्लासिता शातयेन्मेऽघमालाम् ॥१॥
यामम्बु पञ्चषकणानपि याचमानस्त्वं निर्निमेषनयनप्रसमीक्षसे खे ।
सा ते समर्पयति जीवनबिन्दुमद्धा श्रद्धान्विताय किमु चातक मेघमाला ॥२॥
चण्डांशुतीव्रकरतापनिपीतहर्षामप्राप्त-वारिवरसीकरवृद्धतृष्णाम् ।
शुष्यत्सुजीवनरसामघुना रसां द्राक सम्यग्रसां वितनुतामिह मेघमाला ॥३॥

रविहृतवसनायाः पांशुलाया अवन्या
नवहरितदुकूलैरङ्गमाच्छादयन्ती ।
स्फुटकुटजकदम्बामोदमापादयन्ती
प्रियललितसखीवाभ्युद्गता मेघमाला ॥४॥

क्रमसंख्या ३३–३६ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संध्याकीर्णं घनपरिमिलद्गाढतामिस्रभारं
सद्यःस्नातं हिमकरमुखे लोललोलं ललन्तम् ।
श्यामश्यामं विलसति नभश्चुम्बितं मत्तमत्तं
बिभ्राणेयं कचपरिचितश्रीभरं मेघमाला ॥१॥

यातो ग्रीष्मः शममिह महाकालसङ्घस्त्विदानीं
प्राप्ता प्रावृट् परिणतमनस्तापहर्त्री तथापि ।
निर्गच्छेत् सा मम नयनतो वा न वा वारिभूता
स्मृत्याखये या नभसि सघनोद्भिद्यते मेघमाला ॥२॥

नृत्याभ्यासे प्रगुणितमुदां बर्हिणां पाठशाला
सन्तप्तानां हृदयनयनोन्मादिनी कापि हाला ।
सङ्गीताढ्या कचभरचिता काऽपि चण्डालबाला
श्यामश्यामा विलसति नभःप्राङ्गणे मेघमाला ॥३॥

क्रमसंख्या ३७—३९ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

वियोगिनी-जीवनकालरात्रिः, संयोगिनी-मञ्जुलसौख्यदात्री ।
यादः सुरत्नैरिव सिन्धुवेला, समागतेयं नवमेघमाला॥१॥

आकर्ण्यतां कविवरैर्वचनं मदीयं
दिक्कुञ्जरेषु कमठः कमठे च शेषः ।
शेषे क्षितिः क्षितितले मणिमांश्च कुध्रः
कुध्रे हरिर्हरितनुर्वर-मेघमाला ॥२॥

क्रमसंख्या ४०, ४१ श्रीरामरूपपाठकस्य

विद्योतमानां स्थिरविद्युदालीमालिंग्य या वर्षति भाववृन्दम् ।
वृन्दावनव्योम्नि मनोऽभिरामे सा मेऽघमालां घ्नतु मेघमाला ॥१॥

या नित्या भाति नित्यं परमविभुतया व्योम्नि नित्ये पराख्ये
कारुण्यादेव नृणां निजमतिपदवीमापिताप्यत्ति तापान् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिन्दी-कूलमूले प्रकटनवघटा सच्चिदानन्दरूपा
विद्युद्‌भश्चिन्मयीभिर्जयति बलभिदा काऽप्यसौ मेघमाला ॥२॥

कालः श्यालोऽम्बराज्ञोऽरचयत कुटिलां द्यूतगोष्ठीं गरिष्ठां
ज्येष्ठोऽजैषीत्कुरूणामृतव इव जिताः पाण्डवास्तत्र पञ्च ।
नग्नां कर्तुं प्रवृत्तो नृपजानमवनि भानुदुःशासनोऽसौ
नीरव्याजेन चीरं दिशति हरिरयं नाम्बरं मेघमाला ॥३॥

क्रमसंख्या ४२-४४ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

सन्तप्तानां हृदयदहरादुत्थिता मेघमाला
प्रोच्चैः स्थित्वा वियति जलधैर्गर्जिता मेघमाला ।
एका नित्या भवति हृदयाकाशकार्पण्यहन्त्री
स्पर्धां चान्याऽऽचरति सहसा गर्विता जन्मदात्रे ॥

क्रमसंख्या ४५ शर्मोपाह्वप्रेमलतायाः

दृष्टा मयाद्य सखि हे भुवि मेघमाला
सौदामिनीविहरणे सुखकेलिजुष्टा ।
सङ्गीतहासकरतालसुगर्जनाढ्या
प्रेमैकसाररसवर्षणकारिणी सा ॥

क्रमसंख्या ४६ शर्मोपाह्वोर्मिलायाः

गाढच्छायानिबिडवननीहारपुञ्जं निषण्ण
निर्धून्वन्ती सपदि च बलादम्बुधाराभिराभिः ।
विद्युल्लासोच्चकितशिखिनाराधिता नृत्यगीतैः
पूर्वाकाशाङ्क्षणमुपगता श्यामला मेघमाला ॥१॥

क्रमसंख्या ४७ वन्द्योपाध्यायोपाह्वकृष्णायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३. समुज्जृम्भते

तावद्वन्यपशोः पुगेऽधिविपिनं वप्रक्रियापाटवं
मातङ्गः प्रकटीकरोति नितरां मत्तोऽवलिप्तो महान् ।
यावत्कन्दरिकन्दरध्वनिभरैरारण्यकांस्तर्जयन्
नोद्धूयात्मसटां समुत्कटतमः सिंहः समुज्जृम्भते ॥१॥

न ज्ञानं न तपो न साधुचरितं नैवार्जवं न क्षमा
सन्तोषो न परोपकार-रचना नो वा तितिक्षा धृतिः ।
नो मैत्री करुणा न चापि मुदिता लोकेऽधुना दृश्यते
नग्नः केवलमेक एव कुटिलः स्वार्थः समुज्जृम्भते ॥२॥

क्रमसंख्या ४८, ४९ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

श्रेयोऽस्तं, विमुखं सुखं, प्रशमिता शान्तिः प्रशान्तार्णवे
शिक्षाऽपि क्षपिताऽथ दिक्षु विततं दुर्भिक्षमेवेक्ष्यते ।
आधिव्याधिमहर्घता समुदिताऽवग्राहसम्पिण्डता
भ्रष्टाचारपरम्परा प्रतिपलं स्वैरं समुज्जृम्भते ॥१॥

केशान्तैर्भ्रमरावलिर्विकलिता पादेन पद्मं जितं
शीतांशुर्हसितैः स्मितैरथ विधुर्वक्त्रेण बन्दीकृतः ।
पश्चाद् यौवनशिल्पिना विरचितस्तन्व्या उरोजाभिधः
कीर्तिस्तम्भयुगः सुवर्णलसितः सोऽयं समुज्जृम्भते ॥२॥

धं धं धं ध ध धं धमद्धमधमाऽऽवालाज्वलत्सङ्करो-
द्दण्डाकाण्डप्रकाण्डताण्डवदलद्ब्रह्माण्डभाण्डोदरे ।
आहिण्ड्याहितमुण्डखण्डनविधौ चण्डाङ्घ्रिदण्डोद्धुरा
योद्धृणामशनिध्वनिप्रतिसखी क्ष्वेडा समुज्जृम्भते ॥३॥

मायाख्यां तिमिरावलिं विनिगिरद् रागादिदोषान् दहत्
संसारोद्भवहेतुकर्मशलभान् निःशेषतां लम्भयत् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वं चित्तमलापहं विकिरयत् सच्चित्स्वरूपं स्वयम्
आविर्भावयदात्मबोधविमलज्योतिः समुज्जृम्भते ।।४।।

क्रमसंख्या ५०–५३ श्रीलीलाधरपन्तस्य

ऋतुः शारदो राजवेशानुकारी धृतस्वर्णवर्णारविन्दातपत्रः ।
जनैर्वीजितश्चामरैः फुल्लकोशैः समुज्जृम्भते लोकलोकान् विजेता ।।१।।

अनन्ते वनान्ते निशान्ते मुरारौ ऋतौ शारदे प्राणनाथे प्रयाते ।
न जीवाम एतद् वचो गायनीषु समुज्जृम्भते मन्मथो गोपिकासु ।।२।।

क्रमसंख्या ५४, ५५ श्रीरामरूपपाठकस्य

देहं गेहमुपेक्ष्य रक्षणकृते राष्ट्रस्य वैरिव्रजान्
विभ्रान्तान् मदविह्वलांश्च विदधद् वेगेन विक्रम्य वै ।
व्याकर्षंद् विजयाश्रिणं विकलयन् कालान्तकं चान्तिके
पेटन्टैंक-विपाटनोद्यनकरो वीरः समुज्जृम्भते ।।१।।

क्रमसंख्या ५६ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

मातृभूर्गस्य यत्नेन स्वाधीनतामाप घोरेण कारानिवासादिना
पाकशक्तिः परास्तंगता भीषणा चीनसेना गता यद्बलस्यासिना ।
यो हि सत्पक्षमाश्रित्य प्राणार्पणं संहसन् संविधातुं च संनह्यते
सोऽद्य गोमातृरक्षानिमित्तं दृढो भारतीयः समाजः समुज्जृम्भते ।।१।।

क्रमसंख्या ५७ श्रीकपिलदेवत्रिपाठि 'जटिलस्य'

खाद्याभावमृगेन्द्रगर्जनरवं श्रुत्वा वराका इमे
धान्यानां प्रभवो धनाधिपतयो मान्याश्च रूसादयः ।
ये वै केचिद् अमेरिकाप्रभृतयस्ते भारतायोचितं
शेकुर्नो प्रभवो यतोऽत्र कठिनोऽकालः समुज्जृम्भते ।।१।।

क्रमसंख्या ५८ श्रीराजारामशुक्लस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्तापं परिवर्धयन्ननुदिनं दैर्घ्यं नयन् वासरान्
नद्योघं प्रविशोषयन् विरहिणां प्राणान् समुत्सारयन् ।
कालेजं च फलं समुन्नततरं कुर्वन् रजन्यां सदा
कन्दर्पं जनयन् प्रचण्डकिरणो ग्रीष्मः समुज्जृम्भते ॥१॥

हेमन्ते भवनस्थितानपि जनान् शीतैश्च संपीडितान्
स्वच्छन्देन विनिर्गतान्निजसुहृद्वर्गैः सहानन्दयन् ।
शीतांशोः किरणेषु भक्तमनसो नद्यास्तटे भ्रामयन्
साय सौम्यगुणोऽधिकप्रियतरो ग्रीष्मः समुज्जृम्भते ॥२॥

क्रमसंख्या ५९, ६० श्रीकृष्णमोहनठक्कुरस्य

देशेऽस्मिन्नधुना गवां विहननं सीमां परां गाहते
वृद्धिं यातितरामधर्मवलितः स्वार्थान्धनेतुर्नयः ।
रागद्वेषपरस्पराहतमतिः संख्यावतां मण्डली
दारिद्र्यं निजवैभवेन भरितं वेगात् समुज्जृम्भते ॥१॥

क्रमसंख्या ६१ श्रीगोविन्दपाण्डेयस्य

दृष्ट्वा सिंहगढे समीरणचलन्मलेच्छध्वजं सम्मुखं
सन्तप्ता व्यथिता जिजा समभवत् पुत्रेण चाश्वासिता ।
'खिन्ना मा भव नन्दनस्तव यदा सन्नद्धखड्गः सदा'
निश्चिन्ता जननी स्थिता न च कदा वीरः समुज्जृम्भते ॥१॥

सुप्तोऽयं वनकेसरीति परितः क्रीडन्ति वै मूषकाः
शार्दूलोऽपि पलायते सरभसं जागर्ति सिंहो यदा ।
शान्तानित्यवगण्य सैनिकवरान् पाको यदाऽऽक्रामति
ब्रूते लालबहादुरो न च सखे वीरः समुज्जृम्भते ॥२॥

क्रमसंख्या ६२, ६३ देवधरोपाह्वविमलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४. लाभो महान्

स्वच्छन्दं भ्रमणं गतं मृतमहो स्वेच्छानुसाराशनं
सङ्गो बन्धुजनस्य हन्त विहतो दूरीकृता च प्रिया ।
सर्वं पिञ्जरबद्धकीरयुवकस्याभून्महासङ्कटं
रामेत्यालपने परं यदुदिता शक्तिः स लाभो महान् ॥१॥

स्वाध्यायो न विधीयते न च तपोऽनुष्ठीयते यत्नतो
नो सारस्वततत्त्वबोधविषयं जागर्तिरालम्ब्यते ।
शास्त्रं नैव विरच्यते न च नवं काव्यं विनिर्मीयते
भूयः पण्डितसंज्ञया लसति यन्मन्ये स लाभो महान् ॥२॥

नापाङ्गेन निरीक्षते न मधुरालापेन संभाषते
नौत्सुक्यं प्रकटीकरोति न रहःसङ्गं समाकाङ्क्षति ।
इत्थं यद्यपि खिन्नता न हृदयं मुञ्चत्यभीक्ष्णं तथा-
प्यस्मत्प्राणधनास्यदर्शनसुखालम्भेन लाभो महान् ॥३॥

क्रमसंख्या ६४-६६ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

येनोद्भासितमङ्गणं नरपतेः काचस्थितेनाधिकं
तस्यास्त्येव हि दीपकस्य सुमहल्लाभान्वितं जीवनम् ।
एकान्ते ज्वलितः समाधिनिकटे दीनस्य कस्यापि यः
किं तस्यापि न दीपकस्य जनुषः क्षुद्रोऽपि लाभो महान् ॥१॥

यत्रागत्य जलानि रोधमधिकं संयान्त्यहो सर्वथा
न स्नानं न च पानमिच्छति जनो यत्रागतो दूरतः ।
किं तन्नाम सरो नु वर्ण्यमथवा कुल्या हरन्ती तृषां
सर्वस्वं हि समर्प्य किन्तु जनुषस्तस्या न लाभो महान् ॥२॥

क्रमसंख्या ६७, ६८ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यं साक्षान्निगदन्ति सच्चिदखिलानन्दस्वरूपं परं
यो लोकार्तिनिवाराय च पपौ हालाहलं दाहकम् ।
यश्चात्यन्तविभीषणाऽहिवलयोऽप्युच्चैर्बिभर्त्ते विधुं
तस्योत्तुङ्गतरङ्गधारिशिरसः पूजासु लाभो महान् ।।१।।

अस्माभिः सफलीकृता जनिरियं वाग्देवताऽराधने
सत्साहित्यसुधासमुद्रसलिले स्नानं सदा कुर्महे ।
सम्मानास्पदमेव जीवनमहो धन्यं समाशास्यते
सत्ये वर्त्मनि नित्यमेव सुखदे को वा न लाभो महान् ।।२।।

एतच्छास्त्रनिषेवणाधिकफलं मुद्राभिधानं मुदा
मुद्रालाभमवाप्य जीवनमिदं सौख्यास्पदं जायते ।
मुद्राया अवमूल्यने सति कियान् कोलाहलो वर्धते
मुद्रालाभमपास्य नूतनयुगे नैवास्ति लाभो महान् ।।३।।

आकाशोऽम्बुदमालिकेव दिवसे सन्ध्यात्रयीवांशुमद्-
धाम्नीवेन्दुगभस्तयोऽब्धिसलिले तुङ्गास्तरङ्गा इव ।
यस्मिन् विश्वमुदेति यत्र रमते यत्रैति चास्तं पुन-
र्नूनं तस्य पयोदनीलमहसः पूजासु लाभो महान् ।।२।।

क्रमसंख्या ६९–७२ श्रीशिवदत्तचतुर्वेदस्य

चेतोहरामभिनवां ललितां कवीनां रम्यां नवीनकवितामुपदर्शयन्ती ।
अव्यक्तपूर्वकविभावमुदञ्चयन्ती लाभो महानिति मतिः कवि भारती मे ।१।

'लाभो महानेष' 'लाभो महानत्र' 'लाभो महानेहि लाभो महान्'
व्याप्तो महांस्तत्र कोलाहलो हर्षयुक्तः स्थितो भूतलादम्बरम् ।
व्यापारवृत्तं च बोद्धुं यदाऽहं सुकौतूहलाकर्षिताग्रेसरा
ह्याहूयमाना मतं स्वीयपक्षे प्रदातुं जनाः सम्मुखे लक्षिताः ।।२।।

आख्याता सुजला तथा च सुफला माता सदा पूर्वजैः
स्वार्थान्धैस्तु कुशासकैरनशनं भो। कृत्रिमं निर्मितम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्थं तैः कथितं यदा जनमत निर्वाचने प्रार्थितं
दुर्भिक्षं ह्यभवन् तदा सुरुचिरो तेषां च लाभो महान् ।।३।।

क्रमसंख्या ७३-७५ देवधरोपाह्वविमलायाः

सुसंस्कृतकुले जनिर्विगणयामि लाभो महान्
सुशीलमतिमान् गुणी सहचरश्च लाभो महान् ।
शिवस्य शुभपत्तने निवसनं च लाभो महान्
न किं पठनापाठने स्ववसरो हि लाभो महान् ।।१।।

क्रमसंख्या ७६ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

मृतेयं नु मत्वा स्वपुत्रैश्च मुक्ता कलौ या हि संस्कारहीनैर्हि खिन्ना ।
इयं देवभाषा पुनः पूजिता चेत् पुनर्जीविता स्यात् स लाभो महान् नः ।।१।।

क्रमसंख्या ७७ मुखोपाध्यायोपाह्वभक्तिसुधायाः

५. नामापि न ज्ञायते

आबाल्याद् गुरुसंन्निधानवशतः प्रोन्मीलितप्रातिभा-
ऽऽलोका लोकसमादृताः सदसतोर्भेदावगाहक्षमाः ।
विद्वांसोऽपि कलौ खलीकृतधियो मज्जन्त्यसज्जल्पने
तेनैवाद्य विवेकवासितहृदां नामापि न ज्ञायते ।।१।।

कालिन्दीकमनीयकूलविलसत्कादम्बवाटीनटद्
गोपीलोचनकैरवामृतकरे कारुण्यधाराधरे ।
लग्नं यस्य मनो मनाङ्मतिमतो धन्यस्य तस्यान्तिके
कालस्यास्य कलेः कलेवरजुषो नामापि न ज्ञायते ।।२।।

श्रीमद्भारतभूमिदास्यदलने सन्धानुबन्धाच्चिरं
बन्धात्तां विरहय्य कीर्तिविशदास्तुङ्गं पदं लेभिरे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये तुच्छीकृतकीर्तयो निजतनुच्छेदेऽपि मौनं श्रिता-
स्तेषां हन्त ! महात्मनां जनमुखे नामापि न ज्ञायते ।।३।।

वामा यत्र चरन्ति पूरितपुराऽऽरामा निशासङ्गमे
सामाद्या न गिरः स्फुरन्ति परितः कामार्थमात्रोद्यमे ।
दामान्यत्र नवे युगे न च पुनर्धामानि धर्मात्मनां
'मामा' वादवशाद् विशुद्धमनसां नामापि न ज्ञायते ।।४।।

क्रमसंख्या ७८-८१ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

आर्हन्तीमसमां परैरसुलभां स्वस्मिन् सदा भावयन्
आत्मानं विबुधार्चनीयचरणं विज्ञापयन् पण्डितः ।
सर्वेषां धुरि दृश्यते, परमहो वाग्देवतामर्चतो
निस्वार्थं तदनुव्रतस्य विदुषो नामापि न ज्ञायते ।। १ ।।

रम्याद्रम्यतरस्य भव्यभवनस्यालोक्य शिल्पोन्नतिं
प्रीयन्ते भुवि दर्शका नयनयोरानन्दलाभान्विताः ।
आधारेषु परन्तु लीनवपुषः पिष्टस्य चैवेष्टका-
पिण्डस्यास्फुटदर्शनस्य भुवने नामापि न ज्ञायते ।। २ ।।

ये तु ग्रन्थसहस्रपङ्क्तिनिचयाद् हृत्वा नवं पुस्तकं
निर्माय प्रथिता भवन्त्यथ विदां वर्गेऽपि गर्वान्विताः ।
ख्यातास्तेऽद्य परन्तु यैरुपहृतं तन्त्रादिशास्त्रं पुरा
तेषां लोकहितावधानमनसां नामापि न ज्ञायते ।। ३ ।।

क्रमसंख्या ८२-८४ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

वेदोद्घोषपुरस्सरं स्तुतिकथाऽऽलापो हि न श्रूयते
सत्या वाग्विलयं गता नहि पुनर्दाक्षिण्यमालोक्यते ।
काव्यानां भणितिः स्वभावसरसा कुत्रापि नाऽश्रीयते
सौजन्यस्य कलौ युगे ननु सखे नामापि न ज्ञायते ।। १ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दानं सौरभपूरितं कथमिदं देयं मयाऽऽलिष्वहो
कृष्णा मूर्तिरियं न चास्ति रुचिरा तेषां समुद्वेजिनी ।
इत्थं रे गजराज मा कुरु मनाक् चित्ते किलैवं त्वयि
श्यामस्त्वं प्रविहाय शुभ्रमहसो नामापि न ज्ञायते ॥ २ ॥

क्रमसंख्या ८५, ८६ श्रीशिवदत्तचतुर्वेदस्य

न चैतादृशी काऽपि भाषाऽस्ति भूमौ
सुविज्ञानयुक्ता सुरैः सेविता या ।
अनेकाऽपि विद्या विलुप्ता स्वदेशाद्
इदानीन्तु नामापि न ज्ञायतेऽस्याः ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ८७ श्रीराधाकान्तओझाशर्मणः

अश्वो धावति सत्वरं स तु कशाघातैर्वृथा ताडितः
श्लाघां विन्दति सारथिर्बहुधनं सामान्यनीतिर्ध्रुवा ।
प्रख्याति लभते प्रभुस्तु यतते यः कार्यसिद्धेः कृते
दुर्दैवोपहृतस्य तस्य बहुधा नामापि न ज्ञायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ८८ देवघरोपाह्वविमलायाः

अघ्न्या गौः श्रुतिडिण्डिमः सुविदितो लोके तदर्थं स्मृतौ
त्रैलोक्यस्य च मातरो निगदिता गावो न जानन्ति के ।
देवास्तत्र वसन्ति या। प्रतिपलं संपालनायोद्यताः
तासामध्वरशब्दतो विशसने नामापि न ज्ञायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ८९ श्रीकृष्णमोहनठक्कुरस्य

नेतारो जनमानसेभ्य उदितं भावव्रजं पावनं
रक्षन्तो जहिताशु गर्वममितं तुङ्गेऽधिकारे स्थिताः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रातीप्यं जनमानसस्य दधतां प्रायः कवीनां भुवि
श्लाध्यानां बलबुद्धिवैभवभृतां नामापि न ज्ञायते ॥ २ ॥

क्रमसंख्या ६० श्रीगोविन्दपाण्डेयस्य

गङ्गौघो मम चेतसः प्रभवति श्रद्धामयाद् यः सदा
कस्यायं हि विराजतां प्रभवितुः संशोभिते मस्तके ।
वाञ्छेयं मम चेतसो विलसति स्तोतुं सदा त्वद्गुणान्
माहात्म्यं तव वर्णये यदि, मया नामापि न ज्ञायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ६१ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

६. न जानीमहे

शैलेन्द्रात् सुरवाहिनीव भगवद्वक्त्राम्बुजादुद्गता
विद्या वेदमयी मखानलशतज्ज्वालागलत्किल्बिषा ।
सायं प्रातरुपासिता बटुगणैस्तेजोमयी भारते
भूयो धास्यति लास्यमास्यसदने किं वा न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ६२ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

यच्चित्ते परितापजर्जरतरे लोलेऽति लोलायिते
जागर्ति क्षणमादधाति नितरामेकान्तशैत्यं दधत् ।
तत् केचित्प्रणयं वदन्ति बहवः सद्भावमन्ये दयां
दैवीं, हन्त वयं विवेकविकलास्तत् किं न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ६३ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

नेतारो वणिजो जनो वृषमतिर्मेधाविनो भिक्षवः
पार्श्वस्थाः परिहासिनः प्रकृतिरप्युग्रैव कृत्याकृतिः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छिद्रं स्यात् किमतो बृहद् रिपुबलोद्योगः प्रतीक्षेत यद्
हा हा देश दशा ततस्तव भवेत् का तन्न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९४ श्रीरेवाप्रसादद्विवेदस्य

सौख्यं सर्वविधं विहाय विपदामाडम्बरं योऽनिशं
सानन्द प्रवहन् परोपकृतये जीवातुमायापयत् ।
तन्वानं निजदेशगौरवभरं मान्यं तमेवाधुना
पश्चात्यानुगबुद्धयो वयमहो स्वल्पं न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९५ श्रीगोविन्दपाण्डेयस्य

ध्वान्ते सर्वदिशो विसारिणि महादारिद्र्यमेघोत्थिते
कार्याकार्यविवेकभानुकिरणच्छादिन्यविद्याघने ।
स्वार्थक्रोधमदादिसम्भृतगणे चालस्यझञ्झाकुले
को हर्तुं प्रभवेन्नु भारतभुवः कष्टं न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९६ श्रीरामचन्द्रपाण्डेयस्य

भो राकेश* सुरागरञ्जितहृदि त्वय्येव रक्तिगते
यद्यापूरयसे सुधां सुविमलां व्यर्थैव सिद्धा कृपा ।
मोहान्धीकृतमात्तसर्वविपदं यावन्न दृष्टिप्रदो
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं तावन् न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९७ शर्मोपाह्वोर्मिलायाः

अन्नं पान्तु न वा त्यजन्तु सहसा प्राणान् क्षुधाव्याकुला
वृद्धिं यातु च हिन्दभूमिगरिमोच्छेदं न वा प्राप्नुयात् ।
विश्वं तिष्ठतु वा भवेत्तु विलयो, येषां न चिन्ता कदा
धर्मं स्वार्थपरान् कथं ह्युपदिशेमैतन् न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९८ देवधरोपाह्वविमलायाः

---

* 'राका' पदेनात्र मायाऽभिप्रेता । तस्या ईश इति राकेशः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्यार्थं सुसुखान्विताः पुरजनाः सौधाश्च रूपोज्ज्वला
ऐश्वर्यं विततान भूरनुदिनं सिद्धार्थसर्वार्थदा।
त्यक्त्वा गेहमहो सुषुप्तिशिथिलं पप्रच्छ सोऽयं स्वयं
किंवा जीवनवैभवं यदि पुनः सत्यं न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या ९९ वन्द्योपाध्यायोपाह्वकृष्णायाः

किं पीत्वा पवनः प्रवाति सततं देशे सदा निर्मले
किं भुक्त्वा भ्रमति प्रभातसमये भानुर्निरन्ने स्थले।
किं कृत्वाऽटति देवताद्विजगणः पाश्चात्यदेशे त्विदं
कृत्वा सूक्ष्मविचारणामपि वयं किञ्चिन् न जानीमहे ॥

क्रमसंख्या १०० पद्मनाभनिरौलाशर्मणः

केनेदं हि सुविस्तृतं प्रविततं नीलाम्बरं निर्मितं
तेजोगोलयुगं च केन रचितं तेजोयुतं भास्करम्।
रात्रौ तारकमालिकाऽपि गगने विस्तारिता दृश्यते
कस्तां शिल्पिशिरोमणिर्वितनुते नित्यं न जानीमहे ॥१॥

आकाशे जलदान्तरे सुसलिलं केनैव संपूरितं
पाषाणेषु वनान्तरे मधुजलं भूगर्भभागे घृतम्।
पुत्रार्थं तु विनिर्मितं मधु पयो मातुश्च वक्षःस्थले
तृष्णातृप्तिकरः पयोधरवरः कोऽयं न जानीमहे ॥२॥

आरक्ताश्च विभातकालरुचिराः प्राचीमुखे याश्छटाः
सौवर्ण्यो विशदा हि रङ्गरचना मध्याह्नकाले धृता।
सन्ध्यारागपटाश्च सुन्दरतमा नीलाम्बरे चित्रिताः
कोऽयं चित्रकरश्च रंगरसिकश्रेष्ठो न जानीमहे ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वायुर्वेणुवनेषु गायति तथा कूजन्ति वै पक्षिणः
भृङ्गाः पङ्कजकोशमध्य उषिता गुञ्जन्ति मञ्जुस्वराः ।
आम्रे गायति पञ्चमस्वरयुतः प्रह्लादयन् कोकिल-
स्तेभ्यः सुस्वरदायको गुरुवरः कोऽयं न जानीमहे ॥४॥

क्रमसंख्या १००-१०४ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

सेवन्तेऽमरवाचमुत्तमजनाः सन्त्यज्य येऽर्थस्पृहा-
मद्धा येऽर्थतृषोन्नतिं गमयितुं तां कामयन्तेऽचिरात् ।
तेऽमी राक्षसवृत्तयोऽमरगिरं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं सुरगवीं ते के न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या १०५ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

देशेऽस्मिञ्जनतान्त्रिके कृषिवले पातुं न पेयं जलं
का चर्चा तु कृपेः कृते तदनु वै खाद्यं ततो दुर्लभम् ।
आदानेन बलं यतोऽत्र विहितो व्यापारभावो हृदि
स्वान्ताराष्ट्रजने विधे किमु भवेदग्रे न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या १०६ श्रीराजारामशुक्लस्य

नेदानीं भुवि तार्किका न कवयो वेदेषु पारङ्गता
ज्योतिःशास्त्रविवेचका न च पुनर्दक्षाः चिकित्सार्णवे ।
शब्दानामनुशासने दृढतरा गीर्वाणवाणीविदो
नो यान्तीह मुदं न वृत्तिमतुलां स्यात्किं न जानीमहे ॥१॥

क्रमसंख्या १०७ श्रीचन्द्रबलिशर्मोपाध्यायस्य

स्वातन्त्र्यस्य गता मुविंशतिसमाः साम्यं न दृष्टिं गतं
वैरं स्वार्थगतं जनेषु सुतरां वृद्धिगतं दृश्यते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विज्ञानाद्भुतकर्मकौशलपरा नाध्यात्मिकीमुन्नतिं
काङ्क्षन्ते मनुजाः कथं शुभदिनं भूयान्न जानीमहे ॥ ॥

क्रमसंख्या १०८ श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठिनः

साहित्येऽपि च संस्कृतावपि तथा सत्सभ्यतायामपि
प्रायो व्यक्तिगतस्वजीवनविधौ सर्वास्ववस्थास्वपि ।
यत्पाश्चात्यपरम्परानुकरणं सन्दृश्यते भारते
तद्देशस्य सुदुर्दशाऽद्य कियती जाता न जानीमहे ॥१॥

बालो दुग्धमुखः क्वचित्सकरुणं "मातर्बुभुक्षा भृशं
रोटीमाशु ददस्व मह्य'मिति साक्रन्दं रुदन् श्रूयते ।
किञ्च क्वापि निजास्थिपञ्जरतया शेषो विनान्नं लुठन्
वृद्धो दृश्यत इत्यवर्षणतया किं किं न जानीमहे ॥२॥

क्रमसंख्या १०९-११० श्रीशिवजीशर्मोपाध्यायस्य

७. नीले सुवर्णायते

शम्भोर्मस्तकवाहिनीसुरसरिद्धारासुधास्नापितं
देवेन्द्रादिसमस्तनिर्जरशिरः स्रग्रेणुभिश्चित्रितम् ।
सर्पाधीश्वरभालदिव्यमणिभिर्नीराजितं दीपकै-
र्वाणीपादयुगं मदीयहृदये नीले सुवर्णायते ॥१॥

क्रमसंख्या १११ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

प्रादुर्भूतघनध्वनिप्रतिभटैर्ध्वानैर्दिशः कम्पयद्
भासां वासरनायकस्य निवहैरालिङ्गितं सर्वदा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेगाल्लोकविलोचनातिगवपुर्मानं विमानं नभो
विस्तारे निकषे महेन्द्रमणिवन्नीले सुवर्णायते ॥१॥

क्रमसंख्या ११२ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

दूर्वाशाटकमिन्द्रगोपरुचिरं कर्तु कुविन्दायिता
प्रावृट् [1]पूर्णशुचित्रतां भुवमुमां बुद्ध्वा [2]कलादायते ।
हंसाली रजतायतेऽरुणरुचिस्ताम्रायते त्द्गृहे[3]
विद्युद् यच्च कषोपलत्विषि घने नीले सुवर्णायते[4] ॥ २ ॥

क्रमसंख्या ११३ श्रीरेवाप्रसादद्विवेदस्य

क्षीराब्धौ भुजगाधिराजशयने तार्क्ष्ये पुरः सस्थिते
क्रूरैः प्राङ्मधुकैटभादिदितिजैर्ब्रह्मा सुसंत्रासितः ।
सोऽयं पार्श्वगतां विलोक्य कमलां प्रोवाच हर्षान्वितो
लक्ष्म्याः कान्तिमयी छटा वपुषि ते नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११४ श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठिनः

वर्षर्तौ समुपागते परिलसन्मायूरमालोदिता
कार्ष्ये कर्मणि साधनैः परिवृता लग्नाः कृषीणां जनाः ।
मेघैर्नीलतमेऽम्बरे परिणता विद्युच्छटा स्पन्दिता
मन्ये योगमिमं विधातृरचितं नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११५ श्रीराजारामशुक्लस्य

---

१. शुचि = पवित्रं, ग्रीष्मश्च । २. कलाद = सुवर्णकारः ।
३. गृहे = गेहे, तत्त्वेन अध्यवसिते नभसि ।
४. पद्येऽत्र पार्वतीपरिणयो ध्वन्यते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रम्याण्याभरणानि नूपुरमुखान्युत्सार्य दूरं भिया
श्यामं सूक्ष्ममुपास्य नूत्नवसनं विद्योतमानाऽऽनना ।
बाला मन्दमरालमन्दगमना व्यालोलतारालका
गच्छन्ती प्रियपार्श्वमन्धतिमिरे नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११६ श्रीरामायणद्विवेदस्य

श्यामश्यामलकान्तिमेघसुभगे चित्ते सदैवास्थितं
रन्ध्रेषु प्रियवेणुनादवहनं भक्तेषु चानन्ददम् ।
प्रेम्णापूरितकान्तचित्तकलनं स्वर्णाभकञ्जश्रि य—
च्छ्रीराधामुखमण्डलं हि सुखदं नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११७ शर्मोपाह्वोर्मिलाया:

'धर्मग्लानितमोवृते कुसमये दिव्यावतारो भवेद्'
गीतायां खलु दीयते भगवता सुस्पष्टमाश्वासनम् ।
त्यक्ताशाऽपि वितर्कयामि सुवचः कृष्णः कथं विस्मरेद् ?
आशैका हि सुतारकेव गगने नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११८ देवधरोपाह्वविमलायाः

आकाशे दिननायको विहरते, बिम्बं तु गङ्गाजले
कासारे विलसत्परागपटलं बद्धं हि नीलोत्पले ।
जीमूते स्फुरति स्फुटं तडिदियं कृष्णे सुतेजस्विनी
हंसः स्वर्णमयश्च मानसजले :नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या ११९ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

प्रातर्यत् किरणैर्द्रुतं परिश्रुते मन्ये सुवर्णोत्पले—
नीलत्वं मधुरं शुभञ्च यमुनातीरे न जानीमहे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीतिर्मे सखि सम्यगेव मथुरासिंहासने शोभने
राधासंस्मरणं तु कृष्णहृदये नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या १२० वन्द्योपाध्यायोपाह्वकृष्णायाः

धन्यं धन्यमिदं दिवं परिषदो यस्मिन्निमे भूसुरा
राजन्ते यदुमेशमिश्रसुधियोऽध्यक्षा समक्षेऽद्य नः ।
एषां रम्यशरीरयष्टिचरितेऽमुष्मिन्नु वेषेऽव्ययं
मालास्यूतपिशङ्गपुष्पनिचयो नीले सुवर्णायते* ॥ १ ॥

क्रमसंख्या १२१ श्रीधर्मपालसिंहस्य

बर्हिन् ! प्रावृषि पङ्किले पथि न ते मेघेन मैत्री शुभा
तं दृष्ट्वा किमु नर्तनं प्रकुरुषे व्यर्थभ्रमे भ्राम्यसि ।
यत्तन्नीलतनौ क्षणं हरिधनुर्दूराद् विवर्णायते
तत् काये शतचन्द्रकं तव सदा नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

आयाते मधुमासि सर्वसुमदोऽन्तः सप्तपर्णायते
कापि प्रोषितभर्तृका पतिमनोयोगादपर्णायते ।
पङ्गुश्चाप्यनुधावतीव बधिरोऽप्येवं सुकर्णायते ।
मूकोऽन्धोपि च वक्ति पश्यति वपुर्नीले सुवर्णायते ॥ २ ॥

क्रमसंख्या १२२, १२३ श्रीशिवजीशर्मोपाध्यायस्य

प्रावृट्कालसुनीलनीरदघने विद्युद्यथा द्योतते
नैराश्येऽपि घनान्धकारविहिते दृष्टो यथाऽऽशाकणः ।

---

*कविभारत्याः प्रथमवार्षिकोत्सवेऽध्यक्षमहोदयं महामहोपाध्यायडॉक्टर-उमेशमिश्रं धृतनीलपरिधानं पिशङ्गकुसुममालाऽलङ्कृतकण्ठं निरीक्ष्य सभास्थल एवाशुकविः समस्यामिमां पर्यपूरयत् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहाक्रान्तसुदीर्नचित्तपटले कस्यापि लीलायितं
कारुण्याधिकदीपितं मम तथा नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या १२४ शर्मोपाह्वप्रेमलतायाः

श्रीवृन्दावनमञ्जुकुञ्जसदने वल्लीमतल्लीवृते
पुष्पस्रक्समलंकृतेऽति सुरभौ मन्दानिले मूर्च्छति ।
आलीभी रचिते प्रसूनशयने सामोदमोदावहे
श्रीराधाऽसितसुन्दरे हृदि हरेर्नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

व्योम्न्यम्भोदघटा तु कज्जलगिरेः शृङ्गायते श्यामला
श्वेता तत्र बकावली विलसिता माल्यायते मञ्जुला ।
प्रोद्यच्छक्रधनुस्त्रिरंगरुचिरं शृङ्गारहारायते
विद्युल्लास्यमिदं नवे जलधरे नीले सुवर्णायते ॥ २ ॥

क्रमसंख्या १२५, १२६ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

ग्रीष्मर्तौ घनघर्मपीडितविभुर्गोपालगोगोपिभिः
सार्धं स्नातुमहो गतस्तरणिजातीरे समुत्कण्ठितः ।
कंसारिर्यमुनेति भेदकमिहालोक्यं न सावर्ण्यतः
कालिन्द्यां वृषभानुजा प्रतिदिनं नीले सुवर्णायते ॥ १ ॥

क्रमसंख्या १२७ श्रीचन्द्रबलिशर्मोपाध्यायस्य

८. शल्यानि मे

विद्वांसः सकलागमाम्बुधितलस्पर्शक्षमा मन्दर-
प्रायास्ते कवयः सुधाधिकरसप्रस्यन्दिनो जाग्रति ।
धत्से यत् खलखेलितानि वसुधे ! प्रादुर्भवद्दुर्नया-
न्यन्तस्तापकराणि तानि हृदये सन्त्येव शल्यानि मे ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्राक्षामाक्षिकमाधुरीसहचरे वाचां कवेर्निर्झरे
स्वर्वाहिन्यमलोर्मिकौतुककरे चेतोहरे दीव्यति ।
न्यस्तान्याग्रहशालिना कविकलावन्ध्येन मध्ये यदि
द्वित्राणि स्वपदानि भान्ति सततं पाण्डित्यशल्यानि मे ।।२।।

नेयं कृष्णनिशा दिशां प्रियसखी शून्या विवर्णाम्बरा
बामा काऽपि कलाधरस्य विरहाद्दग्धा वियोगाग्निना ।
नक्षत्राणि समुन्मिषन्ति न पुनस्तस्याः समस्ताङ्गक-
व्याप्तानि प्रतिभान्ति मन्मथधनुर्मुक्तानि शल्यानि मे ।।३।।

क्रमसंख्या १२८—१३० श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

मरालबकयोस्तथा च पिककाकयोरेकतो—
दधेः परमपेयता शशिनि वा कलङ्कस्थितिः ।
द्विजिह्वमुखसङ्गतिर्मलयजे सुवर्णेऽथवा
मणौ सुरभिहीनता बहुबहूनि शल्यानि मे ।।१।।

सरोवरमुदन्वता खलमुदारहृत्साधुना
कुशीलमनुरागिणा कृपणकार्यमुत्साहिना ।
उलूकमुदिताक्षिणा खगवरेण सामान्यतो
जनस्य समदृष्टिता जनयतीव शल्यानि मे ।२।

चन्द्रप्राप्त्यै तृषितमकरोद् रत्नराशिं समुद्रं
पादौ चक्रेऽतिशयकठिनौ बर्हिणां श्रीभराणाम् ।
काली कस्मान् मधुरमधुरा कोकिला निर्मिता वा
सत्त्युच्छीले रचयितर्हि वा त्रीणि शल्यानि मे वै ।।१।।

क्रमसंख्या १३१-१३३ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

आराध्यो यतिभोगिनामपि हरी राधे तवाराधक-
स्त्वं चैवामितवैभवा भगवतो दारा उदाराः सदा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वामेव प्रणतार्तिहारिणि परां शक्ति शरण्यां श्रये
दीनानन्यगतेः समुद्धरतरां कल्याणि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १३४ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

गवां प्रतिदिनं वधोऽप्यनशनञ्च संन्यासिनां
नृणाञ्च बहुहिंसनं निगडनञ्च तेषां पुनः।
भुशुण्डिपरिचालनं विशसनञ्च विद्यार्थिनां
स्वतन्त्रमिति भारतं षडिति किन्तु शल्यानिमे ॥१॥

क्रमसंख्या १३५ श्रीशिवजीशर्मोपाध्यायस्य

विद्वांसोऽपि विचारसाररहिता जाताः कलेरातपाद्
गीर्वाण्या गुरुमान्यतामुपगताः काश्यामिदानीं जनाः।
पञ्चद्राविड-पञ्चगौडितभिदा कुर्वन्ति कार्याणि सन्
निन्द्यानि प्रतिवासरं किमधिकान्यन्यानि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १३६ श्रीचन्द्रबलिशर्मोपाध्यायस्य

सा दृष्टिर्नवरागरञ्जितमनोभावेन सम्भाविता
लज्जासङ्कुचितं कुरङ्गकदृशस्तन्मन्दमन्दस्मितम्।
तस्या रूपसमान एव मधुरो स्निग्धश्च वाचां क्रमो
यान्यासन् रससेचनानि हि पुरा जातानि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १३७ श्रीरामायणद्विवेदस्य

भ्रष्टाचारमतिः प्रशासकजने तद्योजनादुर्गति-
र्देशे चाप्यधमर्णभारसुरतिर्दैनंदिनं तद्गतिः।
देशोत्थानविकासशर्मविरतिर्नीतिर्न धर्मे रति-
र्नेता नो सुमतिर्विभाति विरतिः किं किं न शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १३८ श्रीराजारामशुक्लस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चीनस्याक्रमणं विदां विघटनं स्वार्थान्धतामूलकं
धान्याभावतया कुटुम्बभरणं वृष्टेर्विना जीवनम् ।
छात्राणां कलहं विहाय पठनं पादप्रहारोपमं
भ्रातर्भारतभक्त ! पूर्वकथितान्येतानि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १३९ श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठिनः

मन्यन्ते निजकार्यमेव परमोत्कृष्टं विशिष्टं तथा
स्वोत्कर्षैकपरायणाः स्वगुरुतां वाञ्छन्ति ये केवलम् ।
स्वार्थान्धाः खलु चिन्तयन्ति सततं, 'दूरीक्रियन्ते कथं'
न्याय्यान्याय्यविचारलेशरहिता, एतानि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १४० देवधरोपाह्वविमलायाः

यद्यप्यस्ति विशालवासभवनं रूपं च लाकोत्तरं
यद् दृष्ट्वा ललना विलाससहिता मुग्धा मनाग् जायते ।
कौबेरस्य धनस्य यत्र विगतो मानस्सदा सम्पदा
विद्यारत्नधनं न यत्र सुभगं ह्येतानि शल्यानि मे ॥१।

क्रमसंख्या १४१ श्रीराधाकान्त-ओझाशर्मणः

जराजुषि यथा यवीयसि निरुत्सवा चेतना
कवौ विदि रवौ सितत्विषि यथा दरिद्रा रुचिः ।
महात्मसु परां महीं प्रति निजां यथात्मीयतां
दहन्ति जननीं भुवं मनसि तानि शल्यानि मे ॥१॥

क्रमसंख्या १४२ श्रीरेवाप्रसादद्विवेदस्य

यदैव संस्कृतिः प्रत्ना भारते विजयायते ।
शल्यानि मे निवर्तन्ते तदैव हृदयादपि ॥१॥

क्रमसंख्या १४३ श्रीपद्मनाभनिरौलाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. कलाविलासः

कलिन्दकन्याकमनीयकूले
नागः सहस्रोग्रफणप्रकाशः ।
तदीयशीर्षेष्वभवन्मुकुन्द—
पदारविन्दस्य कलाविलासः ॥१॥

क्वास्ते स ताराधिपतिः क्व सूर्यः
सहस्रशः प्रोल्लसिताः क्व ताराः ।
इत्थं पुरारेरनुमेयशोभि
विभ्राजते नृत्यकलाविलासः ॥२॥

यदेव बुद्धौ प्रविशेत्तदेव
संलेख्यमित्थं गणनायकस्य ।
कूटेषु बुद्धिं स्थगयन् प्रदीप्तां
द्वैपायनस्यास कलाविलासः ॥ ३ ॥

रात्रेर्दिनं तद्दिवसस्य रात्रि—
मेरोः कणश्चापि सुमेरुरूपः ।
क्षणे क्षणे नूतनवैभवं तत्
सर्वेश्वरस्यैक – कलाविलासः ॥ ४ ॥

वारां निधेः पूर्णतिथौ प्रमादः
तच्चन्द्रकान्ते शतधा द्रवत्वम् ।
सर्वं तदेतत्सुविचार्यमाणं
तारापतेरस्ति कलाविलासः ॥ ५ ॥

क्रमसंख्या १४४-१४८ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

नालङ्कृतीर्न च गुणान् न रसान् न रीती-
:रार्कर्षणाय वह भारमिवात्मनि त्वम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीनार्तमूकजनदुःखभरा भवेश्चेत्
नापेक्ष्यतेऽद्य तव वाणि कलाविलासः ॥ १ ॥

क्लिश्यन्ति केचिदिह सम्प्रति भारतेऽस्मिन्
क्षुत्तृड्व्यथाभिरतिमात्रमपेतपुण्याः ।
केषाञ्चिदद्य तु समाहृत-पुण्यपुञ्जो
जागर्ति हर्षकर एष कलाविलासः ॥ २ ॥

शुष्यन्ति हन्त वदनानि कियन्ति जीर्णा-
न्यायान्ति हन्त वसनान्यथवा कियन्ति ।
रक्ताभिषेक इव कोऽपि ततः कदाचित्
कस्यापि सिद्ध्यति जनस्य कलाविलासः ॥ ३ ॥

क्रमसंख्या १४९-१५१ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

राधाननं जयति निर्जितकोटिचन्द्रं
तस्या नखाश्च निखिला धृतचन्द्ररूपाः ।
तत्रोपमानपदवीमनवाप्य पद्मै-
रिन्दोरुषा न समवैत्ति कलाविलासः ॥ १ ॥

कल्याणि वाणि तव यत्र कृपास्त्यमन्दा
मन्दाकिनीव जगदुद्धरणाय तत्र ।
काकोऽपि भाति भृतकाकलिकोऽप्यवाक्को
वाक्कोशवान् ललितकाव्य-कलाविलासः ॥ २ ॥

क्रमसंख्या १५२, १५३ श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयस्य

आर्तस्वरः प्रसरति क्वचिदातुराणां
कार्तस्वरेण क्वचिदन्यजना रमन्ते ।
इत्थं क्षुधात्यशनयोरनयोर्विरोधे
कीदृग् विकासमयतेऽत्र कलाविलासः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दत्तावलम्ब इव दक्षिणमारुतेन
मन्दाहतेन वचसां कृतसाधुवादः ।
सप्ताश्वरश्मिपरिपाटलितान्तराले
काले वसन्ततिलके तु कलाविलासः ॥ २ ॥

ताराच्छलेनच्छुरिताक्षरपत्रलेखः
पात्रे मसीमयनिभे नभसीन्द्रनीले ।
ज्योत्स्नासुधाधवलितासु निशासु कामं
धत्ते वसन्ततिलकासु कलाविलासः ॥ ३ ॥

क्रमसंख्या १५४-१५६ श्रीप्रियव्रतशर्मणः

पुष्पं समाप्नोति सुचारुरूपं
क्रीडाप्रियस्तं विदलं करोति ।
उच्चैर्हसन् तालिशतं ददाति
नाशो हि बालस्य कलाविलासः ॥ १ ॥

सौवर्णवर्णं च सुकान्तरूपं
शिल्पी वरः स्वर्णकलाप्रवीणः ।
निर्माति यत्सौरभशून्यपुष्पं
नूनं न पूर्णस्तु कलाविलासः ॥ २ ॥

क्रमसंख्या १५७, १५८ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

बाह्ये नु शुक्लवसनोऽपि मलीमसान्तः
मिष्टं वदन्नपि जनो न हितेषु लग्नः ।
कुर्वन्ननिष्टमपि यः खलु मित्रभाक् चेद्
भूयास्त्वमेव न कलेर्हि कलाविलासः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रातर्न नौति पितरौ क्षुरकर्मलीनः
'चाये' रतिं प्रकुरुते, न हि दुग्धमात्रे ।
देवार्चनं न कुरुते चलचित्रगानं
नित्यं जनो नु भणतीति कलाविलासः ॥२॥

क्रमसंख्या १५९, १६० श्रीजनार्दनस्वरूपाग्रवालस्य

प्राचीनकालकलना कमनीयकान्तेः
संख्या हि निश्चितवती ननु षोडशाङ्कः ।
वात्स्यायनेन मुनिना तु चतुर्गुणं वै
अष्टार्धदैर्जिनमते हि कलाविलासः ॥१॥

क्रमसंख्या १६१ श्रीनरेशझाशर्मणः

अव्ये मनोज्ञरचना न कलाविलासः
दृश्ये च रम्यतरता न कलाविलासः ।
संवादभाक् सहृदयेषु सुभावितेषु
हृत्तन्त्रिकानुरणनं हि कलाविलासः ॥१॥
अर्थाभिलाषवशगो न कलाविलासः
लोकैषणाभिलुलितो न कलाविलासः ।
ध्याता समस्तविषया न कदापि यैस्तैः
स्वान्तःसुखाय विततो हि कलाविलासः ॥२॥

क्रमसंख्या १६२, १६३ शर्मोपाह्वप्रेमलतायाः

नीलाचलेन्द्रहृदये सुविराजते सा
बन्दीकृतः स च पुनर्ह्यनया सदैव ।
वृन्दावने मधुपुरे विरहे निमग्नो
व्यर्थः कलाधरकलासु कलाविलासः ॥१॥

क्रमसंख्या १६४ शर्मोपाह्वोर्मिलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्कुत्सितं, यद्विरसं, विरूपं,
स्मृत्वाऽपि सर्वे विमुखी भवन्ति।
तदेव चेतोहरतामुपैति
यस्य प्रसादात्, स कलाविलासः ॥१॥

वृद्धो जराजर्जरजीर्णकायो
वृक्षश्च शुष्कः सुमपत्रहीनः।
आलेखने तु प्रतिभाति रम्यो
यस्य प्रसादात्, स कलाविलासः ॥२॥

वरं वरीयः प्रतिभाति नित्यं,
दुर्दर्शनं चारुमनोज्ञरूपम्।
उपेक्षितं चिन्त्यतरं सुयोग्यं,
यस्य प्रसादात्, स कलाविलासः ॥३॥

अदृष्टपूर्वं निभृतं च गूढम्
अचिन्त्यमव्यक्तमसाध्यमर्थम्।
सुलीलया तं सुविदग्धसूरेः
कलाविलासः प्रकटीकरोति ॥४॥

स्थूलां शिलां प्रेक्ष्य हसन्ति मूढा
दिव्यत्वबोधेऽर्हति शिल्पकारः।
शोभामवर्ण्यां खलु तस्य शिल्पे
कलाविलासः प्रकटीकरोति ॥५॥

सूर्यस्य यद् दृष्टिपथे न याति
पश्येत्कविः स्वप्रतिभाबलेन।
तत्त्वं निगूढं तदिदं सुकाव्ये
कलाविलासः प्रकटीकरोति ॥६॥

क्रमसंख्या १६५–१७० देवधरोपाह्वविमलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०. शिखण्डिनस्ते

उन्मज्जतीव गगनान्नवकज्जलाभा
सेना घनाघनमयी विषमायुधस्य ।
बालां मृणालमृदुलामुपतापयन्तः
केकां किरन्ति परितश्च शिखण्डिनस्ते ॥१॥

ये सज्जनान् व्यथयितुं विहिताऽवतारा
भारा भुवः कलहयोजनमात्रसाराः ।
ये भोगिभोजनविदः परकार्यसिद्धि-
व्यापारिता भुवि चरन्ति शिखण्डिनस्ते ॥२॥

एकाकिनाऽपि जगदभ्यधिकेन पुंसा
वंशो निजः सुयशसा न विलिप्यते किम् ।
श्रीमत्कुमारचरणाश्रयणप्रभावाद्
एकस्य गौरवभृतोऽद्य शिखण्डिनस्ते ॥३॥

कूलङ्कषा न नयने नयति प्रसादं
नो शाद्वलच्छविरुदेति मुदे जनस्य ।
वैश्वानरे जठरसीमनि दीप्यमाने
नोत्कण्ठयन्ति च मनांसि शिखण्डिनस्ते ॥४॥

क्रमसंख्या १७१-१७४ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्म

चापान्वितो वररवस्तडिदाभवस्त्रो
मन्मानसे नभसि रामघनो यदा स्यात् ।
मातः सरस्वति सुयानशिखण्डिनस्ते
नर्त्स्यन्ति सज्जनवनेषु मुदा तदा वै ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रीष्मावसानसमये स्वसमानरूपं
नानासुवर्णमणि राशिधरं महीध्रम् ।
देवेन्द्रचापसहितं जलदं च दृष्ट्वा
नृत्यन्ति वर्षरुचिरं हि शिखण्डिनस्ते ॥२॥

क्रमसंख्या १७५, १७६ श्रीरामरूपपाठकस्य

ग्रीष्मे कदाचिदुपगत्य वने हतायां
व्याधेन केनचिदपेतमुदो मयूर्याम् ।
नृत्यप्रियस्य दिवसा बत प्रावृषेण्या
यास्यन्ति केन विधिना नु शिखण्डिनस्ते ॥१॥

क्रमसंख्या १७७, श्रीजगन्नाथपाठकस्य

घनद्युतिं दिव्यतडित्पटं हरिं
विभाव्य नृत्यन्तममन्दसम्मदाम् ।
विडम्बयन्तीव पटाः सचन्द्रकाः
शिखण्डिनस्ते शशिखण्डमण्डनम् ॥१॥

क्रमसंख्या १७८ श्रीलीलाधरपन्तस्य

नीलारविन्ददलकोमलचारुशोभं
विद्युत्प्रभाविलसितं वसनं वसानम् ।
त्वां वीक्ष्य कृष्ण ! घनसुन्दरचारुकेशं
नृत्यन्ति भक्तनिवहाश्च शिखण्डिनस्ते ॥१॥

महाभारतयुद्धसमये कार्याकार्यविचाराद्भीतमर्जुनं प्रति —

किं विस्मृतं द्रुपदराजसुता विवाहे
गाण्डीवचालनपटुत्वनिदर्शनं ते ।
लक्ष्यं निरीक्ष्य प्रतिबिम्बिततैलमध्ये
मत्स्याक्षिभेदनिपुणाश्च शिखण्डिनस्ते ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किं विस्मृतं विजयकौरवपूर्ववृत्तं
यत्कर्षितं तव सखीवसनं सभायाम् ।
हे वीर फाल्गुन कथं कुरुषेऽद्य शंकां
जेतुं क्षमा रिपुदलं नु शिखण्डिनस्ते ॥३

दुर्योधनादिरिपवो न तु बान्धवास्ते
क्षत्रस्य शत्रुदलने न हि पापशङ्का ।
त्यक्त्वा ह्यधर्मभयमाक्रमवीतशंको
रक्तं पिबन्तु विपुलं हि शिखण्डिनस्ते ॥४

क्रमसंख्या १७९-१८२ चुनेकरोपाह्वकमला

आशान्वितानम्बरबद्धदृष्टीन्
दृष्ट्वा क्षुधार्ताननुकम्पया च ।
आहूय नृत्यन्ति सुतोयवाहान्
परोपकाराय शिखण्डिनस्ते ॥१॥

केकाऽथ मोहयति वै वरगीतकारान्
लास्यं तथा जनमनः स्ववशीकरोति ।
पिच्छस्य कान्तकमनीयमनोरमा श्रीः
चेतोहराऽस्ति सततं च शिखण्डिनस्ते ॥२

क्रमसंख्या १८३, १८४ देवधरोपाह्वविमला

११. भारो भुवः

उन्माद्यद्दनुजेश्वरक्रमसमुच्छेदानुबद्धात्मना
लीलोपात्तदशावतारचरितारम्भेण यो विष्णुना ।
नीतः संक्षयमप्यसौ शतगुणीभूतः पुनः साम्प्रतं
प्रच्छन्नासुरकिल्बिषैर्गिरिशताकारोऽस्ति भारो भुवः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सञ्चारो धनिराजपूरुषगृहाभ्याशे चिरं सेवितो
व्यापारो मठमन्दिरोदयलयस्थैर्यव्यवस्थाविधेः ।
आहारोऽपि परस्य सद्मनि यथालाभं कलौ नारदा-
ऽऽकारो धार्मिकपुङ्गवो न किमहो जागर्ति भारो भुवः ॥२॥

यच्चित्तं विकलीकरोति न मनाक्कान्ताकटाक्षच्छटा
वीणावेणुमृदंगसंगतिरपि प्रायो न यस्य प्रिया ।
प्रोन्मीलद्भगवत्कथामृतरसस्यन्देऽपि मन्दादरो
यो लोके नरवेषभृत्पशुगुणाधारः स भारो भुवः ॥३॥

क्रमसंख्या १८५-१८७ श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

न ध्यातं चरणद्वयं रघुपतेः, कूपादिकं नो कृतं
नो दत्तं विदुषे च काञ्चनधनं, तीर्थाटनं नो कृतम् ।
दारापुत्रधनादिदुर्लभसुखं स्वप्ने न दृष्टं मया
चिन्ताकृष्णभुजंगिनीपरिवृतो वृद्धोस्मि भारो भुवः ॥१॥

क्रमसंख्या १८८ श्रीरामरूपपाठकस्य

नो शाखी, न शिलोच्चयो, न च महान् स्तूपो, न चाभ्रङ्कषं
हर्म्यं, यन्त्रगृहं, न चायसमहायानं तु भारायते ।
दीनो दुर्ललितो दुरात्मतिलको लोकप्रमोदान्तको
दुर्नीतिप्रवणो दुरन्तदुरितासक्तोऽस्ति भारो भुवः ॥१॥

सभ्यः सज्जनरञ्जनो गुणनिधिः प्रेमप्रशस्तास्पदं
कोऽप्येकः परमादरेण सुजनैरुत्कण्ठयाभ्यर्च्यते ।
अन्यो मानवतारिपुर्मधुमुखो हालाहलान्तःस्थितिः
कामं धिक्क्रियते व्यलीकहृदयो लोकेन भारो भुवः ॥२॥

क्रमसंख्या १८९, १९० श्रीरतिनाथझाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्यो येन कदाचिदेव विधिना कार्यं सुसम्पादितं
सोऽयं धन्यतरो विवेकमपि यो धत्ते सखायं निजम् ।
पूर्णो धन्यतमः स एव पुरुषो यः सत्यसङ्कल्पभाक्
युक्तायुक्तविवेकशून्यहृदयो मूर्खस्तु भारो भुवः ॥१॥
समस्त-जन-यन्त्रणा-परवशैस्समानां शतै-
र्विभक्तमति विस्तृतं सकलमेव तुच्छं जगत् ।
अनर्थशतजन्मनां परिकथासु दुःखं जनु-
र्विचार्य ननु निश्चिनोम्यवितथोऽस्मि भारो भुवः ॥२॥

क्रमसंख्या १९१, १९२ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

गीतम्

ननु वर्धते भारो भुवः, परिहीयते भारो भुवः,
परिपूर्तिरत्र विचिन्त्यते कथमस्त्ययं भारो भुवः ॥ध्रु.
कर्मण्यता हानौ निरुत्साहे विवृद्धे मत्सरे,
द्वेषदोषोपाधिभिर्ननु वर्धते भारो भुवः ॥१॥
कर्मठत्वे लौकिकानां रक्षणे परिशीलने,
सेवने बहुभाषणे, परिहीयते भारो भुवः ॥२॥
प्रतिकूलतायां संस्थिते दैवे कदाचन मानुषे,
अर्थकामाकुलतया ननु वर्धते भारो भुवः ॥३॥
अनुकूलताया मागते भाग्ये समृद्धिरिहैधते
धर्मभावोदयवशात् परिहीयते भारोभुवः ॥४॥

क्रमसंख्या १९३-१९६ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

स्वार्थान्धो निजकायपोषणपरो निघ्नन् परार्थं सदा
स्वच्छन्दं पशुवद् भ्रमन्निति इतो गर्वं स्वकं धारयन् ।
धन्यं शास्त्रविरुद्धपौरुषबलं संमानयन् यो निजं
दूरीकृत्य विवर्धते प्रतिदिनं सोऽद्यात्र भारोभुवः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शास्त्रार्थं न करोति कारयति च व्यर्थं हि कालं नयन्
विज्ञोऽप्यद्य नोजैकशास्त्रमननं सन्त्यज्य सन्तिष्ठते ।
लब्ध्वा पुण्यशतेन मानववपुस्तत्रापि यो भारते
नान्यं बोधयति स्वरूपमधुना सोऽद्यात्र भारो भुवः ॥२॥

क्रमसंख्या १९७, १९८ श्रीकृष्णमोहनठक्कुरस्य

श्रीशारदा येन नो पूजिता वा न विद्यानवद्यापि संशिक्षिता
संगीतरागा न वालापिता येन वीणारवो वा न झंकारितः
आलेखनार्थं न चित्रावलेयैन रंगस्य हस्ते धृता तूलिका
मञ्जीरशब्दो न वा शिञ्जितो येन मन्ये च नूनं स भारो भुवः ।१।
आश्वास्य चित्तं न वाष्पं प्रमृष्टं न दूरीकृतार्तिर्हि दीनस्य वा
दुःखेन वक्रीकृते चापि वक्त्रे न हासस्य रेखा हि वा निर्मिता ।
अज्ञानपूर्णस्य मूढस्य चित्ते हि ज्ञानस्य तेजो न वा पूरितं
मार्गस्तु श्रेयः कुमार्गं गतार्थं न सज्जीकृतो येन भारो भुवः ॥२॥
राष्ट्रस्य संमानरक्षाकृते येन प्राणाः प्रियाः संकटे पातिताः
अन्यायदारिद्र्यदुःखं जनानां परैः शोषणं येन दूरीकृतम् ।
वर्षाः कृता येन सौख्यस्य लोके स्वयं कष्टसीमा हि सोढा मुदा
श्रेष्ठो नरो देशरत्नं च यस्त्यागरूपः स्वयं किं स भारो भुवः ?॥३॥

क्रमसंख्या १९९–२०१ चुनेकरोपाह्वकमलायः

जन्मान्धा बधिरा तथा च जडवाक् कन्याऽसहाया ययोः
मेनाते पितरौ न मृत्युसदृशं मित्रं परं दुःखितौ ।
कन्यायै क्षणिकं सुखं प्रयतते दातुं यदा 'केल्लरः'
साफल्यादधुना हि 'हेलन'पितुर्नार्तोऽस्ति भारो भुवः* ॥१॥

---

* अमेरिकादेशीया विश्वविश्रुता 'हेलन'महोदया मूका बधिरा अन्धा च सत्यपि एतादृशानामेव विकलेन्द्रियाणां सौविध्यसम्पादनाय निरन्तरं यतमानाऽत्र वर्णिता । तस्या धात्री 'केल्लर' महोदया तामेतादृशीं गौरवशालिनीमकारयत् इति साप्यत्र स्मृता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसायनविदां मतम्

साकल्येन विपर्ययो न घटते, संभाव्य एकैकशः
आकारे परिवर्तनं भवति वै रूपेऽपि संभाव्यते ।
ऊर्जायाः परिवर्धनं न तु भवेद्द्वारेऽपि नो विक्रिया,
न स्तोकं खलु वर्धते न भवति क्षीणोऽपि भारो भुवः ॥२॥

क्रमसंख्या २०२,२०३ देवधरोपाह्वविमलायाः

आत्मार्थे पृथिवीं त्यजन्ति सकला ग्रामं कुलं चापि ये
संप्राप्यावसरं सरन्ति गरणि प्राज्ञाः पराराधने ।
शोकाच्छोकयुतान् विलोभ्य सपदि प्राप्ताधिकाराश्च ते
नेतारो ननु किं स्वदेशजनताहारोऽथ भारो भुवः ॥

क्रमसंख्या २०४ श्रीप्रियव्रतशर्मणः

१२. परिवर्तनीयम्

उल्लङ्घयन्तु सरितः परितः प्रमत्ताः
क्षुद्रा निजस्थितिममूर्जलदागमेन ।
उच्चैर्हरस्य शिरसि स्थितिमाप्तवत्या
गङ्गे ! त्वया न चरितं परिवर्तनीयम् ॥ १ ॥

वाग्देवतार्चनवशाद् गुरुसन्निधानाद्
यस्यास्ततोऽपि कविता वृणुते पुमांसम् ।
तस्मात्परस्य सुकवेर्न कदापि काव्यं
सर्वापहारविधया परिवर्तनीयम् ॥ २ ॥

रम्यप्रसूननिवहां न विनोदवाटी-
माटीकते भुजग ! भीतिभरेण लोकः ।
गर्वं त्यज त्वमुपसीदति नीलकण्ठः
स्थानं त्वया ननु स्यात् परिवर्तनीयम् ॥३॥

क्रमसंख्या २०५-२०७ श्रीवटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'हिटलर'मदहर्तुः 'स्टालिन'स्यात्मजेयं
कनकरुचिररूपा 'स्त्रेतलाना' प्रसन्ना ।
त्रिदिवसदृश'कालाकाँकरे' राज्य ईशं
सहजविमलबुद्ध्या श्री'व्रजेशं' ववार ॥१॥

'व्रजेश'राज्ञो हृदयारविन्दे, निवासकर्त्री मणिदन्तवत्या ।
श्री'स्वेतलाने'ति प्रसिद्धनाम्न्या, विचार्य बुद्ध्या जगदे जगत्याम् ॥२॥

धन्यः शुभो भारतधर्म एषः
स्वदेशधर्मः परिवर्तनीयः ।
स्वदेशरीतिः परिवर्तनीया
स्वदेशकार्यं परिवर्तनीयम् ॥३॥

नवीनसुश्रीः कविता सुकन्या
न मुञ्चतीयं क्षणमेकमेव ।
दस्रौ सुवैद्यौ च्यवनस्य बन्धो-
र्ममाद्य देहः परिवर्तनीयः ॥४॥

दन्तैर्विहीनं वदनं प्रयातं,
मुण्डं मदीयं पलितं समन्तात् ।
ययातिभूपस्य दशां गतस्य
ममापि देहः परिवर्तनीयः ॥५॥

ललाटपट्टे लिखिता विधात्रा
धनस्य तृष्णा,परगेहवासः ।
ऊचे सुदामा बहुदुःखितो मे
लिपिर्विधातुः परिवर्तनीया ॥६॥

क्रमसंख्या २०८, २११ श्रीरामरूपपाठकस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैदग्ध्यभावमनिशं बुधमण्डलीषु
संमुग्धता युवतिवृन्दगले विधातः ।
शैत्यं च वारिनिचये नलिने सुगन्धिः
सर्वं विधानमिह तेऽ परिवर्तनीयम् ॥१॥

चीने समुत्थितबले गतपञ्चशीले,
व्यावर्तितेऽपि बहुधेह विशीलशीले ।
पाकेऽप्यरुन्तुदबले सहसम्मते च,
नीतेस्तु वर्त्म सहसा परिवर्तनीयम् ॥२॥

सोऽयं कलिस्तपति पूर्णबलैः समाढ्यः
क्रोधादिकाममदलोभविभूषिताङ्गः ।
त्वं चाक्षिबन्धमधुना हि विधाय शेषे
धर्मो धृतिः कथय किं परिवर्तनीयम् ? ॥३॥

अध्यात्मवादशुभभावमपास्य रागात्
यद्भौतिकत्वमनुमन्तुं मुरुप्रयासः ।
देशे विदेशविभवं प्रति लोलुपत्वं
प्रागेव तद्बुधवरैः परिवर्तनीयम् ॥४॥

धर्मे धियं सुकवितासु रुचिं विचारे
चारुत्वमार्जवमयस्वजनस्वभावे ।
आधातुमुत्तमतयाऽद्य कवीन्द्रवृन्दे-
र्लोकस्य सप्रति मनः परिवर्तनीयम् ॥५॥

क्रमसंख्या २१४, २१८

श्रीरतिनाथझाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(महाप्रलयरूपधारिणीं गङ्गामातरं प्रति)

पुरा तु भूमिः सुजलैः समृद्धा
त्वया कृता किं स्वजलैः प्रणष्टा ।
विध्वंसकं किं धृतरूपमेतद् ?
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥१॥

अद्यागतः किं प्रलयस्य कालो
विध्वंसनं किं कलिकालसिद्धम् ।
विजृम्भितं कालमुखं हि किं वा,
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥२॥

पुरा निजं पायितमम्ब ! वारि
मिष्टं तथा पुष्टियुतं सुशुद्धम् ।
प्राणान् स्वयं संग्रससीव मातः
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥३॥

गृहं सुवृत्तस्य खलस्य किं वा
विद्यागृहं देवकुलं तथैव ।
त्वया धरायां ननु शायितं वै,
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥४॥

किं दुष्कृतं वा शिशुकैः कृतं ते
तेषां त्रुटिः किं नहि वा क्षमार्हा ?
न मृत्युदण्डं तु ददातु माता
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥५॥

अदृष्टपूर्वं व्यथिताऽस्मि दृष्ट्वा,
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ।
तदेव ते दर्शय सौम्यरूपं
भीमं स्वरूपं परिवर्तनीयम् ॥६॥

क्रमसंख्या २१९–२२४ चुनेकरोपाह्वकमलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतम्

परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपं, परिवर्तनीयं नैतत्स्वरूपम् ।।ध्रु.।।

या शैशवे हास्यनिनादयुक्ता
यस्या हि दृष्टिः सरला च मुक्ता,
क्रीडाप्रिया क्रीडनकेषु सक्ता
मनोहरं चारु च बालरूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ! ।।१।।

सा यौवने सुस्मितकान्तियुक्ता,
वामेक्षणा पश्यति भव्यभावा,
धत्ते हि सा विभ्रमचारुशोभा,
मनोहरं यौवनचारु रूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ! ।।२।।

वात्सल्यशोभा-धृतफुल्लनेत्रा,
हास्यप्रफुल्ला बत चारुवक्त्रा,
अंके हि माता धृतबालपुत्रा,
मनोहरं चारु च मातृरूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ।।३।।

सा त्वद्य प्रौढा कृतकार्यधन्या,
भर्त्रा च पुत्रैः सुताभिश्च मान्या,
तैर्मन्यते तादृशी चास्ति नान्या,
मनोहरं चारु गभीररूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ।।४।।

वृद्धा च सा शोभते श्वेतकेशा,
प्रसन्नवक्त्रा च विनीतवेषा,
शान्ता च नम्रा तथा साधिताशा,
मनोहरं चारु च शान्तरूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ।।५।।

रूपाणि दृष्टानि मनोहराणि,
पूर्णानि शोभाक्रमसंयुतानि
नैकं द्वितीयादधिकं मनोज्ञं
न्यूनाधिक नास्ति किञ्चित् स्वरूपं, परिवर्तनीयं किमिदं स्वरूपम् ।।६।।

क्रमसंख्या २२५-२३०　　　　चुनेकरोपाह्वकमलायाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानेन धर्मस्य भवेन्न वृत्तिः,
अधर्ममार्गादथवा निवृत्तिः ।
विचार्य सम्यक् करणीयमद्य,
निश्चित्य कार्यं परिवर्तनीयम् ॥१॥

वक्तृत्वपाण्डित्यसुदर्शनेन,
कृतं विवादेन वितण्डितेन ।
उच्चारितं सर्वमनुक्रमाद्धे-
राचारचक्रं परिवर्तनीयम् ॥२॥

क्रमसंख्या २३१, २३२ देवधरोपाह्वविमलायाः

(पूरगतां गङ्गा प्रति)

दृष्टं सदा जननि ! तेऽत्र सुचारुरूपं,
यन्मोक्षदं सुरुचिरं वरदं प्रसन्नम् ।
मातः कथं मनसि ते सहसाऽद्य जातं,
यत्सांप्रतं स्वचरितं परिवर्तनीयम् ? ॥१॥

पापात्मनां दुरितपुञ्जविनाशिनी त्वं
श्रान्ते कृषीवलगणे वरदायिनी त्वम् ।
कस्माद्गृहेस्त्वमथ भीषणराक्षसीदं
मातः करालचरितं परिवर्तनीयम् ॥२॥

प्रेताग्रनर्तनपरां भयदां च कालीं
मुग्धोऽनुगच्छति शिवोऽथ जहाति मां च ।
प्रारभ्यते विकटभैरवताण्डवं तत्
पुत्रघ्नवर्तनमिदं परिवर्तनीयम् ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूज्यां भगीरथविपत्तिहरां शरण्यां,
नाद्य स्मरन्ति मनुजा अधुना प्रमत्ताः ।
आविष्कृतं नु विकटं निजरौद्ररूपं,
सिद्धं तवेप्सितमतः परिवर्तनीयम् ॥४॥

क्षेत्रे ददाति सलिलं तव भोज्यदानं
चैतन्यदं त्वभिनवं सुजलं तृषार्ते ।
मोक्षार्थिने सुफलदा वरदेऽसि शीघ्रं,
गोत्रव्रतं न खलु तत् परिवर्तनीयम् ॥५॥

आयासि देवि ! पतितोद्धरणाय भूमौ,
भागीरथि ! प्रणतकष्टनिवारणाय ।
आबालवृद्धमनुजाः शरण प्रपन्नाः,
मातः ! प्रसीद, सलिलं परिवर्तनीयम् ॥६॥

एह्येहि तत्सगरपौत्रसुयाचिताऽऽसी
रुद्धारमात्रमिह तेऽस्ति यदाऽत्र कार्यम् ।
याच्ञाऽद्य किन्तु भवति प्रतियाहि शीघ्रं,
गङ्गे ! दुरन्तचरितं परिवर्तनीयम् ॥७॥

शस्यार्थिनस्त्रिपथगे ! भव शस्यधात्री,
सौन्दर्यपूजनपरस्य च चारुगात्री ।
त्वं मोक्षदा, व्रतमिदं सततं तवासीत्,
तद्देवि ! चिन्तय कथं परिवर्तनीयम् ? ॥८॥

गङ्गाजलं मधुमयं ह्यधुनाऽस्त्यपेयं,
पीडाकरं प्रलयकृत् सलिलं सलीलम् ।
स्वर्गामिनीह नववैतरणीव भासि,
ह्येतत्तव व्यवहृतं परिवर्तनीयम् ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दाकिनि ! त्वरितगाऽसि कथं त्विदानीं ?
स्वर्गामिनी कथमधः पतनोन्मुखाऽद्य ?
पूताम्ब ! मा भव सुनिष्ठुरपूतना त्वं,
मातः पयो न गरले परिवर्तनीयम् ॥१०॥

बध्नन्ति सेतुमिह ते ननु पृष्ठभागे,
नक्तं दिवा जनहिताय सदा यतन्ते ।
तेषां प्रयासनिवहाः सहसा प्रणष्टा
विध्वंसकार्यमधुना परिवर्तनीयम् ॥११॥

बद्धा भगीरथनृपेण पुरा यदाऽऽसीः,
प्रीता परार्थसुकृतैस्तपसा च तस्य ।
एते भगीरथवरा अपि तोषितव्या
नाद्य स्वकं सुचरितं परिवर्तनीयम् ॥१२॥

क्रमसंख्या २३३—२४८ देवधरोपाह्वविमलायाः

रात्रिन्दिवं पथिगतं क्रमवर्धमानं
विस्तारयच्च सलिलप्लुतगामिलीलाम् ।
चित्रायते क्षणमहो चपलेन्द्रचापं,
मायामयं जगदिदं परिवर्तनीयम् ॥१॥

स्वप्नप्रभंगकुटिलं ज्वलनैकसारम्
आभाति सुन्दरतरं ननु पङ्कलिप्तम् ।
द्वन्द्वात्मकं च कुहकं प्रकटीकरोति
भ्रान्तिप्रदं जगदिदं परिवर्तनीयम् ॥२॥

चण्डार्कतप्तपथिक ! क्षणमेव तिष्ठ
यावन्न वर्षति सुखावहवारिवाहः ।
शून्ये सति क्षितितले न जहीहि धैर्यं
धीरोद्यमेन भुवनं परिवर्तनीयम् ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संक्षोभनीयमपि चेदपि शोचनीयं,
स्वप्नेऽथवा भ्रमसि जागरणे कदाचित् ।
चिन्त्यं स्वजीवनमलौकिकशक्तिरूपं,
नैवार्जितास्मिकबलं परिवर्तनीयम् ॥४॥

क्रमसंख्या २४५–२४८ वन्द्योपाध्यायोपाह्वकृष्णायाः

१३. गणयति

सुधास्यन्दी मन्दीकृत-भवनिदाघभ्रमिभरो
जगन्नाथादीनामपि लयमुपेतो मधुझरः ।
इदानीं के वा स्युर्नवचनहेवाककलिता-
श्चिरादेवं वाणी परिचलितपाणिर्गणयति ॥१॥

प्रियस्येन्दोर्जन्मान्तरविरहसातत्यविधुरा
तदीयां सोदर्यामपि परिचरन्ती कमलजाम् ।
अमा रात्रिः सेयं विपुलतरदीपावलिमिषात्
पुनः संयोगस्यावधिदिवसबिन्दून् गणयति ॥२॥

क्रमसंख्या २४९, २५० श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

अयं रम्यारामो मदननटलीलासु ललितो
लतानां लास्यानामभिनवकलाशिक्षणगुरुः ।
मरुन्मदं मन्दं प्रवहति सुगन्धिश्च शिशिरः
कदा प्रेयःप्राप्तिः गणयति कराग्रेण दिवसान् ॥१॥

क्रमसंख्या २५१ श्रीरामकुबेरमालवीयस्य

त्रिभुवनरमणीया मोहिनी देवतानां,
शरदि रसनिधानं रासलीलाभवित्री ।
इति यदुपतिवाक्ये दत्तचित्ता सदैव,
गणयति दिनसंख्यां राधिका गोपिकाभिः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवितथवचनो जगाद नाथो,
मम हि शुभागमनं क्षणे वसन्ते।
इति प्रियवचनं सदा स्मरन्ती,
गणयति मासदिनं वियोगखिन्ना ॥२॥

कदा लङ्कां जित्वा रघुतिलक आगत्य सहसा,
रुदन्तं व्यग्रं मां चरणपतितं वक्षसि वहन्।
इदं चित्ते चिन्तन् कृशतरवपुर्बन्धुभरतः,
सदा नन्दीग्रामे दिवसमवशिष्टं गणयति ॥३॥

क्रमसंख्या २५२-२५४ श्रीरामरूपपाठकस्य

समृद्धं विद्याभिर्मधुरवचनैः शुभ्रयशसं,
गुणैर्गण्यैर्नम्यं सकलजनवन्द्यं सुचरितैः।
महात्मानं धन्यं प्रथितमहिमानञ्च भुवने,
खलोऽत्यन्तक्रूरस्तृणमिव न किञ्चिद् गणयति ॥१॥

प्रवालैरुद्दीप्तं विशदसुमनोभिर्विलासितं,
नवाभिर्लीलाभिः सुरयुवतिवृन्दस्य ललितम्।
प्रमोदैरामोदैरतिशयसुखं नन्दनवनं
न चोष्ट्रो निम्बाशी निजवसतियोग्यं गणयति ॥२॥

न वीणायाः कर्णामृतमतिधुरीणानुरणनं
न वेणो रुद्गीर्णं क्वणनमपि कल्याणकलितम्।
न गान्धर्वं धन्यं ललितमपि नृत्यं च शिखिनः
सुखासीना दीना महिषमहिषीयं गणयति ॥३॥

श्रमेणात्यन्तेन प्रथयति न कर्मेह नियतं,
न वा वाचं मुग्धा व्यवहरति सत्यां च मधुराम्।
न विद्या नो वृत्तं प्रवितरति शिष्याय विबुधः
परं मासस्यान्ते प्रचुरतरमुद्रां गणयति ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथालापे सर्वं मम तु भवदीयं भवति भोः
स्फुटं प्रायेणेत्थं प्रतिदिनमुदारं वदति यः ।
स एवातिक्षुद्रे कतिपयपणप्राप्ति विषये
विरोधे स्वार्थस्य क्षणमपि न मैत्रीं गणयति ॥५॥

क्रमसंख्या २५५-२५९ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

जनानामाक्रोशो गगनतलमप्यास्पृशतु वा
अभावानां मुद्रानुदिनमभिवृद्धिं व्रजतु वा ।
तदेतत्सर्वं नो गणयति मनागप्यनुपमा
प्रजातन्त्रे नीतिर्बहुमतमिहैकं गणयति ॥१॥

क्व वार्ता बाणानामथ च धनुषां नास्ति गणना
गतास्ते खड्गाद्या न खलु समरे तेऽद्य किमपि
इदानीं राष्ट्राणां कटुकलहजाले प्रवितते
रणे नीतिः सम्यक् प्रलयपरमाणून् गणयति ॥२॥

क्रमसंख्या २६०, २६१ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

परिभ्रंशे नावः सति, तरणदण्डे विगलिते,
महावर्तैरुग्रैरिव परिगतः पञ्चवदनैः ।
कृपादृष्टेः क्षुद्रं कणमुपगतं कस्यचिदहो
जनो मज्जन्नेकं तृणमपि सहायं गणयति ॥१॥

क्रमसंख्या २६२ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

प्रवासं मासान्ते सकलशशितुल्यं यदि धनं
क्रमात् क्षीणं क्षीणं भजति तदिहामेन्दुपदवीम् ।
वराकोऽसौ शाकं पचति तदनु प्रातिपदिकं
पुनः प्राप्त्याशायां प्रतिपलमिवाहर्गणयति ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुदा वर्षाकाले जलदमृदुमन्द्रं कलरवं
पिबन्ती सन्देशं कुसुमसममाशापरिगतम्।
कदा शापान्तो मे हृदयदयितस्याथ भविता
क्षणान् काचित् कान्ता विरहपरितान्ता गणयति ।।२।।

क्रमसंख्या २६३, २६४ — श्री प्रियव्रतशर्मणः

पतिं दृष्ट्वा बन्धोरनुगमनशीलं वनमुखं,
भृशं चित्ते क्लिन्ना चिरविरहशंकातुरमतिः।
न तं रोद्धुं शक्ता स्तिमितनयना लक्ष्मणसखी
दिनं मासं वर्षं विरहविधुरा सा गणयति ।।१।।
स्वसैका सा धन्या प्रियपतिसनाथा वनभुवि
द्वितीया दुर्भाग्यात्स्फटिकमणिहर्म्येऽपि विकला।
स्मरन्ती सौमित्रं मनसि सततं भक्तिसहितं
दिनं मासं वर्षं विरहविधुरा सा गणयति ।।२।।
भवेयं प्रौढोऽहं गुरुजनविमुक्तोऽप्रतिहतः
तदा यः सोत्कण्ठो निजमनसि कालं गणयति।
परं प्रौढो भूत्वा धनकनकचिन्ता व्यथयते
तदा तत्प्रौढत्वं बहुलगुरुभारं गणयति ।।३।।

क्रमसंख्या २६५-२६७ — चुनेकरोपाह्वकमलायाः

सितकुवलयमालां पद्महस्ते दधाना,
जितजनकपणं तं रामचन्द्रं व्रजन्ती।
अवनतवदना तु व्रीडया भूमिकन्या
गणयति निजपादन्यासमेकाग्रदृष्टिः ।।१।।
कदा कारागारे वसति न विषण्णो पुनरयं,
अटन् ग्रामाद् ग्रामं तनयति च भक्तिं स्वविषये।
सदा कार्यं कुर्वन् व्रजति धृतिमान् शान्तमनसा,
स्वदेशार्थे धीरो गणयति न कष्टं न विपदम् ।।२।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अग्रे नन्दी प्रणम्यः शिवगणमुखरश्चन्द्रमौलिस्तु पश्चात्
द्रष्टव्यो मन्दिरेषु प्रथितविधिरयं रुद्रपूजाविधाने।
तद्यो भर्तुः सकाशान्मधुवचनपटुर्लिप्सते सुप्रसादं,
आश्चर्यं किं तदीयं गणयति रुचिरं कुक्कुरं द्वारपं सः ।।३।।

अधिगणयति चात्मानं, गणयति सर्वं तृणेन छात्रोऽद्य ।
जनकच्छायाछत्रे, दूरे वृत्त्यर्जनातपो यावत् ।।४।।

क्रमसंख्या २६८-२७१ देवधरोपाह्वविमलाथ

१४. कालिदासः

तुषारगिरिशेखरस्रवदमन्दमन्दाकिनी-
प्रवाहरसमाधुरीसहजमाधुरीतिस्पृशः ।
गिरः सहृदयाशयं सुरभयन्ति यस्याऽनिशं-
स भारतशिरोमणिर्जयति कालिदासः कविः ।।१।।

क्वणत्कनकनूपुरोच्चलितचारुसिद्धाङ्गना-
कदम्बकसमान्वता तुहिनशैलमालान्तरे ।
यदीयकवितानटी त्रिदशवृन्दनेत्रोत्सवं
विवर्धयति कौतुकात् स खलु कालिदासः कृती ।।२।।

प्रसन्नशशिशेखरार्पितशशाङ्कलेखारसैः
प्रसूनशरचेतनामभिनवां विनिर्माय किम् ।
व्यधाद्भुवि शकुन्तलां भुवनलोभनीयामसौ
कवीन्द्रकुलवन्दितो जयति कालिदासः सुधीः ।।३।।

असह्यविरहव्यथाविकलयक्षरक्षाविधौ
विधीतहृदयो दयोपनतदूतभावोऽम्बुदः ।
कुबेरनगरीमगाद् यदुदितेन दीर्घाध्वना
स कारुणिकशेखरो लसति कालिदासः कृती ।।४।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि वहसि पिपासां काव्यपीयूषपाने
मति-मुकुरमलानां मार्जनं चेन्मतं ते ।
निरूपमनिगमार्थोन्मेषचन्द्रातपश्री-
विलसितमधुमासः सेव्यतां कालिदासः ॥५॥

क्रमसंख्या २७२–२७६ श्रीवटुकनाथशास्त्रिखिस्तेशर्मणः

कालिदासः

वाचो विपञ्च्याः किमु पञ्चमाख्यः स्वनः समन्तादमृतायमानः
किं वा पिकानां मधुनन्दितानां कण्ठस्वरो राजति कालिदासः
शृङ्गारवल्ली कुसुमासवानां माधुर्यनिःष्यन्द इवाभिरामः ।
औचित्य लक्ष्म्या ललितो विलासो हासो गिरो राजति कालिदासः॥१।
रसायनं यक्षमनोव्यथायाः शकुन्तलायाः प्रणयालवालम्
शिप्रातरङ्गोन्नमनेऽनिलस्य लीलाविलासः कविकालिदासः ॥२॥
यं प्राप्य धन्या कविताऽधुनापि यं प्राप्यनम्याः कवयोऽधुनापि
स्वर्लोकभूलोकगुणावलीनां स सारभूतः कविकालिदासः ॥३॥

क्रमसंख्या २७७-२७९ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

प्रातःकालो मधुरमधुरोऽस्त्यादिकाव्यस्य कर्ता
श्रीमान् व्यासो जयति जटिलश्चण्डमध्याह्नकालः ।
साहित्याख्ये नभसि सरसश्चन्द्रगुप्तैकशोभः
सायंकालो रमणसुखदो विद्यते कालिदासः ॥१॥
लोके सम्यक् तृषिततृषिते ग्रीष्मतापाभिभूते
कारुण्याख्ये सुखदसलिले शोषमाप्ते समन्तात् ।
आषाढस्य प्रथमदिवसो मेघदूतैकदृष्टिः
सन्तप्तानां शरणमधुना केवलं कालिदासः ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधो देव्याः कुटिलकुटिलभ्रूचितः सत्कटाक्षः
बाणो वीणाक्वणनमुखरः सालसो वाग्विलासः ।
प्रीतिस्निग्धं सरसमृदुलं लक्षितं पुण्यभाग्भि-
स्ताम्बूलश्रीविरलखचितं सुस्मितं कालिदासः ॥३॥

न्यासे न्यासे किमपि सरसं नूपुरक्वाणरम्यं
लज्जास्निग्धं ललितललितं चित्तसंमोहकारि ।
मन्दं मन्दं सहजमृदुलं यौवनस्पर्शभाज-
स्तत् कस्याश्चिद् गतिविलसितं लक्ष्यते कालिदासः ॥४॥

जागर्तीयं ज्वलनसदृशी संस्कृतिर्भारतीया
तावन्मन्ये त्रिभुवनगृहप्राङ्गणे नृत्यशीला ।
तावद्वन्द्यं विपुलविपुलं गौरवं भारतीयं
यावन्नाम्ना विलसति कविर्विश्रुतः कालिदासः ॥५॥

क्रमसंख्या २८०–२८४

श्रीजगन्नाथपाठकस्य

गन्तुं गिरां कठिनदुर्गगृहे चकार
यः काव्यनाटकमयं नवराजमार्गम् ।
स्वच्छप्रसादगुणगुम्फितवाग्विलासः
आसीदिहैव कविकोकिल-कालिदासः ॥१॥

यदीयकाव्ये कमनीयताया
वेद्यान्तरस्पर्शविहीनरूपम्-
चकास्ति लोकोत्तरभावराशि—
पुञ्जः प्रणम्यो भुवि कालिदासः ॥२॥

यदीय जन्मोत्सव एष नूनं
श्रीकृष्णजन्मोत्सव तुल्य एव ।
साहित्यसेवारसिकेषु मान्यो
विभूतिरीशस्य हि कालिदासः ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्योत्तमाया विशदः प्रयासः
काव्याङ्गनायाः कमनीयहासः ।
हंसः प्रसन्नो रसदीर्घिकायाः
प्रत्यूषवन्द्यः किल कालिदासः ॥४॥

क्रमसंख्या २८७-२८८ श्रीशिवदत्तशर्मचतुर्वेदस्य

धन्यं जनुस्तव भुवि प्रथमः कवीनां
विश्वं त्वया धवलितं शरदिन्दुकीर्त्या ।
ज्ञात्वाऽम्बयाऽभ्युदयशालिनमाशुलोके
दास्ये नियोज्य कथितः कविकालिदासः ॥१॥

क्रमसंख्या २८९ श्री गजाननशास्त्रिमुसलगाँवकरस्य

कालिदासप्रशस्तिपञ्चकम्

येषां वाणी ललितमधुरा, संस्कृता, चार्थगर्भा,
भावस्फीता सरसरुचिरा मोहयत्यात्मशक्त्या ।
सत्काव्येषु प्रकृतिसुषमा प्राणिता सूरिभिर्यैः
मूर्धन्येषां कविकुलगुरू राजते कालिदासः ॥ १ ॥

वागर्थप्रतिपत्तिरप्रतिहता काव्येषु संदृश्यते,
शालीनो विनयात्परं न वचनं युक्तं निजं मन्यते ।
गर्वाढ्या इतरे यदा तु सफलाः श्रीशारदोपासने
वाणीकण्ठमणिः सदा विलसति श्री कालिदासः कविः ॥२॥

दिव्यं भव्यं निगूढं, सुरुचिर सुभगं सुप्रभं वा करालं,
प्रत्यक्षं वा परोक्षं ललित विलसितं केवलं भावगम्यम् ।
दृष्टान्ता युक्तियुक्ता नयनपथगतं कुर्वते यत्र सर्वं,
वीणापाणिप्रसादाज्जयति कविवरः कालिदासोऽद्वितीयः॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजर्षि प्रेक्ष्य मुग्धा मुनिवरतनया प्रेक्ष्य मुग्धो नृपस्ताम्
आत्मानं चार्पयन्तौ प्रमुदितमनसौ स्नेहपर्युत्सुकौ तौ ।
प्रत्यादेशव्यलीकं प्रकटयति च यत्केवलं तत्वशुद्धाः
साक्ष्यावाप्तिक्षमास्ते नयमुपदिशते तत्त्ववित्कालिदासः ॥४॥

क्रमसंख्या २९०, २९३ देवधरोपाह्वविमलाया।

आकाशस्थं जलवितरकं चंचलं नैकरूपं
धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातं हि मेघम् ।
दूतस्थाने कविकुलगुरुः कल्पते कालिदासः
श्रेष्ठं मन्ये हृदय सुखदं कल्पनाया विलासम् ॥ १ ॥
जनकनृपसुताया आर्तसंदेशशब्दा
मदनदहनदग्धा या रतेः शोकवाणी ।
अजनृपतिविलापा भिन्दते यत्र मर्म
करुणरस विदग्धः शब्दराट् कालिदासः ॥ २ ॥
आह्लादकः पुंस्कृत वाग्विलासः
साक्षाच्च यः कल्पकता विकासः ।
श्रीशारदाया मधुरो निवासः
श्रेष्ठः कवीनां खलु कालिदासः ॥ ३ ॥ (शङ्खबन्धः)

क्रमसंख्या २९४–२९६ चुनेकरोपाह्वकमलाया।

गीर्वाणवाग् विकलितागलिताश्रुधारा
कारायितं च सदनं सदलंकृतीनाम् ।
छन्दांसि भिन्नचरणानि गुणाश्च गौणाः
एषोऽद्य दोषनिरतस्तव कालि दासः ॥ १ ॥
वेदा निर्वेददीना विदलितविभवाः खेदिताश्चोपवेदाः
न्यायोऽन्यायस्वरूपं भजति पुनरमी विस्मृताः स्मार्तपाशाः ।
मीमांसा मां सदा सा मनसिज मधुनोन्मत्तभावाभिलाषा
भाषा स्वीयाऽन्यदीया समजनि जननिकालि ! ते कालिदासः ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दं मन्दं नुदति तुदति प्रोषितानां मनांसि
मेघालोके क्वचिदिहरसाच्छिन्नविश्वान्तराला:
क्वापि प्राप्ते कुसुमसमये क्षिप्तमारः कुमारे।
कच्चित् कान्तो जयति पवनो नो कविः कालिदासः ॥३॥

क्रमसंख्या २९७-२९९ श्रीप्रियव्रतशर्मणः

आसीस्त्वं वै कविकुलगुरु र्भारते कालिदासः
श्लक्ष्णावाणी तव सुमधुरा काव्यबध्वा विलासः।
दृश्यं श्रव्यं सरसरुचिरं सुन्दरं ते सुकाव्यं
गीतं सर्वैस्तव तु सुयशो हे कवेऽत्यन्त भव्यम् ॥१॥

क्रमसंख्या ३०० मुखोपाध्यायोपाह्वभक्तिसुधायाः

वेदव्यासः श्रुतिपथगतो नाट्यकारेषु भासः
सन्त्यन्ये ये प्रथितयशसस्तत्र वाल्मीकिमुख्याः।
आस्तां तावन्निकषकषितं बाणभट्टस्य गद्यं
सर्वेषां मे कविकुलगुरू रोचते कालिदासः ॥

क्रमसंख्या ३०१ श्रीमहेशचन्द्रजोशिशर्मणः

देशे विदेशेषु च यस्य कीर्त्तिः
प्रीतिः स्वधर्मेऽपि च काव्यवृत्तिः।
प्रज्वालितो येन च काव्यदीपः
सोऽयं कवीनां कविकालिदासः ॥

क्रमसंख्या ३०२ श्रीराधाकान्त-ओझाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ख) प्रकीर्णगीतसंग्रहः

१. जलधरावाहनम्

वर्षं सहर्षं नवं जीवनं जलधर ! तप्तधरायाम् ।। ध्रुव० ।।

दिशि दिशि वहत्यभिनवा वात्या
यत्र विह्वलो जनो जगत्याः ।
चण्डांशुस्तापयति नितान्तं
यतो भूतलं नितरां क्लान्तम् ।।

रसा नीरसाऽभवत्ततः शुष्यन्ति दलानि लतायाम् ।। ध्रुव० ।।१।।

प्राप्य शीतलं स्वच्छं सलिलं
त्यजति कर्षको मानसकलिलम् ।
नृत्यति मुदा कलापिकलापः
प्रसरति कोकिल कण्ठालापः ।।

तव स्वागतं गायन्तु प्रमदा मुदिता दोलायाम् ।।ध्रुव० ।।२।।

दृशं नाशयति यस्य त्वीरं
कुरुतमकंमपत्रमधीरम् ।
बीजमङ्कुरय सुखलतिकायाः
वितरतु येन जनो वसुधायाः ।।

नवं सौरभं भवतु सुमनसां चिरसस्यता रसायाम् ।। ध्रु० व०।।३।।

शोषणशक्तिर्यातु विनाशम्
दलितं सुमनो व्रजतु विकासम् ।
विकसितहेमम्भोजैस्तूर्णम्
जनमानसं भवतु परिपूर्णम् ।।

भवतु मङ्गलं स्फुरतु नन्दनं नित्यं जनमुदितायाम् ।।ध्रु० व०।।४:।

क्रमसंख्या ३०३-३०६

श्रीरतिनाथझाशर्मणः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. जयोद्घोषः

बलं जयेम वैरिणाम् ।
रणस्थले विहारिणीं सरक्तशस्त्रधारिणीम्
समस्तविश्वमोहिनीं प्रणम्य सिंहवाहिनीम् ॥१॥

स्वतन्त्रराष्ट्रगौरवं स्वदेशभक्तिसूक्तिभिः
प्रवर्ध्य सत्वरं वयं बलं जयेम वैरिणाम् ॥२॥

लभेत को जयं जगत्तलेऽखिले रणं विना
जनस्य निष्फलं प्रयाति जीवनं जयं विना ॥३॥

रणप्रसूतपुत्रकाः स्वदेशभक्तिवर्धिकाः
विदेशकीर्त्ति विस्तरा जयन्ति वीरमातरः ॥४॥

वसुन्धराऽस्ति गर्विता सदा हि या जयार्जिता
सुपीडिताऽतिचौरशत्रुदुष्क्रमप्रतापिता ॥५॥

महाजना महर्षयः सुरर्षयस्तथा पुनः
वदन्ति भारतीं कथां सुभारतीं कथामिमाम् ॥६॥

जयं विना निरर्थकं जनिर्जनस्य भारते
इयं पुरातनी कथा यथा हि लोकविश्रुता ॥७॥

उमापतिर्महेश्वरः शचीपतिः सुरेश्वरः
श्रियः पतिः स्वयं हरिर्युयोधयुद्धमद्भुतम् ॥८॥

अये वयस्कबालकाः स्वदेशरक्षणोद्यताः
भवन्तु सत्वरं यतो बलं जयेम वैरिणाम् ॥९॥

क्रमसंख्या २०७-२१५ श्रीकृष्णमोहनठक्कुरस्य

३. कालिदासप्रशस्तिः

जयति कविताया विलासः
सुप्तमन्मथजागरणरतमञ्जुलस्वनलयविकासः ॥ज०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वरविपञ्चीपञ्चमस्वर–
संस्तुताखिलकाव्यनादः ।
सकलजगदामोददाय
रसालपिकनन्दितनिनादः ॥
मधुपयः कादम्बिनीमन्दस्मितोज्ज्वलकालिदासः ॥ ज० ॥१॥

ललिततमकविभारती
सौभाग्यबिन्दुरिवाभिरामः ।
रम्यतानीराजनैः
सम्पादितस्तमोविरामः ॥
स्वर्गभूपरिणयपुरोहितमन्त्रतनुरिव कालिदासः ॥ज०॥२॥

भरतभुविनिर्वाणरागा-
कुलगृहस्थितिभङ्गलीलाम् ।
सपदिदूरीकर्तुमिव
सूक्ति जगौ शृङ्गारशीलाम् ।
दुर्व्यवस्थित सद्म पद्मालयविधायककालिदासः ॥ ज०॥३॥

युवजनाकाङ्क्षासमृद्धि-
विवर्धनप्रणयैकवित्तः ।
सर्वथानौचित्यचर्चो-
न्मूलनव्रतपूतचित्तः ।
आर्यमर्यादाप्रतिष्ठापककवीश्वरकालिदासः ॥ज०॥४॥

प्रेमवीथिषु येन नानुमतो-
ऽभिमानपदप्रवेशः ।
न स्वधर्मविरुद्धसङ्घटना-
विधौ मनसो निवेशः ।
योगभोगसमन्वयप्रणिधिर्नवः स च कालिदासः ॥ज०॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीप्रमदोपवनवर-
दीर्घिकास्फुटकञ्जहासः ।
केलिरववाचः स्फुरन्
मञ्जीररञ्जितमञ्जुलासः ।
हर्षवर्षिघनस्य संविद्विद्युता सह मदिररासः ॥ज०॥६॥

स्थाणुरपि मदनान्तको-
ऽपि कृतः प्रियायाः क्रीतदासः ।
रामगिरिमानीययक्षस्या-
पनीततरः प्रवासः ।
प्रेषितो दयितान्तिके मेघोऽपि दूत इति प्रयासः ॥ जय० ॥७॥

क्रमसंख्या ३१६-३२२ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

४. हिमालय-वन्दना

जय जय वीर हिमालय ! वन्दे
देवी-देव-विहार-वनस्थल !
पुण्य-तीर्थशत-सेवित ! निर्मल !
सिद्ध-योगिजन-वन्दित ! अम्बर-
चुम्बि-चारु-शृंगालय ! वन्दे ॥१॥

ऋषि-महर्षि-मुनि-संस्तुत-वैभव !
कालिदास कवि-कीर्तित-गौरव !
भारतीयजन-मानस-मन्दिर-
महादेव ! गरिमालय ! वन्दे ॥२॥

मानसरोवर-लहरी-भङ्कृत !
श्री कैलास-शिखर-समलङ्कृत !
तिब्बतीय भू-वैभवभूषित !
बदरीवन-सुषमालय ! वन्दे ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तव पदकमलतले नतमस्तक-
मुद्धत रिपु-दलने असिहस्तक-
मद्य वृद्ध-शिशु-युव युवती जन-
वृन्दमिदं महिमालय ! वन्दे ।।४।।

अप्रमेयबल ! निर्भय ! निर्जर !
शत्रु-सैन्य-दुर्द्धर्ष ! भयंकर !
हीन-चीनजन-पदतल-दूषित !
धूलिमलं प्रक्षालय ! वन्दे
जय जय वीर हिमालय ! वन्दे ।।५।।

क्रमसंख्या ३२३-३२७ श्रीवासुदेव द्विवेदस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ग) विविध विषयाश्रित श्लोकाः

१. शरद्वर्णनम्

विशदचन्द्रमुखी विमलाम्बरा,
स्फुटसरोजमुखी स्मिततारका ।
शुचिपयोधरहारिदिगञ्चला,
सुमधनुः शरदा शरदागता ॥१॥

न रजसां प्रसरो न सरांसि वा,
दधति पङ्किलतां किन्तु तां पुनः ।
वसुमतीं सुमतीनिव सम्पदो-
-ऽद्य बहुधा बहुधान्यमुपागतम् ॥२॥

फलभरैर्नमिता नमिता नगा,
रसभरैर्भरितानि च तानि च ।
मधुरताऽवरता न रसाकरे,
चरमता च मता मधुरेऽमुना ॥३॥

गतरजः प्रसराऽस्ततमोभरा,
सकलसत्त्वसमुच्चयसेविता ।
शुचिनवेन्दुमुखी शरदः क्षण-
-क्षपणिका बहुशो बहुशोभते ॥४॥

नववधूर्मधुपस्य गता रुषा,
कमलिनीं रसिकं परिभाव्य तम् ।
मधुरगुञ्जनताननताननना,
समुपजातरसा तरसाऽऽगता ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुसुमितोपवने पवनेरिता,
चलति का लतिकाऽभिनवा न वा ।
भ्रमरसार्थरसार्थमशी शयैः
किसलयैः सलयैरिव नृत्यति ॥६॥

सरसि सारसशावकवाशितं,
कलकलं कलहंसकुलस्य वा ।
श्रवसि किं रसितं न सितायते,
शरदि नीरदिनी रजनीमुखे ॥७॥

नवमयङ्कविभां कविभारती,
कवियशः कुमुदानि मुदाऽनिशम् ।
विकचयत्यमृतोपमितैर्मितै-
-रपिपदैः सुमनांसि मनांसि च ॥८॥

अमृतदीधितिभास्वसदर्थतां
दिवि तथाऽवितथामभितन्वती ।
प्रतिदिशं दिशती सुपदावलीः
कवयितुः प्रतिभा प्रतिभाति मे ॥९॥

तुहिनकान्तिरयन्निरयन्तमो,
नवसुधामयधाम दिशन् दिशि ।
सुषमयाऽसमया समया नभः,
सकलया कलया सममेधते ॥१०॥

विशदकाशविकाशप्रकाशिता,
दशदिशः सितपत्रसितं सरः ।
शससिताभ्रलवैर्लसितं नभः
शरदनेहसि नेह सितं नु किम् ॥११॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लसदपांसुलताऽवनिमण्डले,
विशदताऽविशदासु सृतिष्वपि ।
अथ जलेषु निरस्तसपङ्कता,
शरदहोभिरहोऽभिनवोकृतम् ॥ १२॥

'गुटुरगूँ गुटरूँ' निनदैरितो
मृदु रवैति कपोतकपोतकः ।
कृतपरस्परचञ्चुसमञ्चनं
चरति चुम्बनचुञ्चुतयोर्द्वयम् ॥ १३॥

शुकदलं कदलीदलसोदरं,
वियति याति रयातिशयेन यत् ।
किमु निवेदयितुं दयितुं तरून्-
श्रयं न नीरद नीरसतामिति ॥ १४॥

शरदि शान्तदिशान्तमनोरमः
कलमवाससुवासितवासरः ।
दमितदर्दुरदुर्वचनो च नो
जनमनो न मनो वितनोति शम् ॥ १५॥

क्रमसंख्या ३२८-३४३ श्रीलीलाधरपन्तस्य

ज्योत्स्नांशुकेन्दुवदना परितश्च तारा
हारावलीभिरभिभासितभासिताङ्गी ।
द्यौर्वीक्षते स्वसुषमां वनितेव कापि
वापीतडागसरितादिषु दर्पणेषु ॥ १ ॥

एकोऽद्वितीय तमसः परस्तात्
याति स्वयज्योतिरयं विवस्वान् ।
सद्यो घनैरावरणैर्वियुक्तो
मुक्तश्चिदात्मेव विधूतभेदः ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धिग्याचनां याति यथा पिपासा
न चातकस्याद्य जलार्थिनोऽपि ।
प्रयाचमानो वसुधां गतोऽपि
सुधां सुधांशोर्लभते चकोरः ॥ ६ ॥

क्रमसंख्या ३४४-३४६

२. प्रावृड्वर्णनम्

नीलाभनद्यां सचलोर्मितायां नीलाम्बुद बिम्बगतं विलोक्य ।
हर्षेण वृक्षाः सरसाः सुनीलाः वर्षामशेषां शिरसा नमन्ति ॥१॥

क्रमसंख्या ३४७ वन्द्योपाध्यायाह्वकृष्णायाः

जलद ! स्वागतं तेऽस्तु एहि श्यामं ! सखे मम ।
नेत्रोत्सवं विधत्ते मे रूपं ते सुभगं वरम् ॥१॥
सन्तप्ताया धरण्यास्त्वं पयोद प्राणवल्लभः ।
उपेक्षितं कथं त्वस्या उष्णं निश्वसितं मुहुः ॥२॥

क्रमसंख्या ३४७, ३४८ मुखोपाध्यायोपाह्वभक्तिसुधायाः

३. एकाकिता

एके हसन्ति दरकुञ्चितकुड्मलाक्षा
अन्योन्यबाहुवलयार्पितकण्ठघन्याः ।
अन्ये लपन्ति विचरन्ति तथा रमन्ते
हा हन्त मान्तु दशतीव विविक्ततैषा ॥ ॥

एकाकिता विषमयीव दिशो दशाऽपि
सर्वा विशेण परिपूरयतीव मन्ये ।
नैवान्यथा कथमहं परितोऽपि पश्यन्
मोहं प्रयामि विततं तिमिरं विशामि ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वेशिता स भगवानपि मोदधामा
यश्चात्मनात्मनि सदा रमते निरीहः ।
एकाकिता विषमदेशपराहतोऽयम्-
एकोऽहमस्मि बहुखेदमवाप सोऽपि ॥३॥

ये सन्ति सन्तु विलसन्तु हसन्तु सन्त-
स्तोषं सरन्तु विजने च भरं तरन्तु ।
हन्तुं परन्तु गरदन्तुर-दन्त-कुन्तो
जन्तुं खरन्तुदति मान्तु विविक्तभावः ॥४॥

आमोदमोदभरभस्मितपुष्पपीनः
पीयूषमार-कलकोकिल-काकलीनः ।
उद्यन्मरन्द मदगुञ्जित-भृङ्गवृन्दो
मां नैव रञ्जयति रञ्चमयं वसन्तः ॥५॥

ज्वालालवाल-विकराल-निदाघकालो
दन्दह्यमान-दहनार्पित-भूमिभालः ।
लेलिह्यमान-तपनांशुनितान्तभीष्मो
ग्रीष्मोऽपि नालमिव भीषयितुं तथामाम् ॥६॥

चञ्चन्मयूरनय-चन्द्रक-चुम्बिता या
माद्यन्मतङ्गशत-सङ्घ-समानकाया ।
आमेचकोन्मुदिरमेदुरमञ्जुमूर्तिः
सम्पाद्यते किमु तया मम मोदपूर्तिः ॥७॥

या कान्तकैरवदती सितचन्द्रहासा
स्वच्छाम्बराब्जनयना भुवनैरुपास्या
निष्पङ्किला शरदपांसुलता ललामा
नैकाकिनो मम कृते किमु सापि वामा ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हेमन्त एष विषमेषु विशेष दूतः
येन द्रुतं हत-वियोगिजनोऽभिभूतः ।
बालाऽबला यदि बलादवतीति दथ्यं
हन्तान्यथाऽन्तकपदान्तिकमेव तथ्यम् ॥९॥

सीत्कारशिक्षणचणः शिशिरः सहेलं
संयोगिनं रमयितुं यततेऽनुवेलम् ।
सोऽयं जडस्तुदति मां सुतरामभीक्ष्णम्
एकाकिने भवति मृद्वपि किं न तीक्ष्णम् ॥१०॥

चेद् यासि तातनिलयं प्रविहाय गङ्गे
तद् याहि पूर्णविलयं व्रज पत्युरङ्के ।
लोकः करोति कुरुतादुपदेशदानं
क्लेशस्य ते सहृदयस्तु करोति भानम् ॥१ ॥

धन्योऽसि चन्द्र ! गगने गमनं त्वदीयं
पश्यामि नित्यमपि कोटिकतारिकाभिः ।
त्वां किं वदामि हतभाग्य दिवाधिनाथ
जानामि मित्र तव दुर्गतिमेकधर्मा ॥१२॥

हे चक्रवाक ! करुणं किमु रे विरौषि
हं हो समाश्वसिहि रात्रिरियं गता ते
मद्भाग्यरात्रिमपि किं न च पश्यसी मां
या शाश्वतीव न हि वेत्त्यवसानसीमाम् ॥१३॥

विष्णोः श्रिया, गिरिजया गिरिशस्य, सिन्धोः
स्वर्गङ्गया सुरपतेर्हृदयं च शच्या ।
सम्पूरितं निरवकाशतया हतस्य
त्वं मे मनो विजनते शरणीकरोषि ॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४. कालिदासः

स्वर्गाङ्गनागणशिरोमणिमेनकाया विश्वाभिनन्द्य सुषमां परिगृह्य दिव्याम् ।
राजर्षिपावनमनश्च शकुन्तलायां संयोजयन् जगति भारतभाग्यमूलम् ॥१॥
वागीश्वरीललितकेलिवनान्तराले शृंगारनिर्मलजलां सरसीं सुरम्याम् ।
माद्यद्रस प्रियमधुव्रतगीतवन्द्यां निर्माय कः सुकवितां स्नपयेत्त्वदन्यः ॥२॥
पुष्पाणि सन्तु मधुसौरभकोषभाञ्जि नेत्रप्रमोदजननानि सुकोमलानि ।
किन्तु प्रसिद्धरसिकस्य मधुव्रतस्य विश्रामधाम जयति स्फुटमेव कञ्जम् ॥३॥
दृष्ट्वाविलासरसपेशलजीवितेषु शक्रेषु सक्तहृदयैव सदोर्वशी या ।
सापि त्वया सुकविसद्गुरुणाव्यलोकि स्निग्धा धराधिपतिविक्रमविक्रमेषु ॥४॥
कर्तव्यमारणपरायणपञ्चबाण-बाणाहतं स्वभुवनादपसारितं यम् ।
संस्थाप्य रामगिरिपुण्यतमाश्रमे यो यक्षं पवित्रमचिरं रचयाञ्चकार ॥५॥

क्रमसंख्या ३६४-३६८ श्रीरतिनाथझाशर्मणः

वाल्मीकेर्मुखमण्डलादभिनवा मद्यः प्रसूताऽभवद्
या संवर्धनमाप दर्भकवलैर्व्यासाश्रमे वाङ्मृगी ।
तामागत्य च कालिदासहरिणः संस्पर्शसंमीलिता-
मेकान्तेषु यदाकदाचन मुहुः शृङ्गैरकण्डूयत ॥१॥

क्रमसंख्या ३६९ श्रीजगन्नाथपाठकस्य

विख्याता ते सहृदयकवेऽलौकिकी दिव्यदृष्टिः
कश्चिद् भेदो नहि तव मते चेतनाऽचेतनेषु ।
सूक्ष्मा रम्या ध्वनिनिपुणता कान्तवैदर्भशैली
युष्मत्काव्ये ननु मधुरता श्च्योतते सर्वतो वै ॥१॥

क्रमसंख्या ३७० मुखोपाध्यायोपाह्वभक्तिसुधायाः

श्रीमद्विक्रममूर्धशीर्ष तिलक श्यामालकालि पुनः
प्रोच्चैर्मालविकाग्निमित्रचरितक्षीरौ स्तनौ बिभ्रतीम् ।
यः शाकुन्तलचन्द्रकान्तवदनामानन्दयन्तीं जनान्
कीर्तिं गीतगुणामुवाह स कविर्वन्द्योऽस्तु मान्यो महान् ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे माभां सुकुमार संभवपरां गौरीमिवान्यां स्थितां
भास्वच्छ्रीरघुवंशमंजुलतमां शाटीं वहन्तीं हिताम् ।
नानापल्लवकंकणं स ऋतुसंहारं दधानां करे
कीर्तिं गीतगुणामुवाह स कविर्धन्योऽस्तुमान्यो महान् ॥२॥

शारदीय शरदिन्दुसमाना
सेविताऽपि बहुधा रसलुब्धैः ।
नूतनैव नवनीत समाङ्गी
वन्द्यतेऽद्य सकलैस्तव कीर्तिः ॥३॥

क्रमसंख्या ३७१-३७३ श्रीजनार्दनगङ्गाधररटाटेशर्मणः

जयतु जयतु शश्वत् कालदासस्य काव्यं
सकलसरसावर्ज्जनिश्छलं श्लाघनीयम् ।
अनुपदमुपमायाः शोभया चाऽद्वितीयं
प्रतिपदमतिरम्यं लोकशास्त्रेषु तुल्यम् ॥१॥

देव्याः प्रसादात् प्रचुरप्रसादे
काव्ये त्वदीये भुवि जागरूके ।
भासोऽपि हासं लभतेऽथ माघो
निराश्रयो धावति धावकोऽपि ॥२॥

शाकुन्तलोपमकृतिः कृतिना परेण
प्रापयि किं क्वचिदपीति विभावनीयम् ।
यत्रास्थितं तु समवाप्य तुरीयमङ्कं
ब्रह्मानुभूतिसुखमप्यधरं विभाति ॥३॥

कीर्तिस्ते कविसार्वभौम ! वितता चान्द्रीव भूमण्डले
श्रद्धेयः समभूश्च विश्वकविरित्याख्यापि लब्धा त्वया ।
सत्यं भारतराष्ट्रगौरवमिदं धन्यास्ति विश्वम्भरा
यत्पुत्रे जगदम्बिका भगवती तुष्टा स्वयं कामदा ॥४॥

क्रमसंख्या ३७४-३७७ डॉ०श्रीगजाननशास्त्रीमुसलगांवकरस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. काकप्रशस्ति

प्रातः प्रातरपि स्वयं प्रतिगृहं गत्वा जनान् निद्रितान्
भो ! भो ! जाग्रत जाग्रतेति शयनं यस्त्याजयस्यादरात् ।
सेवार्थं परिखिद्यसे यदुषसो भूत्वाऽग्रदूतः सदा
काक त्वं न प्रशस्यसे कथमहो निःस्वार्थसेवाव्रती ।१।।

यस्ताः प्रोषितभर्तृका विकलिता नेत्राम्बुधौताननाः
ग्रीष्माघातविताडितालपल्लतिकाकल्पा निरालम्बनाः ।
ता उज्जीवयसे त्वमेव सहसा वार्तासुधासेचनैः
काक ! त्वं न प्रशस्यसे कथमहो निःस्वार्थं सेवाव्रती ।।२।।

इष्टं वापि भवेदनिष्टमथवा स्पष्टं सदा भाषसे
सर्वान् बोधयितुं स्वयं प्रयतसे सन्मन्त्रिवत् सर्वदा ।
कार्याकार्यफलाशुभशुभान्यावेदयन् पूर्वतः
काक ! त्वं न प्रशस्यसे कथमहो निःस्वार्थं सेवाव्रती ।।३ ।

आशातन्तुनिलम्बितान् प्रतिपलं शोकानिलान्दोलितान्
प्राणान् पुष्पमयान् वियोगविकलान् सद्यो निपातोन्मुखान् ।
एको धारयसि त्वमेव कृपया प्रेष्ठाऽगमं श्रावयन्
काक ! त्वं न प्रशस्यसे कथमहो निःस्वार्थसेवाव्रती ।.४।।

स्थाने पुष्पितपादपे सुरभिते कालेऽपि मोदावहे
या सा चाटुपरा प्रशस्यत इयं सर्वैरहो कोकिला ।
त्वं सर्वत्र सदैव सत्यमुखरः सुस्पष्टवादी परं
निर्भर्त्सविषयीकृतोऽसि कविभिर्व्यर्थं कृतघ्नैः शठैः ।।५ ।

ब्रह्मा लोकपितामहस्त्वयि पुनर्लोकस्य पितृव्यता
काकं त्वां स वदेत् कथं यदि न चेत् काकीं च भार्यां तव ?
हंसोलूकमयूरकादिविहगाः किञ्च स्वयं पक्षिराट्
सर्वे वाहनतां गता न च भवान् तद् गौरवं ते स्फुटम् ।।६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दः कोऽपि यदेकदाऽयतत चेदन्वर्थनामा शठः
चेष्टा नेष्टतमा तमेव तरसा साऽपातयत् तत्क्षणात् ।
पादाग्रेण स्पृशन् भवन्तमथ स प्राप्तः स्वयं पङ्गुतां
पश्चात्तापभरैः शनैश्चरति तत् पापग्रहश्चोच्यते । ७॥

दीर्घायुर्विषयेऽसि लोमशसमो वर्णो समो विष्णुना
गर्गस्येव तवापि भाविविषये सम्यक्फलाऽऽवेदिता ।
सर्वानेकदृशैव पश्यसि सदा शत्रुर्भवेद् वा सुहृद्
गीतोक्ता समदर्शिता त्वयि यतस्त्वं पण्डितो वस्तुतः ॥८॥

सन्तोषं श्रयसे सदैव ससुखं भाग्येन यल्लभ्यते
सिद्धश्चाप्यपरिग्रहस्तव तथा लोकप्रसिद्धो दमः ।
शीतोष्णादितितिक्षुमेवमपि ये निन्दन्ति मित्रद्विषः
त्वन्निष्कारणवैरिणो जगति ते ख्याता उलूकास्ततः ॥९॥

माहात्म्यं तव वर्ण्यतां कथमिदं लोकोत्तरं विश्रुतं
देवेशस्य सुतः स्वयं स्पृहयते यत्ते स्वरूपाय सः ।
त्वत्पादाम्बुजसेवनेन भगवान् श्रीवैनतेयोऽपि यत्
सद्यः प्राप निरामयं सुविमलं ज्ञानं परं तात्त्विकम् ॥१०॥

काकस्तोत्रमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
काकोऽनुकूलतां याति काकी सद्यः प्रसीदति ॥११॥

क्रमसंख्या ३७८-३८९ श्रीलीलाधरपन्तस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(घ) प्रकीर्णश्लोकाः

सुरसेव महर्घताऽधुना मुखमादाय पुरः प्रवर्तते
हनुमानिव कश्चिदत्र नोऽभिमुखीभूय निराकरोतु यः।
अपयातु महर्घताऽसुरी सकलोपीह जनः समीहते
कलिकालतं इङ्गिता हि सा कठिनाऽनस्तदपाकृतिः सखे ॥१॥

क्रमसंख्या ३९० श्रीकपिलदेवत्रिपाठि'जटिल'स्य

स्वर्लोकशोकपरिहारविधौ वदान्या
मान्याऽपि या सुरसदः सदनादिवान्या।
त्यक्ता प्रियेण मुनिधामगताऽतिधन्या
वन्याऽपि नोऽवतु सदा मिथिलेशकन्या ॥१॥

क्रमसंख्या ३९१ श्रीश्रीनारायणमिश्रस्य।

डिम्भश्चूषति निर्दयं सरुचतं शुष्कं स्वमातुः स्तनं
वत्सो धेनुमुखस्थमेककवलं भोक्तुं समुत्कण्ठते।
तूष्णीमाश्रयते च पञ्जरशुकः पक्षाग्रमास्ये दधत्
पश्यन् दृश्यमिदं गृहस्य कृषको निद्राति नान्तःशुचा ॥१॥

सन्त्येके तृषिताः सुखोपरिसुखावाप्तेर्न तुष्यन्तिये
तान्प्रत्येष जनो बिभर्ति नितरां कारुण्यपूर्णं मनः।
सन्त्यन्ये तृषिताः स्पृहाविरहिता येषां तृषा जीवनम्
तान्प्रत्यस्य जनस्य सन्तु विगलद्बाष्पाः प्रणामाः शतम् ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जलमध्यगता महोर्मयो मम नावं तटभूमिमानयन् ।
तटभूमिगता लघूर्मयो मम नावं शनकैर्न्यमज्जयन् ॥३॥

अथ कण्टकजालमध्यतो बहुवर्षाण्यतिवाह्य तत्पुनः ।
कुसुमं न कदाचिदर्थये क्षणमुद्यानमुपागतोऽप्यहम् ॥४॥

क्षुद्रास्तिष्ठथ पान्थ कुत्र वदनं संगोप्य जातत्वरा
धर्मो नास्ति पराय मानहननं जानीथ यूयं न किम् ।
जागर्त्ति गमितं कुतूहलभरं कोलाहलैर्वा स्वयं
कर्त्तुं भारतमग्रसंप्रयनते शार्दूलविक्रीडितम् ॥५॥

धिक्तान् संप्रति कामिनीकचभरच्छायासु ये शेरते
धिक्तान् यो बत काञ्चनध्वनिगुणं सर्वस्वमामन्वते ।
धिक्तान् ये परिशीलयन्ति परितः स्वादूनि वस्तून्यहो
आक्रान्तेऽद्य हिमालये रिपुगणैः स्वस्थान् धिगार्योद्भरान् ॥६॥

घर्मव्याकुलगोशरीरमृदुलच्छायां बकः सेवते
काकः किञ्चन रारटीति महिषीशृङ्गाग्रदेशेस्थितः ।
पङ्के क्षीणजले च शूकरवधूः शृङ्गाहते पल्वले
क्षीणः श्वा निजमेव तालुगलितं लालाजलं लिह्यति ॥७॥

हृद्रागानुगतः प्रभूतसुषमो लोकोत्तरः सर्वथा
पुराणां कलनां च बिभ्रदधिकां कालेभवोऽपि स्थिरः ।
सम्भूयान्मदयन्तिकारसकृतो रागाय चक्षुष्मताम्
कस्याश्चित् करयोस्तथा चरणयोरुन्मादि रागोदयः ॥८॥

क्रमसंख्या ३९२-४०० श्रीजगन्नाथपाठकस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागस्त्वप्रतिमोऽस्ति नादकलनं रागं मुदे साधये
रागेणैववशीकृता वसुमती रागाय यत्नो वरः ।
रागानाप्तरसस्तु धन्यमहिमा रागस्य भावो ध्रुवो
रागे राग उदेतु नः सुविमलो भो राग मां पालय ॥ ॥

क्रमसंख्या ४०१ शर्मोपाह्वप्रेमलतायाः

मन्ये महोमहिमरश्मिमनोज्ञकेशां
शीताप्लुताम्बरगुहासु तपस्तपन्तीम् ।
प्रातर्मुहुः शिशिरविन्दु विषिच्चनेन
प्रीणन्त्यहो चपलतीक्ष्णहिमर्तुवाताः ॥१॥

क्रमसंख्या ४०२ वन्द्योपाध्यायोपाह्वकृष्णायाः

सृजति वै धरणीं चतुराननो
रुचिकरैर्विषयैः परिपूरिताम् ।
रसमयीं रमणीयवसुन्धरां
सुरसिकं च विलोभयतं नरम् ॥१॥

संप्रेक्ष्य पृथ्वीं खलु रत्नगर्भां
लालायितो वै मनुजोऽस्ति भूयः ।
निरीक्षितुं तां प्रकृतिं यथेष्टं
सौन्दर्यलब्धो यतते मनुष्यः ॥२॥

क्रीडाक्षेत्रे यदासावभिलषति यशः स्वप्रयत्नेन लब्धुं
नट्यक्षेत्रे तथाचेदभिनयपटुतां वाञ्छति प्राप्तुमेषः ।
भूत्वा वैज्ञानिकोऽयं सकलजनसुखं वर्धितुं चेहते चेत् ।
पर्याप्तो ह्यस्ति कालो रहयति मनुजः स्वेप्सितं खिन्नचित्तः ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभवति क्रमशो युगपद् न वा
अवसराच्च विनाऽऽचरितुं तथा ।
अमरतां न ददाति नराय कः
कथमयं चतुरश्चतुराननः ॥४॥

क्रमसंख्या ४०३-४०७ चुनेकरोपाह्वमृदुलायाः

यावच्चन्द्रश्चकास्ति स्वरिह सुरपतिर्यावदिन्द्रः प्रशास्ति
यावद्धीराधरेयं विचितिधृतिमतां भारसारं बिभर्ति ।
यावच्छम्भुर्भवान्या हरिरथ रमया राजते तावदस्यां
काश्यां विद्यालयेऽस्मिन् तव कविचरितं राजतां लोकलक्ष्म्या ॥१॥

क्रमसंख्या ४०८ श्रीश्रीनारायणमिश्रस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आत्मकथा और संस्मरण"

लेखक

स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

भूमिका

विद्यावाचस्पति श्री आदित्यनाथ झा

उपराज्यपाल, देहली प्रदेश

भारतीय धर्म, दर्शन, पुराण, साहित्य, वेदविज्ञान प्रभृति विषयों के अभूत् भविष्यत् विद्वान सनातन धर्म महान् स्तम्भ स्व० म. म. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने अपने मित्रों और भक्तों के आग्रह पर अपनी आत्मकथा लिखी थी, उसका प्रकाशन आपके समक्ष प्रस्तुत हो चुका है।

सचित्र संस्करण, सुन्दर मुद्रण और आकर्षक आवरण से सुसज्जित एवं उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा प्रशंसित

मूल्य १५.०० मात्र

शरद प्रकाशन

शरद् प्रकाशन

बी. १/४३ अस्सी, वाराणसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

द्वितीयो भागः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

द्वितीयो भागः

सम्पादकः

शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशिका

कविभारती

डी १४/१५, काश्मीर-हाउस, टेढ़ी नीम

वाराणसी

प्रथमसंस्करणम्

विक्रमाब्दः २०२५

खीष्टाब्दः १९६९

मूल्यम्—१ रूप्यकम्

मुद्रक—तारा प्रिंटिंग वर्क्स,

कमच्छा, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मितञ्च सारञ्च

वाराणसेयगीर्वाणवाणीमाधुरीप्रणयिजन - प्रमोदभूमिः कापि "कवि-भारती" ब्रह्मानन्दसहोदरं लोकोत्तरं भावप्रावीण्यं प्रेक्षावतां चेतस्सु समासञ्जयन्ती, नवनवोन्मेषानुल्लासयन्ती, विगलन्मधुरसधाराभरेण काव्याध्वानं पिच्छिलयन्ती, परिपूर्य तृतीयं वर्षं तुरीये वत्सरे पादन्यासमाधातुं समुत्सुका काश्यां प्रतिष्ठिताऽपि निखिल-तेजोराशेर्विष्णोः सन्निधिं समासाद्येवाप्रतिमसुषमामण्डितसर्वावयवा लोचनगोचरीक्रियते विचक्षणैरिति सत्यमानन्दोऽयं न मात्यन्तरंगे। गजानन एव यस्याः सुप्रतिष्ठितः प्रतिष्ठापकः, सुसम्मानितो रामरूप एव यत्स्तुतिपाठकः नाथते गुणनिकरेषु यामद्यापि बटुकनाथः, सञ्चारयति रतिं यस्यां मूर्तिमान् साक्षाद् रतिनाथः, दीक्षयत्यभिनवेषु प्रियेषु व्रतेषु यां श्रीप्रियव्रतः, लीलाधर एव लीलासु यामनिशं शिक्षयति, किं तावद्वक्तव्यं तदीयवैदग्ध्यविषये।

प्रचलितसंवत्सरे कविभारत्या विविधासु रसनिर्भरगोष्ठीषु कर्णगोचरतां गतेषु पद्यकदम्बेषु समासादितानां केषामपि पद्यानां लघीयानप्ययं प्रकाश्यमानः संग्रहः जनको भवेन्महीयसः प्रमोदस्य। गतवर्षप्रकाशितसंग्रहापेक्षया लघिष्ठोऽप्ययमञ्जलिः स्वीयाप्रतिमसौरभेणावर्जयिष्यति काव्यमकरन्दद्विरेफानिति विश्वसिमि—

शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगृहीतपद्यरचयितृनामसूची

१. श्रीरामरूपपाठकः
१. श्रीबटुकनाथशास्त्रिखिस्ते
२. श्रीरतिनाथझाः
३. श्रीलीलाधरपन्तः
४. श्रीकृष्णमोहनठक्कुरः
५. श्रीशिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः
६. श्रीगजाननशास्त्रिमुसलगाँवकरः
७. श्रीरामकुबेरमालवीयः
८. श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयः
९. श्रीराधाकान्त ओझा
१०. श्रीप्रियव्रतशर्मा
११. श्रीज्योतिर्मित्रः
१२. श्रीनवरङ्गशर्मा चतुर्वेदः
१३. श्रीकेदारनाथ मिश्रः
१४, श्रीगोविन्दप्रसाद द्विवेदः
१५. श्रीब्रजकिशोर त्रिपाठी
१६. श्रीमती कमला चुनेकरः
१७. सुश्री विमला देवधरः
१८. सुश्री प्रेमलता शर्मा
१९. „ ऊर्मिला शर्मा
२०. „ कृष्णा वन्द्योपाध्याया
२१. „ मृदुला चुनेकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

समस्याः

१.	वसुन्धरा	१
२.	सन्तप्यते	५
३.	गुणानां गणः	७
४.	कादम्बिनी	११
५.	प्रणामाञ्जलिः	१५
६.	वदन्तु धीराः	१६
७.	वन्दामहे	२०
८.	कथेयम्	२२
९.	सर्वत्र सा दृश्यते	२५

प्रकीर्णरचनाः

१.	'केयं किरणमयी'— गीतम्	२७
२.	प्रकीर्णपद्यद्वयम्	३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसुन्धरा

उदित्वरस्फारतरङ्गसङ्गर—
प्रणादभीमे पतिता पयोनिधौ ।
वराहदन्ताञ्चलमञ्चशायिनी
चिराय जीयाज्जननी वसुन्धरा ॥

समुज्ज्वलं यस्य चरित्रचन्द्रिका—
मयूखलेखाभिरुदञ्चितं कुलम् ।
तमेव मौलिस्थलफुल्लमल्लिका—
प्रसूनतां प्रापयते वसुन्धरा ॥

तृणीकृतस्त्रैणमपास्तकाञ्चन—
प्रलोभनं शोभनशुद्धभाषणम् ।
इयं प्रसूते पुरुषं पुरातनं
नराऽऽकृतिं देवनुता वसुन्धरा ॥

यदीयमञ्जुमृत्तिकाकणेषु जृम्भते चिरात्
प्रतापसिंहपौरुषं शिवाजिराजकौशलम् ।
जगत्त्रयीविजित्वरी समस्तशत्रुघस्मरी
यदीयगौरवच्छटा जयत्यसौ वसुन्धरा ॥

श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वसन्ते)

सुरभिगन्धयुता सुमण्डिता
सुरुचिरं मधुमाससुशोभिता ।
मृदुरक्तदलैरवगुण्ठिता
नववधूरिव भाति वसुन्धरा ॥

(शरदि)

धवलचन्द्रकरैः परिपूरिता
स्फटिकशुभ्रजलेन च मण्डिता ।
शरदि काशसुमैश्च विभूषिता
लसति कञ्जकुलैश्च वसुन्धरा ॥

(हेमन्ते)

प्रचुरशीतसमीरणकम्पिता
दहनसेवनसौख्यसमन्विता ।
अभिनवाञ्चितधान्यभरार्चिता
कनककान्तिमयीव वसुन्धरा ॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

(स्वर्गस्थ-गॅगॅरिनस्य-अनुभूतिः)

अलङ्कृता बलाहकैः, सुतोयराशिमेखला,
नितान्तशुभ्रहैमसानुमत्किरीटमण्डिता ।
तरङ्गिणीसरैः सदा सुभूषिता सुकन्धरा
विहारकाललक्षिता मयाम्बराद् वसुन्धरा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतस्ततः प्रधावितैः सुनिर्झरैर्मधुस्वनैः
सुवृक्षराजिसङ्कुलैः प्रगाढरम्यकाननैः ।
गभीरकन्दरामुखैर्महीधरैश्च सुन्दरी
सुचारुदर्शना विभाति सा सदा वसुन्धरा ॥

प्रभाकरोऽपि दीप्तिमान् सुनेत्रदाहकस्त्वतो
न कोऽपि शक्त ईक्षितुं प्रभासु कौतुकं स्वतः ।
शशिप्रभा सलाञ्छना तथा न सा मनोहरा
सुतारकासु शोभते यथाद्य मे वसुन्धरा ॥

श्रीविमला देवधरः

सचेतना-चेतन-तात्त्विकानि
ख्यातानि रत्नानि चिरन्तनानि ।
तद्दीप्तिमाप्योच्छ्वसतीति विश्वं
रत्नप्रसूरस्ति वसुन्धरेयम् ॥

जेतुं सपत्नान् यदि नेच्छसीह
शस्त्रैस्तु शास्त्रैः किमु लप्स्यसेऽद्य ।
भोज्यं च भोग्यं हि बलेन लभ्यं
वसुन्धरा वीर-वरैस्तु भोग्या ॥

डा० गजाननशास्त्री मुसलगांवकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुङ्गशैल-सुषमासमन्विता स्नापिता सुनिर्मलैर्नदीजलैः ।
दुर्लभैः सुमफलैः प्रपूजिता नम्यते ऽनुदिवसं वसुन्धरा ॥
रम्यतानिवह-पूजिता क्वचित् रौद्ररीतिभिरभिष्टुता क्वचिद् ।
मोहयत्यतितरां मनांसि नः सर्वभावभरिता वसुन्धरा ॥
ग्रीष्मभीषणतरा ऽपि शीतला कोमलापि पृथु कण्टकैर्युता ।
रम्यतामुपगता ऽपि भीषणा चर्चिता कविवरैर्वसुन्धरा ॥

श्रीशिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

असार-संसार-विचार-धारा जहार निःशेषरसं यदास्याः ।
अगाधचिन्ता हि चकार काञ्चित् सुचित्तभूमिं घन-कृष्ण-कामाम् ॥
तदैव तत्साधन-भक्ति-बीजाद् बभूव पुष्पाढ्यवितानिनी द्राक् ।
फलं सदानन्तरसं पुपोष वसुन्धरा प्रेमघनं दधाना ॥

कु० ऊर्मिला शर्मा

भोग्या वीर ! वसुन्धरा सुविपुला भूत्वाऽन्यदैन्यार्तिहृद्
धार्यानन्त ! वसुन्धरा गुरुभरा भूत्वाऽचलः शैलवत् ।
प्रेक्ष्या धीर ! वसुन्धराऽघसहने सर्वंसहा पालिका
केयं हन्त वसुन्धरा स्ववसुभिर्नो पालयेद् या जनान् ॥

डा० प्रेमलता शर्मा

समुत्थिता मानवता-लता यतः
समुद्गता दुर्लभसभ्यताऽसमा ।
प्रसारिता विश्व-जनीन-बन्धुता
विभासते सा भुवने वसुन्धरा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पयोधरौ विन्ध्यहिमालयौ कचा
वनानि रत्नाकर एव मेखला ।
स्फुरन्ति यस्या मलयानिलोऽसवो
जगन्नमस्या भुवि सा वसुन्धरा ।।

श्रीरतिनाथ झाः

सन्तप्यते

ये संसत्सु परान् बुधान् रचयितुं मूकान् जयाकाङ्क्षया
कण्ठे कीरवदाकलय्य कतिचिद् ग्रन्थान् लभन्ते यशः ।
तेषामेव मनो नितान्तमलिनं स्वच्छात्मनां वञ्चने
दुर्वृत्ते च रतं विलोक्य विमलस्वान्तेन सन्तप्यते ॥

यैर्नाराधित ईश्वरो न च सतां सङ्गेऽनुरागो धृतः
शास्त्राण्याकलितानि नो न सुकृताचारो हृदाऽनुष्ठितः ।
तेषां नैव कथा व्यथां जनयति प्रायः परं पण्डितान्
दृष्ट्वा हन्त परापकारनिरतान् कैः कैर्न सन्तप्यते ॥

पीत्वा प्रमादमदिरां विषयाभिलाष-
हालाहलं च कवलीकुरुषे यदि त्वम् ।
क्लेशाधिकं वहति मूर्च्छितचेतनश्चेत्
सन्तप्य ते तदनुरूपमिदं समग्रम् ।।

श्रीरतिनाथ झाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्युदाभा यदैवाकृतिर्लोक्यते
किन्तया जायते येन सन्तप्यते ।
मा निषादेति शोकाश्रुपूर्णैः पदैः
किं कृतं येन चाद्यापि सन्तप्यते ॥

मेघदूतेन किं वा हि लोकोत्तरं
वर्ण्यमुत्थापितं येन सन्तप्यते ।
नैव जानामि किं कारणं चिन्त्यते
यत्र तज्ज्ञायते तत्र सन्तप्यते ॥

श्रीशिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

सन्तप्ता धरणी न वह्निशिखया शोकैर्न च व्याधिभि–
र्मार्तण्डज्वलनेन तापसमये चेत्थं न सा तापिता ।
विक्षिप्ताः स्वयमात्मघातनपरा नित्यं भुवौ नर्तय-
न्त्येषामन्धतमोमयेन धरणी जाड्येन सन्तप्यते ॥

झञ्झावृष्टिभिरातपेन स पुनश्चण्डेन न क्लिश्यते
वल्मीकप्रभवो न पीडयति तं नो पुत्तिकादंशनम् ।
किन्तु क्रौञ्चवधात् परं सहृदयः क्रौञ्चीव्यथोद्वेजितो
ह्यव्यग्रो व्यसने निजे पररुजा प्राज्ञोऽपि सन्तप्यते ॥

कु० विमला देवधरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भङ्क्त्वा गृहं धनपतेः कनकं प्रभूतं
हृत्वा यदा निजगृहं प्रतिगन्तुकामः ।
संदृश्यते पथि जनेन पलायमानः
सन्ताप्यते शशिकरै रुचिरैः स जाल्मः ॥

एकः पूर्वजसञ्चितेन वसुना प्राप्नोति श्रेष्ठं पदं
सोद्योगोऽपि गुणैर्युतोऽपि च परो दारिद्र्यसम्पीडितः ।
न प्राप्नोति पदं न वापि जगतः सन्मानसंपूजनं
दृष्ट्वेदं धनपूजनं मम मनो दुःखेन सन्तप्यते ॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

श्रीखण्डे तिलके रसाल-सहिते फुल्ले ह्यशोकद्रुमे
वाचाले शुक-सारिके पिकगणे भृङ्गे कलं गुञ्जिते ।
वाते वाति मनोहरे सरसिजात्कामाग्निसंवर्धके
गोविन्दे मथुरां गते सहसखी सन्तप्यते राधिका ॥

श्रीरामरूपपाठकः

गुणानां गणः

न माणिक्यं, मुक्ता, न खलु कनकालङ्कृतिरहो,
न मिथ्या चाटुर्वा न च धनिकपृष्ठानुसरणम् ।
न वाचां विस्तारः सुकृतिहृदये स्थानमयते
नराणां माहात्म्यं प्रथयति गुणानां गण इह ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रमः सर्वो व्यर्थो गुरुचरणपाथोजभजने
तथा व्यर्थं स्नानं सुरसरिति देवार्चनमपि ।
न जाने कैः पुण्यैः कमपि पुरुषं यान्ति सुगुणाः
कुलं नो रूपं नो गणयति गुणानां गण इह ॥

श्रीरामकुबेरमालवीयः

देशे दीप्तवसुन्धरा लसतु, सच्छस्यांशुकाच्छादिता
काले कल्यतमं पयोऽमृतसमं नीलं नभो वर्षतु ।
लोके शोकहरः सदा हृदि सदालोकः समुज्जृम्भतां
ग्रामे गायतु नृत्यतु प्रमुदितः सर्वो गुणानां गणः ॥

पूर्वं पुण्यभृतो गृहस्थमुनयः सर्वे यतन्ते स्म ते
दोषाणां विनिवारणेऽथ गुणिनां सर्वात्मना संग्रहे ।
सर्वान् वीक्ष्य विपर्ययात्ममनसो दोषप्रियांस्तामसान्
पात्रान्वेषणतत्परोऽद्य सकलो भ्रान्तो गुणानां गणः ॥

नेताप्नोति यदा जयं सुचतुरो निर्वाचने संगरे
धत्ते मन्त्रिपदं तदापसरति प्राज्यः समाजादरः ।
सद्यो वीक्ष्य पलायते पलभुजं गाँधीसुगन्धान्वितं
तस्माच्चम्पकपादपानिव यथा भृंगो गुणानां गणः ॥

डॉ० प्रियव्रतशर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहित्ये सुकुमारभावभरिते प्राप्नोति संख्यां त्रयीं
सांख्ये प्राकृतवैकृतेऽपि च तथैवायं समाख्याततिः ।
न्याये कर्कशवाग्मितापरिणते प्राप्नोच्चतुर्विंशती–
मानन्त्यं भजते सुधीषु सततं सोऽयं गुणानां गणः ॥

लोके सन्मतिसूक्तिविभ्रमभरैः प्रीतिं परां बोधयन्
सोल्लासं नवभावनामुखरितं काव्यं समाराधयन् ।
तथ्यामप्यमृतोपमामभिनवां विद्यां मुदा साधयन्
हे विश्वेश ! सदैव वृद्धिमयतां सर्वो गुणानां गणः ॥

यस्याङ्गीकरणेन पूर्वपुरुषास्तुच्छं सदा मेनिरे
स्वीयं जीवनमप्यसौ ननु तदैवासीत् सुदीप्तप्रभः ।
अद्यत्वे विगुणैर्विनिन्द्यचरितैर्व्याप्ते जगन्मण्डले
लीनः क्वापि महाब्धिगह्वरतले सोऽयं गुणानां गणः॥

श्रीशिवदत्तचतुर्वेदी

दया क्षमा रूपविभूतिसौष्ठवं
सुशान्तिमाधुर्यविरागरागिताः ।
पराऽस्य शक्तिर्विविधा हरेः सदा
हरौ गुणानां गण एष राजते ॥

श्रीनवरङ्गचतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैकेयी नवरूपयौवनयुता प्रासूत पुत्रं शुभं
युद्धेऽभूदवलम्ब एव निपुणः पाणिर्मृणालोपमः।
भग्नाक्षे रणभूमिमध्यपतिते भर्ता रथे रक्षितो
व्यर्थोऽसौ ननु मन्थराकलुषितस्तस्या गुणानां गणः ॥

शम्भुः श्रीशिवराजवंशतिलको वीरोऽतुलः संगरे
शार्दूलोऽपि पराजितः स्वभुजयोर्वीर्येण मोघीकृतः।
शोभापौरुषवीर्यभूषिततनुर्दीनस्य संरक्षको
व्यर्थः सन्ततमद्यपानमलिनोऽभूत्तद्गुणानां गणः ॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

भक्तानां प्रवरो न यस्य सदृशश्चान्यः क्वचिद् विद्यते
स्वज्ञानस्य विपश्चितां श्रुतिविदां धाम्नैव मूर्ध्नि स्थितः।
विक्रान्तो न जिगाय युद्धकुशलो रामं यदा रावणो
व्यक्तं तर्हि सुशीलताविरहितो व्यर्थो गुणानां गणः ॥

आख्यातो नवनीतकोमलपदैर्वाक्यैर्मधुस्यन्दिभिः
श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः स्तुतिसुमै रम्यैः समभ्यर्चितः।
ईषल्लाभकणेप्सुभिः प्रमुदितैराराधितः साञ्जलि-
र्नूनं काञ्चनमाश्रितोऽत्र भविता सद्यो गुणानां गणः ॥

श्रीमती विमला देवधरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वत्सेवासु रतास्तथा विदधते कार्याण्यनार्योचिता-
न्युत्सिक्ता अपि राक्षसा अपि यथा कर्त्तुं क्षमन्तेऽद्य नो ।
मातर्भारति, भारतीयसमुदाचारे विनाशं गते
ब्रूहि त्वं, क्व निवासमाप्स्यति तव श्लाघ्यो गुणानां गणः ॥

श्लाघामञ्चतिवञ्चने, विलसितेऽलीके, व्यलीकेऽर्चिते,
पैशुन्ये परमादृते, समुदिते दम्भेऽपि संरम्भिते ।
कर्त्तव्यव्रतकर्शितस्य कुशलस्य स्वच्छताशालिनो
वैगुण्यं भजतेऽपशासकपुरो गण्यो गुणानां गणः ॥

नो वित्तं प्रचुरं, न शीलनिलयः स्वामी सदाचारवान्
वश्यो नैव सुतः, सुहृन्न च शुचिर्भार्या न चार्या प्रिया ।
नातिथ्यानुरति-; र्न देवयजनं, न त्यागवृत्ति-; र्यतो
गार्हस्थ्यस्य ततोऽधुना व्यपगतः कृत्स्नो गुणानां गणः ॥
श्रीरतिनाथझाः

कादम्बिनी

नीलाम्बरोन्नतपयोधरहारविद्युद्
बन्धूकपुष्पतिलका चरणेन्द्रगोपा ।
केकिस्वरा सुरधनुःप्रतिभाविचित्रा
कादम्बिनी नववधूर्जनहृन्निवासा ॥
श्रीरामरूपपाठकः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्मीलत्प्रतिभाप्रसूनमुकुलेष्वामोदसंवर्धिनी
चिन्तासन्ततिदावतप्तमनसां सन्तोषतोषावहा ।
नृत्यत्सत्कविकेकिमण्डलनुता जागर्ति वाराणसी-
व्योमस्था कविभारती नवरसोल्लासाय कादम्बिनी ॥

राधाविद्युद्विभ्रमालिङ्गिताङ्गी
बाधाजालच्छेदिनी भक्तिभाजाम् ।
नित्यं वृन्दारण्यसञ्चारशीला
तृष्णां भिन्द्यात् कृष्णकादम्बिनी वः ॥

श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते

नैव स्थैर्यमपाकरोति विषमे प्राभञ्जनीये रये
नैवामन्दरसप्रवर्षणमनु क्षीणा भवत्युन्नता ।
साहित्ये पथि नैव पङ्ककलनामाविष्करोति क्वचि-
न्नैवाच्छादयतीह मित्रमुदिता सत्काव्यकादम्बिनी ॥

मारे मारयति प्रकोपदहने दाहाधिकं तन्वति
क्रूरे मोहमहाविषे विकलयत्युद्दामशक्त्यान्वहम् ।
लोभे जाग्रति मत्सरे व्यथयति प्राणान्हरत्युन्मदे
तापं नः शमयेत्कदा भगवतः कारुण्य-कादम्बिनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्मादाविरभूस्तमेव नितरामावृत्य सन्तिष्ठसे
मार्गं पङ्किलमातनोषि वियुजां प्राणान्हरस्युन्मदा ।
पुष्टिं कामपि सन्दधासि सततं त्वं निम्नगानां मुदा
ध्वान्तं साधु समेधयस्यनु पदं लोकेऽत्र कादम्बिनी ॥

श्रीरतिनाथझाः

सुनीलवसनैर्वृता सुरुचिरैस्तडिच्छोभितैः
सुवारि-परिपूरिता सलिल-राशि-सेकेन सा ।
निदाघ-परिपीडितां दिनकरस्य चण्डैः करै-
रतीव तृषितां महीं सुखयते च कादम्बिनी ॥

भृशं सलिल-सेक-केलि-निपुणा च नर्मप्रिया
सदा प्रिय-सखीजनेषु परिहासकामा शुभा ।
तडिद्दशन-शोभिता रुचिर-मुक्त-हास्यान्विता
धरां सतत-वृष्टिभिः स्नपयतीव कादम्बिनी ॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

अभ्राच्छादितचन्द्रमाः खलु यदा मेघात्तु निष्क्राम्यति
सौन्दर्यं रजनीकरस्य तनुते कृष्णाभकादम्बिनी ।
किन्त्वेषा मलिनीकरोति सुतरामुत्तापघर्मोद्भवात्
कान्तिं चन्द्रमुखीगणस्य सहसा हा हन्त कादम्बिनी ॥

कु० मृदुला चुनेकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्षाभ्वः सहसा रटन्ति युगपद् भेका मुदा सर्वतः
आक्रोशन्ति शिखाबलाः प्रमुदितास्ते मुक्तकण्ठं तथा।
आक्रन्दन्ति च वायसादिविहगा भीत्यान्तरिक्षे यदा
स्फूर्जन्ती किल दारुणं पविकरैवाभ्येति कादम्बिनी॥

सन्त्रस्तान् कविवृन्दगानरसिकान् व्यस्तान् समायोजकान्
गोष्ठीनाटकलोलुपान् सुचकितान् बालांश्च क्रीडोत्सुकान्।
सातङ्कान् निजदर्शनाद् विदधतीं नर्मप्रिया सत्वरं
प्रत्यागत्य पुनश्च गच्छति मुदा स्नेहार्द्र-कादम्बिनी॥

सुश्री विमला देवधरः

नभाः खलु मनोमुदे भवति कन्यकानां सदा
प्रयान्ति जननीगृहं पतिगृहान्मुदा सोत्सुकाः।
अनोकहतले लसत्सुदृढदामदोलासु ता
हठात् सुविहरन्ति यन्नभसि नीलकादम्बिनी॥

सतां सदयचेतसां विरहिणां व्यथावारिणी
रवेः किरणतीक्ष्णताक्षणमपास्य संच्छादिनी।
दिवापि तमसाकुला कलयते सदा दामिनी
तडित्कनकसन्निभा लसति यत्र कादम्बिनी॥

श्रीगजाननशास्त्री मुसलगांवकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रणामाञ्जलिः

रागद्वेष-निषूदनाय सततं यश्चोद्यतो बन्धुषु
सेवावृत्ति-परायणः प्रतिदिनं सत्कर्मदीक्षा-व्रती ।
नो कष्टं प्रभवेत्कदापि सहसा कस्यापि बन्धोरपि
स्याद् यस्य व्रतमाद्यमस्तु महते तस्मै प्रणामाञ्जलिः ॥

मान्यानां नतिदः स्वयं स्वमनसा गर्वाऽनपेक्षः सदा
विद्यावान् विनयी नयी मृदुवचाः सौम्यस्वभावो दृढः ।
नो कस्यापि च वञ्चनाय यतते सेवाप्रियः सौख्यदो
यो ह्येवं गुणसंयुतोऽस्तु भुवने तस्मै प्रणामाञ्जलिः ॥

श्रीकृष्णमोहनठक्कुरः

अद्यत्वे नहि भोजनादिसरसा वार्ता क्वचिल्लिप्यते
नो वा पुष्कलदक्षिणा परिचिता दृष्टा क्वचित्सत्क्रिया ।
कस्याप्यागमने न वाऽस्ति नियतो भावेषु रम्यादरः
शिष्टः केवलमेक एव विकलः शुष्कः प्रणामाञ्जलिः ॥

शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

ललाटस्थ-घर्मोदकेनाभिषिच्य
सदाशातनोर्वर्धने ये प्रवृत्ताः ।
धरां नन्दनं ये च कर्तुं यतन्ते
प्रणामाञ्जलिर्मे पदाब्जेषु तेषाम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्यास्ते बालुकां यः प्रखररविकरैरातपोद्दीप्तभूमिं
किं वा कालं सहर्षं गमयति सजले पङ्किले कच्छमार्गे।
निःशंकं निर्मनुष्यं त्वधिवसति सुखं शीतलं वा हिमाद्रिं
मातुः रक्षाविधातुश्चरणयुगतलेऽयं प्रणामाञ्जलिमें ॥

श्रीविमला देवघरः

यः संभूय महाकुलेऽपि महतां सङ्गे वसन् साक्षरः
प्राप्योच्चैः पदवीमपि प्रतिपलं कौटिल्यलीलारतः।
स्वार्थान्धोऽथ परापकारनिरतो जाग्रद्व्यलीकाशय-
स्तस्मै मानवताविनाशपटवे दूरात् प्रणामाञ्जलिः॥

गेहे यस्य शुभाशयाः परिजना वश्यः प्रशस्यः सुत-
श्छायेवोत्तमवल्लभा प्रणयिनः सद्बन्धवो निश्छलाः।
कायोऽनामयमण्डितः सहृदयः स्निग्धः सुहृत्सेवकः
श्रद्धालुः प्रभुरत्युदारहृदयस्तस्मै प्रणामाञ्जलिः॥

श्रीरतिनाथझाः

— वदन्तु धीराः —

प्राप्नोति विद्याव्यसनी निकारं
लग्नः प्रपञ्चे लभतेऽधिकारम्।
उपासनीया शठता ततः किं
सरस्वती वेति वदन्तु धीराः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनुष्यता-मान-विवर्धनार्हे
पुरा स्तुते गण्यगुणे मृतेऽद्य ।
दोषे प्रवृद्धे च कथं मनुष्या
वयं भवेमेति वदन्तु धीराः ॥

श्रीरतिनाथझाः

जलाशये वा पवनाशये शये
गिरौ हरौ वा प्रतिमालये लये ।
किमस्ति शेषः प्रतिभाति भावितो
वदन्तु धीरास्त्वरितं मुदान्विताः ॥

मदालसा या विनतानना मुधा
मधूत्सवं वीक्ष्य नितान्तहेलया ।
'हलो हलो' या गिरतीह सत्वरं
वदन्तु धीराः किमियं क्षपा त्रपा ॥

डा० ज्योतिर्मित्र आचार्यः

कुमारिका किं जगदेकपूज्या
किं ब्रह्मपत्नी किमु विष्णुकान्ता ।
वाण्या रहस्यं भुवि को हि वेद
देव्याश्चरित्रं हि वदन्तु धीराः ॥

श्रीरामरूप पाठकः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रोदयं समभिवीक्ष्य तथा निशान्ते
मार्त्तण्डमण्डलमखण्डमुदाभिवीक्ष्य ।
संजायते मनसि या लहरी मनोज्ञा
सा चेत्प्रकाशमयते प्रवदन्तु धीराः ॥

विनेयनीचीकरणप्रयोगे
ब्रह्मास्त्रमेवाधिकृतं नयज्ञैः ।
तदुत्तरं किं भवतीह लोके
सम्यक् समाश्वास्य वदन्तु धीराः ॥

श्रीशिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

श्लाघां नो कुरुतां शृणोतु न निजां गम्भीरशान्तो भवेद्
ईशे प्रेम गुरोर्भवेच्चरणयोर्गोष्ठ्यां कवेः स्याद् रतिः ।
श्रीकृष्णस्य पवित्रभारतगृहे माभूत्सदा गोवधो
गोरक्षां प्रतिगेहमत्र कुरुतां धीरा वदन्तु प्रजाः ॥

श्रीनवरङ्गचतुर्वेदः

वाचं सुधां सत्ययुतां मनोज्ञां
विश्वोपकर्त्रीमघहारिणीं च ।
आवद्रवित्रीं बलवर्धनीयां
वाणीप्रसादेन वदन्तु धीराः ॥

श्रीव्रजकिशोरत्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्याः सकृद्दर्शनपुण्ययोगाद्
गच्छन्ति नाके किमु तज्जलेन ।
भागीरथी पापविनाशदक्षा
न ह्यस्ति किं सा प्रवदन्तु धीराः ॥

भाषाऽस्ति दिव्या भवतु प्रचारो
वदन्ति सर्वे सुविचक्षणा ये ।
गेहे सभायां सुजनान्तिके वा
गीर्वाणवाण्यां प्रवदन्तु धीराः ॥

श्रीराधाकान्त ओझाः

देव्या भजामि शरणं किमु चण्डिकायाः
किं शङ्करस्य शरणं करुणाकरस्य ।
किं कान्तया विलसितं मम जीवनं स्याद्
वाणीविलासचतुरा नु वदन्तु धीराः ॥

संमानयन्तु हृदये विधिशास्त्रमेव
संरक्षणं भवतु तेन सनातनस्य ।
वाग्देवता भवतु येन विलासदीप्ता
भाषाप्रसारममलं हि वदन्तु धीराः ॥

श्रीकेदारनाथमिश्रः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकर्तनं भवति भारतभूमिभागे
तस्मादधर्मपरिपूरित एष देशः।
आपत्तयस्तु विविधाः परितश्चरन्ति
सद्यो विधेयमिह किं प्रवदन्तु धीराः॥

श्रीगोविन्दप्रसादद्विवेदी

कीरावली कलरवा वसुधा सुधांशो-
रंशुच्छटा सुनयनानयनान्तपातः।
नावर्जययन्ति यमिमे पुरुषावतारं
सारं तदीयचरितस्य वदन्तु धीराः॥

सीरायुधस्य महिमानमुदञ्चयन्ती
वीराद्दता रणमहोत्सवपूरणाय।
सन्त्यज्यते न बहुधापि निरस्यमाना
नीराऽद्य चित्रमिह किं प्रवदन्तु धीराः॥

श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते

वन्दामहे

दूरादेत्य परिभ्रमन् प्रतिसुमं यत्नात्तदीयं रसं
कोशे सङ्क्रमयन् मिलिन्दनिवहो विन्दत्वमन्दां मुदम्।
सर्वस्वं प्रतिपादयन्ति मुदिता दीनाय ये चार्थिने
धन्यास्तानतिदुर्लभान् नरवरान् सप्रेम वन्दामहे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रम्यारामवरे निसर्गसुषमा राजन्ति ये भूरुहा
धन्यास्तेऽपि समाश्रयन्ति ललिताः फुल्ला लता यान् सदा।
दीर्घे किन्तु मरुस्थले तरुवरैर्वल्लीभिरप्युज्झिते
छायामात्रफलं द्रुमं वयमिमे तोषाय वन्दामहे॥

श्रीरतिनाथझाः

कालोत्तापितशेमुषीविगलितग्रन्थाभिरामोद्भटान्
प्राचीनाक्षरजालिकाप्रपठने वाचालतामागतान्।
कार्याधिक्यवशात्कदापि नियते कार्ये न दत्तादरा-
न्नानायानचणान्नवोनविदुषो दृष्ट्वैव वन्दामहे॥

येषां पुष्कलसंग्रहेऽपि न तमां भोगो ललाटस्थितः
यानादीन् परिहृत्य ये ऽनु दिवसं सत्पादसंचारिणः।
आपन्ने भयदानमेव नियतं येषां गुणैर्दूरतोऽ-
प्यस्पृष्टान् स्थविरानिमान् सुविवशाः सन्तो हि वन्दामहे॥

श्रीशिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

आसक्ता क्षयहेतवे त्रिजगतो दुर्दान्तपापावले-
र्नित्यं प्राणवते हितं प्रददती श्रीविष्णुलोकाय या।
पुत्रान् योजयते सदा हिमवतः कन्यातिधन्यैर्गुणै-
र्नित्यं रङ्गतरङ्गसङ्गलसितां तामेव वन्दामहे॥

श्रीगोविन्दप्रसादद्विवेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौराभो निजमस्तके वहति यः शुभ्रं शिरोवेष्टनं
श्वेतो भूषयते च यस्य तिलको गौरं ललाटं शुभम्।
वेषं धारयते सदा हि धवलं चापादशीर्षं हि यः
तं ब्रह्मर्षिमिव स्थितं खलु वयं नित्यं हि वन्दामहे॥

सौम्यः स्मेरमुखः सदा च सरलः सत्कर्मयोगी ध्रुवः
सत्कार्येषु रतो जनान्पथि सतां नेतुं हि बद्धस्पृहः।
वाणी यस्य शुभा नितान्तमधुरा शुद्धा तथा संस्कृता
तं विद्याप्रतिभायुतं नरवरं नित्यं हि वन्दामहे॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

कथेयम्

अशनशयनदानप्रापणादिक्रियासु
पथि पथि मनुजानां क्षीयमाणो हि कालः।
नटति विकलचित्ते लालसा वह्निजिह्वा
ऽहह नु कथमिदानीं विश्वावार्ताकथेयम्॥

प्रार्थिन् मतस्य प्रभो देशनेतः
क्रेता पदस्य त्वमेवातिधूर्तः।
स्वर्गं करोषीति पृथ्वीं नराणां
सम्यक् श्रुता सारशून्या कथेयम्॥

कृष्णा वन्द्योपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चूर्णीकर्तुं निशितदशनैर्दारुखण्डान् समर्थः
सायंकाले मृदुकुवलये बद्धगात्रो वराकः ।
दन्ताघातैः कमलदलने षट्पदो नो समर्थः
न श्रद्धेयाः प्रहसनपरा, दुर्घटा वा कथेयम् ॥ १ ॥

कदाचिद्वने पानगोष्ठी-प्रसक्तो
द्विरेफो वने पानपात्रेण जग्धः ।
प्रभाते तु फुल्ले पुनः पद्मकोशे,
स मुक्तः पुनः किं न चित्रा कथेयम् ॥ २ ॥

× × ×

श्रीरामं हर्म्यमध्यादनुगमनपरा कण्टकाकीर्णदेशे
पौलस्त्येनापि नूनं छलकपटहृता कर्षिता सा वराकी ।
पश्चाद्रामेण युद्धे दशवदनवधादुज्झिता वह्निमध्ये
पातिव्रत्यस्य सीमां विकसितवदना स्थापयामास लोके ॥१॥

श्रीरामेणापि मुक्ता रजकहतभयाद्गर्भभारेण खिन्ना
भर्त्रा सार्धं यदा सा सहृदयमुनिना स्थापिता पुत्रयुक्ता ।
कैकेय्या दूषिता सा नियतिबलहता कम्पमाना रुरोद
भूमातुः कुक्षिमध्ये पुनरपि वसनं प्रार्थयामास सीता ॥२॥

शुद्धा दुःखाग्निदग्धा जनकनृपसुता रामचन्द्रस्य भार्या
किं स्वित् सीता सतीनामनुकरणकृते निर्मिता मृत्युलोके ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इक्ष्वाकूणां कुले यः प्रथिततरनयस्तस्य किं वा कथेयम् ?
हन्त स्त्रीजन्मसारा करुणरसमयी दुःखपूर्णा कथेयम् ॥ ३॥
श्रीमती कमला चुनेकरः

विद्यागारं ज्वलयति निजं लीलया छात्रवृन्दो
यद्यद्यत्पश्यत्यनलकवलं सत्वरं तत्करोति ।
छिन्ते मूढः परशुभहरः स्वीयनासां सुखेन
प्रत्यक्षा मे भवति सुतरां विश्रुता वाक्कथेयम् ॥ १ ॥

छात्रैर्यत्र स्वगुरुभवनं दह्यते दीप्तकोपैस्तत्र
द्रोणं सुखयति निजाङ्गुष्ठदानेन शिष्यः ।
प्रत्याख्यातोऽप्यवनतशिराः श्रद्धयैवैकलव्यो
विश्वासार्हा कथमपि भवेच्छिष्यवृत्तेः कथेयम् ? ॥ २ ॥

विमातुर्निदेशे वनं याति रामः
पितुः सौख्यमिच्छन् ह्यनूढोऽस्ति भीष्मः ।
पुराऽऽसीद् गुरोर्गौरवस्य प्रथेयम्
कथं विस्मृता भारतीयैः कथेयम् ॥ ३ ॥

पिशितमपि सुतस्य श्राति माता, नृपालः
प्रियतमसुतहन्ता निर्विषण्णः श्रियालः ।
व्रतमिह निजमासीदादृतं चातिथेये
प्रभवति खलु साध्वी चाङ्गुणायाः कथेयम् ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाल्मीकिना मुनिवरेण मुदा प्रगीता
श्रीकालिदास-तुलसी-भवभूति-गीता ।
स्फूर्तिप्रदाऽनवरतं नवकाव्यहेतु-र्लोकान्
पुनाति रुचिरा किल सत्कथेयम् ॥ ५ ॥

सुश्री विमला देवधरः

सर्वत्र सा दृश्यते

नो रामा न रमा न वामनयनापाङ्गच्छटामाधुरी
नो वासन्तिकलोकनीयसुषमा चान्द्री कला नोत्तमा ।
आराध्यास्ति, परन्तु मञ्जुलपदन्यासा प्रसादान्विता
सद्वृत्ता कविभारती मम पुरः सर्वत्र सा दृश्यते ॥ १ ॥

न स्वाध्यायरतिर्न भारतभुवो रीतिर्न चार्यस्थिति-
र्न प्रीतिर्विनये न संयमधनाधाने प्रसक्तिः क्वचित् ।
छात्राणां निवहेऽधुना तु नितरामुद्दामदर्पोद्धुरा
विध्वंसैकविभीषिकात्र भुवने सर्वत्र सा दृश्यते ॥ २ ॥

नो सन्तोषकथा न चार्जवरतिर्न ज्ञानदानोन्नति-
र्नाचारे हृदयस्थितिः सुमनसां नो वा प्रवृत्तिः शुभे ।
अद्यत्वे तु परापकारनिरता दम्भक्रियाचातुरी
तृष्णा काचन नग्ननर्तनपरा सर्वत्र सा दृश्यते ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल्याणस्य कथा तु वाचि निहिता,साध्वी क्रिया कुण्ठता,
सन्त्यक्तैव सहिष्णुता, विकलिता कौटुम्बिकी सत्क्रिया ।
दुर्वृत्तिः शिरसि स्थिता परजनोत्कर्षाद् भृशं वर्धिता
लोके सम्प्रति कापि लब्धविसरा सर्वत्र सा दृश्यते ॥ ४ ॥

यो देशः पृथिवीतलस्य समभून्नृणां पुरा शिक्षकः
सोऽयं नाधिकरोति शिष्यपद्वीमप्युत्तमां साम्प्रतम् ।
अन्योऽन्यं कलहप्रवृत्तिरतुला नैव प्रतिष्ठा श्रम-
स्यास्ते हन्त ! दुरायतिस्तदधुना सर्वत्र सा दृश्यते ॥ ५ ॥

सम्भूता जलधेः कलङ्कमलिनस्येन्दोः स्वसा चञ्चलो
हन्तोलूकसुवाहना भगवती लक्ष्मीर्न मे रोचते ।
हंसासीनतनुर्विवेकजननी वीणानिनादोत्सवा
वाणी मङ्गलदायिनी नयनयोः सर्वत्र सा दृश्यते ॥ ६ ॥

श्रीरतिनाथझाः

सिंहे क्षीणकटिस्तथा नयनयोः शोभा मृगीचक्षुषो
हंसे चारुगतिः सुहास्यधवला दन्तावलिर्मौक्तिके ।
पक्वे बिम्बफले सदा वितनुते रक्ताधरस्य प्रभा
नो दृश्याऽपि चराचरे सुनयनी सर्वत्र सा दृश्यते ॥

श्रीमती कमला चुनेकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रामे वा नगरे तथा जनपदे विद्यालये मन्दिरे
संसद्-राजसभा-विधानपरिषद्-गोष्ठीषु संमेलने ।
दाक्षिण्यं सहजं तिरोभवति वै शास्तिस्तथान्तर्हिता
कष्टं शासनहीनता प्रतिदिनं सर्वत्र सा दृश्यते ॥

वस्तूनामधुना तु मूल्यगुरुता व्योम स्पृशत्यत्र भोः
अन्नाच्छादनसंश्रयादिविषया दुष्प्राप्यसंज्ञां गताः ।
दुर्मूल्यं तु दिनाद्दिनं प्रतिदिशं सर्वस्य संवर्धते
कष्टं घोरमहार्घता निरवधिः सर्वत्र सा दृश्यते ॥

सुश्रीविमला देवधरः

प्रभातशोभा

(राधायाः उक्तिः)

केयं किरणमयी ?
सखि हे केयं किरणमयी ?

१

दूरीकृत्य तमिस्रावरणम्,
वपुषि निधाय सुवर्णाभरणम्,
तन्वङ्गी धृतहाटकशाटी,
प्रकटितकान्तिकलापरिपाटी ॥
ज्योतिःक्षरणमयी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

निष्पतितान् नभसो भगणानिव
वसुधाया वा वाष्पकणानिव ।
गलितशकलितानिव शरदिन्दून्,
प्रोञ्छति किरणकरैर्हिमबिन्दून् ॥
करुणाकरणमयी ॥

३

भग्ना जगतां निद्रा तन्द्रा
दीप्तिमयी दीप्यति निस्तन्द्रा ।
मुखसुषमा निर्जितशतचन्द्रा
मृदुलस्पर्शसुखाग्निकसान्द्रा ॥
नवजागरणमयी ॥

४

उदयति तस्या आननबिम्बम्
सरिदादिषु फलति प्रतिबिम्बम् ?
किं वर्ण्यं लावण्यमनुपमम्,
अतिशयमोहनमतिशयसुषमम् ॥
शोभा शरणमयी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५

रूपमिवास्या आलोकयितुम्
हृदयमवश्यमिवावर्जयितुम् ।
विकसितनयनाः कुसुमकिशोराः
लीनाश्चकिताश्चोरचकोराः ॥
तेजोभरणमयी ॥

६

दिशि दिशि विततेष्वस्या भानुषु,
भाति विभातिशयो वरसानुषु ।
विदधाना विहगा बहुमानम्,
गायन्तीमे स्वागतगानम् ॥
प्रीत्याहरणमयी ॥

७

वृन्दावनतरुतुङ्गशिखातः,
सख्योऽवतरति सेयं प्रातः ।
इयमपि मन्ये चेतश्चोरं
मृगयति मुग्धा नन्दकिशोरम् ॥
हरिपरिचरणमयी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८

कथयैनां रिक्ता विपिनाली
राधाया न गृहे वनमाली ।

कुरुतामियं न मलिनं वदनम्
सर्पतु सम्प्रति कुब्जासदनम् ॥

पुण्याचरणमयी
सखि हे केयं क्रिरणमयी ? ॥

श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयः ।

भावानां न भवत्यभाव इति यद् दृष्टं क्वचिद् दर्शने
तत्र स्वानुभवैरवैमि तदिदं मिथ्या, वृथा वञ्चनम् ॥
बुद्धौ ये शतशो वसन्ति कृपणाः काव्येऽर्प्यमाणाः क्षणात्
क्षीयन्ते सहसा सहैव सकला भावा अभावोन्मुखाः ॥१॥

हे वारिवाह ! सरसास्ति रसारसैस्ते
याचोसरेष्वपि नवाङ्कुरसंकुलास्ते ।
भावाङ्कुरैर्विरहितां मतिमस्मदीयां
किं साम्प्रतं श्रयति निःश्रयमूषरत्वम् ॥१॥

श्रीलीलाधरपन्तः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

चतुर्थो भागः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-संस्थायाः निबन्धनविषयिण्या-
राजाज्ञायाः प्रमाणिता प्रतिलिपिः

सं० ४४३९ लखनऊ, दि० १४-२-६८

सोल

समितियों के निबन्धन का प्रमाण पत्र

ऐक्ट सं० २१, सन् १८६० ई०

संख्या १०९३ १९६७-६८

मैं एतद्द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि कविभारती, वाराणसी नामक समितिका निबन्धन (Registration) सोसाइटीज, रजिस्ट्रेशन ऐक्ट सं० २१, १८६० के अधीन आज के दिन सम्पन्न हुआ है।

आज दिनांक ६-२-६८ को लखनऊ में मेरे हस्ताक्षर से दिय गया।

निबन्धन शुल्क केवल ५० रुपये।

ह० अस्पष्ट
समितियों के निबन्धक
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

चतुर्थो भागः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशिका
कविभारती
१३/१६६ ए. केदारघाट
वाराणसी

प्रथमसंस्करणम्
विक्रमाब्द : २०२८
खीष्टाब्दः १९७१

मूल्यम्—रूप्यकत्रयम्

मुद्रक :
आनन्दकानन प्रेस
सी०के० ३६/२० ढुण्ढिराज गली
वाराणसी–१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवेदनीयम्

मान्याः ! सुरसरस्वतीसमर्पितस्वान्ताः । सहृदयशेखराः !

परिचिता कतिपयैरतीतैर्हायनैरियं 'कविभारती' नाम सरसस्वान्तानां संस्कृतकवीनां सुधामधुरगवीनां परिषत् तत्र-भवतां भवताम् ।

भासकालिदासभवभूतिबाणदण्डिप्रभृतिभिर्वाङ्मयनीरदै-रनुवेलं पल्लविता भुवनमण्डलमामोदयन्ती गीर्वाणवाणी-कल्पलता पुरातनी सम्प्रत्यपि जीवति जीवयति च जीवलोकम् ।

सन्ति च नूतनेऽपि काले ललितलेखनीकाः काव्यकला-चातुरीधुरीणा गीर्वाणवाणीप्रणयप्रवणमतय इति तान् यथोचितं मानयन्ती 'कविभारती' पदात्पदं पुरतो निदधाना भवदनुग्रहात्समेधमाना भगवतो महेशस्य प्रसादात्तदीयनगरे समुल्लसन्ती विराजतेतराम् । वत्सरेऽस्मिन् सविशेषमस्याः सौभाग्यसन्निवेशमुपलभामहे यद्भगवतो महेशस्य प्रसादः कवि-कलेवरमङ्गीकृत्य परिषदमिमां सुधाधाराभिरभिषिञ्चन्निव सप्रमोदं सन्निधत्ते, किमितोऽपि प्रियं नाम परम् ?

एवमेव भवादृशां प्रतिभासमुन्मीलितदृशां निर्व्याज-सौहार्द-सम्पदमधिगत्य प्रतिवासरमियं तांस्तान् लावण्यमयान्-विशेषान् परिपुष्णातु—इति ।

निवेदयते—

कविभारती सदस्यमण्डलम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पणम्

प्राचीनवाङ्मय - विबोधधृतव्रताय
सत्यव्रताय कवितैकमधुव्रताय ।
पुष्पाञ्जलिं कविगिरामुपदीकरोति
स्नेहानुबद्धहृदया कविभारतीयम् ॥

० ★ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१. निबन्धनविवरणम्	...
२. निवेदनीयम्	...
३. समर्पणम्	...
४. मंगलम्	१
५. काकली	२
६. महीयते	७
७. वेदाभिधानं महः	११
८. अपौरुषेयम्	१४
९. गीर्वाणवाणी	१६
१०. तासु तासु	१९
११. कृष्णमेघः	२६
१२. दुर्गा निसर्गोज्ज्वला	३२
१३. शरदिन्दुमुखी	३७
१४. कालिदासः	४२
१५. वैश्वानरःशीतति	५०
१६. ताम्बूलम्	५४
१७. उत्तरायणम्	५७
१८. तुहिनागमः	५९
१९. व्रतमाचरन्ति	६१
२०. मालिनी मोगिलीकैः	६३
२१. गीतिः	६४
२२. पदाधिकारिणः	...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मङ्गलम्

यस्मिन् प्रसादसुमुखे विमुखीभवन्ति
विघ्नाः समीहितविधौ दुरितैकनिघ्नाः ।
सिन्दूरसुन्दरमुखं शिशुचन्द्रमौलि
स्तम्बेरमाननमहं तमिह स्मरामि ॥ १ ॥

शिरसि सरसिजान्तश्चन्द्रबिम्बे स्फुरन्ती-
मविरतममृतोदस्यन्दतः क्लेदयन्तीम् ।
धवलवसन-माल्यां कच्छपीं नादयन्तीं
कविकुल-कुलदेवीं भारतीं तामुपासे ॥ २ ॥

—स्व० म० म० खिस्ते नारायणशास्त्रिणाम्

फुल्लसरोरुहनयनां कोमलशशिशकल-चुम्बितकिरीटाम् ।
काञ्चनचम्पकगौरीमार्यां करुणामयीं वन्दे ॥ १ ॥

सुरवरवन्दितचरणा मणिमयसिंहासने समासन्ना ।
रम्भागीतिश्रवणे व्यासक्ता त्रिभुवनेश्वरी जयति ॥ २ ॥

शङ्खिनी चक्रिणी पद्मिनी चापिनी
खड्गिणी वज्रिणी शूलिनी चर्मिणी ।
पाशिनी प्रासिनी दण्डिनी सूत्रिणी
शम्भुसीमन्तिनी पातु नः स्रग्विणी ॥ ३ ॥

नमन्निलिम्पमण्डलीकिरीटघृष्टकुट्टिमे
कदम्बवाटिकावृते महार्हरत्नमन्दिरे ।
सुराङ्गनाकरप्रपञ्चचामराभिवीजितां
सुवर्णमञ्चकस्थितां भजामहे पराम्बिकाम् ॥ ४ ॥

—वसन्त त्र्यम्बक शेवडे महाभागानाम्

वीणा-वादन-निपुणा वेणी-विजित-मधुकरश्रेणी ।
एणी-शावकनयना वाणी मे नटतु झटिति मुखरङ्गे ॥

—पट्टाभिरामशास्त्रिणाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपताप-पापशमनी वनोलसत्-
कलकण्ठकूजितरसातिशायिनी ।
जयतादिला-निटिल-चन्दनावली
कविभारतीसुकविवृन्दकाकली ॥ १ ॥

चैत्रे चित्रलताप्रसूनविकसत्सौरभ्यहेलामिलद्-
भृङ्गालीललितानुयातपवनप्रेङ्खोलिते मानसे ।
क्षारं क्षेप्तुमिव क्षते समुदिता माकन्दमाध्वीरसा-
ऽऽस्वादोन्मादवनप्रियास्यकुहरात् कस्मादियं काकली ॥२॥

वर्णस्तुल्यगुणः पदस्थितिरपि प्रायः समाना मधौ
कान्तारान्तरसञ्चरोऽपि सदृशः कान्तारताडम्बरः ।
सानन्दं मकरन्दसङ्गतिविधौ साम्यं परं दुर्विधे-
र्वाम्यं काक! वराक! कोकिलकुलोद्गीता न ते काकली ॥ ३ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

—१—

समुल्लसन्मञ्जुरसालमञ्जरी-
मरन्दबिन्दुस्नपितां मधुश्रियम् ।
प्रसादयन्ती स्तुतिगीतमङ्गले-
विराजते कोकिलकण्ठकाकली ॥

—२—

समृद्धिसंवर्धितरामणीयके
नवीनदाम्पत्यविराजिताजिरे ।
तनोति शोभां विरलद्विजोल्लसन्-
मुखार्भकाकुण्ठितकण्ठकाकली ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

–३–

सदर्थविश्लेषणलब्धगौरवं
चिरन्तनं शास्त्रमहावनान्तरम् ।
विभासयत्युन्मदमाधुरी झरी
सुधारसस्यन्दिकवीन्द्रकाकली ॥

–४–

सुरभिमञ्जरिताम्रवनावनी
मधुसमेधितमादनतानुता ।
जयति कोकिलकण्ठविनिर्गता
कलकलोल्लसिता कलकाकली ॥

–५–

जयति दुर्गतिहेतुमकुण्ठितां
विविधसंहरणास्त्रबिभीषिकाम् ।
परिभवत्यखिलश्रवणामृतं
मधुसमृद्धकला कविकाकली ॥

–६–

मलयमारुतनन्दितवल्लरीं
कुसुमसौरभमेदुरिताञ्चलाम् ।
जनयतीव नवामिव मेदिनीं
प्रमुदितामुदिता पिककाकली ॥

–७–

शिशिरशीर्णदलापहृताम्बरां
धरणिमुज्झितहर्षपरम्पराम् ।
किसलयैः कुसुमैर्मुखरद्विजै-
र्मदयतीव मधौ पिककाकली ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

–८–

सदृशवर्णतया भुवि वायसे
परभृते च भिदा नहि जायते ।
पिककुलं तु वसन्तमहोत्सवे
पृथगलङ्कुरुते कलकाकली ॥

–९–

विपदुदग्रविषादविषोग्रता
मनसि यस्य चिरं प्रतितिष्ठति ।
न च कदाचन तस्य सुखप्रदा
भवति कोमलकोकिलकाकली ॥

—रतिनाथ झा

प्रहीयते चेदिह दिव्यदृष्टि-
र्महीयते रम्यमिदं द्वयं न्नः ।
सा भारती भारतभूकवीनां
मधुद्रुता कोकिलकाकली च ॥

—उमापति द्विवेदः

मिलिन्दपुञ्जैरनुगुञ्जितध्वनिः
प्रफुल्लमाकन्दमदोल्वणा भृशम् ।
वियोगिनी मानसमादिनी चिरं
धुनोति पुंस्कोकिलवृन्दकाकली ॥

—भोलाशङ्कर व्यासः

समुदिते मुदिते कुसुमाकरे
नवलतालसिते महिमान्विते ।
कथय कस्य मनो हरते न सा
कलितकोकिलकोमलकाकली ॥

—कपिलदेव त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साम्प्रतं जगदाधारं प्रार्थये परमेश्वरम् ।
भारती भवनें भातु सदा भारतकाकली ॥

—व्रजकिशोर त्रिपाठी

अधरितसुधामाधुर्यं या हरेरधरामृतं
धयति, चिनुते सौगन्ध्यं या कराब्जनिवासिनी ।
नटयति जनानेषा वंशी स्वयं स्वरनर्तकी
प्रभवति ततः सन्देष्टुं किं सुकोमलकाकली ॥
किमिति नूपुरनादविलासतः
क्वणतु पावनमन्दिरकिङ्किणी ।
मृदुमृदङ्गनिनादमनोहरा
श्रुतिपथे विशतात् कविकाकली ॥
विहरतु व्रजमत्तगवां पुनः
प्रवहताद् दधिदुग्धतरङ्गिणी ।
जयतु भारतमातृवसुन्धरा
तदिति सन्दिशतीव नु काकली ॥

—जगन्नाथशास्त्री तैलङ्गः

अरसिकेषु कवीश्वर कः कलां
तव ललामगुणा मयि मंस्यते ।
कथय काककुले कटुराविणि
बहु मता क्व नु कोकिलकाकली ॥
व्रज रसालवनीं नवमञ्जरी–
मधु मधौ मधुरं मदिरं पिब ।
तव कुरण्टककण्टककानने
क्व किल कोकिलकोमलकाकली ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपगते वनमालिनि मोदभा–
गुरसिका रसिका न तदाभवत्।
न सुरभौ सुरभौ समुपागते
विहसतीह सती किल का कली॥

—रामनारायणदत्त पाण्डेयः

सत्साहित्यसुधासिक्तां स्वान्तः सौख्योदयोद्यताम्।
वसन्ते पिकसोदर्यां कवीनां शृणु काकलीम्॥
अवतरति वसन्ते पुष्पसौरभ्यभारे
मधुमयसहकारे मञ्जरीपिञ्जिताशे।
वहति मलयवाते नन्दिताशेषलोके
त्वमपि रसय काव्यं काकलीवत्सुरम्यम्॥
संयाते विमनायितेन मनसा पत्यौ विदेशे झटि–
त्यायातो मधुमास एष धरणीसौभाग्यसम्पत्करः।
कालेऽस्मिन् मलयानिलः पुनरसौ चन्द्रोऽपि मर्मान्तकृन्
मे जातः स पिकोऽपि तत्र रटति प्राणान्तकृत् काकलीः॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

तापं ददाति विषमज्वरवत् समेषां
कर्णे वसन्तसमये प्रियविप्रयोगे।
चूताङ्कुरभ्रमरगुञ्जितकाननेऽस्मिन्
कूजत्कलै रसभरैः पिककाकलीयम्॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महीयते

: २ :

अहीनमौलिस्थलपादताडनाद्
अहीनसंभाव्यपराक्रमक्रमः ।
महीधरोत्तुङ्गतनुः स्वदंष्ट्रया
महीधरः कोलहरिर्महीयते ॥ १ ॥

मनःप्रतिस्पर्द्धिविमानचालन–
क्रमात्तनक्षत्रसहस्रभेदिनाम् ।
दिने दिने द्यौरपि सन्निधानतो
निधानतोषाभ्युदया महीयते ॥ २ ॥

तरुणिमपरानन्दस्पन्दावहाऽमृतसम्भृताद्
अपि मदमिलद्रम्भासम्भावनासुखदायकात् ।
विभवविटपिच्छायाच्छन्नान्महेन्द्रपुरादपि
प्रथितसुषमासीमा धन्या महीह महीयते ॥ ३ ॥

मुदितमनसो मन्दं मन्दं निसर्गगुरुक्रमं
पथि विदधतः पादन्यासं गजाधिपतेर्यदि ।
सपदि शुनकस्तुच्छः पुच्छोद्धुरो विजिगीषया
चलति पुरतो हेलाशूरः कथं स महीयते ? ॥ ४ ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

राम-कृष्ण - गौतम-प्रतापवीर - गोखले-
मालवीय-गांधि - नेहरूप्रभृत्युपासिता ।
भारतीयनायकादिसंनता समन्ततो
देवलोकलालिताऽञ्चिता मही महीयते ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CG0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीपदाब्जनूपुरानुशिञ्जनामृतं
कर्णपेयमप्रमेयमोदमङ्गलार्चितम् ।
सादरं निपीय यत्र सामगायनो मुनि-
र्गायतिस्म सा महीयसी मही महीयते ॥ २ ॥

भासकालिदासबाणदण्डिहर्षपर्वतात्
स्यन्दमाननिर्भरापगारसोर्मिभिश्चिरात् ।
स्नातभातकायकान्तिदीपिता सरस्वती
भावकान्तरङ्गभूविहारिणी महीयते ॥ ३ ॥

कल्पवृक्षकल्पविक्रमार्कभोजभूपति-
प्राप्तसत्कथामृतोर्मिभव्यनव्यनर्मदा ।
चेतसि प्रसुप्तलोकमङ्गलैकसत्क्रिये
दानवीरताङ्कुरप्रवर्धिनी महीयते ॥ ४ ॥

लोकशोककृत्प्रचण्डदस्युमुण्डखण्डन-
स्वीकृतार्यराजपुत्रविक्रमप्रथार्चिता ।
मातृभूमिमानवर्धनार्थमुच्चवृत्तिभिः–
पूजिता समूर्जिता नुता मही महीयते ॥ ५ ॥

दुस्त्यजैहिकाभिरामभोगभावनाहुतिं
त्यागपावके समर्प्य सर्वथा तपोमयैः ।
भूमिदेवतासुतैरुपासिता विभूषिता
विश्वसभ्यताभिवन्दिता मही महीयते ॥ ६ ॥

कौत्सवाञ्छितार्थसार्थपूरणव्रतोल्लस-
न्निःस्वरामपूर्वजप्रभावभूरिभूषिता ।
भारतीयराजलोकलोकविश्रुतक्रिया
पावनप्रयोगयोगिनी मही महीयते ॥ ७ ॥

फुल्लपुष्पसौरभप्रभामरन्दमारुता-
घूतवल्लरीलसन्मिलिन्दवृन्दवन्दिता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्रमञ्जुमञ्जरीमरन्दबिन्दुनन्दित-
प्रीतमत्तकोकिलैककाकली महीयते ॥ ८ ॥

अकिञ्चनस्योपशमो महीयते
महीपतेर्दानरतिर्महीयते ।
विदां गुणग्राहकता महीयते
कवीश्वराणां कविता महीयते ॥ ९ ॥

गृहेऽतिरम्या वनिता महीयते
प्रभातकाले सविता महीयते ।
वसन्तलक्ष्म्या मुदिता महीयते
सभापते र्वागुदिता महीयते ॥१०॥

—रतिनाथ झा

शुको मुनिर्मैथिलभूपमन्दिरे
वसन्न मुग्धासु मुमोह मोहतः ।
न हीयते येन सतां शुचि व्रतं
महीमुपेतः स महान् महीयते ॥ १ ॥

संरक्षितुं श्रीरघुवीरवल्लभां
त्यक्त्वा तनुं यः परधाम्नि राजते ।
जटायुषस्तस्य तु वर्त्म गच्छतो
न कस्य पुंसो महिमा महीयते ॥२॥

—रामनारायणदत्त पाण्डेयः

महीयते राजसु कालविज्ञो ग्रहाधिपः स्वस्य च मण्डलेषु ।
महासती स्त्रीषु महत्सु विज्ञो विवेकशीलेषु कृती विधिज्ञः ॥१॥
स्वपुत्रवत्पालयते प्रजां यस्त्रिकालदर्शी खलु सावधानः ।
प्राज्यं हि राज्यं लभते कृतिज्ञो हृणीयते नैव महीयतेऽसौ ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुचिन्तयन् शास्त्रमहर्निशं यः शिष्योपशिष्यं जनयन् मनोज्ञः।
असंस्कृतान् संस्कृतयन् स्वदेशे महीयते सत्सु जनेषु विज्ञः ॥३॥
प्रशासने नेतृजनेषु मन्त्री सदस्यवर्गेषु सभापतिर्यथा।
कवित्वशक्त्या कविभारतीयं कविप्रवर्गेषु तथा महीयते ॥४॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

आङ्ग्ल्यादिभाषापरिवारितापि
महीयते भारतभारतीयम्।
न काकलीनापि पिकी प्रकृत्या
स्वकाकलीं काकगिरा गृणाति ॥

—उमापति द्विवेदः

विहारतः श्रीधरवासुदेवके
श्रीसोहनो मन्त्रिवरे समागते।
वयं कृतार्था द्विजराजदर्शनाद्
महीयते श्रीकविभारती सभा ॥ १ ॥

—रामरूप पाठकः

बहुवारं सकृद् वापि पाक्षिकं वाऽनृतं वदेत्।
प्रत्यक्षमाहरेद् वस्तु कलावेष महीयते ॥ १ ॥

—व्रजकिशोर त्रिपाठी

लोकोत्तरं यस्य यशः सुगीयते
काव्यामृतं यस्य बुधैः प्रपीयते।
कष्टैर्यदीया धिषणा न हीयते
सोऽस्यां धरण्यां पुरुषो महीयते ॥ १ ॥
आरोहेऽप्यवरोहे च पिकवाचोऽनुसारिणी।
स्वरसन्दोहसम्राज्ञी काकली न महीयते ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वेषामशिवप्रमोषविधये बद्धावधानं दधत्
नानाशास्त्रकलाकलापकलनाबीजाञ्जलिं स्वान्तरे।
शिष्याचार्यपरम्परापरिचयप्रादुर्भवत्प्रातिभ -
ज्योत्स्नाऽऽलोकमनोहरं विजयतां वेदाभिधानं महः ॥ १ ॥

कल्पान्तप्रथमानभैरवरवव्याघूर्णमानाम्बुधि-
त्वङ्गद्भूरितरङ्गसङ्गरवशाद् व्यालुप्तमप्यञ्जसा।
प्रोन्नीतं नृवराहविग्रहवता देवेन दंष्ट्राबलाद्
ध्वान्तं नाद्य हिनस्ति किन्तु जगतां वेदाभिधानं महः ॥ २ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

विज्ञानप्रसरेण भौतिकसुखासङ्गं भृशं वारयद्
गाढध्वान्तसमाकुलस्य जगतस्त्रासं निरस्यन्नवम्।
आत्मज्योतिरनाकुलं विशदयत्त्यागे समृद्धादरं
भूयो भारतवर्षमाशु कुरुताद् वेदाभिधानं महः ॥ १ ॥

श्रद्धां साधु विवर्धयेदतितरां वर्णाश्रमे निर्मले
संस्कारे श्रुतिबोधितेऽपि नितरां प्रीतिं समुल्लासयेत्।
हिंसामाशु निवारयेन्निरुपमां मैत्रीं जनेषून्नयेद्
आचारे रमयेन्मनः सुमनसां वेदाभिधानं महः ॥ २ ॥

स्वाध्यायेऽनुरतिं, प्रतीतिममलाचारे, सतां सङ्गतिं,
प्रीतिं प्राणिनि, दुर्गतेऽतिकरुणां, मैत्रीं दृढां सद्गुणे।
कल्याणे प्रणयं नितान्तविनयं वृद्धे, रिपौ विक्रमं,
सत्ये सख्यमतिस्थिरं विशदयेद् वेदाभिधानं महः ॥ ३ ॥

—रतिनाथ झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्यं ब्रह्म विवर्त्तमात्रमथ तद्भिन्नं मृषेदं वपु-
देंहीसत्य इदन्तदोस्तदभिधैवैका यथार्थेति यत् ।
वेदान्तोऽन्धतमो मुधा प्रथयते गीर्वाणवाणीगृहे
नश्येत् तत् तदपौरुषेयमिह चेद् वेदाभिधानं महः ॥ १ ॥

केचिद् व्याकृतिविक्रियैकनिहताः केचित् त्रिसन्ध्यं नवं
न्यायं घर्तुमिहाधिकाश्यपि बुधम्मन्या नितान्तं रताः ।
एतैः कण्ठकशोधनैकधिषणैः साहित्यविद्यावधू-
मूर्धा च्यावित एष हन्त वृषलैर्वेदाभिधानं महः ॥ २ ॥

यस्मात् सर्वमिदं प्रसाध्यत इयं सृष्टिर्विसृष्टिश्च सा
द्वन्द्वं तद्द्वितयस्य वा यदिह तद्भिन्नं च यत् किञ्चन ।
त्यक्त्वा तन्निखिलं हिरण्मयमहो वेदाभिधानं महो
जारं प्राप्य कुलाङ्गनेव हहहा गीर्वाणवाणी मृता ॥ ३ ॥

सानन्दं भजताद् रहः सहृदयो व्यक्तिं परां स्वे गृहे
गौणीं चापि सखी सखीं परिमृशेन्मुख्येतरां शाब्दिकः ।
धीरः किन्तु कथं प्रकाशदयिता दोषैकगम्याश्च ताः
पश्येद् यः परमार्थसार्थसृमरं वेदाभिधानं महः ॥ ४ ॥

—रेवाप्रसादो द्विवेदः

यस्याग्रे सततं समस्तजगतां नम्रं शिरो जायते
सर्गादौ भुवनेषु यत्सुमनसामाह्वानभाषाऽभवत् ।

१. सानन्दम् आनन्देन आनन्दवर्धनेन सहितं यथा, सहृदयो ध्वन्यालोक-कारिकाकृत्, परां व्यक्तिं परकीयां वैयाकरणानां व्यञ्जनावधूम्, प्रकाशदयिताः वेश्याः काव्यप्रकाशप्रियाश्च, दोषैकगम्याः दोषा रात्रिः दोषो वा तदेकगम्याः, परकीयायास्तथाप्रसिद्धेः, वृत्तीनां च लक्षणागौणी-व्यक्तीनां भावकत्वदोषैकगम्यात्वम्, परमार्थः तात्पर्यार्थः, सृमरः मृगोऽपि, अभिधानं दीर्घदीर्घोऽभिधाव्यापारः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विज्ञानेष्वपि जृम्भितेषु नितरां यस्यास्ति चर्चा परा
तद्भूयात् सततं विपद्विदलने वेदाभिधानं महः ॥

—शिवदत्त चतुर्वेदः

श्रौतं कर्म हि जायते यदखिलं यस्मात् प्रसूते जगद्
यत्रैव स्थितिरेति वा पुनरिदं विश्वं च सल्लीयते ।
जीवब्रह्मसमानता सुविदिता वाचां विरामो यत-
स्तत्तत्त्वं मुनिभिर्निषेवितमहो वेदाभिधानं महः ॥ १ ॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

लोकेषु प्रथिता विधानबहुला नानाविधा उत्सवाः
स्मार्तास्ते व्रतदानयज्ञकरणाद् धर्मार्थकामप्रदाः ।
मोक्षं यत् प्रददाति वेदविहितं श्रौतञ्च तत्पूरुषैः
संसेव्यं प्रतिहायनं सुकृतिभिर्वेदाभिधानं महः ॥ १ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपौरुषेयम् : ४ :

–१–

निजाङ्घ्रिपङ्केरुहभक्तिभाजां
निरन्तरायाभ्युदयैकसक्तम् ।
उमाङ्गसञ्जातमनन्तगेयं
महः परं किञ्चिदपौरुषेयम् ॥

–२–

द्राक्षासु साक्षादमृतोपमासु
वाग्वल्लकीमञ्जुलगुञ्जितेषु ।
माधुर्यधुर्यं यदुदेति तत्वं
विदग्धवेद्यं तदपौरुषेयम् ॥

–३–

स्त्रियो धियां किन्निधयो न सन्ति
प्रकर्षतन्त्रं भुवि पौरुषेयम् ।
मुरारिमारादवमत्य रूढा
यदिन्दिरा किन्तदपौरुषेयम् ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

–१–

समुत्थितोत्पातकरालहिंसया नवीनतापादनकौतुकेन वा ।
सरस्वतीमानहरेन्दिरार्चया प्रशासनं प्राप्तमपौरुषेयम् ॥

–२–

विराजते द्यूतकलाऽधिभारतं प्रवर्धते कामकथा निरन्तरम् ।
चिरन्तनं तत्त्वमुपेक्ष्यते यतः प्रशासनं प्राप्तमपौरुषेयम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

–३–

चारित्र्यचामीकरचारुतार्थं हुताशनं निर्मलशास्त्ररत्नम् ।
अनेकतायां विमलैकताया विभासते मूलमपौरुषेयम् ।।

–४–

सदा सदाचारविवर्जनार्जितं विभिन्नवैचारिकचर्चयोर्जितम् ।
पदे पदे सङ्गतमापदां पदं निवारयेत् तत्त्वमपौरुषेयम् ।।

—रतिनाथ झा

अपौरुषेयं किल वेदवाक्यं
नवे युगे नैव कदापि सह्यम् ।
प्रवञ्चितैर्दुर्मतिभिर्मनुष्यै—
र्महीयते संप्रति 'भाव'वाक्यम् ।।

—कमला चुणेकर

वेदा यदीयमनिशं सुयशः स्तुवन्तः
सन्तोषमात्मनि ययुर्नकदाप्यनल्पम् ।
व्याप्तं समस्तभुवने पुनरप्यलक्ष्यं
ध्यायेऽहमादिपुरुषं तमपौरुषेयम् ।। १ ।।
नित्यात्मकं जगति भास्वररूपमाद्यं
विश्वाश्रयं त्रिगुणरूपमयं सदेकम् ।
शान्तं प्रपञ्चकरणाय रजःस्वरूपं
वन्देऽनवद्यचरणं तमपौरुषेयम् ।। २ ।।

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाणीभूता निगमकनकाऽनर्घ्यभावप्रमाणी—
कारे वाणी भवति विदुषां या विवादाऽऽहवेषु।
पाणिन्यस्ता प्रभवति परं सा तथा नो कृपाणी
पाणिन्यस्ता वशयति यथा चारुगीर्वाणवाणी ॥

—वटुकनाथशास्त्री खस्ते

विद्यास्थानानि याष्टादशसलिलनिधीन् भूरिवाधाय मन्थात्
तेषां साहित्यविद्यामृतमपि निखिलार्थप्रदं संबिभर्ति।
सेतुर्भूत्वा ततोऽस्मिन्नपुरुषपुरुषद्वन्द्वतीर्थे स्थितात्मा
सा काचित् कल्पवल्ली जयति बत नृणां धाम्नि गीर्वाणवाणी ॥ १ ॥

केचिज्जातिपरायणाः कतिपये क्षेत्रोयताकश्मला
द्रव्यं ब्रह्म परे जपन्ति हहहा केचिद् वयोवीक्षकाः।
इत्येवं च्युतसंस्क्रिया हृदि परं क्षुद्रा यदाधीतिनः
कं वा सम्प्रति यातु शेवधिरसौ गीर्वाणवाणीवपुः ॥ २ ॥

बालान् प्राथमिकानपि द्विजवराः सर्पिष्टमार्थं भृशं
केचिट्टोः किमित्थनेकदिवसानध्यापयन्तेऽद्य ये।
तेभ्यः पाटलकण्टकानपि समं पुष्पैर्गणेशोपरि
क्षिप्नुभ्यो गिरिजेव किं न कुरुतां गीर्वाणवाणी घृणाम् ॥ ३ ॥

—रेवाप्रसादो द्विवेदः

गीर्वाणवाणी विदुषां मनांसि प्रबोधयन्ती विशदाशयाङ्गी।
कमप्यपूर्वं महतां च तेषाममन्दमानन्दपदं निधत्ते ॥ १ ॥
गीर्वाणवाणी सर्वासां भाषाणां जननी स्मृता।
यां विना जीवितुं शक्ता कापि भाषा न दृश्यते ॥ २ ॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषाप्रश्नानुरोधादुपहतहृदयोद्गारसौरस्यसारं
द्रागुज्झित्वैकतायाः प्रबलगुणगणाबद्धसख्यप्रसारम् ।
दाक्षिण्यं वामतायाः प्रकटितमसकृद् विप्लवात् सौमनस्यं
हत्वा दुर्लालसं तं ग्रथयतु परमे प्रेम्णि गीर्वाणवाणी ॥ १ ॥
अन्योऽन्यं जातवैरं नयनिपुणजनस्वार्थसम्पायिदत्र्या
वाचा, हिंसा-व्यलीकव्यवहृतिविषये त्यक्तसौजन्यरीतिम् ।
निर्लज्जं नीचकार्येष्वनुरतिमनिशं सर्वथोद्बोधयन्तं
देशं क्लेशप्रवेशादवतु भगवती कापि गीर्वाणवाणी ॥ २ ॥

—रतिनाथ झा

सर्गारम्भे वदनकमले राजहंसीव धातु-
र्यासीन्नित्यं नवनवमतिस्फूर्तिसम्पादयित्री ।
स्रोतोरूपैः प्रकटविभवानन्तसद्ग्रन्थपूर्णा
स्वीये राज्येऽनुदिनमुदियान्नित्यगीर्वाणवाणी ॥ १ ॥

—शिवदत्त चतुर्वेदः

यथा निम्नगासु प्रसिद्धाऽस्ति गङ्गा
यथा सत्पुरीषु प्रसिद्धाऽस्ति काशी ।
यथा चापि देवीषु दुर्गा प्रसिद्धा
तथैवास्ति वाणीषु गीर्वाणवाणी ॥ १ ॥
यदीया पवित्रा सदा वेदवाणी
यदीयं पुराणं यदीया च गीता ।
यदीयं महाभारतं ग्रन्थरत्नं
कथं नोत्तमा सा हि गीर्वाणवाणी ॥ २ ॥
यया गीयते संस्कृतिर्भारतीया
यया लभ्यते स्वर्गलोकः सुविज्ञैः ।
सदुक्तिश्च नीतिश्च यस्यां निकामं
कथं सा न सेव्या हि गीर्वाणवाणी ॥ ३ ॥

—कपिलदेव त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदानुच्चारयन्ती प्रमुदितवदना सर्वतन्त्रस्वतन्त्रा
वैरञ्चे वक्त्ररङ्गे विरचयतितरामागमोल्लासलास्यम् ।
वेदाङ्गैर्व्यासवाक्यैरथमनुवचनैर्या पुपोषात्मदेहं
भाषाणां मातृरूपा जयति वुधनुता साऽद्य गीर्वाणवाणी ।। १ ।।

अश्रान्तैः सत्प्रयत्नैर्बुधगुरुकविभिः स्तुत्यधीभिः सुधीभिः
सम्पूर्णानन्दमुख्यैरभिमतफलदः कल्पशाखीव रम्यः ।
वाराणस्यां प्रशस्तः सपदि विरचितो विश्वविद्यालयोऽयं
सम्पूर्णानन्ददात्री विलसति सुतरां यत्र गीर्वाणवाणी ।। २ ।।

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

गहनतमरहस्यं दुर्गमं वा निगूढं
विशदमतिसुबोधं सक्षमा या विधातुम् ।
दुरधिगमफलं या नित्यशक्ता प्रदातुं
जयतु जयतु शश्वत् सा हि गीर्वाणवाणी ।। १ ।।

मृदिव च सुखनम्या कुम्भकारस्य हस्ते
विविधरसविलासव्यञ्जने या समर्था ।
कविमुकुटमणीनां मोददा चारुवर्णा
जयतु जयतु शश्वत् प्रत्नगीर्वाणवाणी ।। २ ।।

ललितमधुमनोज्ञा काव्यनाट्येषु रम्या
गहननिगमबोधे सुप्रसन्ना सुशक्ता ।
मुखरयति यदा सा मादृशीं मन्दबुद्धिं
जयतु जयतु शश्वत् कान्तगीर्वाणवाणी ।। ३ ।।

—विमला देवघर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपस्त्यागप्रभावश्रीप्रतिभोत्साहसम्भृतैः ।
विषमा राष्ट्रजटिला समस्या पूर्यतां बुधैः ॥ १ ॥

—पट्टाभिराम शास्त्री

विदां मण्डलीमध्यगः कोऽपि दम्भी
समाकर्ण्य सूक्तीरनेकाश्च पूर्तीः ।
द्रुतं वक्ति हंहो मयैषा न साध्या
वयस्या ! नमस्या प्रशस्या समस्या ॥ १ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

जगत्त्रयीगौरवगर्वितासु भाषासु सर्वासु चिरात्समृद्धा ।
चञ्चद्विपञ्चीकलनादमुग्धा सौधाशनी स्फूर्जति तासु तासु ॥ १ ॥
छात्रः कश्चिन्नवीनो मतिततिलतिकामातितांसुः प्रविष्टो
जाताश्चर्योऽत्र हर्म्ये कलितकलकले तोरणादेव रम्ये ।
कक्ष्यासूत्तम्भितासु प्रथितगुणगणैर्लब्धवर्णैस्सहस्रैः
ख्यातैरन्तेवसद्भिर्भ्रमति तत इतश्चञ्चलस्तासु तासु ॥ २ ॥
विज्ञानवीथिनयनोत्सवसार्थवाहै-
श्छात्रैर्मनीषिनिवहैर्नवनिर्मितासु ।
शस्त्रास्त्रकौशलकलासु चमत्कृतासु
देशो नवीननयमिच्छति तासु तासु ॥ ३ ॥
अनिलचलितदोलां लाल्यमानां मरन्दै-
र्मधुमधुरिमपुञ्जे गुञ्जितो वल्लिकुञ्जे ।
हसितुमिव निलीनां वल्लिमालासु भृङ्गो
मृगयति सह भोक्तुं स्वप्रियां तासु तासु ॥ ४ ॥

—पट्टाभिराम शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यासु यासु क्रियास्वाशु प्रवर्तन्ते नरा भुवि ।
तासु तासु ध्रुवां सिद्धिं लभन्ते नात्र संशयः ॥ १ ॥

तासु तासु प्रसन्नासु प्रियासु प्रमदासु च ।
पुरुषा अनुरज्यन्ते पद्मिनीष्विव षट्पदाः ॥ २ ॥

अलब्ध्वा ताः प्रियाः सर्वा मन्दबुद्धियुता नराः ।
तासु तासु क्रियास्वाशु भ्रंशिता यान्ति संक्षयम् ॥ ३ ॥

—रामचन्द्र मालवीयः

चेतोमिलिन्द ! भववन्धविभेदनाय,
सन्धेहि देशिकपदाम्बुरुहानुबन्धम् ।
प्रत्यग्रकण्टकशताकुलितासु मागा-
स्तृष्णानदीतटविचारलतासु तासु ॥ १ ॥

आकृष्य कान्यपि पदानि पुरः प्रसर्प-
न्नाटयोत्कटासु विकटारभटीहठासु ।
को वा रमेत विरसासु मृषानुबद्धाऽऽ-
श्लेषोत्सवासु कुकवेः कवितासु तासु ॥ २ ॥

काचिन्नटीव निजरूपमुदीक्षमाणा
सा चिन्नटी नटति जीवनरङ्गभूमौ ।
प्रारम्भबाल्यतरुणत्वजराविराम—
चित्रासु दर्पणदशास्विह तासु तासु ॥ ३ ॥

व्यस्तन्यस्तप्रशिथिलपदश्रेणितन्तन्यमान-
प्रौढिच्छायाच्छुरणविरलीभूततत्त्वार्थभासु ।
छन्दोबन्धच्छविरविरुचां कालरात्रिप्रभासु
स्निग्धः को वा भणितिषु भवेद् भूतजातासु तासु ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भर्तुः कोपाद् विरहविधुरस्याशु यक्षस्य वाचं
तत्प्रेयस्याः श्रवणमणितां प्रापयन् कृष्णमेघः।
नुन्नः खिन्नः कविकुलगुरुप्रेरणामारुतेन
स्नेहाबन्धं व्यतनुत पथि ग्रामकान्तःसु तासु ॥ ५ ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

यासु यासु परमेश! योनिषु
स्थापितोऽस्मि निजकर्मबन्धनैः।
तासुतासु भवदङ्घ्रि-पङ्कजे
भक्तिरप्रतिहता भवेन्मम ॥ १ ॥
यासु यासु स्वकं नाम
'लाँटरीषु' न दृश्यते।
तासु तासु तमोग्रस्ते-
न्दुवन्मे मुखमण्डलम् ॥ २ ॥
अद्यत्वे पुरि यासु यासु रजनी-
ष्वालोक शून्या दिशो
दृश्यन्ते 'हरताल' दत्तमनसां
मिथ्याप्रवृत्तेर्भृशम् ।
जायन्तां खलु तासु तासु सततं
ज्ञानप्रभाभासुरा-
ण्यस्माकं कविभारतीरतिरुचेः
सद्मानि सर्वाण्यपि ॥ ३ ॥

—त्र्यम्बकराव भांडारकर

स्वच्छाशया विजितमन्मथदुर्विकाराः
पुण्यक्रियासु सततोदितसद्विचाराः।
धन्याः स्नुषासु भगिनीष्वनुजप्रियासु
कन्यासु तुल्यमतयो वनितासु तासु ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यास्ववद्यरहितासु कलास्वनल्प-
प्रीतिप्रदासु कवितासु रसोर्मिलासु।
चैरन्तनीषु विमलश्रुतिषु स्पृहावान्
रागं विवर्धयति कश्चन तासु तासु ॥ २ ॥

कालान्तरे परिणयात् पतिसद्मभूषा-
भूतासु पूतचरितासु गृहाद् गतासु।
मुग्धासु दुग्धहृदयासु मनोरमासु
पित्रोर्निसर्गमधुरा ममता सुतासु ॥ ३ ॥

वासन्तिकानिलसमागमनन्दितासु
पुष्यत्प्रसून - मकरन्द - करम्बितासु
गुञ्जन्मिलिन्दमिलितासु सुपल्लवासु
नन्दन्ति कस्य न मनांसि लतासु तासु ॥ ४ ॥

दाम्पत्यरागमधुरासवमोदितासु
वात्सल्यमुग्धहृदयासु गृहेन्दिरासु।
सेवाव्रतासु शुचितार्चितचेतनासु
श्रद्धां दधामि ललनासु न तासु तासु ॥ ५ ॥

दीनोद्धृतौ मुखरितास्वपि कुण्ठितासु
घोरासु गर्हितदुरायतिदूषितासु।
को नाम नार्त्तिमयतेऽद्यतनप्रवृत्त-
मायामयीषु नृपनीतिषु तासु तासु ॥ ६ ॥

वक्रोक्तिगर्भरचनावचनाञ्चितासु
नृत्यत्पदोल्लसितनूपुरझङ्कृतासु
ओजःप्रसादमधुरासु मुदं विधत्ते
कोऽलङ्कृतासु कवितासु न तासु तासु ॥ ७ ॥

फुल्लारविन्दसरसीषु मिलिन्दमञ्जु-
गीतिष्वमन्दमुदितासु वनस्थलीषु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिङ्गत्तरङ्गतटिनीषु शरन्निशासु
कस्यान्तरं न रमते ललितासु तासु ॥ ८ ॥
छद्मानृतापहृतिदुर्वंचनार्चितासु
स्वार्थैकसाधनपरासु विजृम्भितासु ।
अन्यापकाररचनोर्जितजीवितासु
स्निह्यन्ति नीतिषु न बुधा अपि तासु तासु ॥ ९ ॥

—रतिनाथ झा

कार्यैकदृष्टिरचलो गणयन्नबाधा
याश्चिन्तयन्नपि नरस्तु बिभेति नित्यम् ।
धीरो दशासु यतते परिवर्तितासु
सङ्कल्प्य मार्गमचिरात् खलु तासु तासु ॥ १ ॥

—विमला देवधर

साकेते हर्म्यमध्ये प्रणयसुखवृता रामयुक्ता वसन्ती
घोरे कान्तारगर्भे व्यसनशतवृता जानकी चैकरूपा ।
नो भीता हा सती सा दशवदनगृहे राक्षसाकीर्णदेशे
भिन्नावस्थासु सीता रघुपतिचरणे सुस्थिता तासु तासु ॥

—कमलाचुनेकर

रागं विहाय सुतरां सुरसुन्दरीषु
दारेषु वक्षसि विलासिषु चाम्बुजाक्षः ।
भावेन बल्लवसुतासु रतिं स लेभे
प्रेमातिरेकमहितासु हितासु तासु ॥ १ ॥

—रामनारायणदत्त शास्त्री

सरस्वती - सुन्दर - भावनासु
प्रफुल्ल - गंभीर - पदावलीषु-
पद्यावलीषु प्रथतां प्रमोदी
भवद्विधानामिह तासु तासु ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैराग्यवन्तो वयमद्य जाताः
पुरातनानां रचनासु नूनम् ।
तेनैव नोल्लासमिह प्रपन्ना
विदग्धगोष्ठीष्वपि तासु तासु ॥ २ ॥

इदं मदीयं विनिवेदनीयं
परोक्षणीयं विबुधाग्रगण्यैः ।
निरूपणीयं कवितावलीषु
सौन्दर्यमेतास्वथ तासु तासु ॥ ३ ॥

विन्ध्याटवीषु भ्रमता मयेद
मालोकितं नूतनमेव दृश्यम् ।
वाणस्तु सम्प्रत्यपि बद्धदृष्टि–
र्विनम्रशाखासु लतासु तासु ॥ ४ ॥

उद्वेल्लितत्रिदशवाङ्मयसागरासु
साहित्यरीति - रस - रञ्जित - जागरासु ।
मर्मज्ञ - कोविदकवि - प्रतिभान्वितासु
प्राभूत्सुखं हि रजनीष्वथ तासु तासु ॥ ५ ॥

विद्वद्गण - ग्रथित - नूतन - नाटकासु
सन्तुष्ट - भूपति - समर्पित - हाटकासु ।
शास्त्रार्थ-सङ्कुल-लसच्छुक - सारिकासु
प्राभूत्सुखं तु रजनीष्वथ तासु तासु ॥ ६ ॥

प्रत्येक - पत्तन - पुरस्कृत - पण्डितासु
वाणी - विलास - विलसल्ललना-गलासु ।
मन्त्राक्षर - क्षपित-सञ्चित - धीमलासु
प्राभूत्सुखं तु रजनीष्वथ तासु तासु ॥ ७ ॥

—शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नूत्नैर्विचारकुसुमैः सुरभीकृतासु
प्रत्नैर्नवैः सहृदयैरपि पूजितासु ।
कामं सुधाधिकगुणासु मनोरमासु
को वा पुमान् न रमते कवितासु तासु ॥ १ ॥

निर्यन्नवोक्तिरसनिर्झरवञ्चितासु
क्लिष्टैः पदैः कतिपयैः परिगुम्फितासु ।
वृद्धाङ्गनास्विव नवाभरणोज्झितासु
व्यर्थासु मा कुरु रतिं कवितासु तासु ॥ २ ॥

आशासु कीर्तिविभवैः परिभूषितासु
स्वान्तःसुखोदयचणासु सुहृत्तमासु ।
पीयूषसेचनपरासु सतां सभासु
श्रान्तोऽसि चेद् व्रज सखे ननु तासु तासु ॥ ३ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

वृन्दावने सुरभि - चारण - कैतवेन,
संकेतित - स्थलमुपेत्य रहो गतासु ।
रेमे तटान्तभुवि भास्कर - कन्यकायाः,
श्रीलम्पटः सकलगोपसुतासु तासु ॥ १ ॥

नव्या निपीतविजयाः सितवाससस्ते,
ताम्बूलफुल्लवदना बहुलान्तवाचः ।
वाराणसेय - रसिकाः परितो भ्रमन्ति,
सायन्तना नगर - वीथिषु 'तासु तासु' ॥ २ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शम्पा यस्मिन्नकम्पा निवसति जगताम्पालने सानुकम्पा
यस्य श्लाघां निलिम्पाः श्रुतिमधुरपदैः साधु सम्पादयन्ति ।
पुण्यैः कश्चिद् विवेकी सरसकवितया जायते यस्य केकी
तृष्णां व्याधूय पुष्णात्वयममृतरसैर्वृष्णिभूः कृष्णमेघः ॥ १ ॥

वृन्दारण्योद्भवासु प्रचलदलिकुलस्पर्धिनेत्रोत्पलासु
व्यावल्गाद्विभ्रमासु स्मितसितसुमनःसौरभामोदितासु ।
तारुण्यश्रीफलासु प्रणयरससुधास्वादनायोत्सुकासु
क्रीडन् कान्तासु तासु प्रमदयतु मनः काननं कृष्णमेघः ॥ २ ॥

नैसर्गिक - प्रणयिनां हृदयालवाले
कारुण्यवारि विकिरिन् भवतापहारि ।
संवित्तडित्किरणदर्शितसत्यमार्गः
सान्निध्यमञ्चतुतमां मम कृष्णमेघः ॥ ३ ॥

—बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

निपीय पाथोधि समुद्भवं भवो
विषं सिषेवे किल नीलकण्ठताम् ।
हरिर्हरादप्यधिकं पपौ विषं
वपुर्यदस्याजनि 'कृष्णमेघ'वत् ॥ १ ॥

विद्युत्पीताम्बरकृतरुचिः प्रोल्लसद्रत्नरोचि-
र्जालैरिन्द्रायुधपरिवृतो वर्धयन्नुत्कतां मे ।
भूयो भूयः सखि ! भुजगभुक्पक्षसपन्नशोभः
सश्रीर्दृष्टोऽयममृतलसद्भूषणः 'कृष्णमेघः' ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्णमेघकृतवृष्टितो यथा
निर्मलं भवति वस्तु पङ्किलम् ।
कृष्ण ! मेऽघ निकुरम्ब कर्दमं
क्षालयेर्भवभयाच्च पालयेः ॥ ४ ॥

सद्यः कृत्ता प्रतिहतगतिः कीर्तिमान् भारतीयः
प्रोत्तृष्णस्सन् गिरिदृढबलैरिन्दिरावञ्चितोऽयम् ।
नैका मेयाधिकृतिसुभगः संज्ञयाऽप्यद्यशून्यो
राजौघश्चेदहह ! स महान् कालदेवप्रभावः ॥ ५ ॥

—त्र्यम्बकराव भांडारकरः

दावाग्नेर्ज्वालदुःखाद्विषमविषभयात्कृष्ण ! कृष्णाविता त्वं
घोरं विष्वङ्नदद्भिर्व्रजपुरमभितः प्लावयद्भिः सुमेघैः ।
त्रस्तानस्मान्समस्तान्व्रजयुवतिजनान्पश्य सीदत्कुटुम्बान्
जानीही मान्नमेघान् घनबलसहितः कृष्णमेघाऽयमिन्द्रः ॥ १ ॥

आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
दृष्ट्वा काचिद् विरहविधुरा गोपबाला कृशाङ्गी ।
स्मृत्वा रासं मधुर - मधुरं कृष्णकान्तेन साकं
प्राह प्रीता हरिणनयना कृष्णमेघः प्रियो मे ॥ २ ॥

त्वं शोभना गौरशरीरकान्ति-
श्चन्द्रानना कुन्दसुदन्तपङ्क्तिः ।
आभाति बाले तव भालदेशे
रम्यः सुवन्यः कचकृष्णमेघः ॥ ३ ॥

—रामचन्द्रमालवीय

शमयितुमिव तीव्रं लोकसन्तापजातं
मदयितुमिव मित्रं नीलकण्ठं समुत्कम् ।
पुलकयितुमिवान्तर्मेदिनीं मोदमानां
जनयितुमिव हर्षं सङ्गतः कृष्णमेघः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वियति विततापे भूतले चाग्निकल्पे
सरसि रसविहीने व्याकुले सर्वलोके ।
नवरसपरिपूर्णो विद्युदालिङ्गिताङ्गः
स्फुरति नभसि कश्चिन्नूतनः कृष्णमेघः ।। २ ।।

लीलावत्यो नवयुवतयो गौरभासा, हिमांशो–
र्ज्योत्स्नाः स्वच्छा, कुमुदविपिनश्वेतलक्ष्म्या सरांसि ।
शुभ्रैःशृङ्गैर्हिमगिरिशिरःसम्पदो भान्ति भव्याः
सर्वं शुक्लं प्रियमभिमतः केवलं कृष्णमेघः ।। ३ ।।

उद्दण्डचण्डकरपीतरसारसस्य
पङ्क्तीकृतार्यजनशोषितमानसस्य ।
दुःशासनस्य महसः प्रशमाय कश्चिन्–
मोदाय तप्तजगतोऽजनि कृष्णमेघः ।। ४ ।।

सत्कार्मुको जनितमन्मथबालकेलि–
र्योगिप्रमोदजननः परिपूरिताशः ।
आनर्तितः स्वचरितार्चितनीलकण्ठः
किं त्वां विडम्बयति भूरि न कृष्ण ! मेघः ।। ५ ।।

आरुह्य मारुतरथं विहरन् दिगन्ते–
ष्वङ्के निधाय दयितां चपलां स्फुरन्तीम् ।
वर्षन् नितान्तममृतं मधुरं च गायन्
लोकार्चितो वियति नन्दति कृष्णमेघः ।। ६ ।।

कस्तूरिकातिलक एष दिगङ्गनानां
व्योमश्रियः कुटिलकुन्तलतामुपेतः ।
उत्कण्ठिकर्षकवधूनयनाञ्जनाभो
भव्याम्भो नभसि दीव्यति कृष्णमेघः ।। ७ ।।

मानग्रहं समदमानवतीजनस्य
चण्डस्य चण्डमहसोऽप्युपतापदर्पम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुष्यन्मुखस्य वत चातकपोतकस्य
तृष्णां क्षणेन परिकृन्तति कृष्णमेघः ॥ ८ ॥

—रतिनाथ झा

निःस्वानैः कीचकानां प्रसरति परितो वेणुनादो महीया-
नुद्रिञ्चच्छक्रचापद्युतिमदभिनवं दिव्यवासो वसानः ।
कान्ति कामप्यवाप्तो वियति विलसिते वृन्दकारण्यकुञ्जे
कान्ताभिश्चञ्चलाभिर्वलयितवपुषा काशते कृष्णमेघः ॥

—रामनारायणदत्त शास्त्री

संकल्पितो हृदि यया दयिताभिसारो
विद्युल्लताविलसितो निबिडश्च मार्गः ।
आविष्कृतो मधुरवो निजकिङ्किणीनां
तं स्तम्भयन्नभसि गर्जति कृष्णमेघः ॥ १ ॥

लोकापवादभयकम्पितपादचारां
नीलान्धकारसदृशं वसनं वसानाम् ।
आच्छादयन्निबिडघोरघनान्धकारे
प्रोत्साहयत्यपि च तां ननु कृष्णमेघः ॥ २ ॥

भर्ता मत्स्योपजीवी लवणजलनिधौ मत्स्यबन्धो नियोगो
दुर्लङ्घ्योरात्रिकाले प्रबलजवयुतो वारिराशिर्गभीरः ।
गन्तव्यं किन्तु भर्त्रा व्यसनशतवृतेनापि घोरान्धकारे
मार्गे विद्युत्प्रकाशं वितरति सहसा वत्सलः कृष्णमेघः ॥ ३ ॥

—कमला चुन्केरः

कारागारात् स्वसूनुं त्वरयति जनकः शङ्कितो नन्दपार्श्वे-
मायातस्तं पिधातुं ह्यशरणशरणः स्निग्धहृत्कृष्णमेघः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेघश्यामं मनोज्ञं वरशुचिरुचिरं किन्तु सम्मूढचेता
दृष्ट्वा श्रीकृष्णचन्द्रं भवति विगलितो हर्षितः कृष्णमेघः ॥ १ ॥

स्मारं स्मारं यदास्यं पुनरपि नयनानन्ददं दर्शनं तत्–
मेघश्यामं दिदृक्षु-र्विचरति गगने स्वैरमाहिण्डमानः।
दुष्प्रापं तन्निरूप्य प्रभुपदनिरतान् कृष्णजन्मोत्सवेषु
प्रेक्ष्य श्रीकृष्णभक्तान् शमयति स निजां लालसां कृष्णमेघः ॥ २ ॥

कृप्त्वा घोरां तमिस्रां मलिनयति नभः किन्तु पीयूषधारां
वर्षन् शीतां तृषार्तान् प्रशमयति सदा मित्रतप्तान् पयोदः।
नाम्ना मित्रस्तथाऽपि ज्वलयति धरणीं भास्करः कान्तियुक्तो
वर्णे कृष्णो विरूपः सुखयति वसुधां निष्प्रभः कृष्णमेघः ॥ ३ ॥

—विमला देवधरः

असितकमलकम्रं वीक्ष्य नन्दस्य सूनुं
मुदितजनसमूहो वक्त्ययं कृष्णमेघः।
अपरदिशि स कंसश्चिन्तया व्यग्रचेता
वदति कुलिशपाती सैष मे कृष्णमेघः ॥ १ ॥

अयमनिलसहायः शम्पया पीतकायः
प्रकटितबहुमायः सुप्रसिद्धान्ववायः।
रसिकइव मनोज्ञो मन्द्रशब्दप्रवीणश्-
छलयितुमुपयातो राधिकां कृष्णमेघः ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

वृन्दारण्यं गतानां सुललितवपुषां बल्लवीनां लतानां
स्निग्धं स्नेहामृतेन प्रतिदिनमकरोत् योहि चित्तालवालम्।
कालिन्दीकूलकूलेऽनवरतमतनोद् यश्च तां रासलीलां
सोऽजस्रप्रेमाम्बुवर्षो हृदि वियति सतां राजतां 'कृष्णमेघः' ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यो भीष्मग्रीष्मकोपानलविकलमहापाण्डवोचण्डसेनाऽऽ
रण्यानीवीरवीरुद्द्रुमशिरसि कृपावारिबिन्दून् ववर्ष ।
दृप्यद्दुःशासनोद्यन्मरुदुपमृदितां द्रौपदीमानवल्लीं
यो वा सञ्जीवनार्द्रां पुनरकृत स मां त्रायतां 'कृष्णमेघः' ॥ २ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

तोषयन् बर्हिवृन्दादि पोषयन् भूरुहान् मुहुः ।
घोषयन् स्वागमं लोके कृष्णमेघो विराजते ॥ १ ॥
चञ्चलाभूषिततनुः चञ्चलां वृत्तिमाश्रितः ।
चञ्चच्चन्द्रप्रतिस्पर्धी कृष्णमेघो विराजते ॥ २ ॥
कृष्णाम्बुनिम्नगान्तस्थः कृष्णाहिमदमर्दनः ।
कृष्णार्तिव्रातशमनः कृष्णमेघो विराजते ॥ ३ ॥
मृगमदकृतचर्चः पीतकौशेयवासाः
रुचिरशिखिशिखण्डः कंसचाणूरभेत्ता ।
प्रियसखपरिवारो दुग्धदध्यादिचोरः
करधृत लघुवंशो राजते कृष्णमेघः ॥ ४ ॥

—श्रीपति शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुर्गा निसर्गोज्ज्वला : ८ :

यस्या बाहुयुगं हरिः स भगवान् शम्भुर्मुखाम्भोरुहं
वक्षोजद्वितयं तुषारकिरणो मध्यं महेन्द्रात्मकम् ।
वेधाः पादयुगं नितम्बगरिमा विश्वम्भरासम्भवः
सा वः कामदुघास्तु सर्वजननी दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। १ ।।

शिक्षाकल्पलतावने नवनवैर्विद्यापिशाचैर्वृता
मत्ताः सम्प्रति सञ्चरन्ति महिषीपुत्रा जगत्त्रासकाः ।
तानेतान् विदलय्य सज्जनपरित्राणाय सज्जायुधा
साऽस्मान् पादनतान् धिनोतु तरसा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। २ ।।

आदिक्षान्तसमस्तवर्णकिरणप्रद्योतिताशाम्बरां
यां ध्यात्वा रचयाञ्चकार भुवनस्तोमं विरञ्चिश्चिरम् ।
मूलाद्ब्रह्मबिलावधिप्रसृमरप्रोद्दामविद्युत्समा
सा वः संहृतसम्भ्रमाऽस्तु शुभदा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। ३ ।।

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

दैत्यत्रस्तसमस्तदेवविगलद्धाम्नां सुपुञ्जीभवन्-
मूर्त्तिः स्फूर्तिनिधिर्दुरन्तदुरितध्वान्तक्षयायोद्यता ।
शम्भोर्निर्मलकान्तकोमलरुचा भूयः समुद्भासिता
भूयाद् भक्तजनोदयाय सदया दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। १ ।।

आस्येनामृतदीधितिं त्वधरयन्त्यङ्केशया भूभृतां
पत्युर्गौरवशालिनी त्रिभुवने कन्यातिधन्योद्गता ।
शूली यां परिणीय विस्मृतगदो मृत्युञ्जयोऽभूद्द्रुतं
सा देवी रमतां चिराय हृदये दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। २ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्या आस्यमुपास्य दास्यविधया धन्यः सुधादीधितिः
शारद्यः कृतकृत्यतामनुभवन् पूर्णत्वमापद्यते ।
सिद्धिर्लास्यमनारतं प्रकुरुते यस्याः समक्षं मुदा
जीयात् सा शरदिन्दुसुन्दरमुखी दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ ३ ॥

देवादीनपि बाधितुं कृतमतीन् रक्षःपतीन् सद्गतीन्
कर्तुं सङ्गरमारचय्य सुमरैश्शस्त्रै स्तथास्त्रैर्घ्नती ।
लोकत्राणपरायणा पशुपतिप्राणा प्रवीणार्पणे
पुण्यानां जननी जयत्यनुपलं दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ ४ ॥

श्यामाङ्गे महिषासुरे बलभिदोऽपि त्रासदे दुर्जये
सङ्ग्रामाङ्गणपातिते नखमणिस्फूर्जत्पदारोपणात् ।
कृष्णे सान्द्रपयोधरे सुललिता विद्युच्छटेव स्फुटं
सौन्दर्यं समवाप दुर्लभतमं दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ ५ ॥

—रतिनाथ झा

संग्रामे महिषासुरः प्रमथितो घोरश्च दर्पोद्धतो
लिप्ता मांसकणैरमंगलतरै रक्ताभिषिक्ता रणे ।
आरक्ते नयने च कोपभरिते स्रस्ताश्च केशा घनाः
शोभां धारयते तथापि विमलां दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ १ ॥

क्लान्ता सा व्रतपालनेन सुमुखी पञ्चाग्नितप्ता भृशं
पर्णाहारवशाद्विवर्णवदना मन्दप्रभा पार्वती ।
भक्तिप्रेमवशं व्रतैश्च विजितं प्राप्नोदुमा शंकरं
निर्विण्णा च तपः कृशापि मधुरा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ २ ॥

आहूता महिषासुरेण समरे दर्पाद्यदा भैरवी
शस्त्रैराक्रमिताऽसुरेण विविधैर्घोरैश्च तेजस्विनी ।
सौकर्येण विनाशितश्च महिषो मुक्ता च पापाद्धरा
सङ्ग्रामे हरिवाहिनी विजयते दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ ३ ॥

—कमला चुनेकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आर्तेभ्यः परमाश्रयं ह्यभयदा दातुं तथैवोद्यता
दुष्टध्वंसनतत्परा खलगणान् भिन्ते यथा चण्डिका।
अम्बा भक्तजनानुरक्तहृदया शम्भुप्रिया वत्सला
नाना दुर्गविनाशिनी विजयते दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ १ ॥
वाग्जालैर्मधुभिः प्रवञ्चितमतिर्मुग्धाऽभवत् संश्रवै-
रन्यायाचरणेन किन्तु कुपिता युद्धाय संचोदिता।
सा लक्ष्मी रणरागिणी तु समरे तेजस्विनी भासते
साक्षाच्छुम्भनिशुम्भमर्दनपरा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ २ ॥

—विमला देवधरः

या वृन्दारकवृन्दवन्दितपदा मन्देहभङ्गोद्यता
भक्तानुग्रहणैकविग्रहवती कारुण्यवारांनिधिः।
सिंहस्कन्धनिवासिनी वृषवतः शम्भोः सदा सङ्गिनी
पायाद् वः शरदिन्दुसुन्दरमुखी दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ १ ॥
यस्या हेमगिरिं श्रिता मुनिवराश्चर्यां चरन्तोऽखिलां
ध्यानेनाभितरन्ति संयमधनाः संसारदुःखार्णवम्।
यस्या वै परिभूतदानवगणाः सम्प्राप्नुवन्त्यापदः
साऽपायादवतात् समोडयचरणा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ २ ॥

—केदारनाथ त्रिपाठी

या शुम्भाद्यसुरान् निहत्य तरसा दर्पोद्धतान् संगरे
कालीरूपमुपेत्य रक्तमपिबद् रक्ताख्यबीजस्य या।
यस्याः सत्कृपया समाधिसुरथौ सर्वार्थसिद्धिङ्गतौ
भक्तानुग्रहकारिणी जयति सा दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ १ ॥
नानावस्त्रविभूषणैर्विलसिता गोप्यः सुरस्त्रीसमाः
स्वं स्वं वेश्म विभूषयन्ति परितः श्रीकृष्णजन्मोत्सवे।
मिष्टान्नैः परितोषयन्ति सुहृदो नन्दादिगोपास्तदा
विप्रेभ्योऽमितदुग्धदाःकिल मुदाऽदुर्गा निसर्गोज्ज्वलाः ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्यः प्रोन्नतये परोपकृतये प्रान्ते शिवाप्तये
प्रीतिस्फीतिकरेण शुभ्रमनसा वाचा सुबुध्या तथा ।
संसेव्या जगतां लयस्थितिकरी या पालनी संततं
प्रोन्मत्ता सततं विपद्विदलने दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।।

—शिवदत्त चतुर्वेदः

या चण्डादिप्रचण्डदैत्यदलिनी या माहिषोन्मूलिनी
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रियकरी सर्वेष्टशंदायिनी ।
संसाराभयकारिणी सुखकरी मायागुणैर्मोहिनी
सा देवी वरदायिनी भवतु मे दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।।

—कृष्णमोहनठक्कुरः

या नित्या प्रकृतिः परा प्रकटिता बोभोति भूत्यै भवे
यां ध्यायन्ति हि योगिनोऽपि च यया व्याप्तं जगद् रोचते ।।
यस्यै सप्तशतीस्तवोऽदितिसुतो यस्याः परो नापरः
सा पायाद् जगदम्बिका भगवती दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। १ ।।
ब्रह्मा सृष्टिमथोऽवनं हरिरथो संहारमीशो भुवो
यस्या एव महीयसीं किल कृपामासाद्य कर्तुं क्षमः ।।
यस्यामेव विलीयते जगदिदं कल्पावसाने सदा ।
सा पायाद् जगदम्बिका भगवती दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ।। २ ।।

—कपिलदेव त्रिपाठी

उदितमनन्तधाम नाम महिषासुरस्य,
वृत्तिरासुरीया सा यदाऽऽसीत् समुच्छृङ्खला ।
विप्रमुनिधेनुमहीमण्डलमुदासीद्यदा,
साखण्डलाऽऽसीद् देवमण्डली सकश्मला ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्महरिशम्भुमतिवैभवमशेषमति–
कुण्ठितमिहासीद् यदानासीद् धर्मश्शृङ्खला ।
राध्यमानभर्गा स्तूयमानसुरवर्गातदा,
प्रादुरासीत् स्वर्गादत्र दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ १ ॥
सिंहासनासीना कटिहीना स्तनभारपीना,
चीनांशुकाहीना तनुश्रीर्दत्तकज्जला ।
दीनापारदुःखवारिधीनामगतीनामथ
द्विजसुरमुनीनामार्तिविध्वंसिनी निर्मला ।
कुण्डलनवीना काञ्चीकटककिरीटलीना–
नोलसन्मणीनामंशुकान्तिः कान्तकुन्तला ।
विन्ध्यगिरिकल्पितसुदुर्गा मारितारिदुर्गा,
दुर्गाधारभूता भाति दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ २ ॥
सर्वा सर्वसमादृताऽऽदृतसुरा सर्वासुरद्राविणी
सन्मार्गाश्रयिणी हरप्रणयिनी भोगापवर्गावनी ।
स्वर्गादुच्चतमाद्रिमूर्धनि सदास्वर्गार्थसन्दायिनी
सर्गारम्भविधायिनी विजयते दुर्गा निसर्गोज्ज्वला ॥ ३ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरदिन्दुमुखी

: ६ :

अमलाकमलासनसन्निहिता
विहिताऽखिलभक्तकदम्बहिता ।
महिता विधिशौरिहरैर्जयतात्
सहिता कृपया शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥

विधृतोज्ज्वलचन्दनमाल्यगणा -
ऽम्बरतारकहारनिगूढतनुः ।
त्रिदशीव धरावलये दयितं
विचिनोति नु किं शरदिन्दुमुखी ॥ २ ॥

घनसन्तमसच्छिदुरैः किरणैः
कविकैरव - जागरण - प्रसिता ।
भ्रमरक्वणितैर्मुरलीरणितै-
रियमेति सखे! शरदिन्दुमुखी ॥ ३ ॥

कलिकारदना विलसन्मदना
सुरभिश्वसना जलमुग्वसना ।
कलहंसकशिञ्जितमञ्जुपदा
समुदेति मुदे शरदिन्दुमुखी ॥ ४ ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

अरविन्दमरन्दझरैर्मधुरा नवखञ्जनगञ्जनकृन्नयना ।
विमलाम्बरमञ्जुलतालसिता मुदितोदयते शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥
रसिकेषु मुदं, तरुणेषु मदं भुवनेषु परां सुषमां दधती ।
कमलेवं पदन्यसनेन सुखं ददती रमते शरदिन्दुमुखी ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुरैर्मधुपावलिगीतभरैर्लतिकाललितोत्सवलास्यरसैः ।
कलहंसकुलैरभिनन्दनतो भुवि नन्दति सा शरदिन्दुमुखी ॥ ३ ॥

विगतं सुकृतं, परमेशरतिर्विरता, परलोकमतिस्तु मृता ।
न मनागपि खेद इतःस्वदते यदि साभिमुखं शरदिन्दुमुखी ॥ ४ ॥

अधुना जगति स्पृहणीयतमं द्वयमेव हृदम्बुजमाश्रयते ।
विभवो भवभूतिकरोभवने मदनाय तथा शरदिन्दुमुखी ॥ ५ ॥

रसिकं प्रियमुन्मदयन्त्यनिशं शिशुलालनमाकलन्त्यसमम् ।
विषमं परिवारकलिं दमयन्त्युदयं लभते शरदिन्दुमुखी ॥ ६ ॥

जननं नमनीयमनन्तफलं नवयौवनमुत्सवधाम तदा ।
यदि चुम्बति सद्गुणिनी कविता परिरम्भवतो शरदिन्दुमुखी ॥७॥

धनधान्यसमृद्धिविलासमयं भवनं कलशिल्पकलाललितम् ।
श्रियमेति तदैव यदा वसति स्मितशोभिमुखी शरदिन्दुमुखी ॥ ८ ॥

—रतिनाथ झा

निजवल्लभ - सम्मिलनत्वरया
सखिभिः प्रहिता निशि हर्षयुता ।
स्वगृहात् समुपैति कृतावरणा
शरदिन्दुमुखी विकसन्नयना ॥ १ ॥

कुसुमाभरणैः सुविभूष्य तनुं
रतिरूपविडम्बनमादधती ।
समुपैति निजं दयितं सुदती
त्वरया तरुणी शरदिन्दुमुखी ॥ २ ॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

इतिहास-पुराण-कथासु यथा, स्फुटमद्यतनानुभवेषु तथा ।
ध्रुवसत्यमिदं लभते न कदाप्यकलङ्कसुखं शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुकुमारतनुर्मृदुपुष्पशरैर्निहतेव मृता सहसा सुमुखी ।
अजलोचनभा चतुरेन्दुमती विविदे न सुखं शरदिन्दुमुखी ॥ २ ॥
अशुभं दयितस्य निवारयितुं सुरसेवितमत्तदशास्यसखी ।
यतते तु वृथा शृणुते न पतिः पतति व्यसने शरदिन्दुमुखी ॥ ३ ॥
क्षुभितो रजकस्य वचोभिरहो पुरुषोत्तम एष जहाति सतीम् ।
पतिधर्मरतापि विदेहसुता न विवेद सुखं शरदिन्दुमुखी ॥ ४ ॥
नृपदक्षसुता जनकस्य गृहे कुपितात्वपमानभरेण यदा ।
पतिताऽग्निमुखे सहसा च सती शितिकण्ठवधूः शरदिन्दुमुखी ॥ ५ ॥
ऋतुराजसखा मदनो यतते गिरिजाशशिमौलिविवाहकृते ।
दहनं दयितस्य विलोक्य रतिर्विरुरोद चिरं शरदिन्दुमुखी ॥ ६ ॥

—विमलादेवघरः

रतिनाथगुणा विमलावरणा, नवकैरविणी लसिताभरणा ।
ऋतुषुप्रवणा विलसच्चरणा, नटतीव पुरः शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

शरदोऽद्यतमा शरणागतमा, शरभातकरा सरसैकपरा ।
सरसीरुहपादकराक्षिमुखी गिरिजावतु नः शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥
शरदिन्दुमुखी विबुधाभिमुखी विमुखीभवदलधियां विमुखी ।
गिरिराजसुता गिरिशेऽभिरता भवतापमपाकुरुतादमिता ॥ २ ॥

—केदारनाथ त्रिपाठी

क्षितिजं स्वकरैरभिषिच्य सितैः, रुदितं गगने विधुबिम्बमहो ।
उदिता स्वगृहे प्रमदापि तथा सितधौततटे शरदिन्दुमुखी ॥

—कमला चुनेकरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कमलासनवासमिता सुरगीः,
करकंजनदन्नववल्लकिका ।
वरदा सुरवृन्दनिषेव्यपदा,
जयतीह सदा शरदिन्दुमुखी ॥ १ ॥

धवलाम्बर संवलिता चपला–
द्युतिसंकुलिता विमलाब्जविभा ।
शुचितारकिताऽद्य विभातितरां
रजनी रमणी शरदिन्दुमुखी ॥ २ ॥

गमनोद्यत एव विदेशमिति
प्रसमीक्ष्य विशेषदृशा दयिता ।
दयितस्य चिरं गमनीयपथं
न जहौ न ययौ शरदिन्दुमुखी ॥ ३ ॥

प्रियपाणिमपाकुरुते तनुते
बहुमानमहो शयने विमुखी ।
शृणुते न वचो मनुतेऽनुनयं
न नवीनवधूः शरदिन्दुमुखी ॥ ४ ॥

दरकम्पितगात्रलता तरुणी,
कुचभारनता कचकान्तिमती ।
स्मरतापसमाकुलिताऽपि सती
पतिमेति न सा शरदिन्दुमुखी ॥ ५ ॥

तरवो हरितास्सरितो भरिता,
हरितो मुदिताः परितोऽप्यधुना ।
कलमाः परिपक्वतमा भुवनं
समलंकुरुते शरदिन्दुमुखी ॥ ६ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुग्धाब्धिमथनोद्भूत सुधाधामसहोद्भवा।
सुस्थिरामस्थिरापायाच्छरदिन्दुमुखी रमा॥ १ ॥

अभ्रमुक्ताभ्रपथगसप्तसप्तिसमप्रभा।
पायादपायादनघा शरदिन्दुमुखी शिवा॥ २ ॥

कनकाभरणा भ्रमराभकचा
शिखराग्रदती हिमगौरतनूः।
सुजने सदया दययाऽवतुमा-
मरविन्दमुखी शरदिन्दुमुखी॥ ३ ॥

गिरिराजसुता सुरराजनता-
दिनराजनुता गणराजयुता।
मृडराजमता नटराजरता
दययाऽवतु मां शरदिन्दुमुखी॥ ४ ॥

सचतुर्मुखषण्मुखपञ्चमुख-
प्रमुखाखिलदैवतवृन्दनुता।
शरणागतरक्षणकल्पलता
परिपालयताच्छरदिन्दुमुखी॥ ५ ॥

कलकण्ठरवा वशदेववधू-
शतकोटिवृता स्मरकोटिसमा।
कमलागिरिजाभिमता सुखदा
परिपालयताच्छरदिन्दुमुखी॥

—श्रीपति शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिदासः

कुलगिरि-कविकुलललाम ! ललितरसकलोज्ज्वलप्रवन्धोत्स ! ।
विश्वादृतमहिमलेख ! जय हिमगिरिकालिदास ! त्वम् ।। १ ।।

भारतगौरवनिदान ! पटुकाव्यपाटलसौरभाधान ! ।
भूतलविभूतिभूत ! स भारतीव्रतनुतो भासि ।। २ ।।

वाग्देवता-शशिकलाङ्कित -कुन्तलश्रि
शाकुन्तलं कविमदान्तककुन्ततुल्यम् ।
फुल्लप्रसूनवदनूनरसानुभावा-
ऽऽमोदप्रदं कविवराद्भुतसृष्टिदृष्टम् ।। ३ ।।

कालिदास ! कविपादपपुञ्जे
सत्यमेव विदितोऽसि रसालः ।
यो हि सान्द्ररससारशिरस्तो
मेघदूतमयचूतमसूत ।। ४ ।।

कालिदास इति नाम विभ्रता-
शुभ्रकीर्त्ति - प्रभुता त्वया भृता ।
हन्त ! तावक - पदैकदासता
शासतापि न सता न गृह्यते ।। ५ ।।

---

१. रसः = शृङ्गरादिः, जलञ्च, तस्य कला, कलः अव्यक्तमधुरः शब्दः, तेन उज्ज्वलः प्रकटः प्रवन्धः = रचना, प्रवाहश्च तस्य उत्सः उत्पत्ति-स्थानम् ।

२. काव्यरूपपाटलम् ('गुलाब फूल' इति भाषा) तस्य सौरभं यशः सुगन्धश्च । भारतीव्रतैः विद्वद्भिः नुतः स्तुतः, अथ च हिमालयपक्षे भारेण तीव्रा विशदा या तनुः शरीरम् तस्मात् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सागरांशरघुवंशविचारिन्
राजहंस ! कविवृन्दवतंस ।
कालिदास ! तव शब्दविलासः
स्तब्धतां शुकसुतेऽपि विधत्ते ॥ ६ ॥

मारमारणविदारुणाङ्कृतिं
दर्शयन्नपि कुमारसम्भवम् ।
हे कवीन्द्र ! घटयन् मनीषया
ऽसम्भवं नयसि शंभवाश्रयम् ॥ ७ ॥

उर्वशीव चिरयौवनस्थिता
दिव्यदूरपदविक्रमान्विता ।
लास्यहास्य मधुरेव नर्तकी
कल्पनाऽल्पनिपुणा न तावती ॥ ८ ॥

सतिलकालिकमालविकाननप्रणयिमित्रनरोत्तमचित्रतः ।
विरहजाग्निसमुज्ज्वलनाटकंकषितहाटकवद् विराजते ॥ ९ ॥

वाणीगलमणिहारं मनुते ननु ते जनऋतुसंहारम् ।
सगुणं सदलङ्कारं ससारमिव काव्यसंसारम् ॥ १० ॥

---

६. सागरांशः सगरजातः अंशः रघुवंशः, अथ च समुद्रस्य एकांशे लघुवंशवृक्षे च, विचारयुक्तः विचरणशीलश्च हे राजहंस कालिदास ! कविवंशवतंस ! कविवंशालङ्कार ! अथ च के जले ये वयः पक्षिणः तेषां वतंसो जलचरपक्षिश्रेष्ठ ! तव शब्दविलासः शब्दसम्पत् अथ च हंसरुतम्, शुकसुतेऽपि स्तब्धतां विधत्ते शुकः सुतोयस्य स वेदव्यासः तस्मिन् स्तब्धतां जनयति, वेदव्यासोऽपि नव शब्दसम्पदा विस्मितो भवति, अथ च हंसरुतं कदाचित् शुकशावकमपि निःशब्दं करोति, उच्चतया मधुरतया च शरदि हंसरुतस्य प्रशंसा प्रसिद्धा ।

७. मनीषया असम्भवं वस्तु भवाश्रयं संसारसम्बन्धि शं मङ्गलं नयसि । अथ च भवाश्रयं शिवसम्बन्धि शं तनोषीत्यर्थः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तव कविता सुरवनिता चिरतरुणतया विबुधमनोहरणी ।
मन्दारसततसुखदा सुधारसनिष्यन्दिनी विशदा ।। ११ ।।

सान्ध्यशारदनवेन्दुमञ्जुला माधवीयशिशुभानुभासुरा ।
अर्द्धफुल्लसरसीरुहच्छविः कालिदासकवितासु माधुरी ।। १२ ।।

श्रीजीवन्यायतीर्थ भट्टाचार्यः

यद्वाणीमणिदर्पणे त्रिजगती सर्वाऽपि चित्राकृतिः
सौन्दर्यप्रतिबिम्बिता कलयते नेत्रोत्सवं धीमताम् ।
सोऽयं सूक्तिसरोविहारविधये वाग्देवतावल्लभो
धन्यः श्रीकविकालिदाससुकृती हंसावतंसायते ।। १ ।।

काली यस्यवशंवदा मधुझरीधिक्कार-पारङ्गमैः-
र्वाग्गुम्फैर्वशयाम्बभूव सततं स्वान्तानि कान्तात्मनाम् ।
आलीव प्रणयोन्मुखी न रहयत्येनं क्वचित्कल्पना
श्रीमद्भारतभूमिभालतिलकः कम्रः कवीन्द्रोऽस्ति सः ।। २ ।।

भूतिर्या भवभूतिवाङ्मयगृहे बाणस्य या नैपुणी
निक्वाणे वचसां विभाति च विभा या भारवेर्वर्त्मनि ।
सा सङ्कोचकलङ्कमञ्चतितमां श्रीकालिदासाननात्
पीयूष-द्रवहारिणी यदवधि प्रस्यन्दते भारती ।। ३ ।।

गोसेवानिरतो दिनेशकुलजो दीपो दिलीपोऽसि किं
किं वा दिग्विजयी लघूकृतरिपुव्रातो रघुर्गीयसे ।
रामः किं सकलाभिरामचरितो यक्षोऽसि दक्षोऽथवा
स्वच्छन्दो जलदोऽसि वा कविकुलालङ्कार ! तुभ्यं नमः ।। ४ ।।

---

११. विबुधाः पण्डिताः देवाश्च, तेषां मनोहरणी । सुरवनिता देवी मन्दार-सततसुखदा, मन्दारार्पणसततसुखदानि यस्याः सा अथ च मन्दाः मूढाः अरसाः अरसिकाः ये तेषु ततं विस्तृतं यत् सुखं तद्द्यति च्छिनत्ति सा तव कविता न मूढानां न वा रसबोधहीनानां प्रिया इति भावः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

येनाऽर्वाणि मनं गिरामविषयं तत्प्रेम तादृक् पति-
यंस्योमाऽपि पदं दधाति पुरतः सर्वोपमानिर्मिता ।
यद्वाचा गिरिशेऽपि तद्विजयते पौष्पेषवं पौरुषं
स्निग्धः-सर्वसुहृन्मणिः कविगुरुः सोऽयं सपर्योचितः ।। ५ ।।

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

वाणो वाण्याश्चरणरणितं नूपुरं दण्डपादो
माघो दण्डी कटितटरणत्किङ्किणीचक्रवालम् ।
पिण्डीबन्धश्चलतरलयोर्हस्तयोर्ही रपुत्रः
क्रीडाशैलद्वयमुरसि यत् तत् तु वः कालिदासः ।।

रेवाप्रसाद द्विवेदी

जयति जगति दीव्यद्देवतादत्तसिद्धि-
र्मधुरमधुसमृद्धं या फलं संप्रसूते ।
परमनुपमकाव्यानन्दनिःष्यन्दपूरं
वितरति रसनीयं देवि ! ते कालिदासः ।। १ ।।

ललितपदकदम्बै - र्भावसम्भारभव्यै-
रुचितरुचिर - कल्पैश्चित्तनिर्यासंसारैः ।
विलसित-कविताया वस्तुविन्यासलक्ष्मीं
जनयति रसिकानां प्रीयते कस्त्वदन्यः ।। २ ।।

मातर्वाणि ! तव प्रसादमहिमोत्कर्षच्छटामुद्गता-
मालोक्य प्रियकालिदाससुकवौ मुग्धा विदग्धा यतः ।
दासान्तः कविपुंगवः प्रभवतीत्यालोच्य कश्चित्कृती
विख्यातोऽत्र कुमारदास-तुलसीदासादिनाम्ना ततः ।। ३ ।।

सौन्दर्यं सुकृतान्वितं मुखरिता शास्त्रीयतत्त्वप्रथा
कल्याणी-मतिरुद्गता समुदिता चारित्र्यशिक्षोत्तमा ।
अन्योऽन्यप्रणयः स्फुटं परिणतः सञ्चारिणी चारुता
सर्वं त्वत्कविताप्रशस्तमुकुरे सुस्पष्टमालोक्यते ।। ४ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कीर्त्तिश्रियः प्रियतमो नयनामृताख्यो
मन्दस्मितं सुकविवन्द्यवचोऽधिदेव्याः ।
काव्यानुशीलन - परिष्कृतचित्तभूमेः
सौभाग्यलाभ इव दीव्यति कालिदासः ।। ५ ।।

औचित्यधाम्नि सुषमाञ्चितमन्दिराणि
निर्माय नूतन - मनोरमशिल्पकल्पैः ।
उत्कण्ठितां प्रणयिनीमिव सूक्तिदेवी-
मुल्लासयन् जयति केलिषु कालिदासः ।। ६ ।।

सत्प्रेमहेम - तपसि ज्वलने प्रताप्य
स्फूर्जत्प्रभं विगतकल्मषमाशु कृत्वा ।
सम्यङ्निधाय हृदये रमणीयभूषां
श्रीकालिदासकविता ललिता विभाति ।। ७ ।।

स्थाणुं श्रितापि सुमनोभिरुपासनीया
रूपातिगाप्यनुरता सतताभिरूपैः ।
वन्यापि रञ्जयति नागरिकीमवन्या
रीतिं कवीन्द्रकविता ललितातिधन्या ।। ८ ।।

वन्दे कवीन्द्रहृदये सरसि प्रजाता-
मम्भोजिनीं सुकवितां मकरन्दपूर्णाम् ।
अद्यापि यां मधुमतीं मधुपावलीनां
वृन्दं परिभ्रमति चुम्बितुमीहमानम् ।। ९ ।।

आयाति याति च चिरेण दिवा च रात्रि-
र्ग्लानिं तथापि न मनागपि यान्युपैति ।
सा कालिदास - कवितानलिनी - मरन्द-
सौरभ्यशेवधिरुपास्यतमा बुधालेः ।।१०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काव्यानि सन्ति कति भव्यतमानि नेह–
स्निह्यन्ति किन्तु रसिकाः क्वचिदेव कामम् ।
फुल्लेष्वनेककुसुमेष्वपि चञ्चरीको
विन्दत्यमन्दमुदितामरविन्द एव ॥११॥

—रतिनाथ झा

सरस्वत्यादेव्या वरदसुतवर्यैर्विलसिता
ह्यनौपम्या हृद्या सहृदयसुबन्धा प्रतिपदम् ।
कवीनां गोष्ठीयं सततमभितो कर्शयति नः
शिवं सत्यं मार्गं प्रकृतिरमणीयं सुमनसाम् ॥ १ ॥
परानन्दं नूनं जनयति कवीनां सुरगवी
न लोके तत्तुल्यं क्रिमपि हृदि संतोषजनकम् ।
अये ! संस्मर्येयं निखिलसुखभोग्येयमधुना
सदाशान्ते क्लान्ते जगति निजचित्ते बुधजनैः ॥ २ ॥
कविताकामिनीवास्ति सरसा सुमनोहरा
कालिदासस्य सुकवेर्भाति भारतमस्तके ॥ ३ ॥

—कृष्णमोहन ठक्कुरः

कालिदासः कालिदासः कालिदास : कालिदासः
कोहि नाम सुरम्य कविता-कानने विभ्राजमानः
स्थास्यतीह चिरन्तने सहृदय - समाजे राजमानः
कालिदासः कालिदासः कालिदासः कालिदासः ॥ १ ॥
नाम किं जगतीतले देदीप्यते तद् भारतीयम्
येन जगतीयं कृतार्था मोदते वा भारतीयम्
कालिदासः कालिदासः कालिदास कालिदासः ॥ २ ॥
काव्य-कामिन्या विकस्वरशुभ्र एष मनोऽभिलाषः
को ह्यसौ निरुपम-चमत्कृति-सिद्धभावानां विकासः
कालिदासः कालिदासः कालिदासः कालिदासः ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेदिनीयं वसुमती जाता यदीयैर्वाग्विलासैः
कामकाव्यपरिग्रहः कोऽसौ भ्रमति मधुमन्दहासः
कालिदासः कालिदासः कालिदासः कालिदासः ॥ ४ ॥

—शिवदत्त चतुर्वेदः

श्रीकालिदासं सुधियः स्तुवन्ति
कृतिं न तस्यानुकरोति कोऽपि ।
विहाय गीतं प्रकरोतु सर्वो
जनः कृतिं तां जनमङ्गलाय ॥ १ ॥

रसगुणपरिपुष्टालङ्कृताशब्दसारैः
सुललितललनावल्लोललोकोल्लसन्ती ।
शरदि शशिकलावच्छोभनाल्हादकर्त्री
जयति जगति शश्वत् कालिदासस्य वाणी ॥ २ ॥

यो नूनं वचनामृतेन नितरामस्माकमन्तस्ततो
संमोहं परिधूय तत्र सुदृढं ज्ञानं समारोपयत् ।
यत्काव्येन कुमेधसामपि मनोमालिन्यमुत्सार्यते
तं वन्दे बुधवृन्दवन्दितपदं श्रीकालिदासं कविम् ॥ ३ ॥

—गजाननशास्त्री मुसलगांवकरः

कीर्तिर्यस्य कवीन्द्रवन्दितपदा विद्योत्तमेवाऽथवा
सत्सेव्योज्जयिनीव भूरिविभवस्फोताऽनिशं राजते ।
मन्दाक्रान्तपदानि भान्ति न वचांस्यन्यस्य यस्याग्रतो
जीयादेष रसामृताब्धिरतुलः श्रीकालिदासः कविः ॥ १ ॥

श्रीरामान्वयकीर्तिकीर्तनपटुर्वाल्मीकिरेषोऽस्ति किं
क्रान्तांदृष्टिमलौकिकीं श्रयति किं सिद्धो नु वैज्ञानिकः ।
मन्त्रज्ञः किमयं भिषक्कुलोगुरुः किं ज्यौतिषज्ञो महान्
नायं दीपशिखाभिरर्चितपदः श्रीकालिदासः कविः ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अस्तिप्रेयो विवुधमहितः श्रव्यदृश्यानुरागो
कश्चित्पन्था न स विरहितो यः कवीन्द्रादमुष्मात् ।
वाग्वश्यत्वं भजति सुतरां यस्य वक्त्रारविन्दे
वैशिष्ट्यं नो कथमनुभवेत् कालिदासः स विद्वान् ॥ ४ ॥

हासः सतां, मतिमतां मनसां विकासः
त्रासः किमेष कुधियां प्रकृतेर्विलासः ।
वासः स किं सुरगिरा - मुपमानिवासः
प्रासः सपत्न - दलने कविकालिदासः ॥ ५ ॥

कमलैः परागरम्यैश्चिरं यथा भाति मानसं सरसाम् ।
तद्वत् काव्यकलापः सुभाषितैः कालिदासस्य ॥ ६ ॥

ब्रह्मानन्दत्रिपाठी

क्वाऽसौ राजा भुवनविदितो विक्रमादित्यनामा
क्वाऽसौ मान्या जगति जयिनी चोज्जयिन्यस्ति दृश्या ।
क्वाऽसौ संसन्नवमणिमयी वैबुधी राजमान्या
सर्वं लीनं सुकृतवपुषा राजते कालिदासः ॥ १ ॥

—रवीन्द्र चौधुरी

कालिदासं कविश्रेष्ठं मन्येहं देवताधिकम् ।
देवतात्मा नगेशोपि वचनैर्यस्य बद्धयते ॥ १ ॥
सुकवेः कालिदासस्य श्रृङ्गाररस-सूक्तिषु ।
फुल्लारुणाभपद्मे च मन्मनो मधुपायते ॥ २ ॥
कालिदासो विजयते मधुरस्वन-भूषितः ।
दिव्यचूतरसास्वादासक्त—मत्तपिकोपमः ॥ ३ ॥
जयति कवि कालिदासो वैदर्भी रीतिमवलम्ब्य ।
मितशब्दैरमितार्थं निरूपयन् कविकुल श्रेष्ठः ॥ ४ ॥

—श्रीपतिशर्मा भट्टः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैश्वानरः शीतति

हेमन्तीषु निशासु शीतशिखरिप्रालेयजालावली—
लोलावाहिनि वाति निर्धनकुटोकोणान्तिके मारुते ।
गेहिन्या परिदीपितोऽप्यविरतं व्याकीर्णपर्णोच्चयैः
फूत्कारैरुपवृंहितोऽपि शतधा वैश्वानरः शीतति ॥ १ ॥

साहित्याध्वविहारिणो सूक्तिना वाणी मनोहारिणी
प्राक्पुण्यैः प्रगुणीकृता यदि मुखे खेलाविलासोद्यता ।
सद्यस्तद्वचसा शशाङ्कतिमुखं वाणन्ति पुष्पाण्यपि
क्रीडापल्वलति क्षणाज्जलनिधिर्वैश्वानरः शीतति ॥ २ ॥

कालेऽस्मिन् कलिकेलिकल्मषमषीलिप्तेऽपि यः सद्गुरौ
श्रद्धामिद्धगुणां विधाय भजते सर्वात्मना शाङ्करीम् ।
गेहं स्वर्गति दासति क्षितिपतिस्तस्याशु संकल्पतो
वातः खञ्जति चूर्णति क्षितिधरो वैश्वानरःशीतति ॥ ३ ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

औचित्याद् विमुखस्य केवलमहाहङ्कारवश्यात्मनः
क्रोधावेशवशाद् हिरण्यकशिपोर्दत्ताज्ञयाग्निस्पृशः ।
रामे रक्तहृदः सदा व्यपगतत्रासस्य भक्तेशितुः
प्रह्लादस्य कृते नितान्तजटिलो वैश्वानरः शीतति ॥ १ ॥

पत्युर्जीवितमेव जीवितमिति स्वान्ते निवेश्यादराद्
या जीवन्ति तथा मुदानु मरणात्तस्य म्रियन्तेऽङ्गनाः ।
तासां वीरमहाव्रतादपि महत् तीव्रं तपो दुश्चरं
कृत्वा प्राणविसर्जनप्रणयतो वैश्वानरः शीतति ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृप्यद्वैरिभटोत्कटामपि घटां संवट्टयन् पाटवात्
प्रालेयाचलतुङ्गशृङ्गसविधे नेफादिके दुर्गमे ।
अस्मद्भारतदेशसैनिकगणोऽजैपीत् पराँस्ताँस्तदा
शैत्याधिक्यवशाद् यदातिजटिलो वैश्वानरः शीतति ॥ ३ ॥

अत्यन्तं द्रुतमम्वु संविदधती प्रायः शिलासन्तति
हेमन्तान्तदिनेषु शीतलहरी सञ्चारिणी सन्ततम् ।
अल्पप्राणवती निहन्ति विफलो यत्नस्तदा जायते
तूलस्यांस्ति कथैव का यदि दहन् वैश्वानरः शीतति ॥ ४ ॥

लङ्कायामपराङ्गनापहरणप्रीतस्य रक्षः पते
रुद्याने वसतिं विधाय समनुप्राप्ता चिरान्मैथिली ।
न ग्राह्येति विनिश्चये प्रकटिते रामेण पुण्यात्मना
वैदेह्या वपुषो हुतिप्रकरणे वैश्वानरः शीतति ॥ ५ ॥

—रतिनाथ झा

श्वश्रूस्तर्जति गर्जते गृहपति र्नेयं पटुः पाचने
इत्याक्रोशपरो न वादय हरे वेणुं निशाया मुखे ।
चुल्लीं ज्वालयते यदा व्रजवधूर्या कापि पाकार्थिनी
एधः शुष्कमपीह मुञ्चति रसं वैश्वानरः शीतति ॥ १ ॥

वंशीवादनकेलिकान्तवदनो विश्वम्भरः श्रीपतिः,
श्रीकृष्णः कुरुते कृपां यदि परां कारुण्यवारां निधिः ।
पीयूषत्वमुपैति घोरगरलं शत्रुः सुमित्रायते
वार्धिर्गोष्पदमेयतां व्रजति भो वैश्वानरः शीतति ॥ २ ॥

हेमन्तस्य हिमान्तरस्य महिमा केनाधुना वर्ण्यतां
यामिन्यो विलसन्ति यत्र विपुला ह्रासं गता वासराः ।
गेहे ग्लायति सा हिमेन नलिनी म्लायत्यहो मेदिनी
सोष्णत्वं समुपैति कूपसलिलं वैश्वानरः शीतति ॥ ३ ॥

—रामनारायणदत्त शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्दिष्टा निजशुद्धतां स्वपतिना सत्यापितुं जानकी
दीप्ताग्नौ च पतिव्रता विशति सा सत्त्वेन संरक्षिता ।
ज्वालाभिः परिवेष्टिता वहति सा भास्वत्सुवर्णद्युतिं
दीप्तिं प्रेक्ष्य पतिव्रतानयनयोर्वैश्वानरः शीतति ॥ १ ॥

माता गौतमपादयोः पतति सा विस्मृत्य मृत्योर्भयं
सङ्ग्रामः सुतमानसे प्रकटितः सद्वृत्तदुर्वृत्तयोः ।
संस्पृष्टश्च तथागतस्य करुणाभावेन दस्युर्यदा
वह्निः शीतति घातकस्य हृदि यः सन्दीपितो रक्तपः ॥ २ ॥

—कमला चुनेकरः

वश्योऽयं न ममात्मजोऽपि मम वा नाज्ञाकरो वर्तते
क्रुद्धः प्रज्वलिते हिरण्यकशिपुर्वह्नौ च तं प्रास्यति ।
प्रह्लादस्त्वपरिक्षतो हुतवहात् सद्यो विनिष्क्रान्तवान्
संस्पृश्यैव निरागसं शुचितनुं वैश्वानरः शीतति ॥

—विमला देवधरः

यो ह्यात्मानमथाद्भुतैर्गुणगणैः शीलादिभिः प्रोन्नतै-
रेकीभूतमिहाबिभर्ति तमहो वन्द्यं जनं संस्तुमः ।
पाथोधिर्विपिनायते मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते
तस्यैतस्य महात्मनोऽनुदिवसं वैश्वानरः शीतति ॥

—शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

हेमन्ते परितो हिमेन पिहिता शैलावली श्वेतति
प्रातः साप्यरुणोदयस्य निजया कान्त्याऽधुनारक्तति ।
वृद्धः खिद्यति शारदेन्दुवदना रात्रिन्दिवं ह्युष्णति
क्षीणार्को दिवसे यथा निशि तथा वैश्वानरः शीतति ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहाय्येन ददाह यः पशुपतेः कामं प्रकामं पुरा
यः पुंसामुदरस्थितं समशितं दग्धुं गृहीतव्रतः।
यः सिन्धुं परिसीमितं विदधति प्रौढप्रतापैर्निजैः
सोऽयं सम्प्रति हीनपुण्यनिचयो वैश्वानरः शीतति ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

लोकेऽस्मिन् विपरीतभाग्यमहिमो नैकोजनो वीक्षते
तत्रैवं परिदृश्यतां गृहपशुर्लक्ष्मीवतां वेश्मनि।
नित्यं कारविहारभोजनयुतश्शेते सदा श्रीमता-
मङ्के तत्र शिरो निधाय ससुखं वै, श्वा, नरः शीतति ॥

—जनार्दनस्वरूप शास्त्री

पञ्चाननास्यं कमनीयगात्रं
पूर्णेन्दुकोटिद्युतिशोभिवक्त्रम्।
प्रह्लादरक्षापरमप्यवेक्ष्य
वैश्वानरः शीतति नष्टतेजाः ॥ १ ॥

पुत्रे पतत्यप्यनले पतिव्रता
शुश्रूषमाणा पतिमेव निश्चला।
नैवोत्थिता नापि पतिः प्रबोधितो
वैश्वानरः शीतति लक्षितस्तदा ॥ २ ॥

—श्रीपति शर्मा भट्टः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताम्बूलम् : १२ :

नतजनतिमिरविरामं, विधातुकामं जगन्मातुः ।
नूतनरविकररुचिरं, चिरं शिवायाऽस्तु ताम्बूलम् ॥ १ ॥

परवशतया कथञ्चिचन् मनसि निगूढोऽपि पङ्कजेक्षणया ।
रागोयदुदयमाप्तस्तदेव वदने विभाति ताम्बूलम् ॥ २ ॥

कोकनदे कमनीये बालातपसङ्गसौभाग्यम् ।
अनुहरति कामिनीनामधरदलासङ्गि ताम्बूलम् ॥ ३ ॥

सौहार्दसंविधानं श्रियां निधानं रुजां समाधानम् ।
आधानं प्रतिभायाः प्रियं कवीनां सदैव ताम्बूलम् ॥ ४ ॥

—वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

यदि वाञ्च्छसि विशदयितुं बुद्धिं
भोजनमनु कर्तुं मुखशुद्धिम् ।
काममपि चेत् प्रमदाननलोभा-
मभिकाङ्क्षसि सुखदां मुखशोभाम् ।
पूगीफलविलसितमनुकूलं
तर्हि सखे शीलय ताम्बूलम् ॥ १ ॥

प्राक् प्रविधाय सुधा संयोगं
निक्षिप तत्र खदिररसभोगम् ।
एलां मेलय सौरभशीलां
कुरु च क्रमुकविमिश्रणलीलाम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वीटीं तदनुविधाय मनोज्ञां
मिलिततमालदलामुपभोग्याम् ।
दशनदृषदि पेषय सुमूलं
रसय रसेन सखे ताम्बूलम् ॥ २ ॥

इच्छसि गुणिगोष्ठीष्वनुगुणतां
विविधविलासकलासु निपुणताम् ।
विदधन्मधुरसुधारसवर्षं
चुम्बितुकामः सपदि सहर्षम् ।
दयिताधरबिम्बं मधुमूलं
तर्हि सदा शीलय ताम्बूलम् ॥ ३ ॥

विधुवलये वसुधासुतयोगं
कनकचषकनिहितं मधुभोगम् ।
घनगतलोहितविद्युल्लेखां
प्राच्यां दिश्यरुणोदयरेखाम् ।
चेदिच्छसि मुखकमलं फुल्लं
तर्हि समास्वादय ताम्बूलम् ॥ ४ ॥

—रामनारायणदत्त शास्त्री

गङ्गागाहनपूर्वकं सविनयं यात्येष देवालयं
कण्ठे वा सुरभिं बिभर्ति रुचिरां पुष्पस्रजं हिण्डति ।
धत्ते मार्जनवस्त्रमेव च कदा वासांसि रम्याणि वा
ताम्बूलं रसयत्यलं प्रतिपलं वाराणसेयः सदा ॥ १ ॥

—विमला देवधरः

गोष्ठीप्रियाश्चारुविचारदक्षाः सम्माननीया जनतासु नित्यम् ।
ताम्बूलपूर्णं मुखमुद्वहन्तो वाराणसेयाः कवयो जयन्ति ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाराणस्यां निवासेन गङ्गास्नानेन भूरिशः ।
समुपार्जितपुण्यस्य फलं ताम्बूलसेवनम् ॥ २ ॥

—शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

विदलतिकदलीपत्रं स्तब्धीभवति प्रसह्यकमलदलम् ।
आकर्ण्य तव महत्त्वं महीयसे त्वं चिराय ताम्बूल ॥ १ ॥

वश्यं वक्त्रविशोधनं रुचिकरं सौभाग्यकान्तिप्रदं
देवैरप्यभिनन्दितं श्रमहरं वाराणसेयं सदा ।
पूगक्षोदसुधालवङ्गकुसुमैः कस्तूरिकाखादिरैः
कर्पूरैश्च सुवासितं प्रियसखे ताम्बूलमासेव्यताम् ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

नगरे पञ्चबाणारे रतिनाथः कथं वसेत् ।
सहायभूतं ताम्बूलं तत्र नाधिष्ठितं यदि ॥ १ ॥

—जनार्दनस्वरूपशास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दतामुपगतेन भानुना दक्षिणा हरिदुपाश्रिताचिरम् ।
सम्भृताधिकबलेन साम्प्रतं कल्पते नियतमुत्तरायणम् ॥ १ ॥
शीत ! भीषयसि किं मुहुर्मुहुः क्षीणमेव तव विद्धि पौरुषम् ।
सत्वरं नवतुरङ्गक्रमैरेष याति रविरुत्तरायणम् ॥ २ ॥
भारतीयभटरक्षणव्रती चण्डभानुरनुधावति ध्रुवम् ।
पीनचीनपरिमर्दवाञ्छया दीर्घदूरपथमुत्तरायणम् ॥ ३ ॥
मन्दमन्दमुदयन्ति काननाभ्यन्तरेषु कलविङ्ककेलयः ।
मारुतो दिनमनोरमस्तनौ भाति नूनमिदमुत्तरायणम् ॥ ४ ॥
भारतीयनयवर्त्मवेदिनामग्रणीरिव विभाति भास्करः ।
वामपक्ष विजयाऽऽशया रयादभ्युपैति सहसोत्तरायणम् ॥ ५ ॥
यौवने कृतपदः परिस्फुरन्निर्मलाम्बरधरः प्रभाकरः ।
पद्मिनीप्रणयितामुपाययौ संश्रयन् गमनमुत्तरायणम् ॥ ६ ॥

वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

तुषारविन्दुप्रकरास्रवर्षणाद्
वनश्रियो दुःखनिदानमीक्षितुम् ।
समेत्य धामोन्नतमित्रमण्डलं
समासदत् साधुभृदुत्तरायणम् ॥ १ ॥

चिरेण वन्दीकृतमुज्झितश्रियं
प्रियं स्वमित्रं समुदीक्ष्य दक्षिणे ।
विमुक्तये तस्य लसत्त्विषोर्जितं
व्यनक्ति स्वं विश्वममुत्तरायणम् ॥ २ ॥

सहस्यमासस्य विवृद्धवैभवे
नितान्तजाड्यप्रसरोन्मुखे दिने ।
अतीव भीतानिव दीनकोकान्
अतीतशोकानकृतोत्तरायणम् ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनल्पकालेन नितान्तकीलितं
क्रियाकलापं किल मङ्गलालयम् ।
महोत्सवं वैदिकधर्मनन्दितं
विधातुमभ्यागमदुत्तरायणम् ॥ ४ ॥

निजेच्छया मृत्युवरं प्रपन्नो-
ऽप्यपेतभी र्भीष्मपितामहोऽपि ।
शरेषु सुप्तः समराङ्गणे श्वसन्
प्रतीक्षमाणोऽभवदुत्तरायणम् ॥ ६ ॥

धनुष्युपागते रवौ निवृत्तमङ्गलोत्सवा-
मिलामतीव शीतभीतसङ्कुचत्तनुद्युतिम् ।
रसालकुन्द – पाटलप्रसूनसौरभोत्करैः
करोति गौरवान्वितां नितान्तमुत्तरायणम् ॥ ६ ॥

कलिन्दनन्दिनीनिलिम्पसिन्धु सङ्गमस्थले
सनातनार्यधर्मकर्ममेदुरोत्सव.ञ्चिते ।
मिलन्ननल्पकल्पनालसत्सतां समागमं
तनोति मङ्गलालयं पवित्रमुत्तरायणम् ॥ ७ ॥

— रतिनाथ झा

कामिनां यमिनां सूर्यसेविनां कामदं क्रमात् ।
ऋतुक्रमं समाश्रित्य सर्वदैवोत्तरायणम् ॥ १ ॥

हता हिमानी विदला महीरुहाः
पुनः सपत्राभरणाः सुपुष्पिताः ।
ततः समुज्जृम्भति चण्डभानुमान्
विभिन्नरूपोदयमुत्तरायणम् ॥ २ ॥

—ताराशंकर वैद्यः

अभिमन्युकृते किंवा परीक्षायां तदर्थिनाम् ।
शीतभीतिप्रपन्नानां प्रमोदायोत्तरायणम् ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुहिनागमः

: १४ :

वदनविवरोद्भूतैर्बाष्पैर्मुहुर्जठरान्तरे
नियतवसतिं वह्निं बाला वदन्ति परस्परम् ।
स्थविरगदितै रात्रिं दीर्घां नयन्ति कथाद्भुतैः
सुखयति मिलन्नानाभोज्यः शिशूंस्तुहिनागमः ॥ १ ॥
हृदयदयितं मन्दच्छायं विलोक्य विभाकरं
वदनशशिनं म्लानं धत्ते चिरं गगनस्थली ।
क्वचिदपि गता मुक्ताकाराः स्फुरन्ति न तारकाः
कुकविरचनाकारः सारोज्झितस्तुहिनागमः ॥ २ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

मधुसमृद्धिपुषः सरसीरुहो
दुखलेपमलोपयदुन्नतम् ।
मधुकरानकरोच्च मुनिव्रतान्
समुदितो मुदितस्तुहिनागमः ॥ १ ॥
वसुमतीं सुमनोभिरलङ्करो-
त्यभिनवैः कनकद्युतिसार्षपैः ।
नवयवाङ्कुरकल्पितशाटिका-
परिवृतां तनुते तुहिनागमः ॥ २ ॥
ललितशालिविलासिकृषीवलां
रतिविलोकमराललसज्जलाम् ।
विविधधान्यविवर्धितधन्यतां
भुवमलङ्कुरुते तुहिनागमः ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुरतां परिरम्भरसेऽमितां-
मनलतूलसुखे स्पृहयालुताम् ।
सपदि सञ्जनयन्नथ रञ्जयन्
युवजनं भजते तुहिनागमः ॥ ४ ॥

चहितुवादि निरर्थक शब्दकैः
कुकवयः कवयन्ति महोद्धताः ।
सरससूक्तिषु किन्तु महाकवे-
र्मिलति किं विफलस्तुहिनागमः ॥ ५ ॥

—रतिनाथ झा

रसायनानि सिद्धानि स्वास्थ्यसम्पत्समृद्धये ।
सेवस्व सततं मित्र त्वां वक्ति तुहिनागमः ॥

—ताराशङ्कर वैद्यः

जनतनुः प्रथमस्त्वपरो मनः
सपदि खेदयतीह विचार्यताम् ।
ऋतुषु मित्र यथा तुहिनागमः
कविषु चापि तथा तुहिनागमः ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विशालकाषायपटाजटानां
घटाभिराच्छादितवक्त्रविम्बा।
ब्रह्माऽद्वयध्यानपरा यतीन्द्रा
लोके विडालव्रतमाचरन्ति ॥ १ ॥

अलक्षिताः सूक्ष्मगतिप्रभावा
रन्ध्रेषु-सञ्चार-कला-प्रगल्भाः।
सारापहाराय धृतावतारा:
पिपीलिकानां व्रतमाचरन्ति ॥ २ ॥

परस्परस्पर्धिगिरो निशायां
दूरध्वनिव्याहृतिदीर्घकर्णाः।
निर्वाचनोन्मादवशादिदानीं
नराः शृगालव्रतमाचरन्ति ॥ ३ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

गर्भाष्टमे वा जननाष्टमे वा
तृतीयवर्षे कृतचूडकस्य।
शास्त्रानुसारं तनयस्य विप्राः
यज्ञोपवीतव्रतमाचरन्ति ॥ १ ॥

तपस्यमासेऽसितपक्षभूते
ब्रह्मादिदेवैः परिपूजितस्य।
शिवस्य तृप्त्यै पुरुषार्थसिद्धिम्
उद्दिष्य सन्तो व्रतमाचरन्ति ॥ २ ॥

—श्रीपतिशर्मा भट्टः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्यास्त एव मनुजाः सुतवित्तयोषित्–
सौख्याभिभूतहृदयं बलवन्निगृह्य ।
वाचामगोचरमनेकगुणालयस्य–
श्रद्धान्विताः पशुपतेर्व्रतमाचरन्ति ॥ १ ॥

हृद्यैर्नवीननवतीननिभैर्वचोभिः
सम्बोध्य यं कमपि मित्रवदालपन्तः ।
एते स्वपक्षमतयाचनदत्तचित्ताः
सभ्याः क्षणाय बकवद् व्रतमाचरन्ति ॥ २ ॥

मोक्षाय केचन परे सुतवित्तसौख्य–
प्राप्तिप्रयत्ननिरता - व्रतमाचरन्ति ।
एके स्वजातिदलदेशकथासहायाः
सम्भूय नेतृचयन - व्रतमाचरन्ति ॥ ३ ॥

दक्षास्त एव सचिवैः क्षणभङ्गुरैर्ये
मैत्रीं विधाय सुचिरं सुखतः स्वपन्ति ।
अन्ये पुनः शिरसि हस्तयुगं निधाय
क्षुत्क्षामकण्ठविकला व्रतमाचरन्ति ॥ ४ ॥

ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलिकलुषमलानां क्षालिनी भक्तिभाजा-
मपरिमितविभूतेः पालिनी याऽनुभूता ।
तुहिनकिरणखण्डाऽलङ्क्रिया शालिनी सा
शिवतनुखतान्मां मालिनी भोगिलोकैः ॥ १ ॥

सरसिजनिभवक्त्रा पुष्पिताग्राङ्गणश्री-
र्गजगतिरनुकूला स्वागतोदारभावा ।
भ्रमरविलसितोद्यल्लोचना यूथिकाऽऽढ्या
भवति भुवि निषेव्या मालिनी भोगिलोकैः ॥ २ ॥

—वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

अभिनवगुणरूपौदार्यलावण्ययुक्ता
सुमहितकुलजाता पद्मिनीवातिरम्या ।
नियतिनियमितेयं हन्त वैधव्यविद्धा
कलयति सह सख्यं मालिनी भोगिलोकैः ॥ १ ॥

परिमलपरिपूर्णैः सत्प्रसूनैः समृद्धा
द्रुतगतिलयतालाऽऽलापसंलापशीला ।
भवति कविसमाजे खण्डिता नायिकैषा
कथयति भुजगेशो मालिनी भोगिलोकैः ॥ २ ॥

भुजगशिशुभृताऽऽर्या यूथिकापुष्पिताग्रा
प्रवरललितभाभिः शालिनी वैश्वदेवी ।
भ्रमरविलसितेव स्वागता सानुकूला
निवसति सह मत्ता मालिनी भोगिलोकैः ॥ ३ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वन्दे राममुदारम्
शरदरविन्द दल स्फुट सुषमा लोपक नयन विहारम् ।
द्रुततर विहसित हसन वशीकृत परिजन कुल परिवारम् ॥
वन्दे राममुदारम्
दर्पणगोल - कपोल - तरङ्गितकुण्डल - रुचि - संचारम् ।
किञ्चित्कुञ्चित - चञ्चलकेशं वयसि परम-सुकुमारम् ॥
वन्दे राममुदारम्
नासापुटगत - चञ्चल - मौक्तिक शोभितमोहितदारम् ।
केसर - सुतिलक - ललित - ललाटं निरुपम - लीलाधारम् ॥
वन्दे राममुदारम्
आजङ्घान्तं वसनं यस्य च दिनकर-किरण-कडारम् ।
कोमल - चरणकमल - संचालन - कृतनूपुर - झंकारम् ॥
वन्दे राम मुदारम्
सुरमुनिकण्टक - रावण - मनुजाकृत्यवतारम् ।
वृन्दारक - जन-वन्दित - चरणम् भक्तमनोमन्दारम् ॥

—शिवदत्त चतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-पदाधिकारिणः

[१९७०-७१ ईशवीयवत्सरस्य]

१. अध्यक्षः—पं० पट्टाभिराम शास्त्री
२. उपाध्यक्षः—पं० रामचन्द्र मालवीयः
३. उपाध्यक्षा—डॉ० मुक्तिसुधा मुखोपाध्याया
४. मन्त्री - डॉ० ज्योतिर्मित्र आचार्यः
५. उपमन्त्री—पं० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
६. कोषाध्यक्षः—पं० कृष्णमोहन ठक्कुरः

कार्यकारिणी-सदस्याः

१. पं० रामनारायणदत्त पाण्डेयः
२. बटुकनाथशास्त्री खिस्ते
३. सुरेन्द्रनाथ द्विवेदः
४. डॉ० कमलेशदत्त त्रिपाठी
५. डॉ० प्रियव्रत शर्मा
६. पं० शिवदत्त चतुर्वेदः
७. पं० रतिनाथ झा
८. श्रीमती कमला चुनेकरः
९. पं० वासुदेवः द्विवेदः
१०. डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

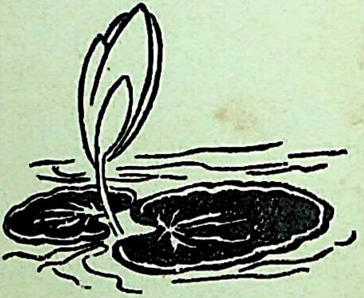

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

पञ्चमो भागः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-संस्थायाः निबन्धनविषयिण्या-

राजाज्ञायाः प्रमाणिता प्रतिलिपिः

सं० ४४३९ लखनऊ, दि० १४–२–६८

सील

समितियों के निबन्धन का प्रमाण पत्र

ऐक्ट सं० २१ सन् १८६० ई०

संख्या १०९३ १९६७-६८

मैं एतद्द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि कविभारती, वाराणसी नामक समितिका निबन्धन (Registration) सोसाइटीज, रजिस्ट्रेशन ऐक्ट सं० २१, १८६० के अधीन आज के दिन सम्पन्न हुआ।

आज दिनांक ६-२-६८ को लखनऊ में मेरे हस्ताक्षर से दिया गया।

निबन्धन शुल्क केवल ५० रुपये।

ह० अस्पष्ट
समितियों के निबन्धक
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

पञ्चमो भागः

कविभारती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

वाराणसी

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशिका
कविभारती
सी. २७/२१२-९ आनन्दकुटीर
जगतगंज, वाराणसी

प्रथमसंस्करणम्
विक्रमाब्द : २०२९
खीष्टाब्द : १९७२

मूल्यम्—रूप्यकत्रयम्

मुद्रक :
आनन्दकानन प्रेस
सीके० ६३/२० ढुण्ढिराज गली
वाराणसी-१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहृदयेषु विज्ञापना

इयं तत्रभवतां भवतां सुपरिचिता कविकुललालिता वाराणसेया 'कविभारती' सुधाकरशेखरस्य कविकुलगुरुसमाराधनीयस्य भगवतः करुणाकटाक्षकलया पञ्चमहायनमारुरुक्षति।

सकलविद्याविलसितवलभी वाराणसी साहिती सुरभिताऽपि राराजते, तत्प्रमाणयितुं सहृदयहृदयोल्लासमाधातुञ्च यथाबलं प्रवर्तमाना विद्वत्कुललब्धमाना कविभारतीयं पुनरपि गीर्वाणवाणीसौभाग्यसन्दोहमनुभावयितुं समीहते।

यथापूर्वमस्यां विदुषां सौजन्यपुषां स्निग्धदृशामुत्तरोत्तरं वात्सल्यमभिवर्धतां, दिने दिने च सेयं लावण्यविशेषानादधाना नन्दयतु जगदशेषमिति वीणावती भगवती सनति समाराध्यते।

—कविभारती सदस्यमण्डलम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धर्म-नय-विनय-मनस्वितादि गुणगणोल्लसितानां विविधानवद्य-
विद्याविद्योतितान्तः करणानां-ज्योतिषरत्न, ज्योतिषाचार्य,
ज्योतिषपञ्चानन-दैवज्ञशिरोमणि सहित्यालङ्कार,
'पद्मश्री विद्यावाचस्पति' प्रभृत्युपाधिभिः
समलङ्कृतानां कविपुङ्गवानां पूर्व कवि-
भारत्या वार्षिकविशेषाधिवे-
शनावसरे

भाषणम्

अये सुरभारतीप्रणयिनः कविपुंगवाः,

आरण्यक-सभ्यतावास्तानि दिनानि नहि विस्मरणीयानि यत्र मुनिजनाःस्वयोनिरताः सन्तः लोककल्याणाय सततं चिन्तयन्ति स्म। विकासवाद-सिद्धान्तं मन्यमानाः केचन अद्यतनाः पण्डितम्मन्यास्तत्र काले मानवजीवनं-हीनं कल्पयन्ति, किन्तु आधुनिकसभ्यतायाः परस्परविनाश-शीलाप्रवृत्तिः संसारं कथमिवोन्नमयितुं प्रयतते इति न तिरोहितं सुधीभिः। विकासस्य परिणतिः यदि एवमेव तर्हि दूरादेव नमस्कार्या एषा। वचने लोककल्याणडिण्डिमं घोषयन्ती साम्प्रतिकी सभ्यता व्यवहारे किंचिदन्यदेव कर्त्तुं प्रवृत्ता दरीदृश्यते।

वर्तमानकाले मानव जीवनस्य सुविधायै विज्ञानेन बहुविधं वस्तुजातं समुपलब्धीकृतमास्ते, अत्र न कश्चित् सन्देहलेशः। किन्तु ज्ञानस्य तिरस्कारेण काल एष एकमागतः खंज इव वैकल्यं कलयति, इत्यपि कदापि न विस्मर्तव्यम्। विज्ञानं हि ज्ञानसहकृतं यावन्न भवेद्, नहि तावल्लोककल्याणं साधयितुं कदापि शक्ष्यति। जीवनमार्गे विधिनिषेधौ शास्त्रानुसारिणौ समाकलय्य एव परिपोषणं प्राप्नोति।

कमनीयस्य काव्यस्य च "कान्ता सम्मिततया उपदेशयुजे" इति सिद्धान्तानुसारं तत्र विशिष्टं महत्वमाश्रयति। "रामादिवद् वर्त्तितव्यं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

न तु रावणादिवत् "द्युतिनिष्कर्षद्योतकतया आदिकवेः श्रीवाल्मीकेः रामायणकाव्यं जनमनः प्रेरणायै साम्प्रतिकेऽपि समये सर्वथा समर्थं नित्यं नवीनं स्फूर्तिप्रसारं संजनयद् विजृम्भते ।

एतदपि सर्वथा तथ्यमेव यत् साहित्यं कस्यापि युगस्यैकस्य भूत्वाऽपि युग-युगान्तरस्थ भवति । एष दुर्लभः पदार्थः समग्रसंसारस्य । कालिदास-शेक्सपीयरप्रभृतयः देश-कालावतिलंघ्य सर्वत्र पूज्याः ।

काव्यस्य लक्षणं किमपि क्रियेत नाम, तद्गतं वस्तु प्रायः सर्वत्रानन्दप्राप्तिपुरस्सरं सत्पथप्रवर्तनमेव । यदि लक्ष्यमिदं केनाऽपि कविना अक्षिदूरीकृतं स्यात्, तर्हि दुर्भाग्यमेतत् सारस्वत-वैभवस्य । देवत्वं प्रति रुचिजागरणं यथा भवेत्तथाऽवश्यं कर्त्तव्यम् । दैत्यत्वं प्रति तु तमसः प्राबल्यात् सर्वे धावन्ति एव, तत्र निम्बे केरलीलतारोहणं नहि साधुः प्रयासः ।

सम्प्रति काव्यविषये यथार्थस्थितिचित्रणदुराग्रहोऽपि तथा कालुष्यं विशदयति यदा चरमप्रभाव-स्थापने सतो वस्तुनः शक्तिः प्रसुप्ता सन्तिष्ठेत । बहुजन-सम्वेद्यता वा सर्वजन संवेद्यताऽपि काव्यस्य स्पृहणीयतायै न हि भवेत् परमावश्यकम्, यतः सहृदय-संवेद्यतैव एतस्य कृते परमं तत्त्वम् ।

अहं कविभारती 'सदस्यानां भावुकानां संस्कृत सरसकाव्य प्रणयिनां वा कृते किमपि न हि नवं वस्तु समुद्घाटयितुं प्रभुः । राज्ञो जयन्तचन्द्रस्य भोग्या काचित्, 'सूहव 'देवी सगर्वा विदुषी' 'कला भारती' इति ख्याता । नैषधीय चरितस्य प्रणेता कविः श्रीहर्षोऽपि 'नर भारती' इति श्रुतः । यस्येयमुक्तिः बहु-प्रसिद्धा यत्.........

यथा यूनस्तद्वत् प्रकृतिरमणीयाऽपि रमणी ।
कुमाराणामन्तः करणहरणं नैव कुरुते ॥
मदुक्तिश्चेदन्तर्मदयति सुधीभूय सुधियः ।
किमस्या नाम स्यादरसपुरुषाराधनरसैः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि-भारती 'इति श्रीमतां संस्थाया नाम, तस्या महिमानं पुरः प्रतिष्ठापयन्ति भवन्तः। अतोऽहं स्वीयं यत् किंचित् कविकाव्यविषयं वस्तु श्रीमतां कविभारती-सभ्यानां पुरतः सन्निधाय सन्तुष्यामि, रसिकांश्च नमस्यामि।'

स्वर्गीयोत्तमसौख्यदे प्रमहिते काशीसुतीर्थे श्रुते
मान्या श्रीकविभारती सुरगवी विज्ञैः प्रतिष्ठापिता।
विद्या-गौरव वृद्धये विनिरता विद्योत्तमानां वरा
श्रीमत्पण्डितमण्डलीविलसिता संस्थेयमुद्भासते॥

अस्याः सभायाः सकलेभ्य एभ्यो
विदद्वरेभ्यः सुसदस्यकेभ्यः।
आयोजकेभ्योऽथ प्रबन्धकेभ्यः
सत्साधु - वादानहमर्पयेऽत्र॥

नमो नमस्ते भवमोक्षदाय,
सुपुण्यकाशीश्वर - शंकराय।
नमो नमोऽस्यै कविसाधु गोष्ठयै
नमो नमः श्री विबुधेभ्य एभ्यः॥

फोन नं० २४१०९
चौहट्टा, पटना—४

श्री विष्णुकान्त झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारत्याः सुप्रशंसा

दृष्टश्रुतेषु विषयेषु विदृष्टतत्त्वैः
सन्मार्गनोदितजगद्भिरुदारसत्वैः ।
विद्वद्भिरेभिरतुलप्रतिभाप्रभावैः
संशोभिता विजयते कविभारतीयम् ॥

—कृष्ण प्रसादशर्मा घिमिरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. कविभारती विजयताम्	१
२. मञ्जरी	४
३. तावदेव	७
४. भवलितम्	९
५. सम्भ्रमी यम्भ्रमीति	११
६. कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः	१५
७. मधु-बन्धुः	१९
८. मुक्तिवाहिनी	२१
९. महीयते	२४
१०. वाणीवन्दनम्	२५
११. खाँ-याह्या-स्तुति	२६
१२. सम्बोधनम्	२७
१३. तज्जीवनं जीवनम्	२९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुललितपदबन्धारम्भसंरम्भभव्ये
गुणवति रसभावालङ्क्रियाकान्तकाये।
सहृदयहृदयालिप्रोतिसन्धान काव्ये
कविकुलगुरुरेको भासते कालिदासः॥ १॥
श्री कालिदासकृतकाव्यसुधापगायां
स्नात्वा तदीयसुयशोंऽशुकमादधाना।
धन्या नगेन्द्रतनयापतिसन्निधानाद्
अद्यापि विश्वजयमुज्जयिनी करोति॥ २॥
यस्य प्रशस्यपदसञ्चरणेन सूक्ति
देवीव सूल्लसति मालवदेशलक्ष्मीः।
सा विक्रमार्कनृपतेरधिराज्यशोभा-
सौभाग्यभूमिरिह नन्दति वन्दितश्रीः॥ ३॥
एकोऽपि शून्यनिलयोऽपि कविश्चकास्ति
सन्ध्याङ्गनाश्रवणकुण्डललग्नहीरः।
गायान्न किं कविकुलस्य गुरुर्गरीयान्
भ्राजद्यशोंऽशुनिवहैरवतंसितो यः॥ ४॥
विद्योत्तमाकृतपराभव एव यस्य
विद्योत्तमाधिगमहेतुरभूदपूर्वः।
विद्यापतिप्रभृतिसत्कविवन्दनीयो
दासोऽप्यजायत यतो भुवि कालिकायाः॥ ५॥
रत्नाकरादमितभास्वररत्नजाते
जातेऽपि कौस्तुभमणिर्जगदर्चनीयः।
लक्ष्मीपतेरपि विशालमुरो मुरारे-
र्यं संबिभर्त्ति निजगौरववृद्धिहेतुम्॥ ६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्कण्ठयन् रसिकसंस्कृतचित्तवृत्तिं
यस्याः पदध्वनिरमन्दमुदध्वनीनः ।
भ्राम्यन् समस्तभुवि विभ्रममातनोति
सा राजतीह कविता कविदेशिकस्य ॥ ७ ॥

यः सङ्गरे शककुलं नितरामजेयं
जित्वाशु पुण्यधरणीं रमणीं बुभोज ।
तस्य प्रशस्तनृपतेरभिरूपसंसत्-
सभ्यानतोषयदनुत्तमरूपकेण ॥ ८ ॥

यः कोमलामपि विलासवतीमपि प्राग्,
वृत्तिं हृदोऽनलशिखामिव संस्करोति ।
रामानुरक्तमपि चित्तमतीव यूनां
शौर्ये शकारिमवलम्ब्य न दीपितं किम् ? ॥ ९ ॥

प्रेमानुबन्धनविधिं विधिवद्विधिज्ञान्
उद्बोधयन् ललितसत्कविताविलासैः ।
धन्यं द्वितीयममलाश्रममुन्निनीषुः
कस्त्वादृशो धुरि दृशो भुवनेऽभ्युपैति ? ॥ १० ॥

निर्दूषणं भुवनभूषणमुज्ज्वलाङ्गं
सामाजिकं परिसरं गृहिणां विधातुम् ।
काव्यानि कोमलतमानि मनोहराणि
नाट्यानि च व्यरचयन्मधुराणि कोऽन्यः ॥ ११ ॥

एकस्य चारुचरितस्य न पूर्णचित्रं
नेत्रामृतं कलयते कविचक्रवर्ती ।
लोकोत्तरस्य रघुवंशमणिव्रजस्य
किन्तु त्वयैव रचिता बहुमूल्यमाला ॥ १२ ॥

त्वं तारकादतितरां विगलत्प्रतापं
त्रासाकुलं सुरकुलं पुलकीकृताङ्गम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संरक्षितुं कृतशिवाशिवसन्निकर्षं
हर्षं कुमारवरसम्भवजं चकर्थ ॥ १३ ॥
अन्योऽन्यमानसविशोषणविप्रलम्भ-
वैश्वानरोज्ज्वलशिखाप्रशमाय शश्वत् ।
को मेघमेव परिकल्प्य मनोज्ञदूतं
पूतं करोति नितरां प्रणयस्य मार्गम् ? ॥ १४ ॥
लेखाङ्गनाविजयिनीमवनीन्दुलेखा-
मालिख्य शिल्पिवर मालविकामतुल्याम् ।
कुल्यामिवामृतमयीं रसिकान्तरङ्ग-
क्षेत्रोत्सवाय विदधे भृशमुत्तरङ्गाम् ॥ १५ ॥
जाग्रन्निलिम्पकुलबाहुबलेऽपि रक्षो-
राजेन शक्रदयितापहृतोर्वशी या ।
तां मोचयन् प्रबलविक्रमविभ्रमेण
श्रीविक्रमो दिवि धरामधरां न चक्रे ॥ १६ ॥
शाकुन्तलेयमतुलं सदपत्यमाप्तुं
श्रद्धां विधिं घटयितुं कृतसुप्रयत्नः ।
कस्त्वादृशो भुवनमञ्जुलमङ्गलाना-
मुन्मीलनाय ललितां कवितां ससर्ज ॥ १७ ॥
उन्मादिनीमृतुमतीं प्रकृतिं मनोज्ञा-
मालोक्य कः कुतुकवान् दयितासनाथः ।
धन्यं मनोनयनबन्धनकारि दृश्य-
मुद्यानवीथिषु चरन् भृशमाननन्द ॥ १८ ॥
प्रेमामृतस्नपननिर्मलजानरूप-
कान्तिच्छटाच्छुरितसत्कविताधिलक्ष्म्याः ।
सद्यः कृतोऽधिकृतभालतलाधिवासः
सौभाग्यबिन्दुरिव राजति कस्त्वदन्यः ॥ १९ ॥

रतिनाथ झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्याते जगताज्जयाय विलसत्कोदण्डकाण्डे चलद्-
वाचालद्विजराजिगीतचरिते देवे मनोजन्मनि ।
सोत्कण्ठं किमु दक्षिणेन मरुता स्पृष्टा रसालद्रुमे
मन्दान्दोलितमौलिमीलितमुखी दृष्टा मया मञ्जरी ॥ १ ॥
विद्याः सन्तु सहस्रशो बुधमुखप्रक्षालनैकक्षमा
दुष्पूरोदरगर्तपूरणकृते नाडिन्धमा धीमताम् ।
सौरभ्यस्पृहयालुविज्ञमधुपश्रेणीसमाराधिता
साऽन्या काऽपि कवीन्द्रकल्पकतरोर्वाङ्माधुरी मञ्जरी ॥ २ ॥
मोहध्वान्तमयी तमो नयनयोर्मार्गविरोधाय नः
प्रत्यासीदति चेतनाकुमुदिनी सङ्कोचमाचामति ।
मातः सर्वदिगङ्गनाननपरिष्वङ्गातुरा सत्वरं
वक्त्रेन्दोरुदिता तवास्तु पुरता हासप्रभामञ्जरी ॥ ३ ॥

—बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

आयाते मदने मधौ च विपिने सर्वं सुवर्णायते ।
शुष्कोऽप्येष वटस्य जीर्णविटपो धत्ते विटाकारिताम् ॥
शाखाग्रे कलिकाः, कलीसु हसनं, हासे मदावासनम् ।
वैकल्यं च मदे हृदो विकलने कामक्रिया मञ्जरी ॥ १ ॥
वाते वाति मनोभवोऽपि मलयस्याद्रेः समुज्जृम्भते,
चित्तेषु स्खलति स्वमित्रमधुना सार्धं मदोन्मादितः ।
संधत्ते च शरासने सुमनसः कामं निगूढाशयः,
देवानामपि या धुनाति हृदयं सा कार्मुकी मञ्जरी ॥ २ ॥

—प्रियव्रत शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलक्ष्यलक्ष्यमेदिनी सुगन्धशालिनी तथा,
मनुष्यमात्रचेतसो विहागराग-रागिणी ।
मनोजचाप कोटि षट्पदावलीमयी सदा
विराजते विलासतो रसालमञ्जु-मञ्जरी ॥ १ ॥
दिगन्तसंकुला मरंदपूतपत्रपूरिता
विलासलाससंवृता जगज्जनप्रमोदिनी ।
सदालिपुञ्जपूजिता समीरमन्दवेगत-
श्चलायमानविग्रहा रसालमञ्जुमञ्जरी ॥ २ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

मलयमारुतसङ्गमनन्दिता
नवरसालवनी जयति श्रिया ।
लसति यत्र मिलिन्दकुलाञ्चिता
पिकनुता मधुमन्दिरमञ्जरी ॥ १ ॥
मधुपमण्डलमुन्मदयन्त्यलं
मुखरयन्त्यतुलं कलकोकिलम् ।
सुरभयन्त्यनिलं विपिनस्थले
लसति काचन मञ्जुलमञ्जरी ॥ २ ॥
नहि परागमरन्दकरम्बिता
न मधुपेन विलासकलाञ्चिता ।
लसति किन्तु वसन्तसमागमे
मधुमतीव नवा मृदुमञ्जरी ॥ ३ ॥
नवे द्रुमे मारकतश्रियाञ्चिते
चिरन्तने पद्मचयेऽपि सङ्गता ।
वसन्तवाताङ्कगतेव मञ्जुला
विराजतीयं सहकारमञ्जरी ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्विजाङ्गनानां कलगीतनिस्वनै-
र्वसन्तलक्ष्मीपरिरम्भविभ्रमैः ।
पुरातनानामपि जीर्णशाखिनां
तनोति तारुण्यसुखानि मञ्जरी ॥ ५ ॥

प्रमोदिताशेषरसज्ञमण्डली
मधुद्रवामोदसुवासितानिला ।
प्रियोऽवतंसो वनदेवताश्रुते-
र्विभाति लावण्यलवङ्गमञ्जरी ॥ ६ ॥

प्रियेण सोत्कण्ठमुदीक्षिते भृशं
त्रपाकुलाया जयतीव केलिभिः ।
परस्परालोकनजातसम्भ्रमात्
स्मितप्रभोद्भासितकर्णमञ्जरी ॥ ७ ॥

वन्धान् बन्धुरगन्धवन्धुविसरैराहूय दिग्व्यापिनो
भृङ्गानात्ममरन्दविन्दुममृतं सम्पाययन्ती मुदा ।
साफल्यं वनवासिनामपि भृशं भूमीरुहां तन्वती
संवध्नाति मनो मनोहरदृशामौषानिको मञ्जरी ॥ ८ ॥

तावत्तां परितश्चरन्ति सुहृदो गुञ्जन्त एवालयः
शाखायां निवसन्ति तत्पितुरिमे भूमीरुहः कोकिलाः ।
यावद्यच्छति निर्भरं मधु मुदा दत्ते शुभं सौरभं
सानन्दं मलयानिलेऽभ्युपगते नृत्यत्यलं मञ्जरी ॥ ९ ॥

विन्यस्ता सुरभारतीश्रवणयोः, सौन्दर्यलीलास्थली
दिव्यामोदमरन्दमेदुरमुखी कल्याणवत्कर्णिका ।
पीयूषप्रतिमै रसैर्मधुलिहामाकर्षयन्ती गणं
प्रत्यग्रेव पुरातनी विजयते मन्दारसन्मञ्जरी ॥ १० ॥

दिगन्तादागतैर्भृङ्गैर्भूषिता भासतामलम् ।
विज्ञानभवनोद्याने भारती श्रुतिमञ्जरी ॥ ११ ॥

—रतिनाथ झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यावन्न सद्गुरुगिरामविरामधारा
सारस्वती द्युतिमती हृदि सन्निधत्ते।
नाना विकल्पमलिना कलिना प्रयुक्ता
शङ्कान्धकारपदवी खलु तावदेव ॥ १ ॥

सोऽयं तुलामधिवसन्नपि तिग्मतापः
किञ्चित् कदर्थयतु नाम करेण भानुः।
कालेन वृश्चिकगृहं गमितो न यावद्-
दर्पानुबन्धमुपयातु स तावदेव ॥ २ ॥

निद्रावसाननयनोपमितं नलिन्या
यावन्मिलिन्दचलितं कुमुदं बभासे।
कर्पूरपूरविशदस्मितमाविरासीत्
प्राचीमुखं गगनसद्मनि तावदेव ॥ ३ ॥

—बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

यावत्कवीन्द्रकविता न रसज्ञवृन्द-
मानन्दयत्यमृतवर्षणतोऽधिकर्णम् ।
यत्नेन वृत्तपरिधौ पदबन्धनेन
ख्यातः कविर्भवति कश्चन तावदेव ॥ १ ॥

यावत् खगेन्द्र इव पक्षयुगं प्रसार्य
नाक्रामति प्रबलभारतसैन्यसङ्घः।
त्वं पाक, काक इव कर्णकटुप्रलापै-
र्दूंसान्निजानभिजनाश्रय तावदेव ॥ २ ॥

यावत्कृपापरवशे परमेश्वरे नः
सञ्जायते न चरमा परमानुरक्तिः।
आसक्तिरत्र सुतवित्तकलत्रमित्रे-
ष्वूज्जृम्भते हृदयसद्मनि तावदेव ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यावद् विरज्यति मनो न मनोऽनुकूला-
दर्थादनर्थनिलयाज्जगतः प्रपञ्चात् ।
कामादयः परिभवं सहजाः सपत्ना-
स्तन्वन्ति यत्नरहिता अपि तावदेव ॥ ४ ॥

यावद् विनाशपिशुनो भुवि सभ्यताया
द्रोहोऽभिमानसहितो नहि हुंकरोति ।
सौहार्द्रमार्जवरसोपचितं जनेषु
सञ्चारय प्रबलराष्ट्रिय ! तावदेव ॥ ५ ॥

यावन्महेश इव शास्ति न मण्डेलशो
गुण्डाभिधान् दमयितुं नितरां प्रचण्डान् ।
ते लंघयन्त नियमानपमानयन्ति
मान्यान् सतीमपहरन्ति च तावदेव ॥ ६ ॥

—रतिनाथ झा

बन्धुर्व्याहन्ति बन्धोर्हितमसुर इव प्राणघातप्रघातो-
पायाच्चेदत्र लोके यवनभुवि यथा पूर्ववङ्गेऽवलोके ।
तत्र प्रेताधिनाथः शमन इव कृतस्वाट्टहासश्मशान-
प्राये प्रान्तेऽवतीर्य प्रहरति सुजनद्वेषिणस्तावदेव' ॥ १ ॥

ऊथान्तो हन्त ! शान्तो व्यवसितिविरतो राष्ट्रसङ्घप्रधान-
श्चीनश्चामेरिकातो व्यतिषजति मिथो, लन्दनस्वार्थपीनः ।
पाको नापाकदृष्ट्या कलयति कलुषं काकवद् यावदेव,
साकं रूसेन सन्धिस्समर्जानि सुदृढो भारते 'तावदेव' ॥ २ ॥

नानावादप्रवादप्रकरणपटवो दर्शनान्याश्रयन्त-
श्शास्त्राण्यालोचयन्तोऽप्यनवरतममी यन्न तत्त्वं विदन्ति ।
कूटस्थं तद्रहस्यं प्रणिहितमनसा यावदिच्छन्ति वश्यं
कुर्वन्तः काव्यमर्मप्रणयिक विवरास्तन्वते तावदेव ॥ ३ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्ताभिश्चिन्ताविततकुहनाभिर्विरचित-
प्रभूताकाराभिर्मम हृदयमेतत् कवलितम् ।
न किं भूयो भूयाद् भगवति भवत्याः पदनख-
प्रभाजालैर्दूरीकृततिमिरभारं धवलितम् ॥ १ ॥
प्रनृत्यद्वामाक्षीचलचरणमञ्जीरमधुराः
प्रवर्धन्तां वाचो जगति सुकवीनामभिनवाः ।
परन्त्वेको धन्यः कविकुलगुरुर्यस्य यशसा
मुखं दिक्कान्तानामनवरतमास्ते धवलितम् ॥ २ ॥
अपङ्काः पन्थानः किरणनिकरैरम्बरमणे-
र्विलीनाः पाथोदा गगनविपिनान्ते क्वचिदपि ।
वृथा मण्डूकत्वं परिरटसि वाटीपरिसरे
पुरः पश्योद्यानं शरदि कलहंसैर्धवलितम् ॥ ३ ॥

—वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

प्रबोधं सम्प्राप्ते भगवति रमायाः परिवृढे
समायातैर्हंसैः सरसि कुमुदैश्च प्रमुदिते ।
घनान्तेनानन्ते निरतिशयशोभामुपगते
शरज्ज्योत्स्नापूरैर्जगदिदमशेषं धवलितम् ॥ १ ॥
स्रवन्तीनामोघैरुपचितपरीवाहसलिलैः
स्फुरद्विद्युद्वल्लीललितजलदासारनिवहैः ।
तिरोधानाद् धान्याङ्कुरतृणगणानामपि भृशं
प्रवाहैर्मुक्ताभैरवनितलमेतद् धवलितम् ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गते श्यामश्यामे जलदतरुणे क्वापि निभृते
चलल्लीलालास्ये विगलितविलासे च शिखिनाम् ।
इदानीमुत्फुल्लैः सितकचनिभैः काशकुसुमै-
र्वनप्रान्तं भूम्याः शिर इव नितान्तं धवलितम् ॥ ३ ॥

—रतिनाथ झा

गतं पङ्के शङ्के यदलिकुलझङ्कारलुलितं
यदुद्यज्झज्झान्तर्हिमकलुषितं यच्च जलजम् ।
शराणां पञ्चत्वे मदनबलिना यन्निगडितं
जनि लब्ध्वा पद्मं सविधि विधिना तद् धवलितम् ॥ १ ॥
मुधा धावं धावं नभसि सरितामूषरभुवा-
मपां धारासारैः सफलसरसां पूर्तिमतनोत् ।
परन्त्वद्य ग्रामाञ्चलनगरसम्पन्नवनकृत-
स्वपापोद्यत्कुष्ठैर्जलददलमेतद् 'धवलितम्' ॥ २ ॥
युवानोऽपि प्रायः स्वभुजबलिनोऽपि प्रपठिताः
कुलीना अप्येते सदलमधुना नक्सलजनाः ।
विलुण्ठन्ति प्राणान्धनमपि च दारानपि शिशून्
किमेते राष्ट्रस्याननमिह जगत्यां 'धवलितम्' ॥ ३ ॥

—शिवजी उपाध्यायः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोपाटोपस्फुरदुरुसटामण्डलं चण्डनादं
ज्वालामालाकवलितचलन्मेघनाम्भः प्रवाहम् ।
दृष्ट्वा सिंहं जगति जयिनं कान्दिशीको नियाजी
शुष्यद्वक्त्रः शिथिलवचनः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ १ ॥
यस्याऽऽलम्बादुदयपदवीं पाकनीतिः प्रपन्ना-
पाणिः स्कन्धे जनयति बलं यस्य मिथ्या निनादे ।
सञ्जातो न क्षणसहचरो निःक्षणो याह्यियेत्थं
ध्यायं ध्यायं धृतिविगलितः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ २ ॥
परां भूतिमिच्छन् मनुष्यौघयाजी
नियाजी प्रपेदे पराभूतिमेव ।
निशम्येति हा हा वदन् याह्यिया खां
मुहुः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति स्वगेहे ॥ ३ ॥
पुनरपि दनुजौघच्छेदहेतोर्भवानी
किमवनिमवतीर्णा शौर्यपूर्णेन्दिरेति ।
विगलितनयजालस्तत्क्षणान्निःक्षणोऽपि
व्यपगतनिजकालः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ४ ॥
क्षुद्राः पाका वराका पितृवनरतयो हन्त का का न का का
सञ्जाता दुर्दशा वः शमयत सहसा चापलं पापलग्नम् ।
सिंही विन्ध्याद्रिमध्यात् त्रिभुवनजयिनी जृम्भते यन्निनादै-
श्चीनः श्वा क्वाऽपि लीनो धवलगृहकरी सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ५ ॥

—वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

उन्मत्तं लोकशोकप्रदमहिषबलं सङ्गरे संहरन्ती
चण्डं मुण्डं गृहीत्वा जगति विदधती कन्दुकारम्भकेलिम् ।
देवीं सम्पत्तिमाप्तेष्वपि विकटरणोत्साहमुत्सेधयन्ती
वन्द्या देवीन्दिरा वः शमयतु सकलं प्रस्तुतं वस्त्वशस्तम् ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मार्गे प्रत्यूहशैलं जवजनितमहाघातपातैः क्षिपन्ती
प्रत्यर्थिक्षेत्रजातेष्वतिशयमलिनं जीवनं पङ्कयन्ती ।
धारासारैरसारे रजसि विलुलितां क्षालयन्ती धरित्री-
मुद्वेलं प्लावयन्ती जयति विजयिनी वाहिनी भारतस्य ॥ २ ॥
नो शान्ति न प्रसादं कलयति न कलामुज्ज्वलां मञ्जुकीर्तेः
सौभाग्यं नाभिवन्द्यं न च रुचिररतिं निश्छलाचारभाजाम् ।
नैव श्लाघां दुरापामनुभवति कदाप्यात्मसद्बान्धवानां
न प्रीतिं न प्रतीतिं भजति परिजने सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ३ ॥
औचित्यं पालयन् यः सपदि परिभवैरर्दितोऽप्यात्मतुष्ट्या
स्थैर्येणैवात्मगेहे भजति निजजनैः सार्धमानन्दपुञ्जम् ।
हुङ्कारोद्दामदर्पस्त्वममलमतिमतस्तापयन् स्वप्रतापैः
सन्तप्तो विह्वलोऽन्तर्जगति हतमतिः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ४ ॥
शान्तस्वान्ताशयानामुपरि कटुतरं टङ्कयन् कण्टकाग्रान्
स्फोटं कोदण्डखण्डात् प्रकटयति पटुं चण्डदोर्दण्डपिण्डः ।
कष्टं प्राणापहारप्रभृति निरुपमं प्रापयत् पुण्यभाजा-
मुद्दण्डो भारतीयान् दमयितुमनिशं सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ५ ॥
वाचाटो दुर्दुरूटो दुरितरतमना विग्रहायत्तचित्तो
भुट्टो लुण्ठाकभट्टो विघटनघटनो याहियापट्टशिष्यः ।
शस्त्रास्त्रव्रातयाञ्चापटुरतिकरुणं निक्सने बद्धचक्षु-
श्चाभीसाहाय्यमीप्सुर्जगति बहुतरं सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ६ ॥
हेम्नां वर्चोभिरर्च्या जयति वसुमती भव्यसौभाग्यभूमि-
र्धाम्नां पुञ्जैरजेया तरुणमणिगणैर्बांगलादेशलक्ष्मीः ।
पापः पाकप्रधानो विकटभटनटैस्तामवज्ञातुमिच्छु-
र्देशे देशेऽस्त्रभिक्षुः समरसमरसः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ७ ॥
प्रीता पौरस्त्यवंगप्रभवयुवजनैर्नार्चिता मुण्डमाल्यै-
र्नव्या स्वातन्त्र्यलक्ष्मीर्दिशि दिशि भुवने भ्राजते भूरिभाग्या ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्या वर्चस्वितताया नवनवकिरणैरुष्णतेजोनिधानै-
श्चाक्षुष्याक्षाभिभूत्या विकल इव खलः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ ८ ॥

—रतिनाथ झा

पाकिस्तान-पिपीलकस्य वपुषः पूर्वार्धपश्चार्धयोः
सम्बन्धत्रसरेणु-मात्र नलिकां फूत्कृत्य वित्रोटयन् ।
देशस्यास्य चमूपतिर्विजयते मानेकशा शात्रवे
माने वज्रकशा यथैव गिरिक-प्रत्यर्थिसर्वङ्कषः ॥ १ ॥

प्राचीभालेऽद्वितीयैर्जगति करतलैर्भारतस्येन्दिराया
दत्तं स्वातन्त्र्यसूर्यं तिलकयति, वियत् पद्मगन्धाञ्चितं नः ।
पाकिस्तानं तु हस्ताद्धरिणशिशुमिव व्याघराजो विमुक्तं
बाँग्लादेशं विलोक्यानुशयपरिगतं संभ्रमाद् बम्भ्रमीति ॥ २ ॥

पीत्वा रक्तं नराणां, युवतिशतशती वक्षसां कर्त्तनाभिः
कृत्वा पूर्णांश्च गर्त्तान् शिशुजननयनैः पद्ममालां च धृत्वा ।
ये केचिद् दानवानामपि हृदयमहो कम्पयामासुरेते
याचन्ते पाकपुष्टाः बत बत बलिभुक्कुक्कुराः प्राणभिक्षाम् ॥ ३ ॥

रेवाप्रसाद द्विवेदी

एकैको भारतीयप्रहरण समये वोभवीत्येव कालो
धावद् धूमाभपाकप्रतिमथनविधौ दृष्टमेवाद्य सर्वैः ।
जिन्ना रौति प्रकामं निहतसहचरः संस्थितो रौरवे द्राक्
याह्या खानस्य शीर्षेऽनुदिनमतितमां सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ १ ॥

यत्रास्ते पीडितानां करुणभरकथा तत्र यातीन्दिरेयं
देशे सर्वत्र तस्याः स्फुरति नवनवा घोषणावीरतायाः ।
युद्धे पाकेन साकं जयति विजयिनी, नम्र एवाद्य शत्रुः
शत्रौ मित्रेषु देशेष्वथ विपुलतमा सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ २ ॥

—शिवदत्तचतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्धर्तुं वङ्गदेशं प्रकटभुजबलैर्भारतीयैः प्रदग्धः
काश्मीरान्रक्षितुं तैः प्रसभमपहृतः सिन्धुभागश्च यस्माद् ।
विध्वस्तोद्गूर्णदर्पो नतमुखमखिलं विश्वमाकारयन्सन्
आयाह्यायाहि याह्या प्रलपति बहुशः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ १ ॥
पूर्वं चीनान् कपटकुटिलं प्राहिणोद् दूतवर्गं
याङ्कीपङ्के तदनु विविधं चेष्टमानो निमग्नः ।
दृप्यन्मूढः स्वबलविभवं पर्वतीकृत्य पश्यन्
जिष्णोर्वज्रप्रहतिविकलः सम्भ्रमी बम्भ्रमीति ॥ २ ॥

—कमलेशदत्त त्रिपाठी

याऽऽसीद् दिव्या स्वरूपात् सुबहुगुणयुता भारती भूमिरेषा
नित्यं पूज्या महद्भिर्ह्यसुरसुरगणैर्दुष्टसङ्घैर्वृताऽपि ।
किन्त्वद्याऽहोऽतिगर्ह्यादतुलकुचरिताद् याहया-खाँऽभिधानात्
त्रस्ता सेत्थं सुधीभिर्निगदति स खलः संभ्रमी बम्भ्रमीति ॥ १ ॥

—कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे

तिष्ठत्येकं क्षणं नैव मनोवन्धनसाधनम् ।
विद्याविवेचने यस्य संभ्रमी वंभ्रमीति सः ॥ १ ॥
रम्यं व्याकरणं शास्त्रं पठित्वापि महीतले ।
काणादं येन नाधीतं संभ्रमी वंभ्रमीति सः ॥ २ ॥
स एव गुरुतां याति तत्त्वज्ञानेन निश्चितम् ।
विना तज्जगतां मध्ये संभ्रमी वंभ्रमीति सः ॥ ३ ॥

—वौ आनन्द झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः : ६

सुजातजंलजाततां श्रयदपि क्षपावल्लभ-
प्रभाभर सहोदरां द्युतिमतीव दिव्यां स्पृशत् ।
स्मरन् पृथुपतिप्रियास्मित-मयुग्मबाणामृतं
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ १ ॥

निशीथबहुलक्षपातिमिरसंहृतौ विद्युता
प्रवर्तितगतागतं प्रियजनाभिसारं स्मरन् ।
स्मरँश्च सुरशाखिनां तल उपोषितं निश्छलं
जयत्मरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ २ ॥

समुद्रवसनामिमां महति विष्णुवक्षःस्थले
समुद्रतनयां यथा युवभुजान्तरे शाययन् ।
दिवस्पतिदृगञ्चलेष्वपि च हासवासं सृजन्
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ३ ॥

मधुश्रियमुदित्वर - प्रतिनव - प्रसूनोत्कर-
प्रवर्षरचितार्चनां स्मरहरे स्मरे चान्वहम् ।
उपास्य, सुरभेः सुताममृतभावधारां दुहन्
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ४ ॥

प्रजाजनहितोत्सवे सुखमसून् तृणीकुर्वति
प्रशस्तिमतिमांसलां भरतभूमिभूपे भजन् ।
ततश्च चरितार्थयन् स्वकविकर्म धर्मोत्तमं
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ५ ॥

पयोधर-पयोधरैरमृतवर्षिभिर्निर्मलां
स्तनंधय–वपुः कुतूमतिविकस्वरां कुर्वतीम् ।
स्तुवन् भरतभूमिजामतुलवत्सलां मातरं
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिरस्कृतरतिश्रियं त्रिदशलोकसंप्रार्थितां
पितुर्विभवविस्तरैरपि च सर्वतः संवृताम् ।
स्मरारिवरणे स्थिरां भरतभूमिकन्यां स्मरन्
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ७ ॥
मनुष्यधरिणीमिमाममलयोगविद्योदित-
श्रुति-व्रतति - सत्फलार्पितसमस्त - शास्त्रामृतैः ।
सुरासुरगणेप्सितां सृजति शिक्षके सादरो
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ८ ॥
प्रबोधविनयद्वयी - सुमतिसिन्धुतीरद्वये
भगीरथद्रवामृतं किमपि तत्त्वमुत्पश्यति ।
स्वदेशहितचिन्तया विधृतधीः स्वविद्यार्थिनि
जयत्यमरभारती कविकुलस्य कश्चिद् गुरुः ॥ ९ ॥
भृङ्गी हेमाम्बुजमधुरसे कोकिला केसराम्रा-
शोकोत्सङ्गे पृषतदयिता शाद्वलश्यामसीम्ना ।
केकिप्रेष्ठा परुषविषमे किञ्च कान्तारगर्भे
यस्य प्रज्ञा कविकुलगुरुं तं नुमः कालिदासम् ॥ १० ॥

—रेवाप्रसाद द्विवेदी

का भाषा, के च भावा, नव कवनविधौ का च रीतिर्गुणाः के,
मूर्तिं विन्यस्य पूर्णां तदनु विरचनं मानसं किं च चित्रम् ।
सौन्दर्यं कम्पयन्तो निजरसनभरैः सारयन्तः कवीन्द्राः-
के ते ये वर्णयेयुः कविगुरुकवितालास्यलीलाविलासम् ॥ १ ॥
एके शास्त्राद्यवेक्षाजनितकविधिया काव्यरेखां स्पृशन्ति,
नूत्नोन्मेषेषु दक्षा विदधति रचनाचातुरीं केचनान्ये ।
सान्द्रामाम्रीममन्दं रचयति कवितामञ्जरीं मादयित्रीं
स्निग्धामुत्कां वसन्तः स्थगयति च मनः केवलः कालिदासः ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्योत्स्नावदातं जलजे निरभ्र-
माकाशमाविष्कृतनीलरूपम् ।
या स्मारयन्ती नितरां चकास्ति
वाणी प्रसन्ना शरदभ्रशुभ्रा ॥ २ ॥

या हैमनान् सोत्कृतसङ्गिवातान्
शीतास्त्रियामाः शिशिरं रविं च ।
शिरीषपुष्पं च नवं च पाटलम्,
नवेन रूपेण युनक्ति सर्वदा ॥ ३ ॥

बलाहकश्यामदिगन्तलम्बि-
बलाकरे खेव विलोक्यते या ।
उत्कञ्च क्रेङ्कारमथापि केका-
मैन्द्रं धनुः स्मारयतीव नित्यम् ॥ ४ ॥

—कमलेशदत्त त्रिपाठी

विद्वन्मानसहंस ! काव्यरचनाकर्मैकबद्धस्पृह !
त्वद्वृत्तं सकलं त्वदीयकविताच्छायभिराच्छादितम् ।
राज्ञां वृत्तमिषेण तन्मृगयितुं शक्यं दृशा सूक्ष्मया
यन्मे दृष्टिपथं गतं तदिह वः प्रस्तूयते सम्मुखे ॥ १ ॥
पाश्चात्यैरपि भारतीयकविराड् यः सर्वदा पूजितः
कीर्त्या यस्य समस्तभूतलमिदं दुग्धाब्धिलीलायते ।
किञ्चित्तस्य यशोऽनुरूपचरितं कीर्णञ्च काव्येषु यत्
तेनाहं गदितुं यतेऽत्र सुधियां सौख्याय मन्दोऽपि सन् ॥ २ ॥
किं बाल्ये पितरौ विहाय भवतः स्वर्गङ्गतावन्यथाऽ—
स्तावीत् काव्यमुखे स्वकीय पितरौ विस्मार्य शम्भुं शिवाम् ।
यः शास्त्रैस्त्रिपुरान्तकेति गदितस्तं ह्यर्धनारीश्वरं
विद्वन् यत् पितरौ जगाद जगतो बीजं हि तन्मन्मते ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काश्मीरं कतिचित् परे च विदिशां क्रौञ्चाऽरव्यरन्ध्रं बुधा
मालं वाऽथ हिमालयं कतिपये त्वज्जन्मभूमिं जगुः।
या काप्यस्तु कवेस्तदीयसकलाभूभिः कुटुम्बायिता
येनाऽद्याऽपि विदां मनःसु वसतिस्ते शाश्वती राजते ॥ ४ ॥
धर्मे तत्परता गुरौ प्रवणता युद्धे च निर्भीकता
शास्त्रार्थे पटुता समे रसिकता दीनेष्वलं दातृता।
काठिन्यं करुणार्द्रता सरलता तेजस्विता वाग्मिता
दृश्यन्ते त्वयि लोकवन्दितगुणाः स्वाभाविकाऽनेकशः ॥ ५ ॥
भक्तिः शूलिनि सूर्यवंशकथनादैतिह्यबोधादरः
शौर्यञ्चापि परैरसह्य चरितं त्वादृक्शरण्योऽपि नो।
त्वद्देशाटनपाटवं सुरुचिरं प्रेम प्रकृत्या समं
त्वां ध्यायन्ति दिवस्पृशं कविवराः श्रेयः पथाग्रेसराः ॥ ६ ॥
शृङ्गारस्य च विप्रलम्भ इति यो भेदो बुधैः कीर्तितः
सम्भोगादतिरिच्यते स नितरां श्रव्येषु दृश्येषु च।
त्वत्काव्येषु तयोः स्थितिर्मम पुरो यक्षस्य शापोदया-
दन्या शम्भुशिवासमागमवती लोकोत्तरा दृश्यते ॥ ७ ॥
राज्ञां शत्रुनिबर्हणेन मुखरो रात्रिञ्चराणां वधैः
श्रीरामेण समं तदीयसुतयोर्यज्ञाश्वजन्यं च यज्-
जन्यं प्रादुरभूद् यदाऽति भयदं वीरो रसस्तत्क्षणे
साक्षाद्वीरइवातिधीरचरितः काव्यस्य मञ्चे बभौ ॥ ८ ॥

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

मेघे मेघे वाते वाते, अन्धकार सम्भारे
तुहिन कणानां कम्पनसारे, ऋतुवैभव विस्तारे
लोकयामि मम कोमल मानस—
गत सराल सञ्चारे, सुषमापारावार मपारं
ऋतुवैभव विस्तारे।

—शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपसरति शैशिरी श्रीः श्वश्रूरिव कर्मतो गहनात् ।
सुषमा नवा वधूरिव भाति तदीयः प्रियश्च मधुबन्धुः ॥ १ ॥
अनवरतशास्त्रचिन्तानिपुणतरस्याऽपि दुःस्वभावस्य ।
चेतः सविषं यद्यपि वाग्विसरो भाति मधुबन्धुः ॥ २ ॥
विगलिततनुरपि मतिमान् सुहृत्सहायाज्जगज्जयं तनुते ।
भ्रमयति यतीश्वरानपि मदनः सन्नद्धमधुबन्धुः ॥ ३ ॥
बहवो वयमिति काका रटन्तु नाकाधिपत्वमात्मनो भूयः ।
कोकिल ! तव निर्णेष्यति कालः पदवीं क्षणेन मधुबन्धुः ॥ ४ ॥
शीतभानुमहसा घनसारोल्लासितानि हरितां वदनानि ।
स्वागताय मरुदेति दिगन्तान्मन्मथस्य पवनो मधुबन्धुः ॥ ५ ॥
पुष्पबाणरमणी रमणीयं चारुचन्द्रमुकुरे वदनं स्वम् ।
यावदाकलयति स्म मनोभूस्तावदेष ददृशे मधुबन्धुः ॥ ६ ॥
किं धनेन बहुना भवनेन व्योमचुम्बिशिखरेण च तस्य ।
यस्य न स्फुरति शब्दविलासः प्रातरम्बुजवनी मधुबन्धुः ॥ ७ ॥
कापिली भणितिरस्तु विलीना गोतमस्य कतमा पदरीतिः ।
कालिदासवचसां भुवि यावन्निर्झरो विजयते मधुबन्धुः ॥ ८ ॥

—बटुनाथ शास्त्री खिस्ते

पश्चिमवायु विकम्पितविटपा पतितपुरातनपर्णा
तपसि रता विलसति वनमाला गिरिगिरिजावदपर्णा
ललितविलासः फाल्गुनमासः प्रोल्लासितसुखसिन्धुः
जागरयति मनसिजमनिशं हृदि मधुरिपुरिव मधुबन्धुः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

का चेतनजनकथा जडा अपि रङ्गोत्सवसंलग्नाः
नृत्यन्तीव शिखाभिस्तरवः परमामोद-निमग्नाः।
कुसुमित किंशुकवनिका दिशि दिशि वनदेवीव विलोला
होलोत्सव निरतेवोल्लसितारुणरागार्द्रनिचोला ॥ २ ॥
मञ्जुलमञ्जरिकाभिरुपेतो मधुकोशो माकन्दः
भृङ्गाली रणयति वीणामिव रौति पिकः स्वच्छन्दः।
वितरति मलयजगन्धं वातोऽर्पयति फलं कर्कन्धुः
लिप्सावीरो गीतकवीरः कालोऽयं मधुबन्धुः ॥ ३ ॥

—पाण्डेयो रामनारायण दत्त शास्त्री

कल-कूजित-कोकिल-काननके
सरसीरुह-सौरभ-सम्भरिते ।
सुहृदा सह सत्वरमेति मुदा
मधुबन्धुरयं विहरन् शनकैः ॥ १ ॥
मदयन् पथिकान् सुषमां जनयन्
सखि ! कौतुकमातनुते परितः।
निभृते समवैति सदा प्रहसन्
मधुबन्धुरयं विहरत्यनिशम् ॥ २ ॥

—कृष्णमोहन ठक्कुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुक्तिवाहिनी

महाद्रिकल्पमुल्लसत्पिशाचमण्डलोपमं
प्रचण्डमुग्रबाहुदण्डमन्तकप्रियं • परम् ।
तरङ्गरिङ्गणक्रमैरुदग्रसञ्चरत्स्वरै-
रमज्जयज्जवेन विभ्रमेण मुक्तिवाहिनी ॥ १ ॥
दुरन्तशस्त्रसङ्कुलोल्लसत्करैश्चलत्पदै-
रपारपाकसैनिकैर्निरस्त्रबङ्ग-नाशकैः ।
नितान्तमर्दितां महीमचीचयत्स्वजोवनैः
पराभियानरोधनैर्मुजीवमुक्तिवाहिनी ॥ २ ॥
स्वतन्त्रतानुरागरक्तमानसोच्छलद्रसैः
सुवर्णबङ्गभूमिमानरक्षणे दृढव्रतैः ।
वसुव्ययैरसुव्ययैरपि प्रमत्तयौवनै-
र्नवाभिमन्युसैनिकै रराज मुक्तिवाहिनी ॥ ३ ॥
अलज्जराक्षसाधमैर्विलोभितापि पूर्णतो
विभीषितापि मर्दितापि नो जहौ निजव्रतम् ।
जयेन्दिराभिनन्दिता प्रशस्तलोकवन्दिता
गृहीतसत्पथा बभौ सतीव मुक्तिवाहिनी ॥ ४ ॥
शिवशक्तिपदाम्भोजमकरन्दसुधारता ।
भुक्तिमुक्तिदयाभक्त्या विजिता मुक्तिवाहिनी ॥ ५ ॥
करालकलिकालस्य प्रबलेन बलेन सा ।
सर्वत्रालोड्यते नित्यमनाथा मुक्तिवाहिनी ॥ ६ ॥
या पोषिता पुरा पुण्यैर्जनैः प्राणार्पणैरपि ।
कामं विघटिता सैव साम्प्रतं मुक्तिवाहिनी ॥ ७ ॥
किं करिष्यन्ति दुर्वृत्तदावानलशिखात्विषः ।
स्यन्दते यदि सन्तापनाशिनी मुक्तिवाहिनी ॥ ८ ॥

—रतिनाथ झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वबंग परित्राण निष्ठुर व्रतवाहिनी ।
प्रमत्तपाकसेनाया उत्तरं मुक्तवाहिनी ॥ १ ॥
इन्दिराबलमासाद्य प्रवृद्धा या स्म दृश्यते ।
संसारे सर्वसामान्य प्रसिद्धा मुक्तिवाहिनी ॥ २ ॥
अपि द्वादशवर्षीयैर्बालकैरभिमण्डिता ।
दण्डने पाकसेनायाः पण्डिता मुक्तिवाहिनो ॥ ३ ॥
नाम मात्रेण या कम्पं प्राकरोच्छत्रु मानसे ।
यशोदीप्त प्रभा भावैर्भासिता मुक्तिवाहिनी ॥ ४ ॥
यस्याः समन्तात् सुषमा नवीना
विद्योतते पूर्णतमप्रकाशा ।
लुण्टाकपाकस्य कलेवरं हि
विच्छेत्स्यन्ती भुवि मुक्तिवाहिनो ॥ ५ ॥

—शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः

याहियाख्यमहिषावमर्दिनी पापिपाक पृतनावधोरणी ।
अल्पदोषनरघातिघातिनी किं शिक्षा ! ऽथ वद मुक्तिवाहिनी ॥ १ ॥
कोटिकोटि जनमुक्तदायिनी दुःखभुक्तिविगमाऽनपायिनी ।
अस्ति सोपनिषदाख्यचिद्घनी वाऽवनीविदितमुक्तिवाहिनी ॥ २ ॥
भारतस्य ननु वाहिनीमिता बङ्गदेशविततामिताऽद्भुता ।
साधु पाकपृतना वधुन्वती काप्यसौ जयति मुक्तिवाहिनी ॥ ३ ॥
इन्दिरानय नवासमङ्गताऽपारशक्तिसुभृता परन्तपा ।
श्रीमुजीबपथगाद्य पङ्क्तो(पाक्तो) वङ्गमुद्धरति मुक्तिवाहिनो ॥ ४ ॥
एतद्वङ्गोपमानेन समस्ते भारतेऽधुना ।
पिष्टां संस्कृतभाषां वै काप्यवेन्मुक्तिवाहिनी ॥ ५ ॥

—केदारनाथ त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वबङ्ग परित्राण निष्ठुर व्रतवाहिनी ।
प्रमत्त पाकसेनाया उत्तरं मुक्तिवाहिनी ॥ १ ॥
अतिक्रूरतमस्यापि शत्रारल्प बलैरपि ।
अत्याचारा न सोढव्या दृष्टान्ता मुक्तिवाहिनी ॥ २ ॥
नीतिमार्गेऽपि विपुलं नैपुण्यमधिकुर्वती ।
धुरन्धरैर्नीतिविद्भिस्संस्तुता मुक्तिवाहिनी ॥ ३ ॥
अपिद्वादशवर्षीयैर्बालकैरभिमण्डता ।
क्रूरासुर प्रमथने पण्डिता मुक्तिवाहिनी ॥ ४ ॥
इन्दिरा बलमासाद्य प्रचण्डा या स्म दृश्यते ।
ख्याता संसार चक्रेऽस्मिन्नपूर्वा मुक्तिवाहिनी ॥ ५ ॥
याह्याखानस्य मत्तस्य यद्यदासीद्विचेष्टतम् ।
हुंकारेणैव तद्भस्म प्राकरोन्मुक्तिवाहिनी ॥ ६ ॥
भुट्टो कुट्टाकमुष्टिः सा तथेदानीं प्रदृश्यते ।
मुजीबुर्रहमानेन संगता मुक्तिवाहिनी ॥ ७ ॥
नित्यं समासादित यावनेय
माभाति कर्तव्यपथप्ररूढा ।
लुण्टाकपाकस्य कलेवरं हि
विच्छेदयन्ती भुवि मुक्तिवाहिनी ॥ ८ ॥

—शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदीः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राप्ताल्पविद्यो बहुवादचुञ्चुश्चञ्चत्पदो देश विदेशयाने ।
दलन् दलं दत्तजलः सुनीतौ स एव नेताद्य महीयतेऽत्र ॥ १ ॥
प्राप्ताधिकारो विनयानुवीतिस्तुत्यादिभिर्मन्त्रिपदादिभाजाम् ।
कर्माण्यकर्माण्यपि तद्दृशैव कुर्वन् स शास्ताऽपि महीयतेऽद्य ॥ २ ॥
व्याख्यातृभूतोऽनुभवैर्विहीनो हीनः सदाचारछवेन यो वै ।
शिष्यैः समं चित्रपटादिदर्शी विद्यालयस्तेन महीयते किम् ॥ ३ ॥
त्यक्तश्रमोऽधीतिविधौ नितान्तं व्यर्थीकृतामूल्यपलो श्रमीषु ।
आडम्बरे दत्तमनावमानी गुरोः स शिष्यो नु महीयतेऽग्रे ॥ ४ ॥
वसादमुत्साद्य प्रयस्य सर्वतो विधातुमद्धाऽभ्युदयोऽद्यशक्यते ।
यतो हि लोकः शशिनोऽपि वैभवान् मनुष्यबुद्धेरधुना महीयते ॥ ५ ॥

रतिनाथ झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणीवन्दनम् : १०

वाणी जयति सुराणां सद्यः सूते रसामृतस्यन्दम् ।
अखिलगुणाधिष्ठात्री कथं न सा वन्दनीया स्यात् ॥ १ ॥
रागद्वेषनिशान्धकारपटलाऽऽक्रान्तं जगत्सर्वतः
पाश्चात्यैः स्ववशीकृता भुवि नरा विज्ञानचर्चाचणैः ।
छन्नोज्ञाननिधिः पुमर्थफलदः सद्यस्तुषाग्नेः समो
मातर्भारति ! भिक्षते तव कृपां लोकेऽत्र सर्वोजनः ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्दत्रिपाठी

स्वातन्त्र्यस्मरणम्

तावद्दुर्दान्ततामिस्रदिग्धो दासति सज्जनः ।
यावत्स्वातन्त्र्यसूर्येण नाश्लिष्टं भुवि भारतम् ॥ १ ॥
सम्मान्यैर्गान्धिमुख्यैर्निगडितचरणैः शान्तिसत्याग्रहाद्यै-
र्नूत्नैः शस्त्रैरमोघैर्भरतवसुमती निःसपत्ना स्वतन्त्रा ।
यस्यां तिथ्यां कृता सा विलसति पुरतः श्रीमतामद्य तस्मात्
स्वातन्त्र्यश्रीपताका प्रतिगृहमभितो धूयतां भारतेऽस्मिन् ॥ २ ॥

—ब्रह्मानन्दत्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुष्टा जाता अनेका भारतनृपकृते भारते भारतेऽस्मिन्
येषां नामाऽपि तादृक् प्रचलति न तथा यादृशं ख्यातमस्य।
धन्योऽसौ याह्या-खाँ स्वपरिजन युतो मातरः स्वा भगिन्यो
भुक्तायेनाऽत्र दोष्ट्यादधिवरमइहा ! तत्प्रशंसाहं एषः ॥ १ ॥
व्याला हिंस्राः सुदुष्टा अपि च कुचरिता दुष्टतां द्वेषितां स्वां
त्यक्त्वा शान्त्या चरन्ति ह्यवनितल इहाऽकारणेऽप्यात्तधर्माः।
सोऽयं किन्त्वत्र गोघ्नः कृतसुजनवधो भ्रातृवर्गस्य हन्ता
स्वस्या मातुश्च रक्तं स्वहितमिति पिबँल्लज्जते नैव कृत्यात् ॥ २ ॥
शान्त्या तुष्टो महात्मा सुकृतजनहितो भारतो देश एष
विभ्राजँल्लोकमध्यं निखिलकृतनुतिःशोभतेऽभ्रान्तचित्तः।
कृत्स्नाऽसह्यं कुकृत्यं तदुपरि च भृशं पातयन् वज्रभारं
मातुः सौन्दर्यसारं ह्यधिमवजनमा कोटिशो नूनं निहन्ति ॥ ३ ॥
एतत् सर्वं चरित्वाऽपि च स खलतरो याह्या नैव तुष्टः
स्वं शिष्टं मन्यमानो बहुभिरनुचितैर्दोषजातैः स्पृशंस्तम्।
शक्त्या क्षोणोऽपि तुच्छाऽप्यहहह ! शठतास्पर्धमानोऽमुनाऽयः
सम्यक्दत्तप्रहारो विहतगतिरिहाऽपेक्ष्यतेऽन्यान् सहायान् ॥ ४ ॥
को वा दद्यात् सहायं सुजनवधकृते तादृशो दुष्टदेशः
कःस्याद्वा यैः प्रदत्तं वचनमिह सहायार्थमस्यां स्थितौ तु।
व्यर्थास्तुच्छा हि सर्वेऽनृतवचनधना दैत्यदेशोऽपि चीनः
प्राचीनानां समक्षं नहि किमपि वयं भारतीयार्यवीर्याः ॥ ५ ॥
एतत्सर्वं विचार्यं ह्यवहितमनसा याह्याऽमेरिकादीं-
श्चीनांश्चान्यानपश्यन् विगतभयमिमानार्यवीरान् प्रसाद्य।
कृत्वाऽस्मद्भारतस्याऽङ्घ्रिकमलपतनं देशपातं पुरेव
कुर्यादस्मान् दयार्द्रान् स्वहितमिह चरन् न्यस्तशस्त्रं भटैः स्वैः ॥ ६ ॥

—कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चाशत्कोटिसङ्ख्यासमधिकवदनाम्भोरुहे ! विश्वमातः !
प्रातः स्वातन्त्र्यदीप्ते ! धरणि ! चरणयोरेतदावेदयामि ।
प्रोन्मीलल्लीलनीलाम्बुरुहसहचरी लोचनश्रीस्त्वदीया
दुर्वारक्लेशतप्तान् शिशिरयतु सुतान् बाङ्गलादेशभक्तान् ॥ १ ॥

गङ्गा सम्प्राप्तभङ्गा नररुधिरभराक्रान्तधावत्तरङ्गा
पद्मा सद्मानि हित्वा विगलितविभवा याति वाताहतेव ।
सीमन्तिन्यः समन्तात् पतितनयसमालम्बहीना विलीनाः
शोकाग्नौ भूतधात्रि ! प्रलयमुपगता किन्त्वदीयानुकम्पा ॥ २ ॥

कन्या धन्याः शतघ्नीशतविततमुखोद्गीर्णधूमध्वजानां
ज्वालाजालान्तरालं स्वयमभिपतिता रोशनाराप्रधानाः ।
द्यामारूढा दिगन्तच्छुरिततनुरुचो विद्युदुद्योतभासः
सोद्योगान् मुक्तिसेना समरसमरसान् नूनमुत्साहयन्ति ॥ ३ ॥

प्राचीनः शाठ्यपीनः शिशिरगिरिभुवामन्तरा घूर्णमानो
दैतेयः सूत्रधारश्चपलयति पुरः काकपाकं वराकम् ।
मायामेतस्य भिन्धि प्रबलगिरिगुहोद्गारहुङ्कारमन्त्रै-
रुन्मीलद्विस्फुलिङ्गैः प्रलयहुतवहाकारजाग्रत्प्रतापे ॥ ४ ॥

माद्यन्मण्डूकतुल्यः परिरटति मुहुर्याहि याहीति लोकान्
युद्धायाऽऽबद्धबुद्धीन् परवशकरणः खान्तवञ्चत्कलङ्कः ।
हेलानिक्षिप्तपादे क्षणमपि चलिते सिन्धुरे भारतीये
भ्रष्टघ्राणाङ्घ्रिपाणिः परिणमति पुरा मृत्तिकासत्तयैव ॥ ५ ॥

कालाम्भोदालिकेश्ये ! रविशशिशिखिभृल्लोचने ! बाहुदण्ड-
व्यावल्गन्मण्डलाग्रे ! जलनिधिवसनानद्धकाञ्चीकलापे ।
नक्षत्रश्रेणिमाल्ये भरतवसुमति ! प्रीणितप्राणिवर्गे !
दुर्धर्षाद्दैत्यसङ्घादव जननि ! जवोदग्रसिंहाधिरूढे ! ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्वेल्लत्सिन्धुवेला तरङ्गकरतलोन्मुक्तमुक्तासहस्र-
प्रत्यग्राभ्यर्चनाभिर्विमलितचरणे ! चेतने ! चेतयाऽऽशु ।
बाहुस्तम्भावलम्बात्तव वसतु पुनर्बाङ्गलाशौर्यलक्ष्मी-
ढंक्कानादेन ढक्का-नगरविरचितोत्तुङ्गसौधासनेषु ॥ ७ ॥

—बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

शिप्रातीरपुरीस्थ भव्य विबुधाः कश्मीरदेशोद्भवा
वंगीया मिथिलाभुवश्च कृतिनः स्वं स्वं यमाचक्षते ।
सम्मान्यः कविवंशमौक्तिकमणिर्वन्द्यस्त्रिलोकोविदां
सोऽत्यन्तञ्जरतीमपि प्रबलयन् वाचं रसै राजते ॥ १ ॥
वाणी यस्य सुधाधरी मतिमतां चेतोहरी माधुरी
लालित्यं ललनाललामलुलितं लीलामहत्त्वं गतं ।
शृङ्गारश्च रसे प्रधानपदवीरूढस्सभारञ्जनः
वैधी सृष्टिरपि क्षणेन विजिता सर्गैनिसर्गोज्ज्वलैः ॥ २ ॥
अमन्दानन्दसन्दोहः प्राप्यते यस्य काव्यतः ।
अतस्तस्यैव काव्येषु हृदयाह्लादिता मता ॥ ३ ॥

—चौ आनन्द झा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्पद्मातटपद्मसुन्दरमथो दम्भोलिना निर्मित,
रक्ताक्तं रिपुदुर्मदप्रहृतिभिर्नित्यं पुरा श्यामलम् ।
यद्वक्षःस्थलघट्टनप्रतिहता घाताङ्किताः वीचयः
पूर्वस्यास्य पयोनिधेः शृणुत भोस्तज्जीवनम् जीवनम् ॥ १ ॥
यद्दग्धुं धगिति प्रसह्य निखिलं वैषम्यमूलं जगत्
द्रागुन्मूलितलोकबन्धनमथ स्वातन्त्र्यमाचामति ।
आदीप्तं प्रखरं प्रबोधमुखरं बङ्गं समान्दोलयत्
प्राच्यां भास्कररक्तमुद्गतमहो तज्जीवनं जीवनम् ॥ २ ॥

—कमलेशदत्त त्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-पदाधिकारिणः

[१९७१-७२ ईशवीयवत्सरस्य]

१. अध्यक्ष—श्री पं० पट्टाभिराम शास्त्री
२. उपाध्यक्षा—डॉक्टर कुमारी प्रेमलता शर्मा
३. उपाध्यक्षः—डॉक्टर रेवा प्रसाद द्विवेदी
४. मन्त्री—डॉक्टर कमलेशदत्त त्रिपाठी
५. उपमन्त्री—श्री पं० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
६. ,, श्री पं० शिवजी उपाध्यायः
७. कोषाध्यक्षः—श्री पं० कृष्णमोहन ठक्कुरः

कार्यकारिणी-सदस्याः

१. श्री पं० रामचन्द्र मालवीयः
२. डॉ० प्रियव्रत शर्मा
३. श्री पं० रामनारायणदत्त पाण्डेयः
४. श्री पं० रामकुबेर मालवीयः
५. श्री पं० उमापतिद्विवेदः 'कविपतिः'
६. श्री पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते
७. श्री पं० रतिनाथ झा
८. डॉ० ज्योतिर्मित्र आचार्यः
९. श्री पं० कपिलदेव त्रिपाठी 'जटिलः'
१०. रामरूप पाठकः
११. श्री० पं० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

षष्ठो भागः

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती-कुसुमाञ्जलिः

षष्ठो भागः

★

सम्पादकः

डॉक्टर रेवाप्रसादद्विवेदी 'सनातनः'

★

कविभारती

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशिका
कविभारती
N. १/२७ नगवा
वाराणसी–५

★

वि० २०३०
सं० १९७३

★

मूल्यम्—रूप्यकचतुष्टयम्

★

मुद्रक
आनन्दकानन प्रेस
सीके० ३६/२० ढुण्ढिराज
वाराणसी–१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

समस्याविषयाः	पृष्ठसंख्याः
१. करोति	८१ ८५
२. कालिदासः	५५–६६
३. गणेशः	३२, ३८, ४०
४. गन्धवाहः	९०–९२
५. जीवितम्	३३, ३७
६. देवं स्तुतिः	४३, ४९, ५०, ५८
७. धन्या ममेयं धरा	७३–७७, ९३, ९४
८. धीमहि	९–१२
९. महती महाघंता	३१, ३६–४०
१०. माधुरी	२–८
११. लक्ष्मीः	१८, २१, २७
१२. लिप्साया विजृम्भितम्	१०४
१३. वर्षितम्	६७–७०
१४. वाणी	१५, १६, २१, २२, २३, २६
१५. वाताः	३५, ४०
१६. विजयते	३४, ३७, ४०
१७. शरद्	४५, ४७–५१
१८. शुभाशिषः	१
१९. श्रीजगद्गुरुस्तवः	२
२०. सुमनसाम्	८२–८३
२१. हा हतो मन्दभाग्यः	१७, १८, २१
२२. होलोत्सवः	८६
२३. स्फुटपद्यानि	९८, १०२–१०३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवयः	रचनापृष्ठसंख्या।
१. सुमेरुशङ्कराचार्यपादाः	१
२. कपिलदेवत्रिपाठी	७६
३. कपिलदेवपाण्डेयः	८६
४. कमलेशदत्तत्रिपाठी	३६, ५१, ७४–७६
५. कीर्त्यानन्दझा	२१
६. केदारनाथत्रिपाठी	७३
७. कृष्णमोहनठक्कुरः	४९, ८४
८. गजाननशास्त्रिमुसलगांवकरः	५०, ७३
९. गाप लचन्द्रमिश्रः	७७
१०. गोविन्दपाण्डेयः	४७, ७०
११. जनार्दनगङ्गाधररटाटे	२६, ९३, ९४
१२. दीपनारायणशर्मा	२
१३. नवरङ्गचतुर्वेदी	६५
१४. प्रियव्रतशर्मा	८३, ८८, ९१
१५. बटुकनाथशास्त्रि खस्ते	६, ११, १८, ६८, ८३, ८९, ९१
१६. मनुदेवभट्टाचार्यः	२२–२६, ३८–४०, ४७, ५९–६४, १००–१०२
१७. माहेश्वरझा	३७
१८ रतिनाथझा	५, १०, १५, १७, १९, ३१–३६, ४३–४६, ५६, ६७, ८१, ८२, ८७, ९०, ९१, ९७–१००
१९. रेवाप्रसादद्विवेदी	७, ८, ५५, ९७, १०२–१०४
२०. बिहारीलालशर्मा	२७, ६५, ८५
२१. शिवजीउपाध्यायः	६१
२२. शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी	५८, ७५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रावेशिकी

अथायं षष्ठो भागः कविभारतीकुसुमाञ्जलेः। अमुमुपस्थाप्य काशीपीठाधीश्वरजगद्गुरुशङ्कराचार्य - स्वामिश्रीमहेश्वरानन्दसरस्वतीपादानामाध्यक्ष्ये श्रीमृगेन्द्रकुमारचतुर्वेदमहाशयानां च मुख्यातिथित्वे २-५-७२ तिथौ सम्पादितषष्ठवार्षिकोत्सवा कविभारतीयं सप्तमं वर्षं प्रविश्य तत् सानन्दं प्रपूरितवती।

कुसुमाञ्जलेरस्मिन् षष्ठे भागे भारतीयं विद्यास्थानमिता अष्टादश समस्याः विषयाँश्च द्वित्रान् संगृह्णीते विविधानिच्छन्दांस्याश्रित्य प्रपूरितबन्धशेषाँस्तैस्तैर्द्वाविंशत्या कविमहाशयैः। समस्यास्वासु काश्चन चिरप्राचीनाः काश्चन च सामयिकात्मानः। 'महतीं महार्घतां' श्रीमन्तोऽत्र ३१, ३६-४० पृष्ठेषु गृहेष्विवैवानुभवेयुः। एवमेव वाल्मीकिकाश्यपतपोवनकवितसुतां रहसि सम्यगुपासीनः कालिदासदुष्यन्तोऽत्र ५५-पृष्ठत आरभ्य ६६-तमं पृष्ठं यावत् नूतनमेव शाकुन्तलं प्रयुङ्क्ते। 'धन्या ममेयं धरे'-ति वाणी भारतभूमिप्रीतिमुन्मेषयतितमामन्तःकरणक्षेत्रेषु सामाजिकानाम्। तत्र ७४-७५-पृष्ठयोः को नाम नाधुनिकः स्वरः संस्पृष्टो यमधिकृत्य ते ते ग्रन्थास्तैस्तैर्विरच्यन्ते समीक्षकैः। अन्यत्र च के वा ललितपरुषाः स्निग्धरूक्षा नोपसन्दानिता भावाः श्रुतिग्रामसमृद्धासु पद्यसंरचनासु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अयं पुनरस्य नूतनो विशेषो यदत्र श्लेषच्छटासुभगा गद्य-वन्धा अपि योजिताः, योजिताश्च नूतनतमच्छन्दोगीतिस्निग्धाः पद्यवन्धाः । ६४-६५ पृष्ठयोर्गद्यवन्धम्, ३२ पृष्ठ इव ८६ पृष्ठे सम्वोधनधना नूतनगीतिक्रमाश्च न नानुभावयेरन् ऽतिनवं प्रहर्षमभ्यन्तरीकृतनूतनरुचिरुचकेषु सुमनस्सु । 'लिप्साया विजृम्भितेन' प्रपूर्णकल्लेवरोऽयं भागो नूनं चक्षुरुन्मीलनपटिमानं पटु पटु प्रकटयन् संघटयतेतमां सर्वविधान् कान्तासम्मितान् उपदेश-पानकरसचषकान् । तानेतानभ्यन्तरीकर्त्तुमामन्त्रयतितमामार्यान्—

वैशाखपूर्णा २०३०
काशी

—सनातन· श्रीरेवाप्रसादद्विवेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभाशिषः

काशीपीठाधीश्वर-

जगद्गुरु-

श्री १००८ श्री महेश्वरानन्दसरस्वतीपादानाम्

❀

१.

सौहित्ये लघुसाहसीति सुधया धारासहस्राञ्चिता,
मृद्वीका-मदमर्दनं विदधती लीला-लताशालिनी।
सद्योमाक्षिक - चक्षुरीक्षणकला - लावण्यमालुम्पति
श्लाघ्या पञ्चमवार्षिकी मधुरिमोद्रेकोत्सवा बालिका॥

२.

गङ्गाभङ्गविभूति - वैभवभवोदात्ता - ऽवदानोत्सवा
खेलन्ती गिरिराजराजतनयोत्सङ्गाङ्ग-रङ्गाङ्गणे।
गीर्वाणोद्गुण - गौरवाञ्चितगिरा - मल्लासिनीभानने
बालश्रीर्मधुहास्यशैशवशुभा भद्रासने राजताम्॥

३.

खेलन्ती कलभैः कुरङ्गशिशुभिः प्रोड्डीयमानाम्बरे
गर्जन्ती मृगराजि - राजतरुणस्रोतःसहस्रार्चिता।
शृङ्गाणां निचये धराभृतिमतां हुङ्कारमातन्वती
गोष्ठी कापि महोत्सवैर्विजयते संमोदमानाऽनिशम्॥

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री जगद् गुरु-स्तवः

श्रीशंकराचार्य - जगद्गुरूणां
काशीस्थ-सिंहासन - शोभितानाम् ।
दण्डीश्वराणां वरकीर्ति - भाजां
पादाम्बुजं पूज्यवरं नमामः ।। १ ।।

प्रत्यक्षनारायणविग्रहाणां
शश्वत्परब्रह्म - समाधिभाजाम् ।
वेदान्त - सिद्धान्तनिरूपकाणां
श्रद्धायुतः पादयुगं प्रपद्ये ।। २ ।।

समुन्नतानन्त - महोदयश्री—
महेश्वरानन्द - यतीश्वराणाम् ।
द्वैतान्धकारक्षय - भास्कराणां
वन्दामहे श्रीचरणारविन्दम् ।। ३ ।।

साहित्य - सौहित्य - विभूतिभूम्नां
न्यायाब्धिमन्थाचल-वैभवानाम् ।
वशीकृतव्याकृति - सौख्यभाजां
संप्रह्वये श्रीचरणौ गुरूणाम् ।। ४ ।।

श्री भारतीर्वीमटतां जनेभ्यो
धर्मोपदेशामृत - वारिदानाम् ।
योगीश्वराणां तपसां निधीनां
विद्यागुरूणां प्रपदं प्रपद्ये ।। ५ ।।

—दीपनारायणशर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधुरी
धीमहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधुरी

न रमणीरमणीयतमेऽधरे न मधुरे सहकारफलेऽपि सा ।
विपदि सम्पदि तुल्यरसोत्सवा मिलति या कवितासु सुमाधुरी ॥

करतले कलिता कलितापहा मुरलिका मधुराधरचुम्बिता ।
ललितकेलिकलाभिरलङ्कृता जयति काचन माधवमाधुरी ॥

मृदुलमञ्जु-लतोत्कलिकाप्रसूः सुरभिवैभववर्धनतत्परा ।
कमलयाऽमलयानिललीलया सपदि नन्दति माधवमाधुरी ॥

मलिनकर्मशताहतसौभगा कुटिलताकुलटापहृतस्थितिः ।
जगति सम्प्रति नाद्रियते भृशं सुरगवी गलितामृतमाधुरी ॥

उदग्ररोषारुणलोचनप्रभं स्फुरन्नितान्ताधरपल्लवाञ्चलम् ।
वशीकरोत्याशु शुभाशयोद्गताद् वचःप्रसूनान्मकरन्दमाधुरी ॥

ऋजून् सुशान्तांस्तृणमात्रभोजिनो
वनौकसो मुग्धमृगान् मुनीनिव ।
प्रगृह्य कर्णौ प्रसभं यमान्तिके
नयत्यहो ! काचन नादमाधुरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असंख्यकामोज्ज्वलकान्तिवन्दिता
विलोचनानन्दसुधासमर्चिता ।
निपीततारुण्यमनोरथामृता
विभाति वृन्दावनमोदमाधुरी ॥

निरन्तरास्वादितनिम्बबर्बुरं
मरुस्थले दर्शितसद्गतिक्रमम् ।
क्रमेलकं मोदयितुं, क्षमेत किं
सुधारसार्द्रा सहकारमाधुरी ? ।

—रतिनाथझा

प्रसन्नकमलासनप्रियतमाकटाक्षच्छटा-
ऽनुकम्पितकवीश्वरामृतरसोर्मिकिर्मीरिता ।
पुरे पुररिपोरियं सुरभिला यशोविभ्रमै-
स्तनोतु सुमनोमुदं सुकविभारती-माधुरी ॥

दुरन्तभवचिन्तनामयदशा कृशा यद्वशात्
प्रशाम्यति कुशासनोद्भवदमन्ददोषव्रजः ।
नवीननयनिर्मलां परिणतिं मनोदर्पणो
बिभर्ति यदि सेव्यते सुकविभारती-माधुरी ॥

समुन्नतशिरोधरात्कविहिमालयादुद्गता
तरङ्गशतसङ्गता विपुलराजहंसाञ्चिता ।
चुचुम्बिषति सत्वरं सहृदयाशयाम्भोनिधिं
किमु त्रिपथगामिनी सुकविभारती-माधुरी ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधुरी

अधि-तरणि-तनूजा-तीर-नीप-द्रुमालि-
क्षपित-तिमिर–राशि–त्वींषि वासांसि धृत्वा ।
अभिसरणमिषेण द्वैत–संशीति-भेत्त्री—
जयति जयति राधा-कृष्णयोर्माधुरी सा ॥

अधरित-सुधा-सारा त्रिदिवौकसां रसलीलया
विषमित-रति - प्रीतिश्चेतोभुवस्तनु-शोभया ।
विगलित-सुख-प्रख्या ब्रह्माम्बुधावपि योगिनां
त्यजति हृदयं नैषा राधाप्रिय-प्रिय-माधुरी ॥

सुरद्रु-कुसुमावली-रचित-शेखरा, कामधुक्—
पयःकलशिकाशया कटि-विलम्बि-चिन्तामणिः ।
यदीय-गृह-देहली-परिचर-क्रिया-कामना–
पराध-भय-मूर्च्छिता रतिरिमां स्तुमो माधुरीम् ॥

यदध्वरजसां कणानमृतवर्षिभिस्तर्षिभि—
स्त्वदीय-पद-रोचिषे म्रदयति प्रकाशैः शशी ।
सुरद्रुविटपावली-शिति–वितान-गर्भ-स्थित—
प्रदोष-कनका-सना विजयतेऽम्ब ते माधुरी ॥

पुरारि-तपसि स्पृहां, बलमलम्बुषा-वासिनि
म्रदिम्नि, कलनापरां स्मरतिकर्मतां तां स्मरे ।
उदित्वर-विसृत्वर-ज्वरति-मात्र–पात्रायितं
रतौ च दधती जयत्यहह तेऽम्ब सा माधुरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदीय-समता-कला-लव-दिदृक्षया वासवो
विरिञ्चिशत-वार्षिकं तप उपादिताक्ष्णां वने।
अथापि च पुलोमजाञ्चलविमृष्टबाष्पः स्थितः
स्मरारिहृदयेशया जयति साम्ब ते माधुरी।

त्वदंघ्रि-लवमाधुरीं स्पृशति पद्मगर्भेऽपि यः
स्थितिं व्यधित वेदभूरि-ति स वन्द्यते पद्मभूः।
अहो नु खलु का कथा भवति तस्य यत्र स्मितं
शशाङ्क-कुमुदार्दनं विषयितां विधत्तेऽम्ब ते॥

कौमार्ये निज-कर-पालित-द्रु-पुष्पा—
ण्याघ्रातुं मधुकर-गेहिनी-प्रवृत्तौ।
पार्वत्याः कुमुदसिते मुखेऽरुणाया
माधुर्याः स्मरति समाधिना सदेशः॥

—सनातनस्य रेवाप्रसादद्विवेदिनः

•

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीमहि

अर्वाग् दिव ऊर्ध्वमस्या धरित्र्या
दन्द्रम्यन्तो यानि वयुनानि विश्वा ।
ओतं तेषु प्रोतमेकं च यत् तत्
तत्त्वं किंचिद् धीमहि ज्योतिराद्यम् ॥

आगच्छतां गच्छतामत्र मर्त्या
कूटस्थं यत् स्थाणु यच्चापि किंचित् ।
लोकालोकं भूध्रमावृत्य तिष्ठद्
ज्योतिष्कायं धीमहि ध्वान्त—हन्तृ ॥

यं वा सौम्यो वरुणो नो रुणद्धि
नो वा मित्रो न च भर्गः ककुद्मान् ।
यस्मै कस्मै चेकितानाय तस्मा
आयुर्विद्यां धीमहि श्येनशत्रुम् ॥

—सनातनस्य रेवाप्रसाद-द्विवेदिनः

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीमहि

गतं गतं केवलमद्य पश्यता - मनागतं नाल्पमपि प्रतीयते ।
वयं भविष्यत्समयेऽपि सुस्थितिं गिरो विधातुं हृदयेन धीमहि ।।

अजस्रदानार्द्रकरं मतङ्गजं स्तुवन्तु केचिच्चतुरङ्गिणीश्वरम् ।
वयं तु शक्तेरपि वाहनोत्तमं मृगाधिराजाद्भुतधाम धीमहि ।।

तीर्थानां महिमोज्ज्वलं बल - मलङ्कारं भुवो भासुरं
ब्राह्मं धाम परोपकारनिरतं श्रेयः समुन्नायकम् ।
कल्याणप्रवणं समर्पणपरं सीमन्तिनीनां महः
तेजः किञ्चन निर्मलं निरुपमं सारस्वतं धीमहि ॥

निर्व्याजाचरितं विदां सुरगवीसेवैकहेवाकिनां
कल्याणाय निरन्तरं श्रमवतां ब्राह्मीं स्थितिं ध्यायताम् ।
मर्यादापरिपालनाय सततं प्राणार्पणं कुर्वतां
धन्यानामिह भारते निवसतां सत्त्वं सतां धीमहि ॥

सम्राड्विक्रमहर्षभोजनिवहैरभ्यर्चितां निर्भरं
कौटल्यादिनयज्ञनन्दितपदां ब्रह्मर्षिभिः सेविताम् ।
वाल्मीक्यादिकवीन्द्रवृन्दमहितां श्रीनारदादिस्तुतां
वाग्देवीमतुलप्रभावभरितां श्रेयस्करीं धीमहि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये सांसारिकसौख्यचिन्तनमपि त्यक्त्वा परैर्दुस्त्यजं
संयम्यात्ममनश्चिरं गुरुकुलेऽकार्षुस्तपो दुष्करम् ।
तेषामुज्ज्वलमात्मबोधमतुलं भूतप्रभूतोदयं
वृत्तं पावनजीवनक्रम - मुदाहार्यं मनो धीमहि ॥

धर्मब्रह्मकथां धनाप्त्यभिनयप्रस्तावनां नूतनां
सम्मानार्जनपद्धतिं बुधजनाः प्रेम्णाधुनोपासते ।
तैस्तैरिङ्गितचेष्टितैरनुपमान् भक्तव्रजान् सज्जना-
नादातुं यजमानमोहनविधिं नित्यं नवं धीमहि ॥

—रतिनाथझा

गुर्वीभिर्न विकत्थनाभि-रमितामुर्वीतले स्वात्मनः
सत्कुर्वीमहि वैदुषीं परिमलस्पन्दानुमेयोदयाम् ।
नाऽसूयां हृदये दधीमहि महीदेवोपदेशस्पृशः
स्वान् दोषान् शमयेमहि श्रुतिमतं सत्यं परं धीमहि ॥

येनाऽग्राहि नमन्निलिम्पकरुणावश्येन विश्वात्मना
सिन्दूरारुणगण्डमण्डलमिलन्माद्यन्मिलिन्दं वपुः ।
छन्दः कन्दलितप्रभावमतुलस्तम्बेरमाकारितं
तत्प्रत्यूहवनद्रुमौघदलनं तेजः परं धीमहि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्ध्या यद्वसनायते दिनमणिर्यस्य प्रदीपायते
शीतांशुर्मुकुरायते वसुमती यत्पाद - पीठायते ।
वेदो यद्वचनायते परशिवोऽप्याज्ञाविधेयायते
यद्भक्तस्तिलकायते मतिमतां तद्दैवतं धीमहि ॥

—वटुकनाथशास्त्री खिस्तेः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणी
हा हतो मन्दभाग्यः
लक्ष्मीः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणी

मन्दस्मितेन कुटिलेन निरीक्षितेन
हावेन किञ्च ललितेन सुविभ्रमेण ।
रामापि नैवमुपदीकुरुते यमर्थं
तद् वैभवं वितनुते सुकवीन्द्रवाणी ॥ १ ॥

नो माक्षिकं, न सहकाररसो, न दुग्धं,
द्राक्षा न, मोदककुलं न, सुधासिते नो ।
माधुर्यमर्पयति यत् सरसे समाजे
तद् द्रागुपाहरति कोमलबालवाणी ॥ २ ॥

आमोदितेऽपि कुसुमोपचयैर्वनान्ते
नृत्योत्सवैर्विलसितेऽपि च वल्लरीणाम् ।
तावन्न नन्दतितरामृतुराजलक्ष्मी-
र्यावन्न वर्षति सुधां कलकण्ठवाणी ॥ ३ ॥

व्यर्थीकृतेऽपि नयने तिमिरागमेन
ज्ञानेन्द्रियेषु निखिलेष्वपि कुण्ठितेषु ।
संमूर्च्छितेऽपि जगतो व्यवहारजाते
सर्वार्थमानयति केवलमेकवाणी ॥ ४ ॥

दुर्दान्तदैन्यपरिमर्दित-मोदवृत्ते—
नैराश्यतापपरिशोषितसुस्मितस्य ।
दूनोत्सवस्य गृहिणोऽपि मुदं प्रसूते
कर्णे सुधेव रमणीरमणीयवाणी ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नैसर्गिको मधुरिमापि यथापयाति
दध्नोऽन्तिकात् सपदि पित्तलपात्रदोषात् ।
निन्द्या तथास्ति निजसेवकपापपुञ्जा–
दद्यानवद्यमहिमापि निलिम्पवाणी ॥ ६ ॥

जाड्यं निवर्त्तयितु-मुज्झितुमाशु कुण्ठां
सुप्तां प्रबोधयितुमेव वनान्तलक्ष्मीम् ।
माकन्दमूर्ध्नि नवमञ्जरिकां निधातु—
मभ्युद्गता भगवती मधुमुग्धवाणी ॥ ७ ॥

पुष्पैः सुगन्धसदनैः सुषमानिधानै–
र्नन्दन्तु मुग्धमधुपा इव केऽपि देवाः ।
किन्तूज्ज्वलैः सुमनसामभिमानकेन्द्रैः
कुन्दैरमन्दमुदितामुपयाति वाणी ॥ ८ ॥

प्रेम्णाधिरोहति दिवान्धतमानुलूकान्
सन्तिष्ठते कृपणसद्मनि यानुरागात् ।
सेवेन्दिराद्य यदि पूज्यतमा सुधीन्द्रै—
र्हंसासना किमधुना न दुनोतु वाणी ? ॥ ९ ॥

येषां शिरांसि मुकुटैर्न्नहि मण्डितानि
नाभ्यर्चितानि सुकुमारपदानि लोके ।
निष्किञ्चनानपि च तान् सुधियां समाजे
पूजास्पदं प्रकुरुते ललितार्थवाणी ॥ १० ॥

—रतिनाथझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हा हतो मन्दभाग्यः

उपचितमकरन्दां पद्मिनीं सानुरागां
परिमलललितास्यां मल्लिकां चापि भुक्त्वा ।
अनुपमसुषमाढ्यां वीक्ष्य चम्पामकम्पा—
मनुवदति मिलिन्दो हा हतो मन्दभाग्यः ॥ १ ॥

सुललितकवितायाः सत्पदन्यासलक्ष्मी—
र्जनयति रसिकानां चेतसि स्फीतहर्षम् ।
कुकविघटितवृत्तात् किन्तु चित्तेऽतिखिन्ने
प्रलपति हि सचेता हा हतो मन्दभाग्यः ॥ २ ॥

वियति गतिरुदारा वर्णकान्तिश्च तुल्या
द्विजकुलजनिरेकैवास्ति काके पिके च ।
जगति निजमहिम्नः किन्तु दृष्ट्वापकर्षं
रटति झटिति काको हा हतो मन्दभाग्यः ॥ ३ ॥

स्वमतिकृतसुयत्नैः शास्त्रतत्त्वावमर्शे
गुरुजनवचनानामात्मनि स्थापनेन ।
जगति विततकीर्त्तिः सन्नपि प्रान्तजाति-
प्रभृतिगुणविहीनो हा हतो मन्दभाग्यः ॥ ४ ॥

अधिकृतशुभशिक्षोऽप्यात्तसूपाधिपत्रो-
ऽप्यभिमतपदलाभे वञ्चितः स्वार्जवेन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरुणमणिरजस्रं हीनम नो विपन्नो
विलपति जगतीत्थं हा हतो मन्दभाग्यः ।। ५ ।।

—रतिनाथझा

●

सायं प्रातः किमपि कलयन्नात्मनः स्थानलाभं
मध्येघस्रं दिनकरकरैर्दूरतो वार्यमाणः ।
प्राप्याऽऽदेशं मधुनरपतेरेष भिक्षुर्जडात्मा
मन्दं मन्दं व्रजति शिशिरो हा हतो मन्दभाग्यः ।। ६ ।।

शीतेऽतीते सपदि चलितः पद्मिनीकेलिवापी-
मन्धीभूतः परिमलपरिस्पन्दमानो मिलिन्दः ।
गत्यावेगाद्विटपघटिते जालके कण्टकानां
भग्नोद्योगो विरहविधुरो हा हतो मन्दभाग्यः ।। ७ ।।

वित्ते वित्तेश्वरसमधिके लोकमानेऽतिमाने
संपन्नासु प्रमुखविषयास्वादनावासनासु ।
वृत्तिर्नान्तर्वलति भगवद्ध्यानसोपानमार्गे
यस्य स्तोकं जगति स नरो हा हतो मन्दभाग्यः ।। ८ ।।

नानादेशाटनपटुतया प्राप्तपर्याप्तवित्तः
सत्तारूढश्चिरविरचिताऽनेकलोकप्रपञ्चः ।
वाराणस्यां वयसि चरमे शास्त्रवेदी स्वभावाद्
दुर्नीतिं चेद् भजति बहुधा हा हतो मन्दभाग्यः ।। ९ ।।

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लक्ष्मीः

आमोदमर्पयति, शीतलतां तनोति
पद्मं विमुद्रयति पङ्कमपाकरोति ।
हंसं प्रसादयति, हर्षयति द्विजेशं
स्वच्छाशया शरदिव प्रमदाय लक्ष्मीः ॥ १ ॥

शीताधिकात्परमसंकुचिताङ्गवल्लीं
म्लाननां निहितमूकजनप्रवृत्तिम् ।
निस्तब्धतामुपगतां वनदेवतां किं
सुप्तां प्रबोधयति सम्प्रति कुन्दलक्ष्मीः ? ॥ २ ॥

आमन्त्रयत्यभिमतं मलयानिलं या
या कोकिलानुपदिशत्यभिधातुमुच्चैः ।
आम्रांश्च योजयति मञ्जुलमञ्जरीभिः
सा जृम्भते शिशिरकालिक-कान्तलक्ष्मीः ॥ ३ ॥

या भूमिकेव कुसुमाकरकान्ततायाः
सारस्वतापचितिमङ्गलजन्मभूमिः ।
उद्दामकाम-परमोत्सववन्दिता या
सा पाटलप्रणयिनी शिशिराङ्कलक्ष्मीः ॥ ४ ॥

या तीर्थराजगरिमाणमलङ्करोति
शम्भुं विवाहयति शैलपतेर्दुहित्रा ।
या होलिकां दहति, कुङ्कुमकम्रकेलि-
मुल्लासयत्यनुपलं शिशिरैकलक्ष्मीः ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्पादितां निरुपमां सुषमां वनान्ते
कान्तेन कौतुकवता शिशिरेण पूर्वम् ।
प्रख्यापयत्यथ नरेन्द्रनिसर्गवृत्त्या
स्वीयप्रभावजनितामृतुराजलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

दोषाकरं क्षयविवृद्धिपरं परस्यां
रक्तं समत्सरमशेषसरोजजाते ।
अह्नाय संत्यजति दुर्गुणमात्रसारं
संसारिणं जगति बन्धुमपीह लक्ष्मीः ॥ ७ ॥

शेषाहिभीषण - फणागण - मण्डलेन
संरक्षिता भगवता मधुसूदनेन ।
लोला बहिर्विचरणाय कृतावधाना
तत्पादमर्दनपरा किमु भाति लक्ष्मीः ॥ ८ ॥

मेधाभिधान - नवमन्दरमथ्यमान-
साहित्यसागर - तरङ्गभरैः परीता ।
कञ्चित्कटाक्षकलिता कविताऽभिधाना
कान्ताऽभ्युपैति पुरुषोत्तममेव लक्ष्मीः ॥ ९ ॥

—रतिनाथझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणी

१

शब्दार्थानामभेदः स्ववदनविवरे साध्यतां सूत्रभाष्यै-
र्यज्ञः श्रुत्यादिगम्यो बहुविधफलदः सेव्यतां भावनाभिः ।
ब्रह्माद्वैतञ्च सर्वं जगदिति परया भाव्यतां श्रौतबुद्ध्या,
संलापे मानतर्के विरहितमनसां कम्पते किन्तु वाणी ॥ १ ॥

२

शास्त्रे दक्षो विचारे प्रभवति कुशलो यो विपत्तौ हि धीरः,
वादं संवादशून्यं परमतभणितं मन्यते खण्डनाय ।
पक्षे साध्यं विधत्ते विपुलबलयुतं हेतुरूपञ्च वाक्यं,
लोके वेदे च शास्त्रे सततमिह सखे राजते तस्य वाणी ॥२॥

हा हतो मन्दभाग्यः

सौहार्देनैव भाव्यं प्रतिदिनमभितः प्रार्थ्यतां सैव वृत्तिः,
लोकेऽस्मिन् मानराशिं वितरति सततं मानवस्तस्य हेतोः ।
अन्यो दोषान् प्रयुङ्क्ते गणयति ननु तान् सज्जनो नैव चित्ते,
क्लिष्टो दोषेण दुष्टो वदति च समये 'हा हतो मन्दभाग्यः' ॥

लक्ष्मीः

ज्ञाता वक्ता कवीन्द्रो नमति तव सदा देवि पादारविन्दम्,
मिथ्याकर्माभिलाषैः कृतविवशमतिः प्रार्थये भावपूर्णः ।
पुत्रोऽयं तावकीनो सकरुणनयने ! रक्ष्यतां दृष्टिपातैः,
वित्तं पुत्रादियुक्तं विलसति विपुलं यत्र जागर्ति लक्ष्मीः ॥

—कीर्त्यानन्दझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणी

दुग्धक्षीरोदडिण्डीरधवलमहाराजहंसोपविष्टा
सङ्ख्यावत्तल्लजव्रातमधुपचयसंसेव्यमानाङ्घ्रिकञ्जा ।
गुञ्जज्झङ्कारवीणाक्वणितगुणगणाऽऽशिञ्जिताऽऽशान्तराला
विद्वद्व्रातैरुपास्या जयतु जयतु सा वाङ्मयी कापि वाणी ॥१॥

आलोलां कुन्तलालिं जघनपरिवृतां मेघवर्णां दधाना
शक्राद्यैर्देवराजैः प्रतिदिवसमपि स्तूयमाना समस्तैः ।
या विद्याधीश्वराणां विमलमतिमतामेकपूज्या सदैव
श्वेताम्भोजाधिवासा जगति विजयते चिन्मयी कापि वाणी ॥२॥

गीर्वाणव्रातरामावदनकमलजेगीयमानातिकीर्ति-
श्चञ्चच्चामीकरीयश्रवणयुगलताटङ्कशोभाभिरामा ।
सन्त्रस्तैकाब्दसारङ्गशिशुचपलदृष्टि कटाक्षैर्विलोलैः
न्यक्कुर्वाणा समन्ताद् गुरुकुचकलशा काऽपि सा भाति वाणी ॥३॥

वक्त्रेन्दो रश्मिवर्गैर्निखिलजगदिदं भासयन्ती, नितम्ब-
स्तम्भाऽऽभारश्लथाङ्घ्रिर्मुकुटमणिगणोद्दीप्रमौलिप्रकोटिः ।
हर्षान्मोमुद्यमाना कविकुलकलितस्तोत्रमाकर्ण्य तूर्णं
भव्या भूरिप्रभावा किसलयचरणा पातु सा कापि वाणी ॥४॥

श्वेताङ्गी श्वेतवस्त्रा सितमयमिव सर्वं सदा कल्पयन्ती
हस्ताम्भोजद्वयाभ्यां तदमयवरदाभ्यामुभाभ्यां समेता ।
पादस्वर्णारुणाम्भोजयुगलरुचिभी राजिता रम्यभावा
विद्वद्वृन्दैकवन्द्या सपदि मनसि मे राजतां काप्यमन्दा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्यक् पेपीय्यमानश्रुतिरसकविपोपूज्यमानाङ्घ्रिकञ्जा
विद्याविद्योतितान्तःकरणजनमनःपक्षराजीमराली ।
वीणातुम्बद्वयेनेव झटिति किल विद्योदधिं तत्तु कामा
वन्द्याऽनिन्द्याप्यमन्दा विलसतु वदने सत्वरं कापि वाणी ॥

न्यक्कुर्वद् यत् सरोजं किल विमलतया पादयुग्मं तवाम्ब
स्तोतुं तन्मादृशः कः प्रभवतु खलु सिद्धौघवृन्दैकवन्द्ये ।
क्षन्तव्यो ऽतोऽपराधो भगवति तु कुबुद्धिः कदाचित्सुतः स्यात्
नो माता क्वापि जाता कुमतिरयि दयार्द्रे सदोदारशीले ॥

हे मातस्त्वत्पदाम्भोजयुगलनिकटेऽह्निशं सारभूते
बालं लोलालकं मामनवरतमयेऽमुं हि रोरुद्यमानम् ।
मुग्धास्यान्निर्गतैस्तैरतिमसृणपदौघैर्लुठन्तं समन्ताद्
मा रोदीः पुत्र मा मामिति सुमुखि कदाधास्यसि ब्रूहि वाणि ।

—मनुदेवभट्टाचार्यः

देवासुराधिपतिपूजितपादपद्मा
धन्या सदा सलिलनाथसुतास्ति पद्मा ।
यस्यास्तु नाम महितं, यदपेक्षयैव
शोभास्पदस्य कथनं भवतीह लक्ष्मीः ॥ १ ॥

स्वर्णारुणाम्बुजयुगोदरसोदरैस्तै-
र्मातस्त्वदीयपदपद्मपरागरागैः ।
देवाङ्गनागणशिरःकुसुमार्चितैस्तै-
र्वर्ण्येतरा ध्रियत एव हि कापि लक्ष्मीः ॥ २ ॥

लक्ष्मि, त्वदीयचिकुराननेत्रकर्ण-
नासापयोधरकपोलनितम्बगुल्फे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सौन्दर्यराजिजितसर्वमनोज्ञभावे
लक्ष्मीमये सति सदा त्वमतोऽसि लक्ष्मीः ॥ ३ ॥

लक्ष्मि, त्वदीयरुचिरावयवस्य लक्ष्मीः
किं ब्रूमहे वयमहो भुवि भारभूताः ।
मातस्तु पश्य, तव वर्णनवर्णपूर्णः
पर्यायियुक्त इह शब्दवरोऽस्ति लक्ष्मीः ॥ ४ ॥

देव्यस्तु ताः किमु न सन्ति समाः समर्था-
स्तद्वाचकाः कति न सन्ति बहुत्र शब्दाः ।
धन्योऽस्ति हे जननि यत्तव वाचकोऽयं
शोभामिमामभिदधाति च कापि लक्ष्मीः ॥ ५ ॥

मातस्त्वदीयपदपद्मपरागपुञ्जे
गुञ्जन्मरालरवजित्वरनूपुराढ्ये ।
सम्पूर्णवैभवकदम्बसमादृतेऽस्मिन्
भूयो ममास्तु नतिनन्दनपुष्पलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

स्वर्गापगाकनककोकनदाभिरामा
किं रक्तचन्दनमहाद्युतिवर्णपूर्णा ।
सत्पल्लवालिदलतल्लजलोललीला
लक्ष्म्याः पदाम्बुजयुगस्य विभाति लक्ष्मीः ॥ ७ ॥

मातः सुरेश्वरशिरोधृतपादलक्ष्मि
भूयो विभाति धरणीवलये समन्तात् ।
प्रातः प्रफुल्लशतपत्रपवित्रपत्र-
पात्रावलीपथपदद्वयपद्मलक्ष्मीः ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्योऽभवत्किल पुरा सलिलाधिनाथो
मातः प्रसूय भवतीं जगदेकलक्ष्मीम् ।
नो चेत्प्रसूय च चतुर्दशरत्नमूनं
लोका वदेयुरुदधेर्नहि कापि लक्ष्मीः ॥ ९ ॥

सर्वाङ्गसौरभभरान्वितचारुदेहां
म्लेच्छाधिराजतनयां परिणीय तूर्णम् ।
गङ्गाधरादिकसुचारुनिबन्धनाढ्या
भूयो विभाति भुवि पण्डितराजलक्ष्मीः ॥ १० ॥

यो नाटकप्रणयनच्छलतः समस्तं
रामायणं जनकजाकरुणालयाढ्यम् ।
जग्रन्थ तूर्णमपि नूत्नरसप्रभावं
भूयो विभाति भुवने भवभूतिलक्ष्मीः ॥ ११ ॥

—मनुदेवभट्टाचार्यः

वाणी

या गद्यवर्णपरिवर्णनतत्पराऽथ
पारे गिरां च मुदमावहति प्रसन्ना ।
कादम्बरीरससुधाभरितापि हर्षं
चक्रे ममास्ति शरणं ननु बाणवाणी ॥ १२ ॥

या भारवेर्द्युतिमहो परिभूय भूय-
स्तां भूयसीं सुकवितां विदधाति लोके ।
तां सार्थशब्दमहितामहितापहन्त्रीं
भूयो भजामि भुवि कामपि माघवाणीम् ॥ १३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संश्रुत्य यां सपदि हा कविनागपाशाः
स्वच्छिद्रराजिषु भिया प्रविशन्ति हन्त ।
मेघं विना मिहिरदर्शनतोऽपि नृत्येत्
सा कापि भाति भुवि चारुमयूरवाणी ॥ १४ ॥

श्रीविश्वनाथ - पदपद्म - मधुव्रतानां
हस्ताब्जमध्यबदरीकृतवाङ्मयानाम् ।
साहित्यसंस्कृतधियां कविताङ्गनाना-
मेषां विभाति विदुषामपि काव्यलक्ष्मीः ॥

वाणी लक्ष्मीः स्वगुरुकृपया यस्य ते स्तः स धन्यः
किं वा वाणी श्रमकरणतः सोऽपि धन्यो मनस्वी ।
लक्ष्मीर्यस्यास्ति विभवबला सोऽपि मानीह धन्यो
हन्तैकं यस्य न भुवि पशुर्हा हतो मन्दभाग्यः ॥

—मनुदेवभट्टाचार्यः

सत्येन गाङ्गेन जलेन धन्या
त्यागेन कालिन्दजलेन मान्या ।
शमेन सारस्वतकेन रम्या
वाणी त्रिवेणी सुलभास्तु नम्या ॥

वाणी-त्रिवेणी यदि सेविता स्यान्-
माघेऽत्र काश्यामपि संस्थितेन ।
अघे कदापीह पतेन्न तर्हि
प्राणी प्रपञ्चाञ्चितभूरितापे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कश्चिन्माघे मेघसङ्क्रान्तसूर्यं
श्यालं द्रष्टुं चित्रवेषः समुत्कः ।
गच्छन्मार्गे पिच्छिले तस्य पार्श्वे
मग्नः पङ्के हा हतो मन्दभाग्यः ॥

प्रशस्यते कैरपि भाग्यलक्ष्मीः
सम्मान्यते कैश्च वसन्तलक्ष्मीः ।
विशेष्यते कैरपि रूपलक्ष्मी-
राश्रीयतेऽस्माभिरुमेशलक्ष्मीः ॥

—जनार्दन-गङ्गाधर-रटाटे

लक्ष्मीः

आकाशतत्त्वमखिलेषु यथा घटेषु
विद्युद् यथा जलमयेषु बलाहकेषु ।
वह्निश्च दारुषु विभाति यथा, समेषां
विद्योतते हि हृदयेषु तथैव लक्ष्मीः ॥ १ ॥

आधारचक्रभुवने मृदुलास्यरक्ता
सम्प्राप्य ताण्डवकला-कुशलैकदेवम् ।
निर्माति लोकमखिलं जनजन्मदा या
तां त्वां नतोऽस्मि विमलां समयाख्य-लक्ष्मीम् ॥ २ ॥

हर्षातिरेकरतया स्मितरेखया ते
सम्भासिताः सतपनाः शशितारकास्ताः ।
सञ्चारितं च सलिलं पवनोऽनलोऽपि
सम्फुल्लिता मधुलता-तरुवृन्दलक्ष्मीः ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूर्योऽपि दीव्यति दिवा निशि शीतरश्मि-
नंक्षत्रयूथसहितो जगदीशलक्ष्मि ।
किन्तु त्वदीयममलं वदनं विनाद्य
लोकोऽन्धकारविकलः परिदृश्यते मे ॥ ४ ॥

वृक्षोऽस्मि नीरसवपुर्विलपामि देवि
हैमन्तकालमथितोऽस्मि सदा नतोऽस्मि ।
संरक्ष लालय च मां नवपत्रपुष्पै-
र्भूत्वा त्वमेव सफला मधुमासलक्ष्मीः ॥ ५ ॥

—विहारीलालशर्मा 'विकासः'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महती महार्घता
गणेशः
जीवितम्
विजयते
वाताः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महती महार्घता

वनस्पते - रद्यतन - प्रचारणाद्
घृतं मृतं गोपकुमारभारते।
पयोऽप्यपायाभिमुखं प्रवर्तते
प्रवर्धते यन्महती महार्घता ॥ १ ॥

घृतस्य दुग्धस्य कथापि केवलं
व्यथामजस्रं तनुते प्रजास्वलम्।
न लभ्यतेऽन्नं जठराग्निशान्तये
कुतोऽभ्युपेता महती महार्घता ॥ २ ॥

न भेषजं नापि जलं न भोजनं
न वस्त्रमप्यद्य सुलभ्यमस्ति नः।
समाजवादस्य गुणानुवादना-
दुपस्थितैषा महती महार्घता ॥ ३ ॥

पयो न विदन्ति निकाममर्भका
न वा युवानो मुदितामुपासते।
न तूलगर्भं स्थविरा हिमागमे-
ऽप्यहो लभन्ते, महती महार्घता ॥ ४ ॥

प्रयत्नशीलेऽपि जनानुमोदिते
प्रशासने सा सुरसेव निष्कृपा।
मुखं विवृत्योत्सहतेऽद्य भक्षितुं
जनं कपीन्द्रं महती महार्घता ॥ ५ ॥

रिपूत्तमाङ्गं चरणेन मृद्नती
रणाङ्गणे या विजयश्रियार्चिता।
विजित्य तामप्युदितांशुमिन्दिरां
हसत्यजेया महती महार्घता ॥ ६ ॥

—रतिनाथझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणेशः

कल्याणकामपुरुषार्चितपादपद्मः
पद्मालयाधिकृत - दुर्लभभाग्यहेतुः ।
सेतुः स्वधर्मजलधेर्विजयस्य केतु-
र्दूरीकरोतु दुरितानि सतां गणेशः ॥ १ ॥

विद्यामवद्यरहितां ललितां कलां च
पादाम्बुजार्चनवते वितरन् सलीलम् ।
अत्यन्तशस्तमपि वस्तुचयं ददानो
दानोदकोर्जितमुखो जयताद् गणेशः ॥ २ ॥

मन्दारहारविगलन्मकरन्दबिन्दु-
संरञ्जिताङ्घ्रिकमलार्पितदिव्यगन्धः ।
आमोदमेदुरमिलिन्दकुलस्तुतो वः
प्रस्तौतु दुर्लभसुखानि सदा गणेशः ॥ ३ ॥

मातुर्गिरीन्द्रदुहितुर्मुदितां चतुर्थ्यां
तिथ्यां निजागमनकौतुकतो वितन्वन् ।
आपादयत्वभिमतं पुरुषार्थसार्थे
तुर्यं तुरीयरसिको भगवान् गणेशः ॥ ४ ॥

ईशा न सन्ति कति शक्तिसमृद्धिभाजो
भक्ताय याचितफलानि समर्पयन्तः ।
याच्ञापराङ्मुखजनाय परन्तु भुक्तिं
मुक्तिं च केवलमुपाहरते गणेशः ॥ ५ ॥

—रतिनाथझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवितम्

न निर्भरं हर्षमुपास्महे वयं
लभामहे नो सुहृदं विमत्सरम् ।
सुखं न शान्ति न मनोरथागमं
नितान्तमेतन्मृतमेव जीवितम् ॥ १ ॥

श्वसन्ति भस्त्रा इव मानवा नवाः
पशुप्रवृत्त्या विचरन्ति भूतले ।
परापकार - व्रतशालिनो - ऽधुना
वहन्ति लोकक्षयहेतु जीवितम् ॥ २ ॥

धनेन धन्येन जनेन सङ्गतं
सदा सदाचारविचारचर्चितम् ।
नितान्तमार्द्रं करुणामृतोक्षितं
सतां समुत्कर्षमुपैति जीवितम् ॥ ३ ॥

न येन लोकस्य सुखं विवर्धितं
न चापि शीलं हृदये सुरक्षितम् ।
न चार्जवं येन जवेन नन्दितं
निरर्थकं तस्य नरस्य जीवितम् ॥ ४ ॥

प्रसादमासादयते मनोरमं
वचश्चमत्कारमयं निरामयम् ।
सचेतसश्चेतसि यस्य सत्कवेः
सदाभिनन्द्यं भुवि तस्य जीवितम् ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अखण्ड - पाखण्ड - विखण्डनेहितु-
निसर्गतो निर्मलचारुचेतसः ।
परोपकाराय समर्पितात्मनो
फलत्यलभ्यानि फलानि जीवितम् ॥ ६ ॥

•

विजयते

तृणीकृत्य प्राणान् निखिलसुखमुत्सृज्य जनुषो
गृहीतं स्वातन्त्र्यं प्रबलतमवैदेशिकनृपात् ।
वदान्यैः सम्मान्यैरनुपमतपोभिः सुचरितै-
रुपानीतं स्फीतं तरुणगणतन्त्रं विजयते ॥ १ ॥

सतां सद्भाभावादनुचितकथोत्थापनभया-
दवाच्ये मूकत्वादपकृतिविधानेऽतिविमुखात् ।
छलानङ्गीकारादनृतपिशुनत्वादिरहितात्
खलानां पाण्डित्यं प्रतिदिशमिदानीं विजयते ॥ २ ॥

प्रशास्तॄणां मौनादसितविपणीनां प्रचलना-
दसन्तोषाद् यूनां विघटनपराणां समुदयात् ।
विमुक्त्यै दारिद्र्यान्मधुरवचनोद्घोषकलना-
दिदानीं कुण्ठाया भरतभुवि नृत्यं विजयते ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समृद्धानां लोकायतमतपराणामुपचयात्
तपस्यायास्त्यागान्मठपतियतीनामुपगमात् ।
अनाचारोत्कर्षान्मदनमदिरारम्भजनिताद्,
इदानीं देशेऽस्मिन् किमपि नववृत्तं विजयते ॥ ४ ॥

प्रमादस्योत्कर्षः परिभवकरो दर्पदहनो
युवत्याः संक्षोभो दयितमरणाद् वृद्धिमयते ।
पदार्थानां मूल्यं स्पृशति गगनं दैन्यजननं
प्रभावस्त्वत्याज्यो जयवति समाजे विजय ! ते ॥ ५ ॥

कृतार्थप्रायेऽपि स्थविरविदुषि द्वेषरहिते
पदन्यासे सूक्तेः सरसमनसां प्रौढनिवहे ।
विभिन्नेऽप्येकस्मिंल्ललितकविताप्रेमनिरते
समाजे संस्थानं किमपि कमनीयं विजयते ॥ ६ ॥

वाताः

विज्ञैर्जगत्प्राणतया प्रतीताः प्राणान् हरन्त्यल्पबलस्य जन्तोः ।
हिमस्य पातात् तु हिमाचलान्ते तुषारसंसर्गतयाऽद्य वाताः ॥ १ ॥

कुर्वन्तस्त्रस्तचित्ताननुपदमतुलं वेपमानान् दरिद्रान्
वृद्धान् पर्याप्तवस्त्रानपि निशि शयितानाशु सङ्कोचयन्तः ।
अस्थ्नामन्तर्विभेदं जनयितुमुदितास्तीक्ष्णबाणाग्रकल्पा
अल्पप्राणान् परेतान् विदधति नितरां हन्त ! हेमन्तवाताः ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रालेयाद्रेः पुरस्तादपहृततुहिना निर्भरं पीनपीना
दीनानां भाग्यदोषादुपचितविभवा जाड्यतो जातदोषाः ।
अद्यत्वे सापराधानपि निजदयितान् प्रत्यनाक्रोशभाजो
वाता वा ता रजन्यो युवतिजनहृदो मानमुत्सारयन्ति ॥ ३ ॥

साम्यादसीममुदितामुपपादयन्ति
ये प्रत्यहं सकलसौख्यनिदानभूमिम् ।
उत्पाद्य रोगनिवहान् विषमास्त एव
व्यापादयन्ति मनुजान् कफपित्तवाताः ॥ ४ ॥

उद्दामविभ्रमवशान्नितरामसार-
वस्तून्यवन्यममितान्यपि नर्तयन्ति ।
उत्कम्पयन्ति, रजसा परिपूरयन्ति
वामा इवाक्षियुगलं सुदृशोऽपि वाताः ॥ ५ ॥

—रतिनाथझा

न काव्यधारासु मनोऽवगाहते,
न लीयते शास्त्रविचारसंहतौ ।
न वा रतिर्गानकलाविलासिते,
विचिन्तितैका महती महार्घता ॥

कथं भवेदन्नमहो कथं तथा
पटः कथङ्कारमहो चिकित्सितम् ।
इतीव चिन्तापरिवृद्धिमन्थरं
करोति दैन्यं महती महार्घता ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सितापणे वस्तु न लभ्यतेऽधुना-
ऽसितापणे किन्तु सुलभ्यमस्ति तत् ।
दिने दिने वर्धत एव शाश्वती
दुरत्ययेयं महती महार्घता ॥

विहन्यते लोकहिता विमर्शिता
निरङ्कुशः श्रेष्ठिजनोऽभिषिच्यते ।
समेधते शासनतन्त्रपोषिता
दुरत्यया सा महती महार्घता ॥

कथं विनश्येयुरथाततायिनः
कथं च सामान्यजनोऽभिवर्धताम् ।
असौ विचारानलजृम्भिका भृशं
समेधते चेन्महती महार्घता ॥

यद्दुःशासनमत्र सम्प्रकुरुते चेलाञ्चलाकर्षणं
भीष्मद्रोणपथानुगेषु पुरतस्तिष्ठत्सु सर्वेष्वितः ।
पाञ्चाली जनता यदा परवशा भीता भृशं वेपते,
ताटस्थ्येन समास्थितं तदपि किं भो जीवितं जीवितम् ॥

—कमलेशदत्त त्रिपाठी ।

काव्यच्छटाच्छुरितकौशलकीर्ति-रूपा-
लङ्कारलक्षण-गुणादिरसाभ्युपेता ।
व्यङ्ग्यार्थ-लक्ष्यपरिपूरित - पेशलाऽथ
सा भारती विजयते कविगोष्ठिरूपा ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गङ्गाधरस्य तनयः सुमुखस्त्रिणेत्रो
विघ्नव्रजापहरणप्रवणो गजास्यः ।
सिन्दूरपूर - परिपूरित - दिव्यकायो
भद्रं करोतु सततं भगवान् गणेशः ॥ २ ॥

गृहे न चान्नं वसनं न गात्रे
मुखे न ताम्बूल - सुवीटिकापि ।
निमन्त्रणं क्वापि न लभ्यते तन्-
मन्येऽभ्युपेता महती महार्घता ॥ ३ ॥

दुग्धस्थाने स्थितं चायं
घृतस्थाने तु डालडा ।
सिताऽस्ते यूरियामिश्रा
सर्वमेतन् - महार्घता ॥ ४ ॥

शिवदत्तेन या सिक्ता रतिनाथेन वर्धिता ।
ललिता कमलेशेन कल्पवल्ली कवेर्जयेत् ॥ ५ ॥

—माहेश्वरझा

हा हन्त सा वह्निशिखा यथैव लेलिह्यते भीषणराक्षसीव ।
एषापि दुर्दान्तपराक्रमाढ्या जगत्समग्रं महती महार्घता ॥ १ ॥

अहर्दिवं सम्परिपूर्यमाणाऽप्यपूरिता यां गगनावलीव ।
कृत्स्नं जगत्स्वोदरपूर्तिहेतोर्जेघ्नीयते हा महती महार्घता ॥ २ ॥

हा मानवानां गृहिणीसखानामाहार्यचिन्ताऽन्वितमानसानाम् ।
कौलं सुखं नाशयितुं प्रबुद्धा किं स्वैरिणीयं महती महार्घता ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्यापि कान्तापरिलिङ्गिताङ्गाः
सुरा-समास्वादन-मीलिताक्षाः ।
भूयोऽपि सम्भोगभुजो हि भोगिनः
पश्यन्ति नो तां महती महार्घताम् ॥ ४ ॥

दोदुल्यमान-द्वयकुम्भनम्रा
सीत्कारभिन्ना-ऽधरमञ्जुलोष्ठाः ।
विहाय रामा नयनाभिरामाः
किं ब्रूथ बृद्धाः महतो महार्घता ॥ ५ ॥

नितम्बभार-स्खलितोपचाराः
हाराभिराम-स्तनभूधराढ्याः ।
आगुल्फकेशा मदनैककोशाः
विहाय का ते महती महार्घता ॥ ६ ॥

सङ्केत-मञ्जुस्थल-संश्रिताया
विलम्ब-दुःखान्वित-मानसायाः ।
पादप्रहारा-ऽर्जितविक्रमायाः
भजस्व ताः स्यान्महती महार्घता ॥ ७ ॥

प्रोत्तुङ्गपीनस्तनमर्दिता ये
नाभी-परोदर्शनहर्षिता ये ।
मुखाब्जपीयूषमधुव्रता ये
नो हन्ति तान् भो महती महार्घता ॥ ८ ॥

रत्तार्थ-माविष्कृतविक्रमा ये—
निशावसान-श्रमशैथिला ये ।
कटाक्षसम्पात-समर्चिता ये
किं हन्ति तान् भो महती महार्घता ॥ ९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा जले स्याद्घृतबिन्दुसंस्थितिः
तथाऽभवत् सर्वगुणः प्रशासने ।
परं यथा हन्त तु तैलविप्रुट्
प्रवर्धते सा महती महार्घता ॥ १० ॥

जेगिल्यमाना जगदेव साम्प्रतं नक्तं दिवं सा सुरसाननं यथा ।
हा जीवितं नः प्रभवेत् कथं भो संवर्धते चेन्महती महार्घता ॥ ११ ॥

भूयो गलद्गलजदाननिदानमानः
शश्वत्स्वभक्तपरिरक्षणशिक्षितश्च ।
गण्यैर्गुणैर्विजयते खलु दिक्करीव
श्रीमन्महीधरसुतानुमतो गणेशः ॥ १२ ॥

माघे मासे क्व नु खलु गतः शीतभीतः खरांशुः
वह्निर्मन्दोपकरणहृतो हन्त शैथिल्यमाप्तः ।
एवंभूते जगति सकले शीतले पश्य चित्रं
कान्तास्पर्शादहह तु सपद्यौष्ण्यमाप्ता हि वाताः ॥ १३ ॥

समन्तादुत्तुङ्गस्तनगहनसञ्चारकुशलो
मुहुर्नीवीबन्धोद्धरणकरणोन्मत्तविभवः ।
ततः पश्चात्पाशाभिनयनयसोल्लासगुणितः
समाख्यापन् पौस्नं भुवि विजयते कामुककरः ॥ १४ ॥

—मञ्जुदेवभट्टाचार्यः

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरद्
देवीस्तुतिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी-स्तुतिः

दुर्वारमारमकराक्रमणात् क्षताङ्गः
क्रोधोत्तरङ्गनिकरैर्भृशमर्दितोऽहम् ।
लोभादिघोरजलजन्तुकृतप्रहारः
संसारसागर इहाहतचेतनोऽस्मि ॥ १ ॥

मज्जन्तमत्र सुचिरेण निरीक्षमाणा
नोद्धर्तुमिच्छसि कथं व्यथितं जनं माम् ।
किं मे प्रतीपदुरिताचरितं स्मरन्ती
नैव द्रवस्यनुपदं सदयाऽपि मातः ! ॥ २ ॥

जन्मोत्तमे द्विजकुले, विभवं न चाल्पं,
स्वस्थं वपु–र्गृहमलभ्यसुतादिपूर्णम् ।
विद्वत्सु मानमपि दुर्लभमाप्य मात-
स्त्वां न स्मरामि वरदां निजपापपुञ्जात् ॥ ३ ॥

कामं विनिन्दितदुराचरणादिपङ्क-
संसक्तमुज्झतु शुचिः सुकृती जनो माम् ।
लिप्तं जुगुप्सितमलैरमलान्तरेण
त्याज्यं सुतं न जननी त्यजतीह किन्तु ॥ ४ ॥

सत्कर्मसम्पदखिलापहृताऽस्ति भोगै-
र्नोपासनार्थकणिकापि करे ममास्ति ।
दुर्बोधदग्धहृदयस्य न संविदेव
मातस्त्वमेव शरणं मम वर्तसे तत् ॥ ५ ॥

यद्भ्रूविलासवशगश्चतुराननोऽपि
नित्यं विचित्रतमसर्गविधौ प्रवृत्तः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तामादिदेवविनतां निखिलप्रपञ्च-
निर्माणकौशलधियो जननीं नमामः ॥ ६ ॥

ब्रह्माण्डरक्षणविधौ सफलत्वमाप्तुं
नारायणोऽपि कमलामवलम्बते यत् ।
तत्ते प्रसादमधिकृत्य कृती स देवो
लोकानवत्यनुपमाहितशक्तिपुञ्जः ॥ ७ ॥

त्वत्साहचर्यवशतः स शिवोऽपि साक्षात्
स्पन्दाक्षमां स्वशवतामपहातुमीष्टे ।
तस्मादसीममहिमा स हिमाद्रिकन्या-
कान्तः समस्तभुवनैरभिवन्दितोऽस्ति ॥ ८ ॥

शक्त्या तवैव तपनस्तपति प्रकामं
ज्योत्स्नासुधाभिरनुलिम्पति विश्वमिन्दुः ।
सिन्धुर्बिभर्ति सलिलं पवनः प्रवाति,
वैश्वानरो ज्वलति सुस्थितिमेति भूमिः ॥ ९ ॥

मातस्तवैव करुणाललितैरपाङ्गै-
रिन्द्रादयोऽपि महिमानमुपार्जयन्ति ।
ध्यायन्ति तत्त्वममलं हृदये मुनीन्द्रा
गायन्ति सामकुशलाः परमात्मकीर्तिम् ॥ १० ॥

शक्तिस्त्वमेव बलिनां, यमिनां तपस्या,
विद्या परा मतिमतां कविता कवीनाम् ।
पद्मालया धनवतां, महतां मनीषा,
सिद्धिः सतां, सुमनसां मुदिता विभासि ॥ ११ ॥

—रतिनाथझा

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरद्

वनान्ते दूर्वाया हरितपरिधानेन सुभगां
तुषाराणां हारावलिमिव दधानां वसुमतीम् ।
प्रसूनानां पुञ्जैरुषसि शरदारम्भदिवसे
प्रफुल्ला शेफाली ललितललिताभ्यर्चैतितराम् ॥ १ ॥

कुमुद्वत्या हासैः, परिमलविलासैः सुमनसां,
स्फुरज्ज्योत्स्नाजालोच्छलितधवलिम्ना च पयसाम् ।
द्विजानामारावैर्मधुरमधुरैः स्तोत्रनिवहै-
र्निशान्ते गायन्ती शरदवनिमामोदयति किम् ? ॥ २ ॥

पयोदानां शुभ्रैर्लसति शकलैरम्बरवपुः
पयोभिश्च स्वच्छैर्वहति सुषमां कामपि धरा ।
सुधांशोरुल्लासैर्धवलललितोत्फुल्लकुमुदै-
र्विजेतुं द्यौर्भूमिं दिवमपि च भूमिः प्रयतते ॥ ३ ॥

नवैरन्नैर्दैन्यादवसि सकलान् कर्षकगणान्
प्रवीराणां सैन्यैररिकुलविनाशं वितनुषे ।
अमर्यादं यान्तीं नियमयसि कूलेषु सरितं
धरित्री-सैरन्ध्र्या रचयसि च नेपथ्यमतुलम् ॥ ४ ॥

वृतं मेघैर्मित्रं कलयसि सहस्रांशुमचिरात्
सुधास्यन्दैरिन्दोः स्नपयसि रसां पङ्कमलिनाम् ।
कृतातिथ्यं प्रीत्या मदयसि नवं खञ्जनकुलं
दिशामास्ये हास्यच्छविमभिनवां त्वं प्रकुरुषे ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पितृणां सन्तृप्तिं प्रथममभिसन्धाय रुचिरां
जगन्मातुः पूजां तदनु विवृणोषि स्फुटतया ।
महालक्ष्मीं दीपावलिभिरभिनन्दस्यभिमता-
मुपेन्द्रं निर्निद्रं द्विजमधुरगीतैः प्रकुरुषे ॥ ६ ॥

निराकर्तुं पापं रघुकुलमणीनां विजयिनीं
रसैः श्रद्धां लीलामभिनयसि कृष्णस्य च शुभाम् ।
महाशक्तेः पीठान्यपचितिशतैरुज्ज्वलयितुं
समुल्लासान् कांश्चित् प्रकटयसि सर्वत्र भुवने ॥ ७ ॥

—रतिनाथझा

(१)

नव्याम्बुवैभवभरोन्मदतां गतेन
गर्जारवेण मदनेन वियोगभाजाम् ।
कष्टं त्वयार्पितमतो घन तस्य पाकः
श्वेतं गतो भ्रमसि शून्य इवाद्य खिन्नः ॥

(२)

रे जिह्मग प्रिय तवाद्य न नर्तनस्य
नो वा ध्वनेः कलकलस्य विभाति कालः ।
आस्तेऽधुना धवलपक्षसमाश्रितानां
रम्यस्वनो विततहंसकदम्बकानाम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३)

शुभ्राम्बरा घनकचानवलम्बमानान्
संहृत्य दर्शितसुधांशुशुभाननश्रीः ।
आदाय पद्मपरिपूर्ण - तडाग - पात्रं
भक्त्यार्चितुं शरदुमां समुपागताद्य ॥

(४)

सर्गादेव सतां प्रतीतिपदवीमेतत्प्ररूढं स्थितं
यत्कान्तिं प्रविहाय नैव सुचिरं शान्तिः समासाद्यते ।
तस्मादद्य तथा बलं कविवचः स्वाधीयतां सत्वरं
येनाङ्गारकुलं निरर्गलमलं सृष्टं भवेच्छारदे ॥

—गोविन्दपाण्डेयः

●

शरद्वर्णनम्

कालाम्बुधिं सपदि तर्त्तुमना विरिञ्चि-
राविश्चकार नितरामृतुराजिसेतुम् ।
व्यर्थोऽभवन्निजपरिश्रम इत्यवेक्ष्य
साफल्यमाप्तुमकरोच्छरदं सयत्नः ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान्ताधरामृतरसाम्बुधिमन्थनोत्थः
सोन्मादरम्य रमणीमणितातिहृद्यः ।
नृत्यत्पदाम्बुरुहनूपुरचारुशब्दः
प्राप्तः शरत्समय एष मनोऽभिरामः ॥ २ ॥

रम्यद्विजद्युतिमनोज्ञसुधांशुवक्त्रा
राजत्पयोधरघटा विमलाम्बरा च ।
सोन्मादपान्थयुवहृन्मथनाभिरामा
प्राप्ता शरन्नववधूरिव सर्वभोग्या ॥ ३ ॥

चेतोहरा समयपुष्पपवित्रभोग्या
चन्द्रानना युवमनोहरणप्रवीणा ।
प्रोद्यत्प्रभावपरिभावितसर्वलोका
रम्या शरन्नववधूरिव भाति भूयः ॥ ४ ॥

कान्ताभिसाररसलोलुपमानसाना—
मातङ्ककम्पितदृशां मदनार्दितानाम् ।
दर्भाङ्कुराक्तपदवीकुसुमास्तराणां
रोरुच्यते किल शरत्समयः स एषः ॥ ५ ॥

कान्ताभिसारसुरताध्वरदीक्षितानां
सासारदक्षिणमरुत्परिवीजितानाम्।
उद्यद्धनुर्मदनमात्रसहायकानानां
यूनां मनो रमत एव शरत्प्रसङ्गे ॥ ६ ॥
कान्तावियोगविषमूर्च्छितमानसानां
पस्पन्द्यमानपवमानसमेधितानाम् ।
रथ्याचलद्विपुलयौवनयौवतं त-
न्नेत्राञ्जनोभवति सम्प्रति पान्थयूनाम् ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चेषुपञ्चशरपातविमूर्छितानां—
शय्यासु पार्श्वपरिवर्तनचञ्चलानाम् ।
यूनां प्रियाविरहफूत्कृतमानसानां
चेष्टा जयन्ति शरदङ्कविडम्बितानाम् ॥ ८ ॥

मनुदेवभट्टाचार्यः

•

देवीस्तुतिः

दुर्गे ! त्वदीयपदपङ्कजसेवनेन
देवादयः सुविमलं पदमाश्रयन्ति ।
रक्षोगणास्तव विलोक्य महत्प्रकर्षं
हर्षं विहाय प्रतियान्ति हि नागलोके ॥ ३ ॥

धन्यः शरत्समय एष हि यत्र कामं
संस्थापयन्ति नवरात्रमहोत्सवाय ।
मूर्त्ति विशुद्धमनसा विमलां भवत्याः
वन्दे दयार्द्रचरणं शरणं जगत्याः ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरद्वर्णनम्

आमोदशालिवसुधा बहुभावपूर्णा
दृष्ट्वा चिरादुपगतां शरदं सखीं स्वाम् ।
द्राक् स्वागताय विलसत्सुविकासहास–
व्याजेन तां समुपयाति सुरम्यवर्णाम् ।। १ ।।

प्रावृड्गते विजयते नयनाऽभिरामो
ज्योतिर्मयः सुविमले गगने हि चन्द्रः ।
सद्विद्ययाऽस्ततमसो मनसो विशुद्धौ
बुद्धौ यथा विमलबोधमयः परात्मा ।। २ ।।

— कृष्णमोहनठक्कुरः

कार्त्तिक्येन हि धावकेन विशदं धौताम्बरं राजते
तारामौक्तिकराजिरम्बुदजलैः प्रक्षालिता भ्राजते ।
विद्युच्छाणनिघर्षिताविव रवीन्दू कान्तिसन्दीपितौ
नद्यो नाद्य रजस्वला क्षितिरतिस्वच्छा प्रसन्ना शरत् ।।

गिरां देवी वीणा गुणरणनसँल्लग्नहृदया
दयावश्या वेषं दधतमपि भक्तञ्च भजते ।
कथं सा नो कुर्यान्निजपदसमाराधनपरे
कृपापाङ्गां दृष्टिं भवति मृदु मातुः स्वहृदयम् ।।

—गजानन शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरद्

कासाञ्चितापि वनराजिहरित्तमापि
या नैव सन्त्यजति नीरदमोहबन्धम् ।
अद्यापि पङ्क्लिसरित्तटभूमिभागे
नो दूयते सकलखञ्जनपीडनैश्च !!

नैवापगा दधति निर्मलबिम्बशोभां
ताराङ्कितस्य गगनस्य निशामुखेषु ।
नो चन्द्रिकाधवलिता च शरत्त्रियामा,
क्षीणांशुकं जगदिदं मुकुटीकरोति ।।

अद्य क्वचित्तमसि नीलतमाः पयोदाः
विन्ध्योन्मुखाः क्वचिदिमास्ततयः खगानाम् ।
यत्र प्रमत्तजलचारिवयो विरावस्
तत्रैव दृश्यत इहापि तडित्स्फुरन्ती ।।

—कमलेशदत्तत्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिदासः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिदासः

वाल्मीकि-काश्यप-तपोवन-काव्य-कन्यां
स्वर्गाङ्गना-मुनितपः-प्रणयप्रसूताम् ।
यस्तत्त्वतः समधिगम्य रहस्युपास्ते
दुष्यन्त एष कविकर्मणि कालिदासः ॥ १ ॥

उन्मीलदम्बुजकदम्बकपेतुषीणां
कान्ताकटाक्ष-सुभगांशुमलिम्लुचानाम् ।
प्रार्तविनिद्रवचसां मधुपाङ्गनानां
नृत्येषु यः प्रणिदधाति स कालिदासः ॥ २ ॥

उन्मुक्तपञ्चमरवासु पिकाङ्गनासु
कङ्केलि-किंशुक-शिरस्सु च घूर्णितेषु ।
यः पद्मिनीमभिसरत्युपजातसख्य
आम्रेण पञ्चविशिखः स हि कालिदासः ॥ ३ ॥

यः खण्डितां कमलिनीमुषसि स्वपत्र-
नेत्रात्तुषारकणबाष्पमपास्य सद्यः ।
सम्यक् प्रसादयितुमिच्छति वीतरात्रि-
रन्यत्र मित्रवर एष स कालिदासः ॥ ४ ॥

चक्राङ्गनासु हरिणीषु मयूरपंक्ति-
ष्वुद्योतितुं विरहजां रुजमङ्गनानाम् ।
विद्युद्वधूः श्रयति यस्य शितं कटाक्ष
मेघः स पान्थगतिदः किल कालिदासः ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायां सतीमपि जनश्रुतिमात्रभीते-
स्त्यक्तुं दृढः स भगवानपि यस्य लोके ।
वृक्षैर्मयूरहरिणैरपि भर्त्स्यतेऽद्धा
धर्मोत्तमो नृपवरः स हि कालिदासः ॥ ६ ॥

—सनातनो रेवाप्रसादद्विवेदी

समृद्धे सत्काव्यै - रभिनवपदार्थैरुपचिते
नवीनैर्विज्ञानै - रधिकृत - महायन्त्रनिवहे ।
विशाले भूभागे ललितपदविन्यासविधिना
कवीन्द्र ! त्वद्वाणी रसिकजनचेतांसि हरते ॥ १ ॥

गवां सेवामेवासुलभफललाभाय नृपते-
र्दिलीपस्यादिक्षत् क्षपयितुमरं विघ्ननिवहम् ।
परीक्षोत्तीर्णेऽस्मिन्ननुपमसुतप्राप्तिविषया
समृद्धिं व्याचक्रे सपदि तपसः कामपि पराम् ॥ २ ॥

तपोऽग्नौ दम्पत्योः प्रणयकनकं यावदसकृ-
न्न तप्तं, नो तावत्तनयमसमं कोऽपि लभते ।
इतीव व्याख्यातुं, रघुमलघुचित्तं, गुहमपि
प्रधानं सेनान्यं, भरतमपि दौष्यन्तिमसृजः ॥ ३ ॥

प्रमत्तः कर्त्तव्यात् प्रसभमभिशप्तो दयितया
युवा यक्षो दूरं गमित इव यक्षाधिपतिना ।
कृतावज्ञोऽज्ञानादपवदति कन्यामपि मुनि-
र्मनोविज्ञानेषु प्रसरति मनस्ते कविमणेः ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रवं मृद्वीकायां निरुपममरन्दं सुमनसां
विलासिन्या धन्याधरममृतनिःष्यन्दजयिनम् ।
पिकानामुन्मादप्रजननसमर्थं च वचनं
विधत्ते सातङ्कं सुकविकविताया: पदमपि ॥ ५ ॥

यूनोर्दृढप्रणयनिर्भरकाव्यलक्ष्म्या
युक्तोपमा निरुपमां सुषमां तनोति ।
किं शब्दरत्नललितापि मनोरमा वः
स्त्रष्टुं क्षमेत कवितामवदातवर्णाम् ॥ ६ ॥

एकोपमाऽप्यनुपमा कविताङ्गनाया-
श्चूडामणि - र्भवति भाग्यसमृद्धिहेतुः ।
अन्यैः कवीन्द्रतिलकैस्समुपाहृतानि
किं भूषणान्यभिभवन्ति तदीयलक्ष्मीम् ? ॥ ७ ॥

एकावलीव तरुणीस्तनयोः समृद्धि-
मेकोपमैव कवितामभिरामरूपाम् ।
सम्पाद्य काव्यरसिकान् परितर्पयन्ती
तेषां मनोऽधिकुरुते न शुभैर्विलासैः ? ॥ ८ ॥

वचोऽधिदेव्या ललितो विलासो
वसुन्धराया महिमावभासः ।
कवीन्द्रतायाः सुकुमारहासो
जयत्यपूर्वः कविकालिदासः ॥ ९ ॥

ये मेनिरे नहि परोक्षतया सुराणां
सत्तामपि प्रसभमेव च तान्नियन्तुम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्यक्षसिद्धवपुषोऽर्थंपुषोऽष्टमूर्त्ते-
रभ्यर्चनं त्वमवदः सकलेक्षिताय ॥ १० ॥

—रतिनाथझा

सोऽयमधुना जृम्भते भुवि कालिदास - महोत्सवः
यत्प्रतीक्षायां सदा सहृदयधुरीणाः साधवः
सोऽय······

कालिदास - कविर्यदीये मानसे स्फुरितः कदाचित्
धन्यतायां नास्ति संदेहोऽपि तस्येहास्ति कश्चित्
सोऽय······

भारतेऽद्य जनाः समस्ते तद्यशः प्रख्यापयन्तो
नवनवां व्याख्यां गिरन्तो ख्यातिममितां लब्धवन्तः
सोऽय······

यो हि कोमल - भावनानां राशिरूपे राजमानः
यो हि सहृदय - सज्जनानां भावनासु प्रतीयमानः
सोऽय······

नवनवोन्मेषैर्यदीया काव्यधारालोकनीया
शुद्ध - बुद्ध - विभावना - भरिता सदैवालोचनीया
सोऽय······

यस्य कविकुलशेखरस्य यशोविताने संचरामः
कालिदास - महोत्सवं सततं जगत्यां कामयामः

—शिवदत्तशर्मचतुर्वेदः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगदम्बापादपद्मश्रीनूपुररणोत्सवः ।
पारायणे वेदराशेर्नित्यं व्याकरणायते ॥

श्रीकालिदासकवितल्लजपादपीठं
मोमुद्यमानमनसा प्रणमामि भूयः ।
आकल्पमेव कविकल्पनपद्यपद्मैः
पोपूज्यमानमतिमञ्जुलमाबिभाति ॥ १ ॥

किं वर्णयामि तव सम्प्रति कालिदास-
दुग्धाब्धिफेनधवलद्युतिकीर्तिमद्य ।
त्वत्कीर्तिवर्णनमिषेण हि पण्डितास्ते
जाताः स्मि स्वयमहो भुवि कीर्तिमन्तः ॥ २ ॥

तैस्तैः समैः कविवरै रचितानि तानि
भूयोऽप्यधीत्य खलु काव्यकदम्बकानि ।
तावन्न कश्चिदपि तोषमुपैति धीमान्
यावत्त्वदीयकविता ह्यवशिष्यते भोः ॥ ३ ॥

रे कालिदास, कवितावनिता त्वदीया
पीयूषयूषरसगर्भभराऽस्ति नूनम् ।
अद्य त्वदीयकविताविषयप्रभावाद्
ह्यस्तोऽभवद्रसमयं दिनमेव कृत्स्नम् ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे बाण काण, खलु दर्शितहर्ष हर्षं
भो भारभूत भुवि भारविनामधारिन् ।
रे माघ साघ, हि भुजङ्गरते मयूर,
का कालिदासतुलनासु तुला त्वदीया ॥ ५ ॥

हे कालिदास तव कीर्तितपद्यरत्नै-
र्वाग्देवताचरणपद्मसमर्पितैस्तैः ।
सोन्मादहंसरवनिन्दनपण्डितैस्तै-
र्देव्या भवन्ति पदि नूपुरशिञ्जितानि ॥ ६ ॥

शृङ्गारपद्ममधुलोलुपषट्पदा ये
कान्तावियोगविषमूर्च्छितमानसा ये ।
आस्वादयन्तु भुवि ते कविकालिदास-
काव्यानि तान्यमृतसेकसुसम्भृतानि ॥ ७ ॥

शास्त्रेण किं सुरधुनीसवनेन किं वा
ध्यानेन किं श्रुतचयव्यसनेन किं वा ।
रे काव्यशास्त्ररसिकाः परिहाय सर्वं
श्रीकालिदासवचनामृतमापिबन्तु ॥ ८ ॥

रामापदाब्जयुगहंसकधर्षिता ये
वक्त्राब्जसम्भवसुधाऽशनहर्षिता ये ।
वक्षोजकेशरपरागविलेपिता ये
ते कालिदासकवितास्वधिकारिणः स्युः ॥ ९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रम्भाऽथ सा समदना, रुचिरा घृताची
सा मेनका - नुपममालविकोर्वशी च ।
यद्वर्णनीयमतिशेत इमाः समास्ताः
श्रीकालिदासचरणौ शरणीकरोमि ॥१०॥

हा हन्त हन्त, धरणौ न सुधेति हेतो
रे रे बुधा नहि मुधा कुरुतेह शोकम् ।
शृङ्गारसाररसफूत्कृतसौधसौधं
श्रीकालिदासकविवागमृतं पिबन्तु ॥ ११ ॥

श्रीकालिदासवचनानि समीरितानि
श्रुत्वा तदुत्तरत एव शिरो न धुत्वन् ।
नूनं भवेन्नरपशुः शव एव वाऽसौ
किं वा भवेत्पशुपतिः शिव एव साक्षात् ॥ १२ ॥

ये कान्ता-चरणाब्जदण्डयुगलैः सन्ताडिता निर्दयं
ये वा सोन्मदलोहिताक्षिधनुषस्तीक्ष्णैः शरैर्जर्जराः ।
किं वा मत्तगजेन्द्रगण्डघटसोदर्यस्तनालिङ्गिताः
नूनं श्रीकविकालिदासकृतिना ते वर्णनीयाश्चिरम् ॥ १२ ॥

हंहो किं मिष्टमिष्टं क्वचिदपि च भवेदिक्षुदण्डस्तु दण्डः
क्षीरं क्षारं तथा स्याद् घृतमपि तु मृतं, नो सुधायाः क्षुधाऽपि ।
द्राक्षाऽभक्ष्याऽथ रामारतमपि विरतं, स्याद्विगीतं च गीतं
यावद् यच्छन्ति दिव्यामृतमिह कविताः कालिदासस्य तस्य ॥१३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काव्यालापकलाकलापललितं लालित्यलीलालयं
कूजत्कोकिलकाकलीकुहुकुहूसोदर्यमिष्टस्वनम् ।
तूर्णं श्रोत्रयुगाञ्जलिद्वयभरैः पेपीप्यतां पण्डितै-
र्दिव्यं श्रीकविकालिदासकवितापीयूषयूषं मुहुः ॥ १४ ॥

यद्गन्धर्वकलासु कौशलमहो यन्नृत्यगीतादिषु
यत्सम्पूर्णसुधांशुरात्रिसुरते यन्मानिनीमानने ।
नीवीबन्धनमोचने, चरणयोरालक्तसंल्लेपने
तत्सर्वं कविकालिदासरचिते लालभ्यतां धीधने ॥ १५ ॥

कुलकम्—

वीणागुणक्वणितरागरसैकगेहं
कूजद्वसन्तऋतुपञ्चमरागमञ्चम् ।
गुञ्जद्द्विरेफरवमञ्जुलमाधुरीकं
सर्वर्त्तु सौख्यदतिरस्कृतकेकिकेकम् ॥ १६ ॥

आलोलबालवचनाधिकहृद्यपद्यं
पूर्णेन्दुबिम्बकिरणोद्भवसौधसौधम् ।
सोन्मादवारवनितामणिताऽतिलीलं
क्षीराब्धिमन्थनभवामृतसोदरञ्च ॥ १७ ॥

रामाधरामृतरसाम्बुधिमन्थनोत्थं
नाभीसरोजरशनामणिशिञ्जिताढ्यम् ।
आरक्तनेत्रवनितासुरतायमानं
देवाङ्गनाचरणहंसकनादरम्यम् ॥ १७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत्यन्तपक्वसहकारगलद्रसाब्धिं
पोस्फुट्यमाननलिनालिमधूपमेयम् ।
खर्जूरपूररससारगुणातिशायि
श्वेतोपलद्रवमहामधुपिण्डतुल्यम् ॥ १८ ॥

दर्भाग्रसूक्ष्ममतिमन्दरमन्थनोत्थ-
साहित्यशास्त्रसरिदीशसुधारसज्ञाः ।
श्रीकालिदासकविवाङ्मयसारसिन्धु-
पीयूषयूषमनघाः कवयः पिबन्तु ॥ १९ ॥

समस्तकवितावल्लीभृङ्गसङ्गीतसंस्तुते ।
कालिदासपादपद्मे बोभवीतु मतिर्मम ॥ २० ॥

—मञ्जुदेव भट्टाचार्यः

आसीन्निखिलनृपतिनिवहनंनम्यमानः सकलकलाकलाप—कुशलकोविदकोकिलः अनल्पकल्पनजल्पनपल्लवतल्लजपादया सोन्मादकलहंसकामिनीवचनविडम्बिमधुमधुरवाङ्मुखरमुखया भूरिभावप्रभावप्रभावितभावया कविताङ्गनयाऽनया स्वयंम्वृतः, अतुलितसुललितलोललास्यलीलालालितदिग्ललनाललामाऽनल्पधम्मिल्लतल्लजसम्पम्फुल्यमानमल्लिकामतल्लिकालिकुलचेकीर्त्यमानयशोराशिचन्द्रिकामरीचिसुधास्वादलालसाऽलसचकोरीभूतभूतलाखिलविपश्चिदपश्चिमः,

गङ्गाप्रवाह इव कृतसरस्वतीसङ्गतिः अपौरुषेयागम इव अज्ञातोत्पत्तिः धौम्य इव वेदानुगतः। सूर्य इव करविजितपद्मपद्मः लोभीव भोजप्रियः पद्मराग इव नवरत्नान्यतमः मारुतिरिव रामाभिलाष-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुरः दशरथ इव आश्रितभरतः कुबेर इव प्रकटीकृतयक्षशापः गज इव सज्जनानुरागी ब्राह्मणोऽपि न ब्रह्मपुत्रः महादोषवानपि निर्दोषः बाडवोऽपि शान्तमूर्तिः महाभयाऽन्वितोऽपि विगतभीः वडवापुत्रोऽपि न घोटकः चतुराननोऽपि न द्रुहिणः पञ्चाननोऽपि न दिगम्बरः,

विक्रमादित्य इव प्रकृतिप्रियः शिशिरकिरण इव प्रतिभाप्रभा-प्रभावितखिलभूमण्डलः काव्यग्रन्थ इव रसगर्भौक्तिकः हिमालय इव कृतपार्वतीविवाहः शम्भुरिव नेत्रीकृताग्निमित्रः यौवनारम्भ इव दर्शितमदनप्रभावः करिकपोलप्रदेश इव बिन्दुभूषणः सिंह इव विक्रमानुरूपव्यसनः कैलाश इव कृतशिवरतिः, वैतालिक इव राजवंश-वर्णनचणः स्थगितझणज्झणज्झङ्कारझञ्झावातप्रवालसुन्दरीगुणगण-रणनव्यावृतकरपल्लवाङ्गुलिवाग्देवताश्रवणाञ्जलिपुटाचम्यमानका-व्यामृतासारसारचमत्कारश्लाघाचलिततााटङ्कयुगलझणत्कारतार-प्रतिवचनीकृतपौरवगौरवसमेधितः कालिकाचरणारविन्दासवसवन-बाभ्रम्यमाणभ्रमरायमाणहृदयः, अमरवाङ्मयमानसमरालः,

कपाटानामिव सविष्कम्भकाणाम् प्रासादानामिव पताकालङ्कृ-तानाम् आरामाणामिव सबीजानाम् शास्त्रार्थानामिव बिन्दूत्सवानां रूपकाणां रचयिता, कविताकामिनीमुखकमलामोदमोमुद्यमानमधुपः

वेश्यालय इव अभीकप्रियः विष्णुरिव महाभोगिसमाश्रितः चन्द्र इव द्विजमण्डलमण्डनः पितामह इव कृतविश्वप्रचञ्चः अखण्ड-पाण्डित्यमण्डलप्रकाण्डपुण्डरीकषण्डमार्तण्डपिण्डः सकलकविकुल-कुलपतिगणतोष्टूय्यमानपदपीठः प्रतिभाकुलसङ्कुलमतिः

श्रीश्रीमद्वाग्देवतादिव्यविलासहासः महाकविः श्रीकालिदासः

—मधुदेवभट्टाचार्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालिदासः

स्वर्गेऽस्ति रम्यरूपं परं स्वच्छता नास्ति,
धरायां विमलहृदयं परं दिव्यता नास्ति,
रसमयं
सुखद्वयं
लभ्यते हि यस्य लोके
जयतु जयतु ह्येष कालिदासो विरञ्चिः ॥ १ ॥

कदाचित् सुधाकरोऽपि क्षरितो भवेत्
सूर्योऽपि लुप्तो भवेत्
परं तिमिरं कवलीकृत्य
भुवनानि धवलीकृत्य,
स्थास्यत्येव कालिदासः प्रकाशः ॥ २ ॥

—विहारीलालशर्मा

जयन्त्यां कालिदासस्य कवितारति-कामिनी ।
रसिकानां कवीनां च प्रवर्धेत मनोमुदे ॥ १ ॥

पत्युर्गृहं प्रस्थितबालिकायै वस्त्रादि देयं किल सर्वलोकैः ।
काव्ये प्रचक्रे जनलोकशिक्षां व्याजेन कण्वस्य तु कालिदासः ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को ब्रह्मालिरिवास्य दास इति स श्रीकालिदासोऽभवत्
कस्यार्थोऽस्ति सुखं सुखञ्च हि रसः सोऽलिर्हि दासोऽस्य यः ।
कं पाथोऽलिरिवास्य दासवरुणः श्रीकालिदासोऽभवत्
मुग्धा वै प्रवदन्ति नैव विबुधा दासो हि काल्या इति ॥३॥

सृष्टौ ब्रह्मण आलयश्च सकलाश् चक्रुः कटाक्षं कवौ
आलीस्ता दसतीति कौ रतिपतेः सौन्दर्यवाँस्सोऽधिकः ।
एतेनैष च वर्णलिङ्गिषु वरो जातोऽद्वितीयः कविः
ब्रह्मास्त्येषरसश्च तस्य सुकविर्दासो यथा षट्पदः ॥४॥

शृङ्गारस्य स्वयंमूर्त्तिरुपमोपज्ञ एष हि ।
यशो यस्य विदेशेषु मुक्तकण्ठैः प्रशस्यताम् ॥५॥

कवीनां कृतयत्नानां मध्येमणिसमो ह्यसौ ।
प्राथम्यं याति मध्यस्थः स्वैर्गुणैर्लोकविश्रुतैः ॥६॥

—नवरङ्गचतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्षितम्

वसुन्धरा पांसुलतामुपागता
प्रतीक्षमाणा दयिता उपेक्षिताः ।
न जीवनं धान्यतृणाङ्कुरेऽर्पितं
पयोधराद्यावधि यन्न वर्षितम् ॥ १ ॥

कृषीवलानां नहि नन्दिताऽऽवलि-
र्न नर्तिता मुग्धमयूरमण्डली ।
न चावनिः पिच्छलिता समागमात्
ततो वृथा तेऽम्बुद वारिवर्षितम् ॥ २ ॥

अतीतशीते सहसा समुत्थिते
रणे जवाद् भारतपाकदेशयोः ।
नरैरनल्पैर्निगृहीतमोचितै—
रजस्रमस्त्रं स्वजनेषु वर्षितम् ॥ ३ ॥

समुज्झिताशेषसमत्वसंविदां
प्रशासकानामनुकुर्वता विधिम् ।
क्वचित् प्रपूर्णं क्वचिदल्पमम्बुद,
त्वयापि वैषम्यधियैव वर्षितम् ॥ ४ ॥

दिगन्तलक्ष्मीपरिरम्भसम्भव-
प्रमोदपीयूषभराञ्चितश्रिया ।
चिरात् समुत्कण्ठितचातकानने
न किञ्चिदप्यम्बुधराम्बु वर्षितम् ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वधर्मवल्लीषु मरन्दवन्दित-
प्रसूनसौगन्ध्यमवन्ध्यविभ्रमम् ।
जगन्मुदे वर्धयितुं विदम्बुदैः
सुगर्जितं भूरि न किन्तु वर्षितम् ॥ ६ ॥

कठोरकारासु निरुद्धदेवकी-
प्रसूमनोव्योम्नि विवृद्धमातपम् ।
निजोदयेनाशु निराकरिष्णुनो
घनेन कृष्णेन मुदम्बु वर्षितम् ॥ ७ ॥

अम्भोदो जलविदुभिः कतिपयैराराधितश्चेद् भुवः
कोणं कञ्चन सिञ्चतीव नहि तन्मन्यामहे वर्षितम् ।
धारासारशतेन यज्जलनिधेरारभ्य शैलान्तरं
भागं प्लावयति प्रकाममचिरं तद् वर्षितं वर्षितम् ॥८॥

नयननीरजकोशतिरोहितं
हृदयसन्निहितं मधुरद्रवम् ।
प्रियजने सुचिरेण समागते
प्रणयिनां भवति प्रियवर्षितम् ॥९॥

—रतिनाथझा

लीनं नीलनभस्तले प्रचलितैर्विद्युल्लताविभ्रमै-
र्हीनं दर्दुरदीर्घ - दण्डकपदोद्गारै - र्विहारस्थलम् ।
पीनं नूतनशाद्वलाहितपदं यूथं गवां दृश्यते
हंसैर्हर्षितमुल्लसद्भिरभितो दूरेगतं वर्षितम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

प्रागौदार्यधुरन्धरेण धरणो धाराधरेणादरात्
सिक्ता तोयकणैर्दधार मधुरामाशालतां कामपि ।
पश्चात्क्वाऽपि गतेन तेन करुणाहीनेन कालान्तरे
क्षीणा चेदनुकम्पिताऽपि तदीदं मन्ये मुधा वर्षितम् ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

•

मेघाडम्बरमातनोषि विपुलं गर्जस्यकाण्डेऽप्यलं,
शुष्यच्चारुगलं न चातककुलं यच्चाप्नुते ते जलम् ।
मित्रद्रोहवशात्तदद्य शरदि क्षीणाम्बुनश्यद्वपुः-
श्वेतिम्ना दिवि रोगिणेव भवता नो तन्यते वर्षितम् ॥ १ ॥

रे रे वारिद ! गर्जदुन्मदघटामात्रं त्वया तन्वता
क्वाचित्कं किल वर्षणं कृतवता कर्माश्रितं नोचितम् ।
केदारेषु सरित्सु रम्यविपिनेष्वन्तस्तटाकेष्वपि,
स्रोतोवत्सु नगेषु चाम्बुधिषु यत् तद् वर्षितं वर्षितम् ॥ २ ॥

स्वनामभुवि गर्हितं जगदशेषतो धर्षितम्,
पयोऽपि परिभर्त्सितं सपदि पापमावर्जितम् ।
मुहुर्वियति गर्जितं कृषकवृन्दमाकर्षितम्,
बलाहक! मुधैव यत् सुचिरमूषरे वर्षितम् ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहोगतं तद् रमणीयसस्मितं
विलोकितं तत् किलकिञ्चितं कृतम् ।
सलीलयातं भणितं च तत् प्रियं
न कस्य पीयूषमिवाभिवर्षितम् ॥ ४ ॥

अमन्दमानन्दमरन्दबिन्दुव-
न्मनोज्ञवागुत्तमसूक्तिसम्भृतम् ।
यदोरितं संसदि तत् सुभाषितं
बुधाम्बुदस्यन्दि सुधासुवर्षितम् ॥ ५ ॥

—शिवजो उपाध्यायः

लीलापण्डिततल्लजस्य भगवन् साम्यैकदीक्षागुरो
चारित्र्यं विषमं विलोक्य भवतः संधारये विस्मयम् ।
अन्यत्रातिशयं समृद्धिपटलं सानन्दमापूरितं
किन्त्वस्मिन् कथमापदां कुलमहो स्वच्छन्दतो वर्धितम् ॥

—गोविन्दपाण्डेयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्या ममेयं धरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदव्यासमुखारविन्दगलिता सन्नारदप्रार्थिता
सम्राजे च परीक्षिते शुकमुनिप्रोक्ता हि गङ्गातटे ।
पुण्ये नैमिषकाननेऽमृतमयी सूतोदिता सत्कथा
श्रीमद्भागवती सुधा सुललिता धन्या ममेयं धरा ॥

नानालङ्कृतिसुन्दरा सुमधुरा शय्यासमुल्लासिनी
रम्याश्लेषसुमञ्जुला च सुपदन्यासैर्मनोहारिणी ।
वक्रोक्तौ चतुरा मुहुस्त्रिदशवागेषा सुवर्णोज्ज्वला
यत्रास्ते जगतीतले सुललिता धन्या ममेयं धरा ॥

—गजाननशास्त्री मुसलगांवकरः

क्वाप्यद्रोशहिमालयो विजयते यस्याः शिरोभूषणम्
नानापक्षिमृगाकुलं बहुतरारण्यं महावीरुधाम् ।
रेवाजह्नुसुता सरव्यिनसुता गोदावरी नर्मदा-
पूता, सागरसंवृतातनुतनुर्धन्या ममेयं धरा ॥

यस्यां काव्यकला प्रवर्तिकवयो वाल्मीकिमुख्याः पुरा
जाताः, संस्कृतभारती द्विजकुलेऽप्यद्यात्र संधार्यते ।
यस्यां व्यासपतञ्जलिप्रभृतयो ज्ञानाख्यरश्मीन् ददुर
यामुद्धर्तुमवातरच्च भगवान् धन्या ममेयं धरा ॥

—केदारनाथत्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकत्र प्रहरी हिमालयनगोऽन्यत्र प्रहारिच्छवि-
र्विन्ध्याद्रिश्च परत्र तूर्यलहरीनादप्रपूर्णार्णवः ।
यत्रैकोऽपि युवा द्विषद्गणगजग्रामे मृगग्रामणीः,
द्यौरन्याऽत्र विकस्वरा जयति सा धन्या ममेयं धरा ॥१॥

या वृन्दारकवृन्दवन्दितपदा या रामकृष्णार्जुन-
प्रेमप्राञ्जलपांशुपूरिततनुच्छायच्छटाभास्वरा ।
जाग्रद्वीर-सहस्रसञ्चित-निजस्वातन्त्र्यसीमन्तिनी
या दिव्यद्युति-जित्वरा जयति सा धन्या ममेयं धरा ॥२॥

कांचित् काञ्चनपूर्ववंगधरणीकन्यामवाप्याऽधुना,
प्रेम्णा प्रस्नुतसुस्तनीव जननी या भाति विश्वम्भरा ।
याऽऽस्ते पञ्चकपञ्चवत्सरमिताराजज्जयन्त्युत्सवा
साऽन्न्या ननु भारते सुरगवीधन्या ममेयं धरा ॥३॥

चाओनिक्सन - हीथकोसिगिनलीभुट्टोप्रभृत्यासुरी-
सैन्यश्येनकुदृष्टिरद्य कलुषा यस्या उपर्येकतः ।
यस्याश्चापरतस्तटस्थनयविद्राष्ट्रैकनेत्रीन्दिरा,
शान्तेः शक्तिरिवापरा जयति सा धन्या ममेयं धरा ॥४॥

आप्रालेयनगात्तथा च मलयादा चान्तिमात् सागरात्
आकश्मीरतटान्तकच्छकुहरादापाकसीमान्तरात् ।
आब्रह्माङ्गकलिङ्गवङ्गसहितात् कन्याकुमारीस्थलात्
आमूलाच्चरमाच्च भाति भवने धन्या ममेयं धरा ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्र ध्वाङ्क्षनिभा विरावपटवो नेतृत्वसंसाधका:
उत्कोचैकपरा जनस्वहरणे पारङ्गता: साहिबा: ।
'पूँजीस्वामि'-हितैकसाधनरता: कुम्भोदरा नायका
राजन्ते खलु राजनीतिभुजगा, धन्या ममेयं धरा ॥

लोको यातु रसातलं दिवि मनागुच्चैस्तरां राजतां
मूल्यं, सा हि कथा समस्तजगतामेषा विकासक्रिया ।
लक्ष्यं मास्तु, भ्रमन्तु वृत्तिरहिता हिप्पीयुवानो मुधा
क्रान्तिर्गच्छतु कञ्चुकं, भुवि परं धन्या ममेयं धरा ॥

लज्जां मुञ्च, रमस्व, भुङ्क्ष्व, नितरामामोदखेलां कुरु,
वक्षोवैभवशोभिते भ्रम सदा प्रेक्षागृहे भारत ।
संस्कारं जहि मीलयस्व नयने गानेन गाजां पिबे-
रन्येषां च पिधेहि नेत्रपटलं, धन्या धरित्री मम ॥

—कमलेशदत्तत्रिपाठी

धन्या धरा ममेयम् (१)

ममतानिधानभूमि:
गीताप्रकाशभूमि:
वैदिक-विलासभूमि:
धन्या धरा ममेयम् ।

(२)

सौन्दर्य - सारशारा
दूरीकृताघ - भारा
सन्या - शिवावतारा
धन्या धरा ममेयम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३)

शैलेन्द्ररम्यरम्या
तटिनो-तरङ्गनम्या
दैवैरपि प्रणम्या
धन्या धरा ममेयम् ।

(४)

निखिलार्थसार्थदात्री
विश्वेशितुः प्रमात्री
कालुष्यसङ्घजेत्री
धन्या धरा ममेयम् ।

(५)

धमनीषु रक्तधारा
यस्याः कृपा प्रसारा
रात्रौ कृत-प्रहारा
धन्या धरा ममेयम् ।

—शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी

यन्मौलौ मुकुटायते हिमगिरिः गंगा च हारायते
काशी यत्र विराजते हि धारणौ यत्रावतीर्णो हरिः ।
यस्यां राजति कालिदासकवित्ता वेदश्च राराजति
सा सर्वातिशया किलार्यजननी धन्या ममेयं धरा ।।

—कपिलदेवत्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१)

यस्यां सन्ति पुरातनाः श्रुतिगणा, यस्यां च पुण्या नदीः,
यस्यां शील-विचार-चारुधिषणा-वर्णाश्रमाणां स्थितिः।
यस्यां विश्वहिताय यज्ञनिवहो विप्रैः सदा तन्यते,
सा वीरैः प्रथिता बुधैश्च महिता धन्या ममेयं धरा॥

(२)

यस्यां संप्रति लोकतन्त्रमहितं राष्ट्रं तु विभ्राजते,
यस्यामिन्दुसहोदरेव जयिनी नारीन्दिरा शास्ति नः।
यस्यां राष्ट्रहिताय कार्यकरणेषूत्कोचमाशंसितं,
सा विद्वज्जनतापिनी विजयतां धन्या ममेयं धरा॥

—गोपालचन्द्रमिश्रः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करोति

सुमनसाम्

गन्धवाहः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करोति

यत्राधुनाधिकृतसर्वविधाधिकाराः
स्वार्थाभिभूतमनसः प्रभवो जगत्याम् ।
नृत्यन्ति हन्त ! निरपत्रपतां वहन्त-
स्तत्र प्रशस्यमिह कः सुकृतं करोति ॥ १ ॥

पुण्यात्मनाममितधामसमृद्धिभाजां
शास्त्रानुमोदितशुभायतिसिद्धवाचाम् ।
दुर्वासनादुरभिसन्धितमोऽभिभूतं
स्वान्तं किमुज्ज्वलवचोऽप्यमलं करोति ॥ २ ॥

कार्कश्यवश्यवचनां स्वकुटुम्बमध्ये
फुल्लाननामपरपूरुषसङ्गमेषु ।
रत्नाञ्चिताभरणमप्युपजातकामां
वामां सतीत्वरहितां किमलङ्करोति ? ॥ ३ ॥

स्वाध्यायसौरभमनारततीर्थसेवा
धर्मक्रियाभिनयकौशलमप्यनल्पम् ।
पुण्योपदेशनकलोपचिता समृद्धि-
रन्यापकारनिरतान्न परिष्करोति ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालिन्यमग्नमनसां विमलाकृतीना-
मुच्चासनाधिकरणोर्जितनाटकानाम् ।
कार्पण्यमात्मनि निसर्गतयाधिरूढ-
मार्योचिताचरणमद्य तिरस्करोति ॥ ५ ॥

लोकोत्तरं किमपि कर्म विधाय राष्ट्र-
सम्मानमात्मचरितेन समुन्नयन्तम् ।
प्रेम्णा नयेन विनयेन च देशभक्तः
पूर्णादरेण विभवेन पुरस्करोति ॥ ६ ॥

प्रत्यब्दमद्यतनसंसदि लब्धवित्तान्
संक्षोभयन्ननुदिनं परिवर्धमानः ।
नव्यः पुरातनतमोऽप्यतिभारभूतो
मूल्यप्रवर्धनमनेककरः करोति ॥ ७ ॥

रुचिरपदकदम्बं भव्यनव्यार्थरम्यं
ललितविधिविधानं कल्पनाया वितानम् ।
सुकविरचितकाव्यं हृद्यवक्रोक्तिगर्भं
सहृदयहृदि हर्षोत्कर्षमाविष्करोति ॥ ८ ॥

—रतिनाथझा

वातेरितऽमित-विशीर्ण-विकीर्ण-पर्ण-
पूर्णान्तरा वसुमती शिशिरावसाने ।
काये विधूय पलितं ललितं विधातुं
कल्पं वसन्तभिषजाऽभिहितं करोति ॥ ९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्दानिलेन मलयाचलसम्भवेन
सायन्तनोपवनकेलिसमुत्सुकेन ।
काचिल्लता तरलिता कलिता रसेन
चेतश्चलं मृगदृशां सहसा करोति ।।१०।।

सुप्तोत्थितेव तुहिनावरणानुबन्धात्
वासः प्रसूनशतचित्रितमादधाना ।
चन्द्रानना प्रियतमस्य मधोः सपर्या-
पर्यायचारुहसितं रजनी करोति ।। ११ ।।

संसारमारवपथ - भ्रमिघूर्णिताना-
मन्योन्यमर्दनविगर्हितचेष्टितानाम् ।
एका चिराय कुशलं कविभारतीयं
पीयूषपूर - परिवाहमयी करोति ।। १२ ।।

—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते

जाड्यं यातं तपनकिरणोष्मप्रसारैः समन्ता-
दस्तं यातः शिशिरमहिमा चापि हेमन्तकालः ।
शब्दं स्पर्शं सपदि च रसं रूपजातं च गन्धं
किं किं रम्यं सरसहृदयो नो वसन्तः करोति ।। १३ ।।

—प्रियव्रत-शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१)

मनःप्रसादं सकलस्य काले
प्रकुर्वती रम्यगुणैरुदारा ।
विधाय कार्यं कविभारतीयं
सन्दर्शयन्तीह सुखाकरोति ॥

(२)

दैनन्दिनं राष्ट्रबलं प्रकामं क्षिणोति नूनं न विवर्धतेऽद्य ।
प्रधाननेतुः क्रियया जनस्य क्लेशाय चित्तं विवशीकरोति ॥

—कृष्णमोहनठक्कुरः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्माय जालभवनं चपलोर्णनाभि-
भूंयः स्वकीयवदने प्रकरोति लीनम् ।
संसृज्य लोकमखिलं हरति प्रहृष्टा
संहारकर्मपरुषा भवती तथैव ॥ १ ॥

सौदामिनीविवलितं विविधेन्द्रचापं
मेघं नमामि रसिकं मणिपूरलोके ।
पीयूषतुल्यशिशिरैः सलिलप्रवाहै-
र्यो मे प्रदग्धहृदयं सरसं करोति ॥ २ ॥

ज्ञानाम्बुजस्य मकरन्दरसैकलीनं
वन्दे विनम्रशिरसा खलु हंसयुग्मम् ।
विद्याब्धिपूरजनकं रणितं हि यस्य
दूरं करोति मनसो निखिलान्धकारम् ॥ २ ॥

संस्थाप्य सा मणिमयं खलु सूर्यकान्त-
माकाश एष विमले रजतैकपात्रे ।
ऊषा मनोज्ञललना ललितप्रभाते
नीराजनं मधुमयं प्रकरोति देवि ॥ ४ ॥

पाषाणतोऽपि सलिलं क्षरति प्रवाहै-
र्लोहं कठोरशकलं द्रवतीति चित्रम् ।
भूयोऽपि किं न भवती करुणां करोति
नामापि भक्तशरणे! कुरु सार्थकं त्वम् ॥ ५ ॥

—बिहारिलालशर्मा 'विकासः'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुमनसाम्

सुमनः,
कथं विमनायसे,
किं वसन्तो न प्रीणाति,
किं वा मधुकरा नायान्ति,
किं वा गन्धवाहः कर्त्तव्यच्युतः,
किं वा कण्टकशय्या न रोचते,
अथवा केनापि मालाकारेण स्वकक्षसज्जायां
प्लाष्टिकपुष्पाणि सन्निवेशयता
तवानादरः कृतः ।
किं न स्मरसि
तव सङ्गात् कीटोऽपि सतां शिर आरोहति ।
न कस्यचिदपि मूर्ध्ना लभ्यसे,
मन्ये, अत एवोपालभ्यसे,
किन्तु,
न हेयं सौमनस्यम्
अस्ति ते द्वितीया वृत्तिः
तामेवावलम्ब्य
अविलम्बं विशीर्यताम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्यथा

कश्चित् पण्डितराज आगमिष्यति
त्वामभिलक्ष्य नूनं कथयिष्यति च-
'कुलव्रतं पालयिष्यति कः' ।

—कपिलदेवपाण्डेयः

सवित्री सिद्धीनां श्रवणपुटपेया भुविसुधा
पवित्रं चारित्र्यं किमपि जनयन्ती त्रिभुवने ।
सदा भुक्तिं मुक्तिं युगपदुपहर्तुं समरसा
पुराणी वाणीयं जयति वसुधायां सुमनसाम् ॥ १ ॥

अलङ्कारे लक्ष्म्या मधुरमधुमासस्य महसाम्
अपूर्वैः सौन्दर्यैर्ललितसुकुमारेऽप्युपवने ।
मिलिन्दानां वृन्दं चिरपरिचितास्वादविधुरं
न विन्दत्यानन्दं सपदि मकरन्दैः सुमनसाम् ॥ २ ॥

चलद्वात्याचक्रे तपति तपने मध्यगगने
समन्तादाशुष्केऽप्यखिलसरसां जीवनरसे ।
वनान्तेष्वामोदं वितरति तथाप्येष ललितो
विकासो मल्लीनामद्यमययिदाघे सुमनसाम् ॥ ३ ॥

न वीराणामर्चास्विमखरपूजास्वपि च नो
न शृङ्गारे सम्यग् भवति विनियोगो मृगदृशाम् ।
इदानीमुद्यानं विविधविधवर्णैन सुभगं
विधातुं सार्थक्यं गणयति विदग्धः सुमनसाम् ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निदाघज्वालाभिः कवलितविलासेऽप्यनुपमं
सुभव्यं सौरभ्यं यदिह गतवन्नैव विलयम् ।
तदेवास्यां प्रावृष्यमितजललाभैर्विदलितं
विलोके लोकेऽस्मिन् विलुलितलतानां सुमनसाम् ॥ ५ ॥

प्रयातं स्वारस्यं मधुकरकुलानन्दजननं
विलीनं सौगन्ध्यं विशदमहदामोदमधुरम् ।
लसन्तीमुद्याने मलयपवनाङ्के स्मितमुखो-
मिदानीं पश्यामः क्रमकलितपङ्क्तिं सुमनसाम् ॥ ६ ॥

अपूर्वं सद्वस्तु स्फुरितगुणमौचित्यरुचिरं
परिस्पन्दीभूतं किमपि वचसां जीवितफलम् ।
सुधीन्द्राणां चित्तद्रवजनिमसारस्वतरसं-
नवीनं निर्माणं भणति महिमानं सुमनसाम् ॥ ७ ॥

—रतिनाथझा

मधौ धावत्यन्धः परिमलसुगंधोन्मदमनाः
मिलिन्दानां वृन्दं प्रविशति वनान्ते दिशि दिशि ।
मुखं चुम्बत्यञ्चत्यधरदलयुग्मं विदलयन्
तदङ्के निःशङ्कःस्वपिति भुजबद्धः सुमनसाम् ॥

व्यतीतो हेमन्तः प्रणामकुपितानां मदभरे-
र्निमीलन्नेत्राणां कथमपि न मानो विगलितः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसन्ते संप्राप्ते रहसि दमितः केलिकलया
मनो मन्दं मन्दं नुदति पवनोऽयं सुमनसाम् ॥

—प्रियव्रतशर्मा

प्रभातप्रोन्मीलत्सरसिजवनी सौरभजुषां
गिरामाचार्याणां न भवति तुला मन्दवचनैः ।
समुद्यत्सौरभ्यप्रसरपरिभूताऽखिलगुणा
न कस्तूरी दूरी भवति खलु गन्धैः सुमनसाम् ॥ ९ ॥

स्वभावादेवाऽस्मिन् जगति कलिताऽनल्पकुतुका
पवृत्तिः श्वापुच्छी परहितविधाने हृतधियाम् ।
परं न व्यत्येति क्षणमपि समीपागतसनः-
प्रसादैकासक्ता नयविनयरीतिः सुमनसाम् ॥ १० ॥

वनान्ते वासन्ते समुदयतिकाले कति न वा
परागैरालिप्तं विदधति धरित्रीपरिसरम् ।
मता सौभाग्यश्रीः स्मरशरपराधीनतरुणी
कुचद्वन्द्वाश्लेषाधिगममुदितानां सुमनसाम् ॥ ११ ॥

सौरभ्ये समुदित्वरे सुमनसां पद्मालये स्वागत-
प्रोन्मीलद्दलसञ्चये नवमरुद्वृन्दागमस्पन्दिनि ।
शिञ्जन्मञ्जुपदक्रमा सहृदयक्षीरोदनीरादरात्
काव्यश्रीः समुदेतु माधवमुदे स्वैरोल्लसद्विभ्रमा ॥ १२ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गन्धवाहः

न भवति हृदि यस्य क्वाप्यनन्यानुराग-
स्त्यजति यमिह नैव प्राणबाधोद्गमेऽपि ।
सपदि जगति नैवं दृश्यते कोऽपि बन्धु-
स्त्ववसरसुहृदेको राजते गन्धवाहः ॥ १ ॥

यदपि पयसि मग्ना पङ्कमध्ये स्थितापि
प्रियतममुखमेवालोकसे पद्मिनि ! त्वम् ।
परमकृतविशेषाञ्चञ्चलश्चञ्चरीकः
सततगतिमयस्ते वल्लभो गन्धवाहः ॥ २ ॥

ललितगुणविहीनः स्पर्शमात्रैकगम्यो
भुजगनिवहभक्ष्यो गत्वरः सर्वदैव ।
पतदिव तरुकायात् पातयन् पीतपर्णं
वहति तदपि गन्धं दुर्वहं गन्धवाहः ॥ ३ ॥

सुरभिमसुरभिं वा योऽन्यसंसर्गमात्राद्
वहति, चरति नित्यं पुष्पवत्यां विहारम् ।
मधुकरकुलमङ्कात् पातयन् वल्लरीणां
तदपि बुधवरेण्यैः सोऽर्च्यते गन्धवाहः ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वल्लीं वियोगविधुरां शिशिरे शयानां
म्लानाननां मलिनजीर्णदलावलग्नाम् ।
तैस्तैर्विलासविभवैः परिरम्भमुग्धा-
मामोदयत्युपगतः प्रियगन्धवाहः ॥ ५ ॥

स्निग्धे चिरादुपगते कुसुमाकरेऽपि
तावन्न मुञ्चति शुचं विपिनान्तलक्ष्मीः ।
यावन्न केलिकुशलः स्मितशालिवल्ली-
माश्लिष्य नर्तयति दक्षिणगन्धवाहः ॥ ६ ॥

मुखं परावृत्य सखीमुदीची-
माचुम्बितुं प्रस्थित एव भानौ ।
त्यक्त्वाऽङ्कपालीमपि दक्षिणस्या
मन्दं ~~त्वरा~~ समागच्छति गन्धवाहः ॥ ७ ॥

—रतिनाथझा

रचयति मकरन्दैर्मण्डनं काननानाम्,
स्नपयति च सुधाम्भःशीकरैर्दिग्दिगन्तम् ।
विशदयति विकासं कुड्मलानां सुहासैः
पुलकयति शरीरं माधवो गन्धवाहः ॥ ८ ॥

कोऽसौ कालः कलयति जनान् यो विदग्धान् सुदग्धम्
कामं वह्नौ विषमनयनेनापि चापीकरोति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित्रं यातो निशितशरतां कोमलः पुष्पराशिः
शीतः संज्ञां हरति मदनो मालयो गन्धवाहः ॥ ९ ॥

—प्रियव्रतशर्मा

उन्मथ्नन् कामिनीनामपरिमितमहामानमातङ्गयूथं
स्कन्धारूढैः पिशङ्गैः पवनविदलितैः केसरैर्भासमानः ।
सम्प्राप्तः काननान्ते मदननरपतेः प्राज्यसाम्राज्यलक्ष्मी-
प्रोद्यत्तुङ्गध्वजाङ्को मलयगिरिदरीकेसरी गन्धवाहः ॥ १० ॥

विरमति न कदाचिद्विश्वसञ्जीवनार्थान्
सुखयति परितप्तान् प्राणिनः स्पर्शमात्रात् ।
सुरभयति समन्तादन्तरं दिक्तटानां
कथमिव स न वन्द्यो बान्धवो गन्धवाहः ॥ ११ ॥

यः संवासं भुजङ्गैः सह मलयनगाभ्यन्तरे दीर्घकालं
कृत्वा यात्राप्रवृत्तो नग-नगर-सरित्पुष्पवाटीपथेषु ।
चातुर्यदिष मार्गे प्रथमपरिचयादेव गुच्छस्तनीनां
कौमार्यं वल्लरीणामपहरति मधौ वञ्चको गन्धवाहः ॥ १२ ॥

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्या ममेयं धरा

पारावारमहोर्मिमेदुरपदा विन्ध्याटवीमण्डिता
गङ्गादिप्रथितापगाभिरभितो भव्याभिषेकोर्जिता ।
प्रालेयाचलकाननाञ्चलचरच्छार्दूलविक्रीडितै-
र्वन्यैरन्यपशुव्रजैर्विजयते धन्या ममेयं धरा ॥

आद्यानामनवद्यकीर्तिकिरणव्रातैः समुद्दीपिता
पुंसां पावनकर्मशर्ममधुरोपन्याससम्पूजिता ।
हंसासीनसरस्वतीसुविहितस्तोत्रैश्चिराद् वन्दिता
देवानामपि दुर्लभा विजयते धन्या ममेयं धरा ॥

श्रौतस्मार्त-परम्परापरिचिता चारित्र्यरत्नाञ्चिता
कल्याणी सकलोन्नतिप्रणयिनी नैपुण्यपुण्यस्थली ।
अध्यात्मोत्सवमेदिनी सुमनसां सौरस्य-सम्पादिनी
शौर्यैरूर्जितविक्रमार्चितपदा धन्या ममेयं धरा ॥

सस्यश्यामलशाटिका विलसिता पुष्पस्रगामोदिता
पाटीरद्रवलेपिता फलभरैर्माधुर्य - सम्भाविता ।
स्निग्धाऽऽज्यादिरसैर्द्विजालिवचनैर्वाणीवती श्रीमती
मान्या मानवसद्गुणैर्गुणवती धन्या ममेयं धरा ॥

विज्ञानाङ्कुरजन्मभूमिरुदयद्वाणिज्यवल्लीस्थली
नव्याविष्कृतिभूमिकासुखतरोः संहारशस्त्रावनिः ।
काचिद्राजतु हेमपूर्णधरणी कौटिल्यलीलाचला
शान्तिस्नेहसदाशयत्वजननी धन्या धरित्री तु नः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सच्चारित्र्यसमर्चिता सुरगवी दुग्धामृतक्षालिता
पुण्याध्यात्मविचारणैकचतुरा धर्मव्रतोद्दीपिता ।
मानुष्याञ्चितमुक्तिभुक्तिजननीशौर्यक्षमाशेवधिः
विद्यावृत्तविवेकभूतिनिलया धन्या धरित्री तु नः ॥

बालेन स्नपिता स्वजीवनरसैरभ्यर्चिता गाँधिना
श्रीमन्मालववासिना तिलकिता नीराजिता बङ्गिभिः ।
राजेन्द्रेण नुता प्रसिद्धनहरूवंशेन चाह्लादिता
स्वातन्त्र्योत्सवसौरभेण मुदिता धन्या ममेयं धरा ॥

श्रद्धासंयमसङ्गमार्जितजनुर्बाल्येऽपि लोकोत्तरं
शौर्यं प्राप्य शकुन्तलासुतवरः सिंहीसुतैः क्रीडति ।
तस्यैवाद्भुतविक्रमस्य नृपतेर्नाम्नाऽभवद्भारतं
क्षेमं विश्वजनीनमुन्नयतु सा धन्या धरित्री तु नः ॥

करोति काव्यं कमनीयरूपं
प्रस्तौति नित्यं रघुनाथभूपम् ।
चिनोति पुण्यं शिवचिन्तनेन
तनोति साधुर्यश इत्यनेन ॥

तापं क्षिणोति जडभावमपाकरोति
प्राज्यां प्रसारयति हर्षमरन्दलेखाम् ।
सङ्गात्मकः सुमनसां मधुगन्धवाहः
किं किं न साधयति पुण्यचयादुपेतः ॥

—जनार्दनगङ्गाधररटाटे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होलोत्सवः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होलोत्सवः

पाश्चात्यजीवनविषाक्तविनीति[1]भङ्गां
सर्पाङ्गनामिव हलाहलकुण्डसङ्गाम् ।
वर्षाणि षोडश निषेव्य विमूर्च्छितानां
होलोत्सवात् पर उदेतु महोत्सवः कः ॥

लज्जां विहाय कुलकीर्त्तिमुखीं, निरस्य
शिष्टां सृतिं प्रजपतामपशब्दमन्त्रान् ।
विद्यार्थिनां भरतभूमिभुवामिदानीं
होलोत्सवो ह्यविरतं ननु नित्यकृत्यम् ॥

—रेवाप्रसादद्विवेदी सनातनः

सम्यग्विस्मृतभारतीयसमुदाचारादपेताध्वनां
यूनां वृत्तविवेकबोधविनयाधानावधीनुज्झताम् ।
छात्राणामिह राजकीयपुरुषैर्दुर्वारजल्पक्रमो
विद्यामन्दिरसुन्दरे परिसरे जागर्ति होलोत्सवः ॥ १ ॥

अद्यत्वे नगरीषु वैभववतां गेहेऽथवा वर्त्मनि
प्रायेणापकथातिसाहसविधिप्राणापहारादिभिः ।
कामं शोणितकर्दमैः प्रसृमरज्वालावलीविभ्रमै-
र्धूलीभिर्युववक्रमाङ्कचरितैर्जागर्ति होलोत्सवः ॥ २ ॥

---

१. विनीतिः शिक्षा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाश्लेषः सुहृदां न कुङ्कमलवालेपोऽपि रक्तात्मनां
नो मातङ्गकुलेषु निर्मलहृदां स्पर्शोऽपि हर्षप्रदः ।
नो दुग्धं न धृतं नचापि मधुरं मुग्धं फलं नोत्तमं
नोल्लासो मनसो न पानकरसः को नाम होलोत्सवः ॥ ३ ॥

शुद्धं वस्तु न लभ्यतेऽद्य विपणौ मूल्यं परं वर्धते
दुर्भिक्षं विकृताननेन जनतामत्तुं समुज्जृम्भते ।
सामान्य जनजीवनं न रमते न प्रीयते सज्जनो
विश्वासःक्रमते न बन्धुषु ततः को नाम होलोत्सवः ॥ ४ ॥

सम्मानेऽपगते शमे शकलिते, दीप्ते प्रतीपानले
लीने दुर्लभकौशले, समुचिताचारे चिरं निद्रिते ।
सद्भावे प्रलयं गते, खकुसुमप्रख्येऽथ सख्येऽधुना
म्लाने कीर्तिमुखे, सुखेऽपि विमुखे को नाम होलोत्सवः ॥ ५ ॥

प्रान्तेषु प्रचुरेषु भारतभुवो दुर्भिक्षकोलाहला-
दार्त्ते कोटयधिके ऽधुना न जठरज्वालां निरोद्धुं क्षमे ।
दैन्ये शासनसैन्यमर्दनपरे दग्धे विदग्धे जने
स्वार्थान्धे जननायके विलुलिते लोके क्व होलोत्सवः ॥ ६ ॥

हन्तुं मानवतां पदा दलयितुं दैवीं शुभां सम्पदं
मर्यादामपहर्त्तुमस्थिरयितुं सामाजिकीं प्रक्रियाम् ।
दुर्वादैः कलिकौतुकैर्निरुपमैः पङ्कप्रलेपैर्नवै-
रुष्णैः शोणितवर्षणैरनुदिनं जागर्ति होलोत्सवः ॥ ७ ॥

कामे कन्दलिते, नितान्तदलिते धर्मेऽर्थतन्त्रे प्रिये
मुक्ते मङ्गलतुन्दिले कवलिते काये निसर्गोज्ज्वले ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वेच्छाचारविचारकौतुकजुषः पुंसः स्त्रिया विभ्रमै-
रद्यत्वे प्रतिसद्म नन्दतितरां प्रायेण होलोत्सवः ॥ ८ ॥

श्लिष्यन् पुष्पवतीं मदान्धमधुपैराचुम्बितां वल्लरीं
लोकान् संस्नपयन् रजोभिरमलान् स्नातानुलिप्तानपि ।
कामं मञ्जुलमञ्जरीषु मदिरामाचामयेत् सद्विजान्
पञ्चेषुं परिपूजयन्नृतुपतिः प्रीणाति होलोत्सवः ॥ ९ ॥

गोधूमोऽपि तिरोहितोऽद्य निभृतं क्वाज्यं स्वराज्ये पुनः ?
क्षीरं क्षीणतमं सिताप्यवसिता रम्भापि जम्भारये ।
का वार्त्तास्ति फलस्य निष्फलतमे जातेऽधुना जीवने
दैन्ये नृत्यति मूल्यवृद्धिसमये को नाम होलोत्सवः । १० ॥

दग्धं चेन्न मनोमलं न च रजः सम्मार्जनीभिर्हृतं
रागेणेश्वरसंश्रयेण विमलं स्वान्तं न चेद् रञ्जितम् ।
अप्राप्तप्रणयाश्चिरेण दलिता नालिङ्गिताश्चेद् दृढं
व्यर्थस्तद् बहुजल्पितेन विजयापानेन होलोत्सवः ॥ ११ ॥

दुष्पूरे जठरे ऽर्धनग्नवपुषि प्राप्ते जरामक्रमात्
नित्यं दुर्वहगेहभारवहनात् सुप्ते प्रियाविभ्रमे ।
बाष्पक्लिन्नतयापि शुष्कवदनेष्वर्भेषु चीरावृते-
ष्वुच्छ्वासं श्रयतां विपन्नगृहिणां खेदाय होलोत्सवः ॥ १२ ॥

दुर्व्यापारशतेन शान्तमनसामातङ्कमातन्वतां
सङ्घीभूय मुदैव पङ्किलयतां सामाजिकं जीवनम् ।
लोकानन्दनसाधनानि दहतां, शब्दान् सदारुन्तुदान्
निःशङ्कं वदतां, मदेन चरतामाभाति होलोत्सवः ॥ १३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धूलीधूसरितोऽन्नपानविकलो भूमौ शयानोऽन्वहं
तारुण्येऽपि गतस्मितोऽद्य मनुजो भग्नेप्सितो भारते ।
सद्यानैर्भ्रमते, पयांसि पिबते, स्वच्छां तनुं बिभ्रते,
रामालिङ्गनचुम्बनैर्मदयते तुभ्यं शुनेऽसूयति ॥ १४ ॥

—रतिनाथ झा

इह खलु मधुरमधुमदामोदमोमुद्यमानमानसोन्मत्तमधुव्रतव्रात-गीताविगीतसङ्गीतकीर्तिराजिराजितम् सुकलितकविकुलालङ्कार-सालङ्कारझङ्कारविडम्बितवीणागुणक्वणनकवितापदविन्यासस‍त्कृतम् जितसकलपथिकवधूविभ्रम-मदोद्भ्रान्तसम्भ्रान्तपञ्चशरागमञ्चय-मानम् पम्फुल्ल्यमानमल्लीफुल्लमतल्लिकापल्लीपल्लवतल्लजदलली-ललीलास्पदम् पोस्फुट्यमाननाल्पसुमनोविलासाकल्पकल्पनाढ्यम् महामहीरुहषण्डमण्डलमण्डनप्रत्यग्रदलरमणीयसुमनोविकासहर्षप्रका-शसुरभिश्वासमनोरमम् शीतप्रवाहमहाजाड्यताड्यमानसकलप्रा[illegible]-कदम्बमनोऽभिरामम् वसन्तकालमुपाश्रितः वर्णसङ्करकरोऽपि धर्मशास्त्रानुमतः कुशीलवजन इव रङ्गाश्रितः धारामध्यगतोऽपि सकलभारतवर्षजनसेवितः मानवरसाश्रितोऽपि नवरसाधिष्ठितः निगमान्तर्गतोऽपि निगमाद्बहिरनुभूयमानः ग्रो[illegible]रोऽपि पयो-मुक्स्वभावः शुभ्राम्बरोऽपि चित्राम्बरः चित्रभानुमुखोऽ[illegible]त्यं-समाजः महापुरुषोऽपि पश्चाचारमग्नः यथेच्छभावगमयोऽपि न सिद्ध-वाक् अनेकबालककरपङ्कजयुगलपरिचालितधारायन्त्रसहस्रनिष्पी-डितनिष्ठ्यूतविविधविधवर्णवर्णितर्किर्मीरीभूताखिलप्रपञ्चसञ्चयः शीतप्रभावप्रभूतपरितापं भूयः परिभूय प्रतिदिनं प्रातः सायमधि-श्रृङ्गाटकं बाभ्रम्यमाणपथिकयुवकनिकुरम्बहासपरिहासमेदुरः सौर-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भ्रभरसमाक्रान्तस्पन्दमानपवमान -नन्दनवनसहोदरीकृतगङ्गातटोपवेशनरमणीयः सकलसहृदयसेवनानुकूलपरमरमणीयविधिविधानबन्धुरः जगतीतलवलयेऽभिन्नालयं जागतु होलोत्सवः ।

—मनुदेवभट्टाचार्यः

राजंल्लोहितनीलपीत - कपिशप्रोद्यत्प्रभोद्भासितो
भूखण्डस्थितसर्वमानवमहासम्मेलनप्राञ्जलः ।
शीतोद्भूतमहाप्रभावहरणप्राचुर्यचातुर्यवान्
राराजीतु समस्तभूमिवलये रम्यः स होलोत्सवः ॥ १ ॥

नानावर्णविचित्रचित्ररचनासौन्दर्यसान्द्रान्विते
गुञ्जन्मञ्जुलशिञ्जितातिमधुरद्वैरेफगीताद्भुते ।
कूजत्कोकिलकाकलीकुहुकुहूकारावलोकोलिते
वासन्ते मदनप्रवृत्तिसमये जागर्त्ति होलोत्सवः ॥ २ ॥

देवाधीश्वरमौलिरत्न - विसरप्रोद्भूतदिव्यच्छवि-
च्छायाच्छादितभूधरेन्द्रतनयापादाम्बुजं राजताम् ।
वासन्तेऽत्र - यदर्चना नरवशे तद्भूरिभावान्वितः
साऽलक्ताक्तमहाजपारुचिनिभो जागर्त्ति होलोत्सवः ॥ ३॥

मैत्रीभावविकाशकारणचणः सद्भावधीवर्धनो
भूयो यः किल हर्षवर्षजलदः सौख्यप्रथोत्साहकृत् ।
सामान्येतरभेदभेदनपटुर्यः कायमालिन्यहृत्
सर्वेषां हृदयानुकूलचरितो जागर्त्ति होलोत्सवः ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किं दानेन सुरार्चया सुरधुनीस्नानेन वाऽनेन किं
किं वा कल्पनयाऽनया कविगिरामभ्यासतोऽध्यासतः ।
हे धीराः श्रृणुतास्मदीयवचनं, चेदिच्छथ स्वं हितं
हित्वा मोहसमूहमूहकुशलैः सेव्योऽत्र होलोत्सवः ॥ ५ ॥

रागद्वेषमहाऽसुरेश्वरवनीकल्पान्तदावानलः
स्वीयाऽस्वीयमहातमोनिरसनप्रौढप्रभाऽहस्करः ।
श्रीविश्वेश्वरपादपद्मयुगलीभक्तिव्रताख्यापको
गङ्गातीरकृताश्रयः प्रतिदिनं जागर्ति होलोत्सवः ॥ ६ ॥

—मनुदेवभट्टाचार्यः

अयमुपहितवर्ष्मा सीकरैरङ्ग गाङ्गै-
र्नलिन-मधु-परागै रागवान् गन्धवांश्च ।
भ्रमति नभसि वातो दर्पशातोऽध्वगानां
रविमिव दिनमध्येऽप्यर्थयन्नन्धकारम् ॥

किसलय-कुसुमानामञ्जलीकृत्य कोशान्
मधुमयमयमर्घ्यं पञ्चबाणाय दित्सुः ।
मधुकरदयितानां कोकिलानां च शब्दैः
पिपठिषति विभाते स्तोत्रमादौ मरुत्वान् ॥

हिमकर-कर-दोलामारुरुक्षुर्महान्ति
स्पृशति तरुशिरांसि प्रांशुपांसूनि पुष्पैः ।
क्षितिज-मुकुरगर्भे वीक्षितुं चात्मभूषां
प्रसृमरति दिगन्तेष्वार्यवेषा मधुश्रीः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभवति नहि शास्त्रं साम्प्रतं पण्डितानां
तरुणमदनमन्तस्तारुणं संनिरोद्धुम् ।
प्रसरति भुवि नास्यामद्य माद्यद्द्रुमालि-
विकचकुसुमपालीमालभारी वसन्तः ॥

—रेवाप्रसादो द्विवेदी 'सनातनः'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिप्सायाः विजृम्भितम्

सुरसा-वदनस्य का कथा तृणतुल्यं कलशीसुतोदरम् ।
स विराडपि वामनोऽधुना यदिदं जृम्भितमद्य लिप्सया ॥ १ ॥

किमु वाञ्छसि मित्र मानव क्व नु रे गन्तुमना इतः परम् ।
यदलं परिताप्य दिक्तटान् परितो भस्मचयं दिदृक्षसे ॥ २ ॥

अशनं वसनं निवासभूर्निजता चेति चतुष्टये नर ।
अवधिर्वद को नु निश्चितो धृतराष्ट्रं यदि वानुयासि रे ॥ ३ ॥

अयि संग्रहशील चिन्तयाऽऽयतिमात्रस्य चिनोषि यन्निधीन् ।
वद रे वद मूढ सा परा नियतिः काचन विद्यते न वा ॥ ४ ॥

बत मानव मानवाशन ध्रियते ते पशुताऽधुनापि सा ।
उदपादि यया स रावणः स च भस्मासुरनामकोऽसुरः ॥ ५ ॥

स्थिति-संस्कृति-योगसाधना-परमार्थ-व्रत-संयमा अमी ।
व्यभिचारविषाग्निना तव प्रिय हे, हे प्रिय हन्त मूर्च्छिताः ॥ ६ ॥

न कुलं, न यशो, न बन्धुतां, न च विद्यां बहु मन्महेऽधुना ।
निखिलार्थ-सुधा-सुधाकरं द्रविड-ब्रह्म गृणीमहे परम् ॥ ७ ॥

पुरुषार्थ-चतुष्किकाशयां यदि रे मानवतावधूटिकाम् ।
विनिपात्य करीव पद्मिनीं ग्लपयस्याः किमु तत्र कथ्यताम् ॥ ८ ॥

—रेवाप्रसादद्विवेदी 'सनातनः'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारती

१९७२–७३

अध्यक्षः	पं० रामचन्द्रमालवीयः
उपाध्यक्षः	पं० गोपालचन्द्रमिश्रः
	पं० गजाननशास्त्रि मुसलगाँवकरः
	डॉ० कृष्णावनर्जीमहाशया
मन्त्री	डॉ० कमलेशदत्तत्रिपाठी
उपमन्त्री	पं० वावूलालमिश्रः
कोषाध्यक्षः	पं० कृष्णमोहनठक्कुरः
सदस्याः	पं० रतिनाथझा
	पं० वटुकनाथशास्त्री खिस्ते
	डॉ० रेवाप्रसादद्विवेदी
	डॉ० पद्मामिश्रा
	डॉ० प्रेमलताशर्मा
	पं० रामनारायणदत्तपाण्डेयः
	डॉ० प्रियव्रतशर्मा
	पं० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी
	डॉ० ज्योतिर्मित्रशास्त्री
	पं० कपिलदेवत्रिपाठी
	डॉ० विश्वनाथभट्टाचार्यः
	डॉ० जनार्दनस्वरूपाग्रवालः
	डॉ० दरवारीलालकोठिया
	पं० वासुदेवद्विवेदी
	डॉ० अमरनाथ पाण्डेयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविभारतीपञ्जीयनसंख्या ४४३९/१४. १. ६८ लखनऊ

The West Coast Paper Mills Ltd.
कविभारतीकृताय
श्रीगजाधरसोमानीमहाशयाभिनन्दनाय
प्रहर्षं प्रकाशयते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि भारती कार्य समिति

१९७६

अध्यक्ष—श्री ल० श्रो० जोशो

उपाध्यक्ष—श्रीमती डा. विमला मुसलगांवकर

श्री वासुदेव द्विवेदी

श्री रतिनाथ झा

कोषाध्यक्ष—श्री मुरारीलाल केडिया

मन्त्री—श्री शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी

उपमन्त्री—श्री कृष्णकान्त शर्मा

सदस्य—श्री डा. विश्वनाथ भट्टाचार्य

डा. अमरनाथ पाण्डेय

श्री बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

डा. रेवाप्रसाद द्विवेदी

डा. गजानन शास्त्री मुसलगांवकर

डा. कमलेशदत्त त्रिपाठी

डा. कपिलदेव पाण्डेय

कपिलदेव त्रिपाठी 'जटिल'

डा. प्रेमलता शर्मा

डा. पद्मा मिश्रा

श्री केदारनाथ त्रिपाठी

श्री रामनिवास तिवारी

डा. प्रियव्रत शर्मा

डा. गोकुलचन्द्र जैन

श्री मनुदेव भट्टाचार्य

श्री कृष्णमोहन ठक्कुर

कार्यालय मन्त्री—श्री जयकृष्ण गोदियाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि-भारती के भूतपूर्व—

अध्यक्ष

स्व. श्री रामरूप पाठक

श्री पं. वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

श्री पं. रामनारायणदत्त पाण्डेय

श्री पं. रामचन्द्र मालवीय

श्री पं. पट्टाभिराम शास्त्री

डा. पद्मा मिश्रा

अधिवेशनाध्यक्ष

स्व. म. म. उमेश मिश्र

डा. प्रियव्रत शर्मा

श्री वासुदेव श्रीधर सोहनी

श्री महेश प्रसाद

डा. चन्द्रधर शर्मा

श्री पं. आनन्द झा

मन्त्री

श्री शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी

श्री पं. रतिनाथ झा

श्री पं. लीलाधर पंत

डा. ज्योतिर्मित्र शास्त्री

डा. कमलेशदत्त त्रिपाठी

श्री पं० मनुदेव भट्टाचार्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi